VISION 100 नीम का थाना

जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा

की अनुपम प्रस्तुति

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम परीक्षा उन्नयन हेतु

प्रेरणा स्त्रोत

श्रीमती श्रुति भारद्वाज
जिला कलेक्टर नीम का थाना

संरक्षक

श्री राधेश्याम योगी
जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माशि
नीम का थाना

दिग्दर्शक

श्री जितेन्द्र कुमार सुरोलिया सीबीईओ खेतडी
श्री आत्मा राम सीबीईओ उदयपुरवाटी
श्री सत्यप्रकाश टेलर सीबीईओ पाटन
श्री सुरेश शर्मा सीबीईओ अजीतगढ
श्री विनोद कुमार शर्मा सीबीईओ श्रीमाधोपुर
श्री बाबुलाल सैनी कार्यवाहक सीबीईओ नीम का थाना

संयोजक एवं सम्पादक

रमाकान्त शर्मा, प्राचार्य, एम जी जी एस अंग्रेजी माध्यम श्रीमाधोपुर

:– कार्यकारी दल :–

श्री देवेन्द्र कुमार
वरिष्ठ अध्यापक
शहीद रामोवतार बारबर राउमावि बिहारीपुर पाटन

श्री नवीन कुमार टांक प्राचार्य
राउमावि डोकन पाटन

श्री संजय कुमार व्याख्याता
राउमावि बिहार पाटन

श्रीमती हंसा देवी व्याख्याता
राउमावि श्रीमाधोपुर

प्रकाशक

जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा नीम का थाना

VISION 100NEEMKATHANA

Patron

Radhey Shyam Yogi, DEO(HQ) Neem Ka Thana

EDITED BY

Ramakant Sharma
Principal MGGS SHRIMADHOPUR

Guidance

Suresh Kumar Sharma, CBEO Ajitgarh

Guidance

Mr Satya Prakash Tailor
CBEO
PATAN

Guidance

Mr. Jitendra Kumar Suroliya, CBEO Khetari

Guidance

Mr. Atma Ram, CBEO

UDAIPURWATI

Guidance

Mr. Vinod Kumar Sharma, Acting CBEO Shrimadhopur

Guidance
Mr Babulal Saini Acting CBEO NeemkaThana

Written BY
Mr. Naveen Kumar Tank
Principal
GSSS Dokan Patan

Written By
Mrs. Hansa Devi
Lecturer
GSSS Shrimadhopur

Written By
Mr. Sanjay Kumar

Lecturer

GSSS DOKAN Patan

Written By

Mr. Devendra Kumar
Senior Teacher

Shahid Ramotar Barber
GSSS Biharipur Patan

संरक्षक की कलम से .....

प्रिय अध्यापक एवं छात्र–छात्राओं,

आप सभी अपने विषय मे भागीरथ प्रयास कर अपने छात्र–छात्राओं को सर्वश्रेष्ठ सहायता उपलब्ध करवाने की हर सम्भव कोशिश कर रहे होंगे, इसी क्रम मे आप अपने विषय मे बच्चों को निष्णांत कर रहे है। आपके लिये जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय की ओर से गठित विषय विशेषज्ञों की टीम की तरफ से एक प्रयास किया जा रहा है कि आप अपने विद्यालय का बोर्ड परीक्षा का परिणाम 100 प्रतिशत रखें। आपकी सहायतार्थ यह पठन सामग्री प्रस्तुत है। आप इसे अपने सभी छात्र–छात्राओं को पहुंचाने का प्रयास करें और लाभाान्वित होवें।
आप सभी का बोर्ड परीक्षा परिणाम न केवल सौ प्रतिशत रखें बल्कि इसकी गुणवत्ता को भी बनायें रखेगें । सदैव आपके हितों की रक्षा के लिये प्रयासरत ... ।

आप सभी के सुखद भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

राधेश्याम योगी
जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय
नीम का थाना

VISION 100 NEEMKATHANA

जयशंकर प्रसाद

1. 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के किस नाटक से लिया गया है ?

(अ) चन्द्रगुप्त (ब) अजातशत्रु (स) स्कंदगुप्त (द) ध्रुवस्वामिनी

2. 'कार्नेलिया का गीत' प्रसाद के किस नाटक से लिया गया है

(अ) राज्यश्री (ब) चन्द्रगुप्त (स) स्कंदगुप्त (द) अजातशत्रु

3. कार्नेलिया कौन थी

(अ) सिकन्दर की बेटी (ब) धनकुबेर की कन्या (स) बन्धुवर्मा की बहन (द) सेल्युकस की पुत्री

4. 'हेमकुंभ ले उषा सबेरे' में कौनसा अलंकार है

(अ) अनुप्रास (ब) यमक (स) श्लेष (द) रूपक

5. जयशंकर प्रसाद के काव्य का प्रमुख स्वर है ।

(अ) निराशा (ब) राष्ट्रीय जागरण (स) विरह (द) अपराध बोध

6. देवसेना कौन थी ?

(अ) बन्धुवर्मा की बहन (ब) सेल्यूकस की पुत्री (स) पर्णदत्त की पुत्री (द) सिकन्दर की पुत्री

7. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब व कहाँ हुआ ?

(अ) काशी,1899 (ब) काशी,1889 (स) महिषादल,1898 (द) कुशीनगर,1900

8. आर्यावर्त पर किसने आक्रमण किया ?

(अ) डचों ने (ब) अंग्रेजों ने (स) हूणों ने (द) यूनानियों

9. देवसेना ने अपने जीवन का अन्तिम समय कहाँ व्यतीत किया ?

(अ) पर्णदत के आश्रम में (ब) हरिद्वार में (स) हूणों के दरबार में (द) सिकन्दर के आश्रम में

10. 'बरसाती आँखों के बादल' पंक्ति में भारतीयों की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

(अ) करुणा व सहानुभूति (ब) उत्साह का (स) आश्रयदाताओं का (द) अतिथि-परायणता का

11. 'देवसेना का गीत' कविता में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?

(अ) निराशा की (ब) वेदना की (स) संघर्ष की (द) उपर्युक्त सभी की

12.'कार्नेलिया का गीत कविता में किसका वर्णन किया गया है।

(अ) स्वानुभूति वेदना का (ब) भारत की महिमा का (स) संघर्षपूर्ण जीवन का (द) जिजीविषा का

उत्तरमाला

1.स 2.ब 3. द 4. द 5. ब 6.अ 7.ब 8.स 9. अ 10. अ 11. द 12. ब

VISION 100 NEEMKATHANA

निराला

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बचपन का क्या नाम था ?

(अ) गुसाई दत्त (ब) निराला (स) कलाधर (द) सूर्यकुमार

2. निराला को 1916 में प्रकाशित किस कविता के आधार पर मुक्त छन्द का प्रवर्तक माना गया।

(अ) रामकी शक्तिपूजा (ब) सरोज-स्मृति (स) जूही की कली (द) गीतिका

3. निराला को साहित्य व संगीत की प्रेरणा किससे मिली |

(अ) पत्नी मनोहरी की प्रेरणा (ब) महादेवी वर्मा की प्रेरणा से

(स) पुत्री सरोज की प्रेरणासे (द) महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा

4. सरोज स्मृति के रचनाकार है |

(अ) निराला (ब) पन्त (स) प्रसाद (द) महादेवी वर्मा

5.'दुःख ही जीवन की कथा रही,क्या कहूँ आज जो नहीं कही' में निराला के किस व्यक्तित्व की झलक मिलती है?

(अ) भाग्यहीनता (ब) अर्थहीनता (स) जीवनसंघर्ष (द) निराशा

6. निराला कवि के प्रथम वसन्त की गीति कौन है

(अ) मनोहरी (ब) स्मृति (स) सरोज (द) महादेवी

7. 'सरोजस्मृति' का रचनाकाल है ?

(अ)1936 (ब)1935 (स) 1930 (द) 1940

8. सरोज स्मृति' कैसा गीत है ?

(अ) उत्साह गीत (ब) आह्वान गीत (स) जिजीविषा का गीत (द) शोक गीत

9. सरोज-स्मृति रचना निराला के किस काव्य-संग्रह से ली गई है ?

(अ) परिमल (ब) अनामिका (स) गीतिका (द) नये पत्ते

10. सरोज के ह्रदय में किसकी सुन्दर छवि मुखरित हो रही है ?

(अ) चाँद की (ब) कामदेव की (स) पति की (द) पिता की

11. कवि सरोज बेटी को सहारा मानकर स्वयं को क्या कह रहा है ?

(अ) बलशाली (ब) भाग्यहीन (स) अनुरागी (द) पथप्रदर्शक

12. <u>हो भ्रष्ट शीत के-से शतदल</u> पंक्ति में कौनसा अलंकार है।

(अ) अनुप्रास (ब) रूपक (स) यमक (द) उपमा

13. कवि के मन में किसके समान वेदना हो रही थी ?

(अ) शकुंतला के समान (ब) सरोज के समान (स) कण्व ऋषि के समान (द) पत्नी के समान

14. कवि ने किसे अपने पुराने सभी शुभ कामों का अर्पण किया?

(अ) अपने बेटे को (ब) पुत्री (स) अपनी पत्नी को (द) अपने मित्र को

15. 'देखा मैंने वह मूर्ति धीति मेरे वसन्त की प्रथम गीति' कवि ने <u>मूर्ति-धीति</u> शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया है ?

(अ) कवि के जैसी चेहरे वाली के लिए (ब) प्रतिमूर्ति के लिए (स) हमारी कल्पना के अनुरूप (द) सरोज

उत्तरमाला 1. (द) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स) 6. (स) 7. ब 8. द 9. ब 10. स 11. ब 12. द 13. (स) 14. ब 15.

VISION 100 NEEMKATHANA

अज्ञेय

1. प्रकृति प्रेम और मानव मन के अंतर्दन्दों का कवि किसे कहा जाता है ?

(अ) प्रसाद (ब) निराला (स) अज्ञेय (द) केदारनाथ सिंह

2. यह दीप अकेला' कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है

(अ) बाहरा अहेरी (ब) हरी घास पर क्षण भर (स) शेखर: एक जीवनी (द) आँगन के पार द्वार

3. यह दीप अकेला, इसको भी पंक्ति को दे दो"। इसमें पंक्ति किसका प्रतीक है

(अ) व्यक्ति (ब) समाज (स) दीपक (द) आदर्श का

4. 'यह दीप अकेला' कविता में दीप किसे कहा गया है

(अ) दीपक को (ब) सम्मान को (स) व्यक्ति को (द) उपर्युक्त सभी को

5. 'गीत' की सार्थकता किससे जुड़ी है ?

(अ) संगीत (ब) गायन (स) वादन (द) उत्सव

6. एक बूँद का संबंध कविता में किससे बताया गया है ?

(अ) ईश्वर से (ब) जीवन से (स) व्यक्ति से (द) क्षणभंगुरता से

7. यह दीप अकेला स्नेह भरा पंक्ति में 'स्नेह' शब्द का आशय क्या है ?

(अ) तेल (ब) दीपक (स) व्यक्ति (द) गर्व

8. कवि ने व्यक्ति को गर्वभरा मदमाता क्यों कहा ?

(अ) व्यक्ति के अहं भाव के कारण (ब) मदिरा के कारण

(स) सीधेपन के कारण (द) अहंभाव त्यागने के कारण

9. कवि के अनुसार धरती को फोड़कर सूर्य को निर्भीक होकर कौन देखता है ?

(अ) समाज (ब) अंकुरित बीज (व्यक्ति) (स) दीपक (द) गोरस

10. यह गोरस जीवन कामधेनु का अमृत पूत पय पंक्ति में अंलकार बताइए |

(अ) उपमा (ब)मानवीकरण (स) श्लेष (द) रूपक

11. अज्ञेय द्वारा स्थापित किए गए साप्ताहिक समाचार-पत्र का नाम क्या है ?

(अ) प्रतीक (ब) दिनमान (स) हंस (द) जागरण

12. अज्ञेयके जन्म तथा मृत्यु के उचित क्रम का चयन कीजिए |

(अ) 1705-1789 (ब) 1825-1911 (स) 1915-1997 (द) 1911-1987

13. यह समिधा' ऐसी आग हठीला विरला सुलगाएगा। पंक्ति में 'समिधा' से क्या तात्पर्य है?

(अ) हवन सामग्री (ब) समाधि (स) मीठे पकवान (द) लकड़ी

14. सागर और बूँद किसके प्रतीक है

(अ) सुख-दुख के (ब) व्यष्टि और समष्टि के (स) आशा-निराशा के (द) उपर्युक्त सभी के

15.मैंने देखा, एक बून्द कविता में किसकी क्षणभंगुरता का चित्रण हुआ है

(अ) सागर की (ब) बूंद (स) समुद्र की (द) संसार की

उत्तरमाला

1.स 2. अ 3.ब 4.स 5. (ब) 6.द 7. अ 8. अ 9. ब 10.द 11.(ब)12. द 13. अ 14. ब 15. ब

VISION 100 NEEMKATHANA

केदारनाथ सिंह

1. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब-विधान विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि किस कवि को प्राप्त है ?

(अ) रघुवीर सहाय (ब) केदारनाथ सिंह (स) अज्ञेय (द) निराला

2. केदारनाथ सिंह को किस कविता संग्रह के लिए 1989 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(अ) अभी बिल्कुल अभी (ब) जमीन पर रही है (स) अकाल में सारस (द) यहाँ से देखो

3. प्रतिनिधि कविताएँ और ताना-बाना नाम से हाल ही में किस कवि की रचनाए प्रकाशित हुई है ?

(अ) केदारनाथ सिंह (ब) रघुवीर सहाय (स) विष्णु खरे (द) अज्ञेय

4. बनारस कविता किस कवि द्वारा रचित है

(अ) निराला (ब) रघुवीर सहाय (स) विष्णु खरे (द) केदारनाथ सिंह

5. बनारस' कविता में किस स्थल पर संध्या का घण्टा-ध्वनि आरती होती है

(अ) काशी घाट (ब) दशाश्वमेध घाट (स) मडुवाडीह मोहल्ला (द) गंगा तट

6. दिशा कविता में कवि ने किस आधार पर अपने प्रश्न का उत्तर जानने की कोशिश की है ?

(अ) सामाजिक विज्ञान के आधार पर (ब) बाल मनोविज्ञान के आधार पर

(स) हिमालय की दिशा के आधार पर (द) उपर्युक्त सभी

7. कवि के अनुसार बच्चे के लिए क्या सबसे महत्वपूर्ण था?

(अ) हिमालय की दिशा (ब) बादलों की उड़ान (स) उसकी उड़ती पतंग (द) खेलना

8. ज्योति की लपटों और धुएँ से गंगा-जल में क्या बन जाते है ?

(अ) स्तम्भ (ब) गुम्बद (स) गोले (द) छज्जे

9. 'जो है वह सुगबुगाता है। उपर्युक्त पंक्ति में सुगबुगाने का क्या तात्पर्य है?

(अ) जागरण (ब) बोलना (स) नींद लेना (द) चिल्लाना

10. एक अजीब सी नमी है। पंक्ति में अलंकार है

(अ) यमक (ब) श्लेष (स) रूपक (द) उपमा

11. दिशा कविता में कवि ने व्यक्त किया है |

(अ) हिमालय की उदारता (ब) बच्चों की सहजता (स) पतंग की उड़ान (द) स्कूल की महत्ता

12. 'दिशा' कविता के रचनाकार है

(अ) केदारनाथ सिंह (ब) रघुवीर सहाय (स) निराला (द) विष्णु खरे

13. केदारनाथ सिंह का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) काशी (up),1935 (ब)बलिया (UP),1934 (स) बलिया (UP),1936 (द) कुशीनगर (UP),1938

14.बनारस शहर में अचानक क्या आता है

(अ) वसंत (ब) ग्रीष्म (स) शीत ऋतू (द) उपर्युक्त सभी

15.धीरे-धीरे सभी कार्यों का होना किस शहर की विशेषता है

(अ) लखनऊ (ब) बनारस (स) पटना (द) बलिया

उत्तरमाला

1.ब 2. स 3. अ 4. (द) 5. ब 6. (ब) 7. (स) 8. अ 9. अ 10. द 11. ब 12. अ 13. ब 14. अ 15. ब

VISION 100 NEEMKATHANA

रघुवीर सहाय

1. रघुवीर सहाय का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) लखनऊ,1929 (ब) लखनऊ,1930 (स) छिंदवाड़ा,1929 (द) बनारस,1928

2. रघुवीर सहाय की रचनाएँ अज्ञेय द्वारा सम्पादित किस सप्तक में संकलित है ?

(अ) प्रथम सप्तक (ब) द्वितीय सप्तक (स) तृतीय सप्तक (द) चतुर्थ सप्तक

3. रघुवीर सहाय द्वारा रचित काव्य-कृति है |

(अ) सीढ़ियों पर धूप में (ब) आत्महत्या के विरुद्ध (स) लोग भूल गए हैं (द) उपर्युक्त सभी

4. रघुवीर सहाय को किस काव्य-संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(अ) लोग भूल गए हैं (ब) सीढ़ियों पर धूप में (स) आत्महत्या के विरुद्ध (द) हँसो हँसो जल्दी हँसो

5. रघुवीर सहाय पेशे (व्यवसाय) से है |

(अ) चित्रकार (ब) संगीतकार (स) पत्रकार (द) उपर्युक्त सभी

6. 'वसन्त आया' कविता के रचनाकार है

(अ) अज्ञेय (ब) रघुवीर सहाय (स) केदारनाथ सिंह (द) विष्णु खरे

7. 'बसन्त आया' कविता में कोयल के कूक की तुलना किससे की गई है ?

(अ) बसन्त के पतझड़ से (ब) बहन के मधुर सम्बोधन से (स) पतंग की उड़ान से (द) सागर की लहरों से

8. निम्नलिखित में से कौनसा प्रतीक सुमेलित नहीं है |

(अ) खेत-मानव मन का प्रतीक (ब) पत्थर चट्टान- विघ्नबाधाओं का

(स) ऊसर बंजर-ऊब व खीज का (द) धरती- हरियाली का

9. तोड़ो कविता है |

(अ) बाल-मनोविज्ञान आधारित कविता ब. देशप्रेम आधारित कविता (स) उद्बोधनपरक कविता (द) निराशावादी कविता

10. वसन्त आने का समाचार कवि को किससे पता चला

(अ) बहन से (ब) कैलेंडर से (स) पतझड़ से (द) भाई से

11. कवि के दफ्तर में छुट्टी किस बात का प्रमाण था

(अ) दशहरे का (ब) दीवाली का (स) ईद का (द) वसन्त पंचमी का

12. रघुवीर सहाय किस काव्यधारा के कवि है

(अ) छायावाद (ब) प्रगतिवाद (स) नई कविता (द) हालावाद

13. कवि किसके लिए चट्टानें, ऊसर और बंजर को तोड़ने का आहवान करता है

(अ) विध्वंस के लिए (ब) सृजन के लिए (स) विनाश के लिए (द) उपर्युक्त सभी

14.'कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो। पंक्ति में अलंकार है

(अ) उपमा (ब) रूपक (स) उत्प्रेक्षा (द) श्लेष

15. कवि को ढाक के जंगलों के दहकने का पता कैसे चला

(अ) चिड़िया के चहकने से (ब) कविताओं से (स) पत्थरों से (द) ऑफिस से

16. कवि ने निम्नलिखित में से वसंत की कौनसी विशेषता बताई है ?

(अ) ढाक के जंगल दहकते है (ब) वन फूलों से लद जाते है

(स) पीले-पीलेपत्ते गिरने लगते हैं (द) उपर्युक्त सभी

VISION 100 NEEMKATHANA

17. बसन्त आया कविता में कवि की चिन्ता क्या है ?

(अ) पलाश के जंगलों में लगी (ब) पेड़ों से पत्तों का गिरना

(स) मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूटना (द) नवनिर्माण करना

18. तोड़ो कविता का मुख्य भाव या प्रतिपाद्य क्या है ?

(अ) नवसृजन या सृजनात्मकता या नवनिर्माण के लिए प्रेरित करना (ब) विध्वंस करने के लिए प्रेरित

(स) जिन्दगी में धन प्राप्त करने की प्रेरणा देना (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. गोड़ो गोडो गोडो से कवि क्या कहना चाहता है

(अ) मन की खीझ को खत्म करना (ब) आधे गाने की बात

(स) धरती गोड़कर उपजाऊ बनाना (द) अ और ब दोनों

20. कवि के अनुसार मन के मैदान पर क्या व्याप्त है ?

(अ) दूब (ब) घास (स) मिट्टी (द) ऊब

21. रघुवीर सहाय निम्न में से किस पत्रकारिता से जुड़े हुए नहीं थे ?

(अ) प्रतीक (ब) नवभारत टाइम्स (स) कल्पना (द) दिनमान

उत्तरमाला

1. अ 2. ब 3. द 4. अ 5. स 6. ब 7. ब 8.द 9. स 10. ब 11. द 12. स 13. ब 14. स 15. ब 16. द 17. स 18. अ 19. अ 20.द 21. ब

VISION 100 NEEMKATHANA

तुलसीदास

1. तुलसीदास का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) उत्तरप्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में 1532 में

(ब) उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुरगाँव में 1632 में

(स) उत्तरप्रदेशके बाँदा जिले के राजापुर गाँव में 1623 में

(द) उत्तरप्रदेश के अमेठी में 1492 में

2. तुलसीदास के गुरू का क्या नाम था ?

(अ) रामानन्द (ब) रैदास (स) नरहरिदास (द) वल्लभाचार्य

3. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना 1574 में किस स्थान पर लिखना प्रारम्भ किया ?

(अ) काशी (ब) चित्रकुट (स) राजापुर (द) अयोध्या

4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'समन्वय की विराट चेष्टा का कवि किसे कहा है ?

(अ) केशवदास (ब) तुलसीदास (स) घनानन्द (द) जायसी

5. 'भरत-राम का प्रेम' शीर्षक पद रामचरितमानस के किस काण्ड या भाग से लिया गया है ?

(अ) बालकाण्ड (ब) अरण्यकाण्ड (स) अयोध्याकाण्ड (द) उत्तरकाण्ड

6. भरत-राम का मिलाप हुआ था

(अ) अयोध्या में (ब) पंचवटी में (स) चित्रकूट में (द) लंका में

7. कहब मोर मुनिनाथ निबाहा पद में मुनिनाथ शब्द किसके लिए आया है ?

(अ) गुरु विश्वामित्र के लिए (ब) गुरु वरिष्ठ के लिए (स) राजा जनक के लिए (द) राम के लिए

8. भरत-राम का प्रेम तुलसीदास कृत साहित्य किस भाषा में लिखा गया है ?

(अ) ब्रजभाषा (ब) खड़ीबोली (स) अवधी (द) मगही

9. भरत सभी अनर्थों का मूल किसे मान रहे है ?

(अ) खुद को (ब) कैकई को (स) सुमित्रा का (द) राजा दशरथ

10. अयोध्या में दुर्बल हो रहे घोड़ो के लिए राम को वापस आने के लिए कौन कहता है?

(अ) रानी कैकई (ब) सुमंत (स) रानी कौशल्या (द) निषादराज

11. भरत ने किसे अपने उद्धारक रूप में देखा ?

(अ) साधुओं को (ब) गुरु विश्वामित्र को (स) वशिष्ठमुनि को (द) श्रीराम को

12. भक्तिकाल के सगुण भक्ति-धारा के रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है |

(अ) सूरदास (ब) कबीरदास (स) तुलसीदास (द) मीरबाई

13.गीतावली की भाषा है |

(अ) ब्रज (ब) अवधी (स) मैथिली (द) संस्कृत

14.नीरज-नयन नेह जल बाढे पंक्ति में अलंकार है |

(अ) श्लेष (ब) उपमा (स) रुपक (द) भ्रान्तिमान

15. फरह कि कौन्दव बाली सुसाली। मूकता प्रसव की संबुक काली। पंक्ति में अलंकार है |

(अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा (स) वक्रोक्ति (द) श्लेष

16. प्रीति सिखी-सी तथा चित्रलिखी-सी पंक्ति में अलंकार है |

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) उपमा (ब) रूपक (स) अनुप्रास (द) उत्प्रेक्षा

17. तदपि दिनहि दिन होत झावरे मनहु कमल हिम मारे रेखांकित पंक्ति में अलंकार है |

(अ) उपमा (ब) उत्प्रेक्षा (स) रूपक (द) अनुप्रास

18. गीतावली' शीर्षक रचना से अवतरित पदों में किस रस ही प्रधानता है ?

(अ) श्रृंगार रस (ब) शांत रस (स) वात्सल्य रस (द) रौद्र रस

19. भरत ने श्रीराम के सम्मुख अपने किस भाव को कभी प्रदर्शित नहीं किया ?

(अ) स्नेह (ब) भय (स) लालसा (द) क्रोध

20. भरत के अनुसार स्वयं को साधु तथा अपनी माता को नीच मानना किसके समान है

(अ) करोड़ो दुराचारों के समान (ब) न्याय के समान (स) शिष्टाचार के समान (द) सुकृत्य के समान

21. भरत अपने दुर्भाग्य को किसके समान बताते हैं

(अ) अथाह तालाब के समान (ब) कीचड़ के समान (स) अथाह सागर के समान (द) मोती के समान

22. श्रीराम वन कैसे गए थे ?

(अ) वनवासी वस्त्रों में (ब) राजसी वस्त्रों को त्यागकर (स) नंगे पैर (द) उपर्युक्त सभी

23. श्रीराम के वनगमन का साक्षी कौन रहा है ?

(अ) ब्रह्मा (ब) विष्णु (स) महेश (द) नारदमुनि

24. महि सकल अनर्थ कर मूला पंक्ति के माध्यम से भरत स्वयं को किसका दोषी मानते हैं ?

(अ) पिता की मृत्यु का (ब) माताओं की व्यग्रता (स) अयोध्यावासियों के शोक का (द) उपर्युक्त सभी का

25. श्रीराम के घोड़ो के कमजोर पड़ने का क्या कारण है

(अ) भोजन न मिलना (ब) कोड़ों की मार पड़ना (स) पर्याप्त देखभाल न होना (द) राम का वियोग

26. माता कौशल्या किसके सामने अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर रही है ?

(अ) भरत के (ब) पथिक के (स) दर्पण के (द) घोडे के

27. "जननि निरखति बान धनुहियाँ" में जननी शब्द प्रयुक्त हुआ है |

(अ) माता कैकई के लिए (ब) माता कौशल्या के लिए (स) माता सीता के लिए (द) माता सुमित्रा के लिए

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. द 4. ब 5. स 6. स 7. ब 8. स 9. अ 10. स 11. द 12. स 13. अ 14. स 15. स 16. अ 17. ब 18. स 19. अ 20. अ 21. स 22. द 23. स 24. द 25. द 26. ब 27.ब

VISION 100 NEEMKATHANA

मलिक मुहम्मद जायसी

1. मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) मधुबनी के बिस्पी गाँव में 1380 में (ब) अमेठी के निकट जायस गाँव में 1492 में

(स) अमेठी के निकट जायस गाँव में 1482 में (द) मधुबनी के बिस्पी गाँव में 1492 में

2. भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के प्रेममार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं ?

(अ) मलिक मुहम्मद जायसी (ब) घनानन्द (स) केशवदास (द) विद्यापति

3. मलिक मुहम्मद जायसी की प्रसिद्धी का आधार ग्रन्थ है अथवा प्रेमाख्यान परम्परा का सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य है

(अ) अखरावट (ब) आखिरी कलाम (स) पद्मावत (द) चित्रावत

4. मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने गुरु के रूप में किनका उल्लेख किया है

(अ) सैयद अशरफ (ब) शेख बुरहान (स) उपर्युक्त दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

5. पद्मावत (1540) की भाषा है

(अ) ठेठ अवधी (ब) ब्रज भाषा (स) मैथिली (द) अपभ्रंश

6. बिरह में नागमती के शरीर की कांति कैसी हो गई है ?

(अ) चन्द्रमा के समान सफेद (ब) दोपहर के समान गरम

(स) पलाश के फूलों के समान (द) पीले पत्तों के समान

7. नागमती अपने पति रत्नसेन का स्पर्श कैसे करना चाहती है ?

(अ) पक्षी बनकर उड़कर (ब) बादल बनकर उड़कर (स) राख बनकर उड़कर (द) पतंगा बनकर उड़कर

8. बारहमासा वर्णन जायसी के किस महाकाव्य से लिया गया है ?

(अ) अखरावट से (ब) पद्मावत के नागमती वियोग खण्ड से (स) आखिरी कलाम से (द) पदावली

9. बारहमासा में किसके वियोग का वर्णन किया गया है ?

(अ) रत्नसेन का (ब) जायसी का (स) उसकी प्रेमिका (द) नागमती का

10. नागमती ने विरह को किसकी संज्ञा दी है ?

(अ) साँप की (ब) कौए की (स) चिड़िया की (द) बाज की

11. नागमती की हड्डियाँ बिरह में किसकी तरह हो गई है ?

(अ) शंख की तरह खोखली (ब) बर्तन की तरह खोखली (स) बाज की तरह (द) रेत की तरह

12. नागमती अपने पति को क्या बनकर आने को कहती है, अपने हृदय पर बैठने के लिए-

(अ) बाज (ब) हवा (स) फूल (द) भंवरा

13. नागमती का खोया हुआ रूप रंग पुनः कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

(अ) रत्नसेन के लौट आने पर (ब) सोलह श्रृंगार करके

(स) सखियों से वार्तालाप करके (द) साज-सज्जा का ध्यान रखकर

14. नागमती के हृदय के राख होने का क्या कारण है ?

(अ) ग्रीष्म ऋतु (ब) अगहन का महीना (स) अग्नि में जल जाना (द) रत्नसेन का वियोग

15. नायिका की स्थिति किसकी तुलना में अत्यंत बुरी हो गई है ?

(अ) कोयल (ब) भंवरा (स) चकवी पक्षी (द) बाज

16. माघ महिने में नागमनी के विरह के आँसू किसके समान गिर रहे है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) हवा के (ब) पसीने के (स) पत्ते के (द) ओलों के

17. नागमती किसके माध्यम से अपने शरीर की छार को स्वामी के चरणों में अर्पण करने का सन्देश भेजती है ?

(अ) पवन (ब) घोडें (स) सखियाँ (द) सेवक

18. बारहमासा काव्यांश में कौनसे रस का प्रयोग हुआ है ?

(अ) श्रृंगार रस (ब) वियोग रस (स) करूण रस (द) संयोग रस

19. जायसी कृत पद्मावत में सिंघल देश की राजकुमारी का क्या नाम था ?

(अ) देवसेना (ब) रानी सिंगला (स) चन्द्रकांता (द) पद्मावती

20. 'जरै विरह ज्यों दीपक बाती' में कौन-सा अलंकार है

(अ) यमक अलंकार (ब) उत्प्रेक्षा (स) मानवीकरण (द) अनुप्रास

21. तू सो भँवर मोर जोबन फुलू में अलंकार है ?

(अ) उपमा (ब) रूपक (स) अनुप्रास (द) मानवीकरण

22. सियरि अगिनि बिरहिनी हिय जारा रेखांकित शब्द में अलंकार है ?

(अ) रूपक (ब) उपमा (स) विरोधाभास (द) उत्प्रेक्षा

23.विरह-सचान तथा विरह-कोकिला में अलंकार है ?

(अ) उत्प्रेक्षा (ब) उपमा (स) रूपक (द) अनुप्रास

24. नैन चुवहि जस माँहुट नीरू पंक्ति में अलंकार है ?

(अ) उत्प्रेक्षा (ब) उपमा (स) उदाहरण (द) अतिशयोक्ति

25. केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। पंक्ति में पटोरा से तात्पर्य है ?

(अ) कामं भावना (ब) रेशमी वस्त्र (स) तिनका (द) रजाई

26 एहि मास उपजै रस मूलू । रसमूलू से क्या आशय है ?

(अ) बर्फ जमना (ब) रजाई ओढना (स) काम-भावना (द) करुणा-कामना

27. गिय नहि हार रही होइ डोरा पंक्ति में अलंकार है ?

(अ) रूपक (ब) अतिशयोक्ति (स) वक्रोक्ति (द) उदाहरण

उत्तरमाला

1.ब 2. अ 3. स4. स 5. अ 6. द 7. स 8. ब 9. द 10. द 11. अ 12. द 13. अ 14. द 15. स 16. द 17. अ 18. ब 19. द 20. ब 21. अ 22. स 23. स 24. स 25.ब 26. स 27.ब

VISION 100 NEEMKATHANA

विद्यापति

1. विद्यापति का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) बिहार के मधुबनी के बिस्पी गाँव में 1380 में (ब) बिहार के मधुबनी के बिस्पी गाँव में 1480 में

(स) बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में 1492 में (द) उत्तर प्रदेश के अमेठी में 1380

2.मिथिला नरेश राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार कौन थे?

(अ) विद्यापति (ब) जायसी (स) केशवदास (द) घनानंद

3. आदिकाल और भक्तिकाल का सन्धि कवि किसे कहा जाता है?

(अ) जायसी (ब) घनानंद (स) विद्यापति (द) केशवदास

4. विद्यापति की रचना कौनसी है ?

(अ) कीर्तिलता (ब) कीर्तिपताका (स) पदावली (द) उपर्युक्त सभी

5. नायिका राधा पुष्प से भरे उद्यान को देखकर कृष्ण के वियोग में क्या करती है ?

(अ) खुशी से उछलने लगती है (ब) सखी को चिल्लाने लगती है

(स) उँगलियों से कान बन्द कर लेती है (द) बिरह के कारण नेत्र से आँसू पोंछने लगती है

6. विद्यापति को अभिनव जयदेव की उपाधि किसने प्रदान की ?

(अ) राजा शिवसिंह (ब) राजा वीर सिंह (स) राजा हरिसिंह (द) इनमें से कोई नहीं

7.मैथिल-कोकिल किसे कहा गया है ?

(अ) केशवदास (ब) विद्यापति (स) घनानन्द (द) कबीर

8. बिरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा है ?

(अ) बाज के समान (ब) बसन्त के समान (स) चतुर्दशी के चन्द्रमा के समान (द) कोकिल के समान

9. विद्यापति की पदावली की काव्यभाषा है ?

(अ) अवधी (ब) ब्रज भाषा (स) मैथिली (द) अपभ्रंश

10. मोर मन हरि हर लेगेल रे' पंक्ति में अलंकार है

(अ) उपमा (ब) रूपक (स) श्लेष (द) उत्प्रेक्षा

11. राधा किस महिने में कृष्ण के वियोग की पीड़ा को सहने में असमर्थ है?

(अ) सावन (ब) फाल्गुन (स) आषाढ़ (द) पौष

12. राधा का मन अपने साथ कौन ले गया हैं?

(अ) गोपियाँ (ब) उद्धव (स) कृष्ण (द) कवि विद्यापति

13. कवि नायिका को कृष्ण के किस मास तक वापस आ जाने की सांत्वना देते हैं ?

(अ) भादो (ब) सावन (स) पौष (द) कार्तिक

14. विद्यापति के पदों के आधार पर बताइए कि प्रेम कैसी वस्तु है ?

(अ) देखने की (ब) सुनने की (स) अनुभव की (द) स्पर्श की

15. राधा के मुख की उपमा किससे की गई है?

(अ) सरोवर से (ब) चाँद से (स) दर्पण से (द) कमल से

16. पुष्पित बागों को देखकर राधा की क्या प्रतिक्रिया होती है ?

(अ) प्रसन्नता से झूमने लगती है (ब) पुष्प तोडने लगती है

(स) पुष्प निहारने लगती है (द) आँखे बन्द कर लेती है

VISION 100 NEEMKATHANA

17. कोयल व भंवरों की आवाज सुनकर राधा क्या करती है ?
(अ) कान बंद कर लेती हैं (ब) मधुर स्वर में गाती है (स) रोने लगती है (द) चुपचाप सुनती है

18. राधा ने प्रेम की क्या विशेषता बताई है ?
(अ) प्रेम एक पवित्र बंधन है (ब) प्रेम में दो इंसान का मिलन होता है
(स) प्रेम प्रतिपल नया होता रहता है (द) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1. अ 2. अ 3. स 4. द 5. स 6. अ 7. ब 8. स 9. स 10. स 11. अ 12. स 13. द 14. स 15. द 16. (द) 17. अ 18. स

घनानंद

1. रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि या स्वच्छंद काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कौन है ?
(अ) घनानन्द (ब) देव (स) केशवदास (द) पद्माकर

2. घनानंद दिल्ली के किस बादशाह के मीर मुंशी थे
(अ) शिवसिंह के (ब) भवानी सिंह के (स) मुहम्मद शाह के (द) अकबर के

3. 'प्रेम का पीर' किस कवि को कहा जाता है
(अ) देव (ब) जायसी (स) घनानन्द (द) केशवदास

4. घनानंद की रचना कौनसी है
(अ) सुजान सागर (ब) विरह लीला (स) रसकेलि वल्ली (द) उपर्युक्त सभी

5. कवि घनानन्द की प्रेमिका कौन थी
(अ) रमणा देवी (ब) सुजान (स) मनोहरी देवी (द) नागमती

6. घनानन्द को साक्षात-रसमूर्ति किसने कहा है?
(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) आचार्य विश्वनाथ (स) गणपतिचन्द्र गुप्त (द) रामधारी सिंह दिनकर

7. घनानन्द किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे
(अ) राधावल्लभ (ब) निम्बार्क (स) शैव (द) वैष्णव

8. झूठी बत्यानि की पत्यानि ते उदास' पंक्ति में पत्यानि शब्द का अर्थ है ?
(अ) बातें (ब) विश्वास (स) प्रेमिका (द) सन्देश

9. अब ना घिरत घन आनन्द निदान को पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?
(अ) अनुप्रास (ब) रूपक (स) श्लेष (द) उत्प्रेक्षा

10. कवि घनानन्द सुजान प्रेमिका को क्या उपालम्भ देते है ?
(अ) सुजान (कृष्ण) मेरी (घनानंद) को पुकार को अनसुना कर रही है
(ब) सुजान घनानंद की निन्दा कर रही है
(स) सुजान कृष्ण की बातों की अनदेखी कर रखी है (द) उपर्युक्त सभी

11. घनानन्द की काव्यभाषा है
(अ) ब्रज (ब) अवधी (स) मगही (द) मैथिली

12. जान घन आनन्द यो मोही तुम्हें पैज परी पंक्ति में 'जान' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) घनानन्द के लिए (ब) सुजान के लिए (स) राजा के लिए (द) सुजान की सखी के लिए

13. घनानन्द का जन्म कब हुआ

(अ) 1673 (ब) 1555 (स) 1380 (द) 1678

14. कुकभरी मुकता में अलंकार है ?

(अ) अनुप्रास (ब) रूपक (स) विरोधाभास (द) यमक

15. घनानन्द के कवितों में किस रस की प्रधानता है ?

(अ) करुण रस (ब) वियोग श्रृंगार रस (स) शांतरस (द) भयानक रस

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. स4. द 5. ब 6. अ 7. ब 8. ब 9. स 10. अ11. अ 12. ब 13. अ 14. स 15. ब

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

1.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के अगोना गाँव में 1884 में (ब) उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 1986 में

(स) बिहार के पूर्णिया जिले में 1890 (द) हिमाचल प्रदेश के शिमला में 1884 में

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल मिर्जापुर के मिशन हाई स्कूल में किस विषय के अध्यापक रहे ?

(अ) हिंदी (ब) संस्कृत (स) चित्रकला (द) भूगोल

3. रामचन्द्र शुक्ल की कीर्ति का अक्षय स्रोत कौन-सा ग्रन्थ है

(अ) चिन्तामणि (ब) जायसी ग्रंथावली (स) भ्रमरगीत सार (द) हिन्दी साहित्य का इतिहास

4. प्रेमघन की छाया स्मृति पाठ हिंदी की किस विधा में लिखा गया है ?

(अ) आलोचना (ब) रिपोर्ताज (स) संस्मरणात्मक निबन्ध (द) रेखाचित्र

5. फारसी कवियों की उक्तियों को हिंदी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में किसे आनन्द आता था

(अ) रामचन्द्र शुक्ल को (ब) शुक्ल के पिता को (स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (द) केदारनाथ

6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमबन' से परिचय कहाँ हुआ?

(अ) कानपुर (ब) मिर्जापुर (स) हमीरपुर (द) इलाहाबाद

7. मिर्जापुर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के परम मित्र कौन रहते थे ?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) बदरीनारायण चौधरी (स) पण्डित केदारनाथ (द) रामनरेश त्रिपाठी

8. क्वीन्स कॉलेज में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सहपाठी कौन थे ?

(अ) बदरीनारायण चौधरी (ब) रामकृष्ण शर्मा (स) रामकृष्ण वर्मा (द) रामनरेश त्रिपाठी

9. बद्रीनारायण चौधरी मिर्जापुर का क्या अर्थ करते थे?

(अ) लक्ष्मीपुर (ब) धौलपुर (स) नारायणपुर (द) मिथिला

10.वे लोगो को प्राय: बनाया करते थे यहाँ वे शब्द किसके लिए आया है ?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) बदरीनारायण चौधरी (स) भगवानदास हालना (द) रामकृष्ण वर्मा

11.खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की' कवित की अन्तिम पंक्तियाँ किसने लिखी

(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) आचार्य नारायण दास

(स) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) आचार्य वामन गिरि

VISION 100 NEEMKATHANA

12. निम्नलिखित में कौनसी रचना आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की नहीं है ?

(अ) हिन्दी साहित्य का इतिहास (ब) मैला आंचल (स) रस मीमांसा (द) चिन्तामणि

13. बदरीनारायण चौधरी के व्यक्तित्व की विशेषताओं में शामिल नहीं है ?

(अ) रईसी (ब) अपूर्व वचन-भंगिमा (स) हास्य-व्यंग्य का पुट (द) कंजूसी

14. शुक्ल जी की मित्रमण्डली का नाम उर्दू-भाषी लोगों ने रख दिया था?

(अ) सन्देश मण्डली (ब) संदेह मंडली (स) निस्संदेह मंडली (द) भारतेन्दु मंडली

15.प्रेमघन जी किसे भाषा मानते थे

(अ) ब्राह्मी (ब) खरोष्ठी (स) नागरी को (द) इनमें से कोई नहीं

16.लता-प्रतान शब्द का अर्थ है ?

(अ) पत्थर की लता (ब) लता का फैलाव (स) लता का संकुचन (द) लता का अंकुरण

17.रामचन्द्र शुक्ल जी की मित्र मण्डली में शामिल नहीं थे ?

(अ) काशीप्रसाद जायसवाल (ब) भगवानदास हालना (स) उमाशंकर द्विवेदी (द) हरप्रसाद शास्त्री

18.'उर्दू बेगम्' पुस्तक लिखने वालों में शामिल नहीं थे ?

(अ) लक्ष्मीनारायण चोबे (ब) भगवानदास हालना (स) भगवानदास मास्टर (द) यक्षदत शर्मा

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. द 4. स 5. ब 6. ब 7. ब 8. स 9.अ 10. ब 11. द 12. ब 13. द 14. स 15. स
16. ब 17. द 18. द

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

1. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) पुरानी बस्ती, जयपुर में,1883 (ब) पुरानी बस्ती, इलाहाबाद,1883

(स) पूर्णिया,बिहार 1885 (द) नई बस्ती, जयपुर, 1883

2. गुलेरी जी ने किस पत्रिका का सम्पादन नहीं किया था ?

(अ) समालोचक (ब) मर्यादा (स) नागरी प्रचारिणी पत्रिका (द) हंस

3. 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि प्राप्त लेखक है ?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) चन्द्रधर शर्मागुलेरी (स) फणीश्वरनाथ रेणु (द) भीष्म साहनी

4. निम्नलिखित में से चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी नहीं है ?

(अ) सुखमय जीवन (ब) बुद्धू का कांटा (स) कजाकी (द) उसने कहा था

5. गुलेरी जी का प्रिय विषय था

(अ) गुजराती (ब) भूगोल (स) प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व (द) राजनीति विज्ञान

6.'सुमिरिनी के मनके' किस विद्या में लिखा गया है ?

(अ) कहानी (ब) नाटक (स) लघु निबन्ध (द) रेखाचित्र

7. बालक बच गया लघु निबन्ध में बालक किसका पुत्र था ?

(अ) मास्टर का (ब) प्रधानाध्यापक का (स) मालिक का (द) पडोसी का

8. ढेले चुन लो वृतांत में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के किस नाटक का उल्लेख किया गया है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) अन्धेर नगरी (ब) मुद्राराक्षस (स) दुर्लभबंधु (द) भारत दुर्दशा

9.घड़ी के दृष्टान्त से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है ?

(अ) धर्म उपदेशकों पर (ब) राजनीतिज्ञों पर (स) समाज सुधारकों पर (स) पुरातत्त्व विद्वानों पर

10.निम्नलिखित में से किसने ढेलों की लाटरी का जिक्र नहीं किया है ?

(अ) आश्वलायन (ब) गोभिल (स) भारद्वाज (द) बदरी नारायण चौधरी

11.बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य है ?

(अ) स्त्री शिक्षा (ब) शिक्षा ग्रहण की सही उम्र (स) साक्षरता वृद्धि (द) इनमें से कोई नहीं

12.बालक ने सीखा-सीखाया कौन-सा उत्तर दिया-

(अ) मैं यावज्जन्म लोक सेवा करूँगा (ब) मैं यावज्जन्म पढ़ाई करूंगा

(स) मैं यावज्जन्म शिक्षण कार्य करूंगा (स) उपर्युक्त सभी

13.आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से। कथन किसका है?

(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) चन्द्रधरशर्मा गुलेरी

(स) आचार्य वात्स्यायन (द) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

14. ढेले चुन लो' लघु निबन्ध का प्रतिपाद्य है ?

(अ) रुढियों एवं अन्धविश्वासों का विरोध करना (ब) स्त्रीशिक्षा (स) साक्षरता में वृद्धि (द) धार्मिक आस्था

15. भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक दुर्लभबंधु की नायिका पुरश्री के सामने निम्नलिखित में से कौनसी पेटी नहीं रखी गई ?

(अ) सोने की (ब) चाँदी की (स) लोहे की (द) पीतल की

16. शिक्षा की अनुचित पध्दति से बालकों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(अ) स्वास्थ्य की हानि (ब) आत्मविश्वास की कमी

(स) शिक्षा के रचनात्मक स्वरूप के प्रति उदासीनता (द) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1. अ 2. द 3. ब 4. स 5. स 6. स 7. ब 8. स 9. अ 10. द 11. ब 12. अ 13. स 14. अ 15. द 16. द

फणीश्वर नाथ रेणु

1.फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म कब व कहाँ पर हुआ

(अ) बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना में 1921में (ब) बंगाल के महिषादल गाँव में,1922 मे

(स) उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में,1925 में (द) बिहार के गया में 1928 में

2. आंचलिक कथा के जनक माने जाते है

(अ) ब्रजमोहनव्यास (ब) अज्ञेय (स) फणीश्वरनाथ रेणु (द) आचार्य रामचन्द्रशुक्ल

3. फणीश्वरनाथ रेणु ने किस देश के राणाशाही विरोधी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

(अ) भूटान(ब) नेपाल (स) श्रीलंका (द) बांग्लादेश

4. फणीश्वरनाथ रेणु ने किस आन्दोलन में भाग लिया था?

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) सविनय अवज्ञा आन्दोलन (ब) असहयोग आन्दोलन (स) दाड़ी यात्रा (द) भारत छोड़ो आन्दोलन

5. रेणु जी की किस कहानी पर फिल्म बन चुकी है ?

(अ) आदिम रात्रि की महक (ब) ठुमरी (स) तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम (द) अगिनखोर

6. फणीश्वरनाथ रेणु जी को किस उपन्यास के कारण प्रसिद्धि मिली ?

(अ) परती परिकथा (ब) मैला आँचल (स) दीर्घतपा (द) जुलूस

7. फणीश्वरनाथ रेणु को कहा जाता है ?

(अ) आत्मा का शिल्प (ब) साहित्य का सूर्य (स) कलम का जादूगर (द) कलम का सिपाही

8. मैला आँचल कैसा उपन्यास है ?

(अ) आंचलिक (ब) ऐतिहासिक (स) जीवनी परक (द) आत्मकथात्मक

9. 'बहुरिया' शब्द है

(अ) देशज (ब) तत्सम (स) तद्भव (द) विदेशी

10. रोम-रोम कलपने लगा' से अभिप्राय है ?

(अ) अत्यन्त दुखी होना (ब) अत्यधिक सुखी होना (स) अत्यधिक चिंतित होना (द) अत्यधिक निराश होना

11. संवदिया कहानी एक जीवन्त चित्रण है ?

(अ) बालमन के दुःख और करुणा की (ब) नारी मन के दुःख और करुणा की

(स) पुरुष मन के दुःख और करुणा की (द) बुजुर्ग मन के दुःख और करूणा की

12. बड़ी हवेली की टूटी ड्योढी' के द्वारा लेखक ने इशारा किया है ?

(अ) समाज का सांस्कृतिक पतन (ब) समाज का वैचारिक पतन

(स) आर्थिक पतन (द) पतनशील सामंती व्यवस्था

13. बथुआ साग खाकर पीना' संकेत करता है

(अ) स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता (ब) आर्थिक विपन्नता (स) शाकाहारी होना (द) आर्थिक सम्पन्नता

14. हरगोविन को अचरज क्यों हुआ ?

(अ) बड़ी बहू के बुलावे से (ब) बड़ी बहू की दशा को देखकर

(स) बड़ी हवेली की टूटी ड्योढी को देखकर

(द) गाँव-गाँव में डाकघर होने के बावजूद भी संवदिया को बुलाने पर

15. हरगोबिन की नजर में बड़ी बहू गाँव की थी

(अ) मालकिन (ब) बेटी (स) लक्ष्मी (द) दुश्मन

16. कटिहार स्टेशन पर पहुँचकर हरगोबिन को लगा की-

(अ) सुराज आ गया है (ब) वह रास्ता भटक गया है

(स) वह बेकार इस झमेले में पड़ गया है (द) यहीं से लौट जाना चाहिए

17. संवरिया अपना सन्देश क्यो नहीं कह पाया?

(अ) वह भूल गया (ब) वह बड़ी बहू के भाइयों से डर गया

(स) इसमें उसे अपने गांव की बेईज्जती लगी (द) वह सबको गुमराह करना चाहता था

18. गाँव लौटकर संवदिया ने बड़ी बहू से क्या प्रार्थना की ?

(अ) वह मायके के बजाए कही और चलीजाएं (ब) वह गाँव छोड़कर कहीं न जाए

VISION 100 NEEMKATHANA

(स) वह हरगोविन के घर आ जाएँ (द) वह शहर में अपने देवरों के पास चली जाएं

19. संवदिया का अर्थ है ?

(अ) डाकिया (ब) संदेश वाहक (स) घुड़सवार (द) रक्षक

20. अंचल शब्द से अभिप्राय है -

(अ) एक जिला विशेष (ब) एक राज्य विशेष (स) एक क्षेत्र विशेष (द) एक देश विशेष

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. ब 4. द 5. स 6. ब 7. अ 8. अ 9. अ 10. अ 11. ब 12. द 13. ब 14. द 15. स 16. अ 17. स 18. ब 19. ब 20. स

भीष्म साहनी

1.भीष्म साहनी का जन्म कब व कहाँ हुआ ?

(अ) रावलपिंडी,1915 (ब) लाहौर,1911 (स) पटियाला,1921 (द) जालंधर,1914

2. भीष्म साहनी का कौनसा उपन्यास भारत-पाकिस्तान के विभाजन पर आधारित है ?

(अ) बसन्ती (ब) झरोखे (स) तमस (द) कुन्तो

3. भीष्म साहनी को किस उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(अ) तमस (ब) कड़ियाँ (स) झरोखे (द) कुंतों

4. विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को के अनुवादक के पद पर सात वर्ष कार्यरत रहे ?

(अ) अज्ञेय (ब) भीष्म साहनी (स) निर्मल वर्मा (द) रेणु

5. भीष्म साहनी की पं. नेहरू जी से भेंट कहाँ पर हुई थी ?

(अ) सेवाग्राम (ब) वर्धा (स) कश्मीर (द) जयपुर

6. कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन कब हुआ था ?

(अ) 1935 (ब) 1936 (स) 1937 (द) 1938

7. 'नयी तालीम' पत्रिका के सह-सम्पादक थे ?

(अ) भीष्म साहनी (ब) बलराज साहनी (स) शेख अब्दुला (द) नेहरू जी

8. मिस्टर जॉन कौन थे ?

(अ) रावलपिंडी के जाने माने बैरिस्टर (ब) गांधीजी के सलाहकार

(स) गाँधी जी के निजी सचिव (द) भीष्म साहनी के मित्र

9. लेखक भीष्म साहनी ने गांधीजी को पहली बार कहाँ देखा था ?

(अ) साबरमती (ब) सेवाग्राम (स) अहमदाबाद (द) दिल्ली

10. यास्सेर अराफात किस देश की अस्थायी सरकार के रूप में कार्य कर रहे थे ?

(अ) ईरान (ब) पाकिस्तान (स) फिलिस्तीन (द) ईराक

11. कश्मीर की किस नदी पर नेहरू जी की शोभा यात्रा हुई थी ?

(अ) सिन्धु नदी (ब) यमुना नदी (स) गंगा नदी (द) झेलम नदी

12. सेवाग्राम में लेखक भीष्म साहनी को किन-किन देशभक्तों से मिलने का मौका मिला ?

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) पृथ्वी सिंह आजाद (ब) मीरा बेन (स) खान अब्दुल गफ्फार खान (द) उपर्युक्त सभी

13 लेखक भीष्म साहनी सेवाग्राम क्यों गए थे ?

(अ)अपने भाई के साथ समय बिताने के लिए (ब) गांधीजी से मिलकर बात करने के लिए

(स) पर्यावरण का अनुभव करने के लिए (द) अपने विचारों को बढ़ाने के लिए

उत्तरमाला

1.अ 2. स 3. अ 4. ब 5. स 6. द 7. ब 8. अ 9. ब 10. स 11. द 12. द 13. अ

असगर वजाहत

1. निम्नलिखित में से असगर वजाहत का कहानी संग्रह है ?

(अ) दिल्ली पहुँचना है (ब) स्विमिंग पूल (स) आधी बानी (द) उपर्युक्त सभी

2. शेर,पहचान,चार हाथ और साझा पाठ कौनसी विधा में है ?

(अ) लघुकथाएँ (ब) संस्मरण (स) निबन्ध (द) रेखाचित्र

3. 'शेर' कैसी लघु कथा है ?

(अ) प्रतीकात्मक और मनोरंजक (ब) आदर्शात्मक

(स) दृश्यात्मक और प्रतीकात्मक (द) प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक

4. शेर' किसका प्रतीक है ?

(अ) राजा (ब) प्रजा (स) व्यवस्था (द) आम जनता

5. शेर के पेट में जंगल के सभी जानवर किस कारण समाते चले जा रहे थे ?

(अ) मूर्खता (ब) प्रलोभन (स) अन्धविश्वास (द) भय के कारण

6. जानवर किसका प्रतीक है

(अ) आम जनता का (ब) व्यवस्था का (स) सत्ता का (द) इनमें से कोई नहीं

7. गधे को क्या लालच दी गई ?

(अ) शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है (ब) शेर के मुँह में महल है

(स) शेर के मुँह में गाजर है (द) शेर के मुँह में घास का मैदान है

8. प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण क्या है ?

(अ) जीवन (ब) सत्ता (स) विश्वास (द) अन्धविश्वास

9. शेर का मुँह क्या है ?

(अ) रोजगार का दर्शन (ब) घास का मैदान (स) छलावा मात्र (द) इच्छाओं की पूर्ति का माल

10. राजा ने पहला हुकुम क्या निकाला ?

(अ) राज्य में सब लोग अपने कान बंद रखेंगे (ब) राज्य में सब लोग अपना हाथ कटवा दे

(स) राज्य में सब लोग अपनी आँखें बंद रखेंगे (द) इनमें से कोई नहीं

11. जागरुक जनता के प्रतीक कौन थे ?

(अ) खैराती,रामू,छिददू (ब) राजा,शंकर,छिददू (स) शंकर, भुवन, राम (द) आम जनता और राजा

12. चार हाथ लघुकथा क्या उजागर करती है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

(अ) पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों की मदद (ब) मजदूरों की भलाई

(स) पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों को उचित लाभ (द) पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों का शोषण

13. पूंजीपति अपने लाभ के लिए क्या करते हैं ?

(अ) मजदूरों को अधिक वेतन देते है (ब) मजदूरों का शोषण करते है

(स) मशीन का प्रयोग करते है (द) मजदूरों का सहयोग करते है

उत्तरमाला

द 2. अ 3. द 4. स 5. ब 6. (अ) 7. द 8. स 9. स 10. स 11. अ 12. द 13. ब

निर्मल वर्मा

1.निर्मल वर्मा का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

(अ) रावल पिंडी,1915 (ब) शिमला,1929 (स) लाहौर,1911 (द) इलाहाबाद,1929

2. निर्मल वर्मा को किस कहानी संग्रह के लिए 1985 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(अ) परिंदे (ब) जलती झाडी (स) कव्वे और काला पानी (द) तीन एकांत

3. जहाँ कोई वापसी नहीं यात्रा वृतान्त किस संग्रह से लिया गया है ?

(अ) धुंध से उठती धुन (ब) हर बारिश (स) चीड़ों पर चाँदनी (द) कला का जोखिम

4. निर्मल वर्मा की परिंदे कहानी को प्रथम नई कहानी किसने माना है ?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) नामवर सिंह (स) रामस्वरूप चतुर्वेदी (द) अज्ञेय

5. निम्नलिखित में से निर्मल वर्मा का निबन्ध संग्रह नहीं है

(अ) शब्द और स्मृति (ब) कला का जोखिम (स) ढलान से उतरते हुए (द) अंतिम अरण्य

6. जहाँ कोई वापसी नहीं पाठ के लेखक कौन है ?

(अ) निर्मल वर्मा (ब) केदारनाथ सिंह (स) अज्ञेय (द) निराला

7. जहाँ कोई वापसी नहीं पाठ में किस गाँव का उल्लेख हुआ है ?

(अ) अमझर (ब) मिर्जापुर (स) करणपुर (द) मालवा

8. आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किनको कहा गया है ?

(अ) बांग्लादेशियों को (ब) नेपालियों को (स) विस्थापित लोगों को (द) विदेशियों को

9. खैरवार जाति के राजा सिंगरौली में कब राज किया करते थे ?

(अ) 1926 से पूर्व (ब) 1926 के बाद (स) 1945 में (द) 1826 से पूर्व

10. लोकायन संस्था क्या करने सिंगरौली गयी थी ?

(अ) पेड़ कटाई देखने (ब) पानी देखने (स) आम लेने (द) विकास का जायजा लेने

11. सिंगरौली का नाम पुरानी दंतकथा के अनुसार क्या था ?

(अ) सृंगावली (ब) नवागाँव (स) अमझर गाँव (द) सुल्तानपुर

12. विंध्याचल की पर्वत-मालाओं,चारों ओर फैले घने जंगलों,तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण सिंगरौली को क्या कहा जाता था ?

(अ) कालापानी (ब) अमझर (स) बैकुण्ठ (द) स्वर्ग

VISION 100 NEEMKATHANA

13. यातायात आदि सुख-सुविधा के साधनों से शून्य होने तथा दुर्गम वन भूमि होने के कारण सिंगरौली को क्या कहा जाता था?

(अ) बैकुंठ (ब) काला पानी (स) नवागांव (द) अमझर

14. अमझर शब्द का क्या अर्थ है ?

(अ) आम के पेडों से घिरा हुआ गाँव (ब) आम के पेड़ों की कटाई

(स) आम के बौर आना (द) अमरौली प्रोजेक्ट

15. नवागाँव क्षेत्र कितने छोटे-छोटे गांवों से मिलकर बना क्षेत्र है ?

(अ) 15 गाँव (ब) 18 गाँव (स) 9 गाँव (द) 12 गाँव

उत्तरमाला

1.ब 2. स 3. अ 4. ब 5. द 6. अ 7. अ 8. स 9. अ 10. द 11. अ 12. स 13. ब 14. अ 15. ब

ममता कालिया

1.ममता कालिया का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

अ. मथुरा,1940 ब. आगरा,1940 स. शिमला,1940 द. प्रयाग,1940

2.पच्चीस साल की लड़की, थियेटर रोड के कौवे कहानी-संग्रह किसके है ?

अ. रामविलाम शर्मा ब. हजारी प्रसार द्विवेदी स. ममता कालिया द. भीष्म साहनी

3.'दूसरा देवदास' कहानी के लेखिका कौन है?

अ. ममता कालिया ब. असगर वजाहत स. भीष्म साहनी द. रामविलास शर्मा

4. दूसरा देवदास कहानी में मन्नू की बुआ का क्या नाम है ?

अ. पारो ब. मोदिआइन स. संभव द. मनोहरी

5. दूसरा देवदास कहानी में लेखिका ने किस परिवेश को केन्द्र में रखा है ?

अ. प्रयाग ब. गोवर्धन स. हर की पौड़ी,हरिदार द. झेलम नदी क्षेत्र

6. 'गंगापुत्र' किसे कहा गया है ?

अ. गंगासिंह के पुत्र को ब. गोताखोर को स. गंगा देवी के पुत्र को द. उपर्युक्त सभी को

7. 'दूसरा देवरास' कहानी क्या प्रदर्शित करती है ?

अ. युवा मन की हलचल ब. युवा मन का दुःख स. युवा मनुष्य का पतन द. उपर्युक्त सभी

8. मनसा देवी के मंदिर में लोग क्यों जाया करते थे ?

अ. दर्शन करने ब. घूमने स. पहाड़ों को देखने द. मनोकामना की गाँठ बाँधने

9. संभव ने मनसा देवी के मन्दिर में किसके लिए मनोकामना की गाँठ बाँधी ?

अ. पुजारी से पैसे लेने की ब. लड़की से पुनः मिलन की

स. सिविल सर्विसेज में पास होने को की द. नानी के स्वास्थ्य की

10. दूसरा देवदास कैसी कहानी है ?

अ. उत्साहवर्धन की ब. ईश्वरीय आस्था की स. प्रतियोगी परीक्षाओं की द. प्रेम की

11. संभव बैचेन क्यों था ?

अ. लड़की के अशिष्ट व्यवहार के कारण ब. लड़की से छोटी-सी मुलाकात के कारण

VISION 100 NEEMKATHANA

स. पण्डित के कारण द. इनमें से कोई नहीं

12. संभव को एक अनूठा अनुभव कौन-सी घटना करा रही थी ?

अ. पुजारी का गलत समझना ब. पुजारी का आशीर्वाद देना

स. लड़की का घबराकर चले जाना द. उपर्युक्त सभी

13. दिल्ली की भीड़ और हर की पौड़ी की भीड़ में क्या अन्तर था ?

अ. समानता और असमानता का ब. बिखराव और एक-सूत्रता का

स.सामाजिक और विद्रोही की द. उपर्युक्त सभी

14. दूसरा देवदास कहानी में अज्ञात यौवना शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

अ. संभव की नानी ब. इक्कीस दोने तैराने वाली महिला

स. नायिका पारो द. घाट पर घूमने वाली किशोरी

15. संभव किस प्रतियोगिता में बैठने वाला था ?

अ. एम.ए ब. सिविल सर्विसेज स. एस.एस.सी. द. बी.ए.

16. निम्न में से ममता कालिया द्वारा रचित उपन्यास कौनसा हैं ?

अ. बेघर, नरक दर नरक ब. एक पत्नी के नोट्स स. लड़कियां,दौड़ द. उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

अ 2. स 3. अ 4. अ 5. स 6. ब 7. अ 8. द 9. ब 10. द 11.ब 12. द 13. ब 14. स 15. ब 16. द

हजारी प्रसाद द्विवेदी

1.हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब व कहाँ पर हुआ ?

अ. आरत दुबे का छपरा गाँव,1907 ब. प्रयाग,1908

स. पुरानी बस्ती,इलाहाबाद 1905 द. कानपुर,1911

2. हजारीप्रसाद द्विवेदी को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1930 में कौनसी उपाधि प्राप्त हुई ?

अ. पी.एच.डी. ब. आयुर्वेदाचार्य स. ज्योतिषाचार्य द. हिन्दूपत

3. हजारीप्रसाद द्विवेदी को किस निबन्ध-संकलन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

अ. अशोक के फूल ब. कुटज स. कल्पलता द. आलोक पर्व

4. निम्न में से हजारीप्रसाद द्विवेदी का निबन्ध संकलन है ?

अ. अशोक के फूल ब. आलोक पर्व स. कुटज,कल्पलता द. उपर्युक्त सभी

5. निम्न में से हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास है ?

अ. बाणभट्ट की आत्मकथा ब. अनामदास का पोथा स. चारुचन्द्रलेख,पुनर्नवा द. उपर्युक्त सभी

6. हजारी प्रसाद द्विवेदी की समस्त रचनाएं हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली के नाम से कितने खंडो में संकलित है

अ. 10 खण्डों में ब. 15 खण्डों में स. 12 खण्डों में 9 खण्डों में

7. हिंदी साहित्य की भूमिका,कालिदास की लालित्य योजना आलोचनात्मक ग्रन्थ किस लेखक का है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. ममता कालिया ब. हजारीप्रसाद द्विवेदी स. क्षितिमोहन सेन द. रामचन्द्र शुक्ल

8. गाढ़े का साथी/उजाड़ के साथी लेखक ने किसे कहा है?

अ. शिरीष के फूल को ब. अशोक के फुल को स. कुटज को   द. उपर्युक्त सभी को

9. अपराजेय जीवन शक्ति का प्रतीक कौनसा वृक्ष है ?

अ. कुटज   ब. आम   स. चीड   द. आरग्वध

10. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत भाषा को कैसी भाषा बताया है ?

अ. सर्वप्रिय   ब. सर्वग्रासी   स. सर्वहितकारी   द. उपर्युक्त सभी

11. कुटज को पौरुष व्यंजक नाम दिया गया है ?

अ. अकूतोभय, गिरिगौरव   ब. कुटोल्लास, अपराजित

स. धरती धकेल, पातालभेद, पहाड़फोड   द. उपर्युक्तसभी

12. कुटज के स्त्री-व्यंजक नाम है?

अ. सुस्मिता, गिरिकांता ब. वनप्रभा, शुभ्राकरीटिनी स. अलकावसंता, विजितातपा द. उपर्युक्त सभी

13. 'कुटज' किस मुनि को कहा जाता है

अ. अगस्त्य मुनि ब. नारद मुनि   स. वात्स्यायन   स. रहीम

14. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति । अर्थात सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं। यह उक्ति किसका है

अ. अगस्त्य मुनि   ब. याज्ञवलक्य   स. नारद मुनि   द. वात्स्यायन

15. हृदयेनापराजित' लेखक ने किसे कहा है ?

अ. शिरीष   ब. कुटज   स. अशोक   द. आरग्वध

16. 'कुट' शब्द का क्या अर्थ है ?

अ. घड़ा   ब. घर   स. दोनों   द. इनमें से कोई नहीं

17. संस्कृत में कुटिहारिका और कुटकारिका किसे कहा गया है ?

अ. दासी   ब. आम   स. नायक   द. कुटज

18. जीना भी एक कला है। यह पंक्ति किस पाठ से उद्धृत है ?

अ. कुटज   ब. शिरीष के फूल   स. दूसरा देवदास   द. जहाँ कोई वापसी नहीं

19. शिवालिक क्या है ?

अ. शिव की जटा   ब. पर्वत श्रेणी   स. नदियों का समूह   द. पेड़-पौधों का झुण्ड

20. 'कुटज' किस कोटि का निबन्ध है ?

अ. विवरणात्मक   ब. विश्लेषणात्मक   स. ललित   द. विवेचनात्मक

21. रूप व्यक्ति सत्य है और नाम है-

अ. स्वयं   ब. समाज   स. दुनिया   द. व्यक्ति

22. लेखक ने किसे शोभा-निकेतन कहा है ?

अ. कुटज को   ब. समुद्र को   स. पर्वत को   द. हिमालय पर्वत को

23. संस्कृत भाषा में फूलो, वृक्षों और खेत,बागवानी के अधिकांश शब्द किस भाषा के परिवार के है ?

अ. कॉल भाषा   ब. दक्षिणी पूर्वी   स. ऑस्ट्रो-एशियाटिक   द. अग्नि कोण

24. मनस्वी मित्र, तुम धन्य हो मनस्वी मित्र का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. कुंभज मुनि के लिए ब. द्विवेदी जी के लिए स. कुटज के लिए द. ऋषि मुनि के लिए

25. हजारी प्रसाद द्विवेदी किस उपनाम से भी जाने जाते है ?

अ. विष्णुकांत शास्त्री ब. व्योमकेश शास्त्री स. लाल बहादुर शास्त्री द. वैद्यनाथ मिश्र

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. द 4. द 5. द 6. स 7. ब 8. स 9. अ 10. ब 11. द 12. द 13. अ 14. ब 15. ब 16. स 17. अ 18. अ 19. ब 20. स 21. ब 22. स 23. द 24. स 25. ब

सूरदास की झोपड़ी (प्रेमचंद)

1. सूरदास की झोपड़ी पाठ प्रेमचन्द के किस उपन्यास से लिया गया है ?

अ. कर्मभूमि ब. रंगभूमि स. गबन द. गोदान

2. चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता' कथन किसका है ?

अ. जगधर ब. नायक राम स. ठाकुरदीन द. सूरदास

3. 'तुम मुझ पर नाहक सुभा करते हो' कथन किसका है ?

अ. बजरंगी ब. नायक राम स. जगधर द. सूरदास

4. गरीब की हाय बड़ी जानलेवा होती है | कथन किसका है ?

अ. सूरदास ब. नायक राम स. बजरंगी द. जगधर

5. झोपड़ी की आग को किस आग के समान बताया गया है ?

अ. प्रेम की आग के समान ब. विरह की आग के समान

स. ईर्ष्या की आग के समान द. विजय की आग के समान

6. सूरदास को किसके जल जाने का ज्यादा दुख था ?

अ. झोपड़ी के जल जाने का ब. बर्तनों के जल जाने का स. पोटली के जल जाने का द. उपर्युक्त सभी

7. सूरदास की अभिलाषाएँ क्या थी ?

अ. पितरों का पिण्डदान करना ब. मिठुआ का ब्याह करना

स. गाँव के लिए एक कुआँ बनवाना द. उपर्युक्त सभी

8. भैरों को सूरदास के प्रति उकसाने का कार्य किसने किया ?

अ. मोहल्ले वालों ने ब. जगधर ने स. मिठुआ ने द. सुभागी ने

9. सूरदास की पोटली किसने चुराई थी

अ. भैरों ने ब. जगधर ने स. नायकराम ने द. मिठुआ ने

10. जगधर के मन में ईर्ष्या का भाव क्यों उत्पन्न हुआ ?

अ. धन के लालच के कारण ब. इज्जत के कारण

स. खुद को अच्छा बताने के कारण द. इनमें से कोई नहीं

11. तुम खेल-खेल में रोते हो। यह बात किसने किससे कहीं ?

अ. घीसू ने मिठुआ से ब. मिठुआ ने सूरदास से स. सूरदास ने जगधर से द. सुभागी ने भैरों से

12. सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा इसका क्या कारण था ?

अ. झोपड़ी की राख को साफ करना चाहता था ब. राख से खेलना चाहता था

VISION 100 NEEMKATHANA

स. जीवन मर्म समझने के कारण उसका दुःख समाप्त हो गया था   द. इनमें से कोई नहीं

13. 'छाती पर साँप लौटना' मुहावरे का क्या अर्थ है ?

अ. खुश होना   ब. साँप से डरना   स. ईर्ष्या करना   द. प्रशंसा करना

14. झोपड़ी जलने पर सूरदास की दशा कैसी थी ?

अ. आश्चर्यजनक   ब. नैराश्यपूर्ण   स. आशापूर्ण   द. इनमें से कोई नहीं

15. निद्रा अवस्था में भी..........जगती रहती है ?

अ. आत्मा   ब. उपचेतना   स. पीड़ा   द. आँख

16. <u>तो हम सौ लाख बार बनाएंगे</u> इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास का चरित्र किस प्रकार का है ?

अ. हार न मानने की प्रवृति/पुनर्निमाण में विश्वास ब. आलसी स. अहंकारी द. निराशावादी

17. सुभागी कहाँ छिपकर बैठी थी ?

अ. घर के पीछे   ब. सूरदास के घर में   स. अपने घर में   द. अमरुद के बाग में

18. सूरदास अपनी आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त क्यों रखता चाहता था क्योंकि-

अ. वह सभी से पोटली के राज को गुप्त रखना चाहता था

ब. वह जगधर को पोटली के बारें में नहीं बताना चाहता था

स. एक गरीब के पास इतने पैसे होना लज्जा की बात है द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. अंधे भिखारी के लिए दरिद्रता इतनी लज्जा की बात नहीं जितना की......

अ. घर   ब. धन   स. बर्तन   द. इज्जत

20. सूरदास की पोटली में कितने पैसे थे ?

अ. हजार रुपये   ब. पाँच सौ रुपये से ऊपर   स. सौ रुपये   द. पाँच सौ रुपये

21. सुभागी ने सूरदास के पैसे लौटाने का वादा क्यों किया ?

अ. क्योंकि उसे लगा कि सूरदास के ऊपर विपत्ति उसी के कारण आई है

ब. क्योंकि उससे सूरदास की दशा देखी नहीं जा रही थी

स. क्योकि पैसे उसके पति भेरों ने चुराए थे   द. उपर्युक्त सभी

22. सूरदास अपने पुत्र और उसके मित्रों की बात सुनकर इस जीवन को क्या मान लेता है ?

अ. युद्ध   ब. अतीत   स. खेल   द. परिश्रम

23. सूरदास के मन में अचानक से आशा की किरण किस प्रकार जगी ?

अ. खेलते हुए बच्चो की बात सुनकर- तुम खेल में रोते हो   ब. उसके अंतर्मन से

स. अपनी दैन्य स्थिति को देखते हुए   द. इनमें से कोई नही

24. निम्नलिखित में से सूरदास की चारित्रिक विशेषता है ?

अ. पुनर्निर्माण में विश्वास   ब. कर्मठ व्यक्तित्व, सहनशील

स. संकल्प का धनी, आशावादी   द. उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1. ब 2. ब 3. स 4. द 5. स 6. स 7. द 8. ब 9. अ 10. अ 11. अ 12. स 13. स 14. स 15. ब 16. अ 17. द 18. स 19. ब 20. ब 21. अ 22. स 23. अ 24. द

VISION 100 NEEMKATHANA

विश्वनाथ त्रिपाठी (बिस्कोहर की माटी)

1. बिस्कोहर की माटी पाठ विश्वनाथ त्रिपाठी की किस आत्मकथा का अंश है ?

अ. नंगातलाई का गाँव ब. लोकवादी तुलसीदास स. हिंदी आलोचना द. देश के इस दौर में

2. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ किस विधा से लिया गया है ?

अ. यात्रा-वृतान्त ब. निबन्ध स. संस्मरण द. आत्मकथा

3. आत्मकथा' नंगातलाई का गाँव' का नायक कौन है ?

अ. अमरनाथ ब. विसनाथ स. शिवनाथ द. जगन्नाथ

4. कोइयाँ किसे कहते हैं ?

अ. कमल ब. मखाना स. जलकुंभी द. कुमुद

5. लेखक के नंगातलाई का गाँव में शरद ऋतु में कौनसे फूल खिलते है ?

अ. गुलाब ब. कोकाबेली स. जूही द. हरसिंगार

6. बिसनाथ को कौन-सी बात देर से समझ में आई ?

अ. बतख अंडे देने के समय पानी से जमीन पर आ जाती है

ब. बतख अंडे देने के समय पानी से पेड़ पर बैठ जाती है

स.बतख अण्डे देने के समय झुरमुट में छिप जाती है द. इनमें से कोई नहीं

7. बिसनाथ ने माँ की तुलना बतख से क्यों की है ?

अ. अपनी नजरों के सामने रखने से ब. उसके खाने-पीने का ध्यान रखने के कारण

स. उसकी देखभाल करने के कारण द. बच्चों के प्रति सतर्क रखने के कारण

8. विसनाथ के लिए क्या अत्याचार हो गया था ?

अ. अण्डों का नष्ट हो जाना ब. सब्जियों का ख़राब हो जाना

स. छोटे भाई द्वारा माँ का दुग्ध-पान करना द. फूलो का अचानक कुम्हलाना

9. बिसनाथ किसके साथ चाँद की चाँदनी का रसपान करता था ?

अ. मौसी के साथ ब. पालतू पशुओं के साथ स. छोटे भाई के साथ द. कसेरिन दाई के साथ

10. लेखक की माँ उसकी आँखे आने पर कौन सा फल लगातीं थी ?

अ. काशीफल ब. शरीफा स. भरभंडा द. कटहल

11. किस साँप को धामन जाति का माना जाता था ?

अ. कोबरा ब. धामिन स. मजगिदवा द. डोंडहा

12. किस साँप को काटने से व्यक्ति हिनहिनाकर मरता है ?

अ. घोरकड़ाइच ब. धामिन स. मजगिदवा द. डोंडहा

13. किस साँप को मारा नहीं जाता तथा उसे साँपों की वामन जाति का मानते है ?

अ. मजगिदवा ब. डोंडहा स. घोरकड़ाइच द. कोबरा

14. सबसे खतरनाक गोंहुअन साँप को बिसनाथ के गाँव में क्या कहा जाता था ?

अ. डोंडहा ब. धामिन स. फेंटारा द. भटिहा

15. लेखक बिसनाथ के अनुसार पहली वर्षा में भीगने से क्या होता है ?

अ. कीड़े-मकोडे मर जाते हैं ब. फफोले पड़ जाते है

स. कई चर्म रोग हो जाते हैं द. खाज-खुजली,फोडे-फुंसी सब ठीक हो जाते है

VISION 100 NEEMKATHANA

16. निम्न में से विषहीन सर्प है ?

अ. डोंडहा   ब. मजगिदवा   स. धामिन   द. उपर्युक्त सभी

17. किस साँप के दो मुँह होते हैं ?

अ. गोंहुअन   ब. भटिहा   स. डोंडहा   द. मजगिदवा

18. विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा रचित 'व्योमकेश दरवेश' किस हिंदी साहित्यकार पर आधारित रचना है ?

अ. धर्मवीर भारती   ब. रामनरेश त्रिपाठी   स. रामकुमार वर्मा   द. हजारी प्रसाद द्विवेदी

19. बिस्कोहर के लोग फूलों की गंध से किसका संबंध जोडते है ?

अ. महामारी का   ब. देवी का   स. साँप का   द. ये सभी

20. लेखक ने अपने से दस वर्ष बड़ी औरत की सुन्दरता की तुलना किससे की है ?

अ. कुमुदिनी और कोइयाँ से   ब. जूही और चाँदनी से   स. देवी और देवता से   द. चाँद और कमल से

21. लेखक के गाँव में लू से बचने के लिए क्या उपाय किए जाते थे ?

अ. कपड़ों में प्याज की गाँठ बाँधना   ब. कच्चे आम को पकाकर आम रस बनाकर पीना

स. अ और ब दोनों   द. अपने साथ हमेशा ठंडा पानी रखना

22. बिसनाथ को अपनी माँ के पेट की गंध कैसी लगती थी ?

अ. रंग हल्दी मिलाई पूड़ी   ब. वनस्पतियों की उत्कृष्ट गंध   स. पसीने की बू   द. मिट्टी की गंध

23. माँ का दूध पीना लेखक को कैसा लगता था ?

अ. जड़ से चेतन होना   ब. जीवन जीना   स. भूख से तृप्ति   द. इनमें से कोई नही

24. कोइयाँ जिसे कुमुद या कोका-बेली भी कहते हैं वह है ?

अ. एक जलपुष्प   ब. एक जंगली जानवर   स. एक सब्जी   द. उपर्युक्त सभी

25. विसनाथ के गाँव में बैर के फूलों से किसका उपचार किया जाता है ?

अ. बरें,ततैया के डंक का   ब. चेचक का   स. लू का   द. उपर्युक्त सभी

26. कमल-पत्र को पुरइन तथा कमल के नाल को भसीण/ कमल ककड़ी किस गाँव में कहा जाता था ?

अ. नंगातलाई   ब. रामपुर   स. जनकपुर   द. खैरथल

27. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ कौन-सी शैली में लिखा गया है ?

अ. कथात्मक शैली   ब. तथ्यात्मक शैली   स. आत्मकथात्मक शैली   द. विवेचनात्मक शैली

28. 'बरहा' क्या होता है ?

अ. एक तरह का उड़ने वाला पतंग   ब. सांप का नाम

स. स्वादिष्ट भोजन का प्रकार   द. खेतों की सिंचाई के लिए बनाई गई नाली

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तरमाला

1.अ. 2. द 3. ब 4. द. 5. द 6. अ 7. द 8. स 9. द 10. स 11. द 12. अ 13. द 14. स 15. स 16. द 17. ब 18. द 19. द 20. ब 21. स 22. अ 23. अ 24. अ 25. अ 26. अ 27.स 28. द

प्रभाष जोशी (अपना मालवा खाऊ उजाड़ू सभ्यता में)

1. प्रभाष जोशी का अपना मालवा खाऊ-उजाड़ू सभ्यता पाठ जनसता के किस स्तम्भ से लिया गया है ?

अ. जनसत्ता स्तम्भ ब. कागद कारे स्तम्भ स. मालव स्तम्भ द. सभ्यता स्तम्भ

2. अपना मालवा खाऊ-उजाड़ू सभ्यता शीर्षक पाठ जनसत्ता में कब छपा था ?

अ. 1अक्टूबर 2006 ब. 1अक्टूबर 2005 स. 1अक्टूबर2009 द. 1अक्टूबर2007

3. डग-डग रोटी पग-पग नीर' किस क्षेत्र की विशेषता रही है ?

अ. हाडौती ब. मालवा स. भोराठ द. नाली

4. खाऊ उजाडू सभ्यता किसकी देन है ?

अ. अमेरिका की ब. यूरोप की स. अ तथा ब दोनों की द. इनमें से कोई नहीं

5. लेखक प्रभाष जोशी इस यात्रा वृतान्त में रेल द्वारा कहाँ से कहाँ तक यात्रा करते है ?

अ. भोपाल से छिंदवाडा ब. उज्जैन से इंदौर स. जबलपुर से इंदौर द. सतना से शिवपुरी

6. लेखक प्रभाष जोशी ने किस स्टेशन पर मीणा जी से बिना चीनी की चाय पी ?

अ. छिंदवाडा ब. उज्जैन स. जबलपुर द. नागदा

7. लेखक जोशी के अनुसार सभ्यताओं का जन्म किसने दिया ?

अ. योजनाओं ने ब. बरसात ने स. नदियों ने द. वनस्पतियों ने

8. ओंकारेश्वर में किस नदी पर सीमेंट का विशाल बांध बना हुआ था ?

अ. सरस्वती नदी पर ब. नर्मदा नदी पर स. केन नदी पर द. शिप्रा नदी पर

9. नेमावर के पास नर्मदा कैसी दिखती है ?

अ. चंचल और क्रोधी ब. एकदम सूखी

स. शांत, गंभीर और पानी से लबालब द. मटमैली और छिछली

10. नर्मदा मैया के पास बैठने से कैसा आनन्द मिलता है ?

अ. स्वर्ग भोगने जैसा आनन्द ब. पुष्पवाटिका में घूमने जैसा आनन्द

स. ऐश्वर्य भोगने जैसा आनन्द द. माँ की गोद में बैठने जैसा आनन्द

11. नर्मदा मैया कहाँ से निकलती है?

अ. केवडेश्वर से ब. इटावा से स. निवाड़ से द. सिमरौल से

12. लेखक के अनुसार कौन-सी सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता बनकर रह गई थी ?

अ. वैदिक सभ्यता ब. ऐतिहासिक सभ्यता स. भौगोलिक सभ्यता द. औधोगिक सभ्यता

13. लेखक प्रभाष जोशी 'नईदुनिया' की लाइब्रेरी से किनका उदाहरण प्रस्तुत करता है-

अ. कमलेश सेन-अशोक जोशी का ब. विष्णु खरे का स. चन्द्रकांत देवताले का द. माखनलाल का

14. नागदा स्टेशन पहुँचने पर मीणा जी ने लेखक को क्या जानकारी दी ?

अ. अत्यधिक वर्षा के कारण सोयाबीन की फसलों के नष्ट होने की ब. गाँव में इस साल वर्षा कम की

स. गाँव के उजड़ जाने की द. अत्यधिक सूख पड़ने के बाद हुए नुकसान की

15. मालवा में पहले जैसी वर्षा न होने का क्या कारण बताया गया है ?

अ. पर्यावरणीय प्रदूषण ब. वनों की तेजी से कटाई

स. वायुमण्डल में कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा में लगातार वृद्धि द. उपर्युक्त सभी

VISION 100 NEEMKATHANA

16. लेखक मालवा की नदियों की दुर्दशा के लिए किसे जिम्मेदार मानता है ?

अ. स्वयं को   ब. ग्रामीण जन को   स. पश्चिमी देशों की सभ्यता को   द. ईश्वर को

17. विक्रमादित्य, भोज और मुंज ने तालाब तथा बावडियां किसलिए बनवाई थी ?

अ. ताकि धरती के गर्भ में पानी को संचित रख सके   ब. ताकि अपना प्रसार-प्रसार बढ़ा सके

स. ताकि पानी की बर्बादी कर सके   द. ताकि समाज सेवा का कार्य कर सके

18. नीर वाला मालवा सूखा हो जाने का क्या कारण है ?

अ. पानी का लगातार दोहन करना   ब. वर्षा का बिल्कुल न होना

स. लोगो का पलायन होना   द. जंगलों का काटा जाना

19. आधुनिक इंजीनियरों के अनुसार पुराने जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे इसके पीछे तर्क देते है ?

अ. उस समय आधुनिक उपकरण नहीं थे   ब.ज्ञान तो पश्चिम के रिनेसां (पुनर्जागरण) के बाद ही आया

स. पुराने जमाने के लोग पढ़े-लिखे नहीं थे   द. पुराने समय में प्रयोग कम हुआ करते थे।

20. 'हाथीपाला नाम क्यों पड़ा ?

अ. वहाँ हाथी वाले जाते थे   ब. वहाँ कभी नदी पार करने के लिए हाथी पर बैठकर जाना पड़ता था

स. वहाँ पर हाथियों की पूजा की जाती थी   द. उपर्युक्त सभी

21. प्रभाष जोशी ने अपना पहला अखबार निकाला उसका क्या नाम था ?

अ. दैनिक भास्कर   ब. जनसंवाद   स. जनसत्ता   द. दैनिक समाचार

22. लेखक ने विशाल राक्षसी बाँध किस नदी पर देखा था ?

अ. शिप्रा   ब. नर्मदा   स. कावेरी   द. गोदावरी

23. घरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है ?

अ. ग्लोबल वार्मिंग की वजह से   ब. पानी का दुरुपयोग की वजह से

स. जनसंख्या वृद्धि की वजह से   द. इनमें से कोई नहीं

24. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा पहले गिरता था इनमें से कारण है-

अ. औद्योगिकरण से पर्यावरण नष्ट होना   ब. वायुमंडल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की अधिकता

स. पेड़ों की अधिक कटाई के कारण   द. उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. ब 6. द 7. स 8. द 9. स 10. द 11. अ 12. द 13. अ 14. अ 15. द 16. स 17. अ 18. अ 19. ब 20. ब 21. स 22. ब 23. अ 24. द

VISION 100 NEEMKATHANA

कविता लेखन

<u>कविता :</u> - कविता साहित्य का एक अंग हैं कविता की एक निश्चित परिभाषा देन मुश्किल हैं लेकिन इतना कहा जा सकता है कि कविता आत्मा द्वारा अनुभूत भावों एवं विचारों का प्रस्फुटन है । जो छन्द और नियमित गति से बंधी होने के कारण ताल व लय को अपने में समाविष्ट करती हैं।

कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है | यह संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है। यह वहीं सवेदना है जिसने रत्नाकर डाकू को महर्षि वाल्मीकि बना दिया था।

<u>पंडित जगन्नाथ के अनुसार</u> :- "रमणीयार्थ: प्रतिपादकः शब्दः काव्यम।" अर्थात् रमणीय या सुन्दर अर्थ प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य कहलाता है।

<u>आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार</u> :- "कविता वह साधन हैं जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रचनात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

<u>कविता की विशेषता:-</u> 1. कविता के मूल में राग तत्व की प्रधानता है। 2. कविता में संवेदना होती है जो सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने तथा उसे अपना बना लेने का बोध होती है | 3. कविता मानव की हृदयगत भावना है। 4. कविता में भावों एवं कल्पना की प्रधानता होती है। 5. कविता का जन्म वाचिक परम्परा से लिखित रूप में हुआ है। 6. कविता जन्मजात प्रवृति का संवेदित रूप होती है।

कविता कैसे बनी है ? अथवा कविता लेखन के सन्दर्भ में कितने मत है ?

कविता रचना कैसे होती है ? इस सम्बन्ध में दो मत हैं।

पहला मत :- पहले मत के अनुसार कविता प्रतिभा से जन्म लेती हैं और प्रतिभा ईश्वरीय देन जन्मजात या अवतारी पुरुषों के आशीवार्द से प्राप्त हो सकती है। कबीरदास, तुलसीदास व कालिदास जैसे कवि प्रतिभा एवं ईश्वरीय प्रेरणा की ही देन हैं।

दूसरा मत :- दूसरे मत के अनुसार 1. कविता रचना निरंतर अभ्यास करने से हो सकती हैं। 2. व्यंजक वाक्यांशों एवं तुकों का प्रयोग करने से कविता बन जाती हैं। 3. कविता रचना के लिए छन्द अलंकार,काव्य गुण,रस आदि काव्य शास्त्रीय सिद्धान्तों का ध्यान रखता पड़ता हैं। 5. कविता रचना के लिए अब प्रशिक्षण दिया जाने लगा है। 6. मनोभावों के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करने से कविता बनती है।

कविता के प्रमुख घटक/तत्व/कविता लेखन की बुनियादी शर्तें/कविता लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

अथवा

कविता के सारे घटक परिवेश और सन्दर्भ से परिचालित होते हैं। कैसे ?

कविता लेखन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बातों पर विशेष ध्यान देना पड़ता हैं इन महत्वपूर्ण बातों को ही कविता के घटक कहते हैं। इनके बिना कविता की रचना करना सम्भव नहीं है। जैसे :-

1. भाषा :- भाषा कविता का महत्त्वपूर्ण घटक है। कविता लेखन के लिए भाषा का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है क्योंकि भाषा के माध्यम से ही कवि अपनी संवेदनाओं और भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

2. छंद :- छन्द कविता का अनिवार्य तत्व है | यह कविता का शरीर है क्योंकि छन्द ही कविता को कविता का रूप प्रदान करता है। कविता में आन्तरिक लय के लिए छंद की समझ जरूरी है। कविता छंद मुक्त और छन्द युक्त दोनों प्रकार से लिखी जाती है।

छन्द का अर्थ एक अनुशासन से हैं। अतः कविता को सुगठित बनाने के लिए छन्द का ज्ञान होना आवश्यक है।

VISION 100 NEEMKATHANA

3. संकेतों का प्रयोग :- कविता में संकेतों का बड़ा महत्व होता है कविता में प्रत्येक चिह्न का कुछ ना कुछ अर्थ अवश्य होता हैं। अत संकेतों के ज्ञान से कविता को समझने में सहायता मिलती है।
जैसे कई बार कविता लिखते समय निम्नलिखित चिह्नों का प्रयोग होता है। ‘ “ ? - ..... |

4. शैली :- भाषा शब्दों से बनती हैं शब्दों का विन्यास वाक्य कहलाता हैं वाक्य के गठन की विविध प्रणाली शैली कहलाती हैं। और कविता लेखन के लिए वाक्य गठन की विशिष्ट शैलियों का ज्ञान होना आवश्यक हैं।
5. समय का ज्ञान :- कविता समय विशेष की उपज होती है | अत: कविता लेखन के लिए समय विशेष की प्रचलित प्रवृतियों की ठीक-ठीक जानकारी होनी चाहिए |
6. नबीन दृष्टि :- कविता संरचना के लिए नवीन दृष्टि या नये को पहचानने की कला आवश्यक है |
7. प्रतिभा उन्मेष :- कवि की व्यक्तिगत प्रतिभा से ही श्रेष्ठ रचना रची जा सकती है | सामान्यत: कविता लेखन के लिए वस्तुओं को देखने ,पहचानने व विश्लेषित करने की नवीन दृष्टि होनी चाहिए |जिसे भारतीय काव्यशास्त्रियों ने प्रतिभा कहा है |
8. संक्षिप्तता :- कविता में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहने की क्षमता होनी चाहिए | अर्थात् गागर में सागर भरना चाहिए |
9. शब्द-विन्यास :- कविता रचना के समय कवि द्वारा सर्वप्रथम भाषा को समझकर उचित शब्दों के साथ अर्थ व तुकबन्दी के साथ सजाया जाता है | शब्दों को व्यवस्थित करने की यह प्रक्रिया शब्द विन्यास कहलाती है | अर्थात पंक्ति में शब्दों को लिखने की प्रक्रिया का नाम शब्द-विन्यास है |
10. वाक्य संरचना :- कविता में वाक्य-संरचना का ध्यान रखना भी अतिआवश्यक है क्योंकि किसी पंक्ति की संरचना को बदल देने पर उसका अर्थ भी बदल जाएगा | कविता में शब्दों के पर्यायवाची नहीं होते है | इसी कारण अन्य शब्द का उस स्थान पर प्रयोग किये जाने से कविता के भाव या अर्थ में परिवर्तन आ जायेगा अत: एक कवि या लेखक को वाक्य-संरचना की जानकारी होनी चाहिए|

<u>कविता लेखन में शब्दों का महत्व</u> :- कविता की अनजानी दुनिया का सबसे पहला उपकरण है – शब्द | शब्दों से मेलजोल कविता की पहली शर्त है। शब्दों से खेलना ,शब्दों को जोड़ना, शब्दों के अन्दर छिपे अर्थ को समझना,एक शब्द के अनेक अर्थ होते है ,उन्हें जानना, शब्दों से जुड़ना या कविता की दुनिया में प्रवेश कर लेना है।

कविता लेखन में शब्दों का महत्व निम्नलिखित है।
1.शब्द कविता के मूल आधार होते हैं । 2. शब्द कविता लेखन का सर्वोत्तम व प्राथमिक उपकरण हैं । 3. शब्दों के उचित मेल से ही कविता बनती हैं । 4. कवि की संवेदनाएँ अमूर्त होती हैं जिन्हें शब्दों के द्वारा ही मूर्त रूप प्रदान किया जाता है । 5. कविता लेखन में कवि शब्दों को छंदबद्ध करता है । जैसे –

दिन जल्दी जल्दी ढलता हैं
हो जाये ना पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>भाषा का सम्यक् ज्ञान</u> :- कविता में भाषा का सम्यक् ज्ञान आवश्यक है यदि भाषा का सम्यक् ज्ञान का नहीं हैं तो भाषा से सम्बन्धित सभी रचना असम्भव है। भाषा के सम्यक् ज्ञान से अभिप्राय भाषायी तत्वों जैसे शब्द, अर्थ सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि से हैं। इसका ज्ञान होने पर ही भाषा के तत्वों के साथ प्रयोग किया जाता है।

<u>बिम्ब :-</u> किसी शब्द को पढ़कर या सुनकर जब हमारे मन में कोई चित्र उभर जाता है तो उसे काव्य की भाषा में बिम्ब कहा जाता है।

बिम्ब का शाब्दिक अर्थ है शब्दचित्र या परछाई । इन शब्दचित्रों के माध्यम से ही कवि अपनी कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है बिम्ब के बिना कविता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

<u>कविता में बिम्ब का महत्व या स्थान :-</u>

1. बिम्ब कवि की कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है। 2. बिम्व अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। 3. बिम्ब कविता की सम्प्रेष्यता को बढ़ाते हैं। 4.बिम्ब अर्थ व भाव-सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। 5. बिम्ब मन को रसानुभूति कराते हैं। 6. बिम्बों के प्रयोग से ग्राहयता बढ़ जाती है।

<u>कविता का स्वरूप/पक्ष</u> :- कविता के दो पक्ष या स्वरूप है। 1.अनुभूति पक्ष/भाव पक्ष/विचार पक्ष/आन्तरिक स्वरूप 2. अभिव्यक्ति पक्ष/कला पक्ष/शिल्प पक्ष/ बाह्य स्परूप

1. अनुभूति पक्ष :- अनुभूति पक्ष का सम्बन्ध कविता के आन्तरिक स्वरूप से हैं कविता का आंतरिक स्वरूप काव्य की आत्मा होता है। अनुभूति पक्ष को भाव पक्ष या विचार पक्ष कहते हैं।

अनुभूति पक्ष में निम्नलिखित बातों को शामिल किया जाता है। ----1. भाव सौन्दर्य 2. विचार सौन्दर्य 3. कल्पना की सृजनात्मकता 4. नाद सौन्दर्य 5. रसात्मकता 6. अनुभूति की तीव्रता

2. अभिव्यक्ति पक्ष :- अभिव्यक्ति पक्ष का सम्बन्ध कविता के बाहय स्वरूप से है | कविता के बाहरी स्वरूप को कला पक्ष या शिल्प पक्ष कहा जाता है | कविता के बाहरी स्वरूप के निर्धारण में निम्नलिखित कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है --- 1. काव्य भाषा 2. शैली 3. छंद 4. अलंकार 5. काव्य गुण 6. तुक 7. लय 8. शब्द-योजना

<u>सुमित्रानंदन पन्त के अनुसार कविता में चित्र भाषा का प्रयोग होना चाहिए | क्यों ?</u>

सुमित्रानंदन पंत ने कविता के लिए चित्र भाषा की आवश्यकता पर बल दिया | कविता में चित्र भाषा का प्रयोग होने से कतिता अधिक जल्दी समझ में आती हैं क्योंकि चित्रों या बिम्बों का प्रभाव मन पर अधिक पड़ता है। क्योंकि देखी हुई वस्तु हमें ज्यादा प्रभावित करती है।

कविता की रचना करते समय शुरुआत में धीरे धीरे दृश्य और श्रव्य बिम्बों की सम्भावना तलाश करनी चाहिए | ये बिम्ब सभी को आकृष्ट करते हैं। किसी विचारक ने यह कहा था कि कविता ऐसी चीज हैं जिसे पाँच ज्ञानेन्दियों (स्पर्श, स्वाद, घ्राण, दृश्य, श्रवण) रूपी पाँच अंगुलियों से पकड़ा जाता है। जिस कवि में जितनी बड़ी ऐन्द्रिक पकड़ होती है वह उतना ही प्रभावशाली कविता रचना में सफल हो जाता है। उदाहरण

तट पर बगुलों-सी वृद्धाए
विधवाएं जप ध्यान में मग्न

VISION 100 NEEMKATHANA

यहाँ तट पर बगुलों सी वृद्धाएं, विधवाएँ से हमारा ध्यान सफेद रंग की साड़ी पहने हुए विधवा पर चला जाता है। यह चित्र भाषा या बिम्ब के कारण हुआ है।

<u>कविता लेखन एक कला है | कैसे ?</u>

कविता लेखन एक ऐसी कला हैं जिसमें किसी बाह्य उपकरण की मदद नहीं ली जा सकती है |

कविता कवि के आन्तरिक भावों की वह अभिव्यक्ति हैं जिसे वह शब्दों में पिरोता है। यद्यपि रचनात्मकता सभी में होती है किसी में कम तो किसी में ज्यादा होती है | बस उसे तराशने की आवश्यकता होती है | कविता में शब्दों की तुकबन्दी,लय,रिदम व व्यवस्था(यति,गति) का पूरा ध्यान रखकर कविता की रचना की जाती है |

<u>कविता में रिद्म या लय का क्या अर्थ है ?</u>

कविता में रिद्म या लय के माध्यम से गेयता आती है | जिससे संगीतबद्ध कविता स्मरणीय होने के साथ आनन्द भी प्रदान करती है | अत: कविता में रिद्म व लय का होना आवश्यक है इसके बिना कविता पढने व सुनने में आनन्द की अनुभूति नहीं होती है |

<u>कविता में मानवीकरण की भूमिका</u> :- कविता में बिम्बों का विशिष्ट स्थान है क्योंकि प्राकृतिक दृश्यों को सजीव बनाने के लिए चेतन बिम्ब के रूप में प्रस्तुत करने की शैली को मानवीकरण कहते है | अनेक कवियों में जैसे – जयशंकर प्रसाद ,निराला , सुमित्रानंदन पन्त ,शमशेर बहादुर सिंह आदि ने अपनी कविताओं में मानवीकरण का सुंदर प्रयोग किया है |

जैसे निराला ने <u>संध्या सुन्दरी</u> कविता में मानवीकरण का सुंदर प्रयोग किया है |

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे धीरे धीरे धीरे

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>कहानी लेखन</u>

<u>कहानी</u> :- कहानी गद्य साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय व रोचक विधा है। कहानी की यही विशेषता है कि इसमें मानव जीवन के किसी एक प्रमुख घटना या पक्ष का मार्मिक, भावात्मक व कलात्मक वर्णन होता है। अथवा किसी घटना,बात,प्रसंग आदि को रोचक एवं कलापूर्ण ढंग से कहना ही कहानी होती है।

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार "कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें मानव जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है।"

नोट :- 1. मुंशी प्रेमचंद ने कहानी को गल्प कहा है।

2. जैनेन्द्र कुमार के अनुसार "कहानी मानव मन की भूख है।"

<u>कहानी लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-</u>

1. कहानी का विस्तार कहानी के तत्वों (कथावस्तु, पात्र व चरित्र चित्रण, कथोपकथन/सवांद, भाषा-शैली, देशकाल व वातावरण, उद्देश्य,द्वंद्व, क्लाइमेक्स) के आधार पर होना चाहिए।

2. कहानी का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसे पढ़ने में रम जाये।

3. कहानी को उपयुक्त व आकर्षक शीर्षक देना चाहिए।

4. कहानी लेखन के समय लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

5. कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए।

6. कहानी से कोई न कोई उद्देश्य या सीख अवश्य मिलनी चाहिए।

7. कहानी में घटनाओं का पारस्परिक सम्बन्ध होना चाहिए |

8. कहानी का अंत सहज ढंग से होना चाहिए |

9. कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार देना चाहिए | किसी प्रसंग को न अत्यधिक संक्षिप्त लिखना चाहिए और न ही अनावश्यक रूप से विस्तृत लिखना चाहिए |

<u>कहानी की विशेषता</u> :- 1. आकार की लघुत्ता 2. प्रभावान्विति 3. संवेदना की एकता 4. चरित्र-चित्रण 5. आधारभूमि के रूप में किसी सत्य खण्ड की प्रतिष्ठा 6. सक्रियता 7. वैधानिकता 8. रोचकता

<u>प्राचीन काल में मौखिक कहानी की लोकप्रियता के क्या कारण थे ?</u>

हमारे देश में मौखिक कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है और आज तक प्रचलित है खासतौर से राजस्थान में आज भी यह परम्परा जीवित है | मौखिक कहानी की लोकप्रियता के निम्नलिखित कारण हैं

1. प्राचीन काल में संचार के साधनों की कमी थी इसलिए मौखिक कहानी ही संचार का बड़ा माध्यम थी।

2.. प्राचीन काल में मौखिक कहानी धर्मप्रचारकों, सन्तों के सिद्धान्तों व विचारों को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम थी।

3. प्राचीनकाल में मौखिक कहानी ही मनोरंजन का प्रमुख साधन थी।

4. प्राचीनकाल में मौखिक कहानी ही समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का साधन थी।

<u>कहानी के तत्व :-</u>

1. <u>कथावस्तु/ कथानक</u> :- कथावस्तु कहानी का केन्द्रबिन्दु एवं प्रमुख प्राण-तत्व होता है कहानी रूपी शरीर में कथानक हड्डियों के समान हैं | इसे कहानी का प्रारम्भिक नक्शा भी कहते है। अतः कथानक की रचना कृत्रिम अत्यन्त वैज्ञानिक तरीके से कृत्रिम रूप में होनी चाहिए |

<u>कथानक की विशेषता/लक्षण/गुण/ध्यान रखने योग्य बातें/महत्त्व</u> :-

1. कहानी का कथानक रोचक और कुतूहल पैदा करने वाला होता चाहिए।

2. कहानी की कथावस्तु मौलिक हो | मौलिकता से तात्पर्य नवीनता से हैं।

3. आम तौर पर कथानक के तीन भाग बताए गए हैं! 1. प्रारम्भ 2. मध्य 3. अन्त

4. कथानक कहानी का वह संक्षिप्त रूप हैं जिसमें प्रास्भ से अन्त तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया गया

5. कहानी का कथानक पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आदर्शवादी, यथार्थवादी आदि हो सकता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

2. पात्र व चरित्र-चित्रण :-

1. पात्र कहानी के सजीव संचालक होते हैं।
2. कथानक या कहानी का आरम्भ, मध्य और अन्त पात्रों के माध्यम से होता है।
3. कहानी के पात्र आमजन के जितने निकट होगें कहानी उतनी ही प्रभावी होगी।
4. पात्र कहानी का उददेश्य स्पष्ट करता है।
5. कहानी को पात्रों की भूमिका के आधार पर तीन भागों में बाटा गया है 1. मुख्य पात्र/नायक 2. सहायक पात्र 3. खलपात्र या खलनायक |
6. कहानी में पात्रों की संख्या कम होनी चाहिए।
7. पात्र कहानी को गतिशीलता प्रदान करते हैं।

3. कथोपकथन/संवाद :- कहानी में संवाद तत्त्व को प्रमुख तत्त्व माना जाता है | संवादों के बिना न तो कथानक का स्वरूप उभरता है और न पात्रों की योजना हो सकती है | पात्रों का चारित्रिक विकास तथा उद्देश्यों की अभिव्यक्ति सवांदो से ही हो सकती है। यदि किसी कहानी में सवांद न होकर केवल वर्णन ही होगे तो उस कहानी के पात्र अव्यक्त रह जायेगे तथा प्रभावशीलता व संवेदनशीलता नष्ट हो जायेगी।

कथोपकथन/संवाद की विशेषता :-

1. सवांद जिज्ञासा व कुतूहल उत्पन्न करने की क्षमता रखने वाला होना चाहिए।
2. सवांद संक्षिप्त . विषयानुकूल . पात्रानुकूल होने चाहिए।
3. संवादों में रोचकता व स्वाभाविकता का गुण होना चाहिए।
4. संवाद कथा को गतिशीलता प्रदान करते हैं।
5. संवाद योजना से ही क्लाइमेक्स की स्थिति बनती हैं।

4. भाषा शैली :-

1. भाषा सरल सहज व बोधगम्य होनी चाहिए।
2. भाषा में कहानी की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करने की क्षमता है
3. भाषा-शैली विषयानुकूल प्रसंगानुकूल व पात्रानुकूल होनी चाहिए।
4. कहानी की भाषा-शैली स्वाभाविक बोलचाल की होनी चाहिए
5. भाषा में दुरुहता (जटिलता,कठिनता) ना होकर प्रभावी होनी चाहिए।

बाबू गुलाबराय के शब्दों में "शैली का सम्बन्ध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् सब तत्वों से हैं तथा उसकी अच्छाई एवं बुराई का प्रभाव सम्पूर्ण कहानी पर पड़ता हैं।"

5. उद्देश्य :- साहित्य में कोई रचना निरुददेश्य नहीं होती प्रत्येक रचना का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है इस प्रकार कहानी भी उद्देश्यपूर्ण रचना हैं। कहानी में लेखक अपने पात्रों के माध्यम से अपना उद्देश्य स्पष्ट करता है। कहानी लेखन का उद्देश्य मुख्यत: मनोरंजन माना जाता है। किन्तु मनोरंजन ही कहानी का एकमात्र उद्देश्य नहीं होता है। कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष के प्रति दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

जैसे :- भारतेन्दु युग की कहानियाँ सामाजिक सुधार वाली थी। प्रेमचंद की कहानियाँ मध्यमवर्ग के सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण करने वाली थी। जैनेन्द्र की कहानियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुख हैं।

6. देशकाल व वातावरण :- देश का अर्थ है- स्थान तथा काल का अर्थ है- समय | कथानक के घटित होने का स्थान और समय ही देशकाल कहलाता है। कथानक का स्वरूप बन जाने के बाद कहानीकार कथानक के देशकाल को पूरी तरह समझ लेते है। कहानी की प्रामाणिकता और रोचकता के लिए यह बहुत आवश्यक हैं।

जैसे कहानी देशकाल की उपज होती है इसलिए हर देश की कहानी दूसरे देशों से भिन्न होती है | भारत में या इस देश के किसी भू-भाग में लिखी कहानियों का अपना वातावरण होता है। जिसकी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार- रुढि का प्रभाव उन पर स्वभाविक रूप से पड़ता हैं।

7. क्लाइमेक्स :- क्लाइमेक्स कहानी का चरम उत्कर्ष कहलाता है। क्लाइमेक्स किसी कहानी का सबसे तीव्र , रोमांचक या महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। जिसके दौरान पात्र अपनी मुख्य समस्या का समाधान करते हैं। क्लाइमेक्स से पाठकों, दर्शकों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। यह कहानीकार की प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति करने वाला प्रभावशाली तत्त्व होता है।

8. द्वंद्व :- कहानी के बुनियादी तत्वों में द्वंद्व का महत्व अधिक हैं। द्वंद्व ही कथानक को आगे बढ़ाता हैं। कहानीकार अपने कथानक में द्वंद्व के बिन्दुओं को जितना स्पष्ट रखता है | कहानी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ती हैं।

कहानी में जो घटनाएं, प्रसंग व पात्र होते हैं। उनके आधार पर द्वंद्व उभरते हैं। कथानक के आरम्भ या मध्य में कुछ परिस्थितियां चित्रित रहती है। जो बाधक होती है इन बाधक स्थितियों को ही द्वंद्व कहा जाता है। कहानी की गति में एक बाधा आवे और वह क्षणभर बाद समाप्त हो जावे, फिर दूसरी या तीसरी बाधा आ जावे | जब कभी बाधाओ की समाप्ति हो जावे तो निष्कर्ष या उद्देश्य पर पहुँच जाने पर कथानक समाप्त हो जाता है।

कहानी में द्वंद्व का महत्व :-

1. पात्रों का द्वंद्व कथानक को गतिशीलता प्रदान करता है 2. पात्रो के द्वंद्व से ही उद्देश्य स्पष्ट होता हैं। 3. पात्रों के द्वंद्व से ही कहानी में रोचकता उत्पन होती है। 4. पात्रों के द्वंद्व से ही पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न होती हैं। 5. पात्रों के द्वंद्व से ही पात्रों के चरित्र का उद्घाटन होता हैं। 6. पात्रों के द्वंद्व से ही लेखक पाठकों को सन्देश देता है।

कहानी लेखन में कल्पना का क्या महत्त्व है ?

कहानी लेखन में कल्पना का विशेष स्थान रहा है कथाकार कल्पना द्वारा ही कहानी को विस्तार देता हैं। सच्ची घटनाओं पर आधारित कहानियों में भी कल्पना का मिश्रण होने लगा है। क्योंकि मनुष्य वह सब कुछ सुनना व करना चाहता हैं जो उसे अच्छा लगता है | यह सब कल्पना से सम्भव हो जाता है | कल्पना से वह सब संभव हो जाता है | जो वह प्रत्यक्ष रूप में नहीं कर सकता हैं।

VISION 100 NEEMKATHANA

कथानक की पूर्णता की प्रमुख शर्त क्या है ?
कथानक की पूर्णता की प्रमुख शर्त यह है कि एक बाधा के समाप्त होने पर या किसी निष्कर्ष पर पहुच जाने के कारण कथानक पूरा हो जाये। कहानी नाटकीय रूप से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के पश्चात समाप्त हो जाये। कहानी के अन्त तक रोचकता बनी रहनी चाहिए। और कथानक में द्वंद्व के कारण ही यह रोचकता बनी रहती है।

नाटक लेखन

नाटक :- साहित्य की वह विधा जिसे पढ़ने के साथ-साथ अभिनय भी किया जा सकता हैं उसे नाटक कहते हैं।
भारतीय काव्यशास्त्र में दो तरह के काव्य माने गए है- 1. दृश्य काव्य 2. श्रव्य काव्य
नाटक दृश्य काव्य माना जाता हैं क्योंकि नाटक साहित्य को पढ़ा, सुना व देखा जा सकता हैं।
नाटक अग्रेजी के ड्रामा शब्द का पयार्य है जिसका अर्थ है- कृत या किया हुआ |

आचार्य धनंजय के अनुसार :- "अवस्थानुकृतिनाटयम" अर्थात् अवस्था का अनुकरण करना ही नाटक है।

बाबू गुलाबराय के अनुसार :- नाटक में जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में सकुंचित करके उसको सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है।

नाटक और कहानी में समानता :-
1. नाटक व कहानी का मूल तत्त्व या केन्द्रबिंदु कथानक है | दोनों में ही पात्र होते हैं। 3. दोनों के पात्रो के मध्य द्वंद्व होता है। 4.दोनों में कोई ना कोई उद्देश्य निहित होता है। 5. दोनों में क्लाइमेक्स या चरमोत्कर्ष की स्थिति आती हैं। 6. दोनों में ही देशकाल व वातावरण होता है। 7. दोनों में ही संवाद होते हैं | ये सवांद कथानक के विकास तथा पात्रों के चरित्रांकन में सहायक होते हैं।

नाटक व साहित्य की अन्य विधाओं में अन्तर :-
1. नाटक को दृश्य काव्य कहा जाता है जबकि अन्य विधाए श्रव्य काव्य के अंतर्गत आती है |
2. नाटक का अभिनय होता है जबकि अन्य विधाओं का अभिनय नहीं हो सकता है |
3. नाटक को पढ़ा, सुना तथा देखा जा सकता है जबकि अन्य विधाओं को केवल पढ़ा तथा सुना जा सकता है |
4. नाटकों का सम्बंध दर्शकों से हैं। जबकि अन्य विधाओं का सम्बन्ध पाठकों से है |
5. नाटक को पढ़ते-सुनते व देखते समय बीच में रोक नहीं सकते जबकि साहित्य की अन्य विधाओं को हम कभी भी पढ़ते व सुनते हुए रोक सकते है व कुछ समय पश्चात वही से शुरू भी कर सकते है |
6. नाटक एक दर्शनीय विधा हैं जबकि अन्य विधाएँ पठनीय होती है |

नाटक तथा कहानी में अन्तर :-

VISION 100 NEEMKATHANA

1. नाटक एक ऐसी विधा है जिसे पढ़ा, सुना व देखा जा सकता है जबकि कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी एक अंक या भाग विशेष का मनोरजंनपूर्ण चित्रण होता है 2. नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जा सकता है जबकि कहानी को आरम्भ,मध्य व अंत के आधार पर बाँटा जाता है |

3. नाटक में मंच-सज्जा, संगीत व प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व हैं जबकि कहानी में मंच-सज्जा ,संगीत व प्रकाश व्यवस्था का महत्त्व नहीं है |

4. नाटक का सम्बन्ध लेखक,दर्शक,निर्देशक व श्रोताओं से होता है जबकि कहानी का सम्बन्ध लेखक व पाठकों से होता है |

<u>नाटक के तत्त्व</u> :- भारतीय आचार्यों ने या भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में नाटक के तीन तत्व माने गए हैं।

1. वस्तु 2. नेता 3. रस

प्रमुख रूप से नाटक के छह तत्त्व माने गये है |

<u>1. कथानक/कथावस्तु/विषयवस्तु</u> :- कथावस्तु या कथानक ही नाटक का केन्द्रीय बिन्दु या मूल तत्व है | अंग्रेजी में इसे प्लॉट की संज्ञा दी जाती है जिसका अर्थ है- आधार । कथानक सभी प्रबन्धात्मक रचनाओं की रीढ़ होती है। भारतीय आचार्यो ने नाटक की कथावस्तु को तीन वर्गों में विभक्त किया हैं।

1. प्रख्यात- इतिहास व पुराण पर आधारित कथावस्तु 2. उत्पाद्य- कल्पना पर आधारित कपावस्तु ।

3. मिश्र- इतिहास, पुराण व कल्पना पर आधारित कथावस्तु ।

<u>नाटक की कथावस्तु की विशेषता</u> :-

1. कथावस्तु के आधार पर ही नाटक का आरम्भ, मध्य व अन्त होता है ।

2. नाटक की कथावस्तु में औदात्य एवं औचित्य का पूरा ध्यान रखना पड़ता है |

3. नाट्यशास्त्र में वहीं कथानक उत्तम माना गया हैं जिसमें सर्वभाव,सर्वरस तथा सर्वकर्म की प्रवृत्तियों तथा विभिन्न अवस्थाओं का विधान हो।

<u>2. पात्र व चरित्र-चित्रण :-</u> नाटक लेखन का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्व पात्र एव चरित्र चित्रण है पात्रों के माध्यम से ही नाटक के विचारों एवं भावो का प्रतिपादन होता है। नाटक एक जीवन्त माध्यम है यह पात्रों के माध्यम से ही जीवन्त बनता है।

नाटक के पात्रों की विशेषता/गुण :-

1. पात्र घटनाओं को गतिशील बनाने में सहायक हो

2. कथानक के अनुसार ही चरित्र-योजना की व्यवस्था की जानी चाहिए। जैसे-- अगर कथानक किसी ग्रामीण परिवेश का है तो उसके पात्र का चरित्र-चित्रण भी ग्रामीण परिवेश के अनुसार ही होना चाहिए

3. पात्र समाज को उचित दिशा में ले जाने में सहायक हो।

4. भारतीय परम्परा के अनुसार पात्र सुन्दर, शीलवान, विनयी, त्यागी, उच्च कुलीन होना चाहिए।

5. पात्रो का चरित्र आदर्शों एवं मूल्यों के साथ-साथ परिस्थितियों के अनुसार होना चाहिए।

<u>3. कथोपकथन/संवाद</u> :- संवाद या कथोपकथन नाटक का सबसे जरूरी सशक्त माध्यम है। कथोपकथन के अभाव में नाटक की कल्पना तक नहीं हो सकती है।

VISION 100 NEEMKATHANA

संवाद के गुण/विशेषता :-

1. नाटक के संवाद सरल, सुबोध तथा स्वभाविक होने चाहिए। 2. नाटक के संवाद प्रसंगानुकूल, विषयानुकूल व पात्रानुकूल होने चाहिए। 3. सवांद की संक्षिप्तता नाटक की सफलता पर निर्भर करती है अत: संवाद संक्षिप्त होने चाहिए। 4. संवादों में रोचकता, उत्सुकता , रोमांच तथा काव्य की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। 5. संवाद-योजना से कथा आगे बढ़ती हैं। 6. नाटक के संवाद गागर में सागर भरने वाले होने चाहिए। 7. संवाद अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक व दृश्यात्मक होने चाहिए।

<u>4. भाषा शैली :-</u> 1. नाटक की भाषा-शैली सरल, सहज, सुबोध और सुगम होनी चाहिए।

2. नाटक की भाषा-शैली पात्र और कथावस्तु के अनुकूल होनी चाहिए। जैसे- पात्र ग्रामीण किसान हैं तो उसकी भाषा ग्रामीण या किसान जीवन की होनी चाहिए ।

3. नाटक में अति अलंकृत भाषा रूचिकर नहीं होती है।

4. नाटक की भाषा स्वभाविक और प्रसंगानुकूल होनी चाहिए ।

जैसे- 1. पौराणिक प्रसंगों से युक्त नाटक की भाषा तत्सम प्रधान होनी चाहिए

2. मुगलकालीन नाटकों की भाषा उर्दू शब्दों से युक्त होती हैं।

3. आधुनिक काल में नाटकों की भाषा खड़ी बोली के साथ अग्रेजी,उर्दू,अरबी,फारसी शब्दों से युक्त होनी चाहिए।

5. नाटकों की भाषा कलात्मक व प्रभावशाली होनी चाहिए।

<u>5. देशकाल और वातावरण</u> :- 1. नाटक में देशकाल का निर्वाह होना चाहिए | इस तत्त्व का निर्वाह अभिनय, दृश्य-विधान , पात्रों की वेशभूषा,आचार-विचार, संस्कृति,रीति-रिवाज आदि के द्वारा होता हैं।

2. नाटक में सजीवता व रोचकता लाने के लिए देशकाल व वातावरण की योजना ठीक प्रकार से की जानी चाहिए।

3. नाटक में संकलन-त्रय (समय, स्थान, कार्य की एकता) का भी ध्यान रखना चाहिए। जैसे- नाटक में यदि संध्या का समय है तो सध्या का दृश्य ही दिखाया जाना चाहिए। अगर युद्ध भूमि की घटना रंगमंच पर दिखाई जा रही हैं तो युद्ध भूमि का दृश्य रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

<u>6. उद्देश्य :-</u>1.भारतीय शास्त्रों पुरुषार्थ (धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष) को नाटक का मुख्य उद्देश्य माना गया है।

2. नाटक का उद्देश्य ज्ञान आधारित और मनोरंजन करवाना होता है।

3. भारतीय दृष्टिकोण सदा आशावादी रहा है इसलिए संस्कृत के प्राय: सभी नाटक सुखान्त रहे है।

4. भारतीय आचार्यों ने नाटक में रस को प्रधानता दी है।

5. नाटक साहित्यिक, सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक, ऐतिहासिक आदि अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी लिखे जाते हैं।

<u>7.अभिनेयता/रंगमंच</u> :- अभिनेयता नाटक की सर्वप्रमुख विशेषता है नाटक को नाटक के तत्त्व प्रदान करने का श्रेय अभिनेयता तत्व को ही हैं। यह नाटक का वह गुण है जो दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता हैं। नाटक को रंगमंच पर अभिनीत करने के लिए निम्नलिखित गुण होने चाहिए

1. नाटक के सवांद छोटे-छोटे,प्रभावशाली और सम्प्रेष्य होने चाहिए |

VISION 100 NEEMKATHANA

2. दृश्यों व पात्रों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए।

3. दृश्य-विधान ऐसा हो जिसे आसानी से रंगमंच पर उपस्थित किया जा सके

4. भारतीय आचार्यों ने अभिनय के चार भेद माने है

1. कायिक :- शरीर के हाव-भाव 2. वाचिक :- बोलचाल/वाणी

3. आहार्य :- वेशभूषा 4. सात्विक :- स्वेद(पसीना),रोमांच,कपन

संकलन-त्रय :- पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में नाटक व एकांकी में संकलन-त्रय पर बल दिया गया परन्तु यह तत्त्व एकांकी में विशेष रूप से आवश्यक है। संकलन-त्रय का अर्थ है- तीन तत्वो का सकंलन | ये तीन संकलन है

1. समय की एकता :- 1947 का समय और स्वतन्त्रता के बाद का समय।

2. स्थान की एकता :- विभाजन के समय पंजाब,बंगाल,दिल्ली की स्थिति, विभाजन के बाद दिल्ली का स्थान

3. कार्य की एकता :- उस समय की भाषा, उस समय की वेशभूषा,उस समय के आभूषण, उस समय की सस्कृति |

नाटक में स्वीकार - अस्वीकार की अवधारणा से क्या तात्पर्य है ?

नाटक में स्वीकार के स्थान पर अस्वीकार का अधिक महत्त्व है। नाटक में अस्वीकार तत्त्व के आ जाने से नाटक सशक्त हो जाता है। कोई भी चरित्र जब आपस में मिलते है तो विचारों के आदान-प्रदान करने में टकराहट पैदा होना स्वभाविक है। रंगमंच में कभी भी यथास्थिति को स्वीकार नहीं किया जाता | वर्तमान स्थिति के प्रति असन्तुष्टि, अस्वीकार, प्रतिरोध जैसे नकारात्मक तत्वों के समावेश से नाटक अधिक रोचक व आकर्षक बन जाता है।

यहीं कारण है कि हमारे नाटककारों को राम की अपेक्षा रावण और प्रहलाद की अपेक्षा हरिण्यकशिपु का चरित्र अधिक आकर्षित करता है |

नाटक की विशेषता :-

1. नाटक की एकसूत्र विशेषता है- समय का तन्धन

2. नाटक की कथा भूत या भविष्य से उठायी जाए परन्तु उसका मंचन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ही होना हैं।

3. भरतमुनि के अनुसार नाटक में तीन अंक होते हैं।

4. प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट (भरतमुनि के नादयशास्त्र के अनुसार) की होती है।

5. नाटक को दृश्य काव्य कहा जाता है क्योंकि यह पढ़ने सुनने के साथ देखा भी जाता हैं।

6. नाटक में स्वीकार एवं अस्वीकार की धारणा पायी जाती है।

7. नाटक को सम्पूर्णता एवं सफलता उसके मंचन से मिलती है।

8. कहानी, उपन्यास की तरह नाटक को बीच में नहीं रोक सकते।

9. नाटक के संवाद के माध्यम से चरित्र का विकास होता हैं।

10. एक अच्छा नाटक उसे माना जाता है जो आपसी बहस,चर्चाओं से आगे बढ़े।

नाटक के आवश्यक घटक :-

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>1. समय का बन्धन :-</u> **1. नाटक लिखते समय नाटककार को नाटक की मूल विशेषता समय का बंधन का ध्यान रखना आवश्यक है | एक नाटक को शुरू से अन्त तक तय सीमा के भीतर पूरा करना होता है।**
2.एक नाटक में यदि समय-सीमा का ध्यान नहीं रखा गया तो वह नाटक बहुत छोटा या बड़ा बन जायेगा।
3. नाटक के प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट की होनी चाहिए।
4. नाटककार नाटक की कथावस्तु भूतकाल या भविष्यकाल कही से भी ग्रहण करें परन्तु इन दोनों ही स्थितियों में नाटक को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निरूपित करना पड़ता है।
5. नाटक के अन्तर्गत आरम्भ,संघर्ष तथा समापन तीन प्रमुख स्थितियाँ होती हैं जिसे एक निश्चित समय के अन्तराल पर संक्षिप्त किया जाता चाहिए
6. किसी भी दर्शक के पास समय व्यर्थ का आग्रह नही होता | अतः वह एक नाटक को देखने या अनुभव करने लिए बैठता है, ज्यादा अधिक समय लगने से नाटक में बोरियत महसूस होती है अतः नाटक का समय बंधन आवश्यक है।

<u>2. शब्द :-</u> **1. शब्द नाटक का शरीर होता है।**
2. शब्दों का चयन नाटक या किसी भी साहित्य को सफल बनाता है इसलिए नाटक के अनुसार ही शब्दों का चयन किया जाना चाहिए | जैसे :- यदि ऐतिहासिक नाटक हैं तो ऐतिहासिक शब्दों का अर्थात् उस समय प्रयोग होने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. शब्द दर्शकों को बाँधने का कारगर उपाय हैं।
4. एक अच्छे नाटककार को कम से कम शब्दों में अपनी भावना और विचारों को व्यक्त करने की कला आनी चाहिए अर्थात् गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए |
5. नाटककार को सांकेतिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए |
6. व्यंजनापरक शब्दों का प्रयोग नाटक की रोचकता में वृद्धि करता है।

<u>3. कथ्य :-</u> **एक नाटक के लिए उसका कथ्य आवश्यक होता है कथ्य या कथानक पूरे नाटक का समस्त रूप होता है इसके अन्तर्गत नाटककार को विशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता होती है। क्योंकि नाटक का विषय चयन करते समय लेखक को उसकी भाषा, शैली, परिवेश वेशभूषा आदि समस्त रूपों को नाटक में समाहित करना चाहिए।**

नाटककार को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि नाटक दुखान्त न हो | अक्सर ऐसा देखा गया है कि जिस नाटक में दुःख के क्षणों से नाटक का समापन हुआ वह नाटक कभी भी सफल नहीं हुआ है। अत: नाटक की योजना करते समय आरम्भ सुख या दुःख किसी भी स्थिति से किया जा सकता है | उसका संघर्ष सुख के लिए या लक्ष्य की प्राप्ति या सुख की प्राप्ति में ही होना चाहिए।

<u>4. द्वंद्व/प्रतिरोध</u> :- **रंगमंच द्वंद्व का सबसे सशक्त माध्यम है | वह कभी भी यथास्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता है | इस कारण उसमें अस्वीकार की स्थिति बनी रहती हैं क्योंकि कोई भी जीता जागता संवेदनशील प्राणी वर्तमान परिस्थितियों को लेकर असन्तुष्ट ही रहता है। इस तरह असंतुष्टि,अस्वीकार, प्रतिरोध या द्वंद्व जैसे नकारात्मक तत्वों की जितनी ज्यादा उपस्थिति रहेगी वह नाटक उतना ही गहरा व सशक्त नाटक बनेगा। नाटक में द्वंद्व या प्रतिरोध की स्थिति मध्य में आती है जब नायक विपरीत परिस्थितियों में घिर**

VISION 100 NEEMKATHANA

जाता हैं तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता है वह स्थिति दर्शकों तक पहुँचने की स्थिति होती है इस समय दर्शक उस नाटक/पात्र से जुड़ जाता है और उस नाटक में स्वंय के प्रतिरूप को देखने लगता है।

<u>5. ध्वनि योजना :-</u> नाटक दृश्य काव्य के अन्तर्गत आता है दृश्य काव्य एक ऐसी साहित्य की विधा हैं जो दृश्य,श्रव्य तथा पाठ्य तीनों रूपों से सम्बन्धित है। विशेष रूप से इसमें रंगमंचीयता का गुण विद्यमान रहता हैं।

साहित्यकारों के अनुसार ध्वनि योजना का प्रबन्ध नाटककार को करना चाहिए | ध्वनि उस व्यक्ति तक भी पहुँचनी चाहिए जो पंक्ति के अन्त में बैठा हुआ हैं।

6.सवांद योजना
7.चरित्र योजना

<u>नाटक में सबटेक्स्ट क्या है ?</u>
एक सकल नाटक को कमजोर नाटक से जो अलग करती हैं वह स्थिति हैं संवादों का अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक/दृश्यात्मक होना और लिखे तथा बोले जाने वालों से भी ज्यादा उन संवादो के पीछे निहित अनलिखे एवं अनकहे संवादो की ओर ले जाना ही सबटेकस्ट है। जिस नाटक में इस तत्व की जितनी ज्यादा सम्भावनाएं होगी वह नाटक उतना ही सफल होगा।

<u>नाटककार को एक सफल संपादक होता चाहिए | क्यों ?</u>
नाटककार को संपादक इसलिए होना चाहिए क्योंकि नाटककार जो कथ्य कहानी चुनता है उसी के अनुरूप दृश्य का विधान भी करता हैं ताकि वह दर्शकों के दिल को छू सके | एक सहज तरीके से नाटक आगे बढ़ सके | पूरा नाटक रोचक बन सके | नाटक का कुशल संचालन हो सके |

पत्रकारिता लेखन के विविध रूप तथा लेखन प्रक्रिया

<u>पत्रकारिता लेखन / अखबार का महत्त्व</u> :- अखबार पाठको को सूचना देने, जागरूक करने, शिक्षित करने तथा उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। अखबार लोकतांत्रिक समाज में एक पहरेदार व जनमत निर्माता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे असंख्य पाठक देश, दुनिया तथा आस-पास की घटनाओं, समस्याओं व विचारों से अवगत होते हैं।
अत: अपने पाठक, दर्शक व श्रोताओं तक सूचना पहुँचाने के लिए लेखन के विविध रूपों (फीचर,समाचार तथा सम्पादकीय लेखन) का इस्तेमाल करना ही पत्रकारिता लेखन कहलाता है।

पत्रकारिता में विशेषज्ञता से क्या तात्पर्य है ?
व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने पर भी उस विषय की जानकारी व अनुभवों के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस क्षेत्र या विषय में घटने वाली घटनाओं और मुददों की सहजता से व्याख्या कर सके तथा पाठकों के लिए उसका आशय स्पष्ट कर सके | पत्रकारिता में विशेषज्ञ कहलाता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>पत्रकारिता में विशेषज्ञता के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :-</u>

1. विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उस विषय में विशेष रूप से रूचि होनी चाहिए।

2. किसी विषय में विशेषज्ञता के लिए निरंतर सक्रियता रखनी चाहिए

3. स्नातक स्तर पर उस विषय की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

4. विशेषज्ञता के लिए खुद को अपडेट रखना चाहिए।

5. उस विषय से जुड़ी खबरों व रिपोर्टों की कटिंग करके फाइल बनानी चाहिए।

6. उस विषय से सम्बन्धित खूब पुस्तके पढ़नी चाहिए |

7. उस विषय का शब्दकोश भी पास रखना चाहिए।

8. उस विषय के विशेषज्ञों से समय-समय पर बातचीत कर लेनी चाहिए |

9. उस विषय के विविध लेख जुटाने चाहिए

<u>पत्रकारिता के प्रकार :-</u>

1. खोजपरक पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन करके तथ्यों एवं सूचनाओं को सामने लाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में खोजी पत्रकारिता का एक नया रूप <u>स्टिंग ऑपरेशन</u> काफी चर्चित हैं इसमें अनेक घोटालों एवं भ्रष्टाचार का भंडा-फोड किया जाता है।

2. पीत पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जिसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके सनसनीखोज समाचारों का प्रकाशन करना पीत पत्रकारिता करलाता है।

3. वाच-डॉग पत्रकारिता :- सरकारी कामकाज पर निगाह रखना और कोई गड़बड़ी दिखाई दे तो उसका पर्दाफाश करना वाच-डॉग पत्रकारिता कहलाता है।

4. पेज-थ्री पत्रकारिता :- प्राय: समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर अमीरों की पार्टियाँ, महफिल, फैशन तथा जाने-माने लोगों के जीवन के बारे में समाचार प्रकाशित होते हैं उन्हें पेज-थ्री पत्रकारिता कहते हैं।

5. एडवोकेसी पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जो किसी विचारधारा या मुद्दे का पक्ष लेकर जागरूक बनाने का अभियान चलाते हैं एडवोकेसी पत्रकारिता या पक्षधर पत्रकारिता कहलाती है।

6. वैकल्पिक पत्रकारिता :- जब मीडिया स्थापित व्यवस्था के साथ तालमेल बैठाकर चलता है तब उसे मुख्य धारा का मीडिया कहा जाता हैं | इसके विपरीत मीडिया जब स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाता है तो उसे वैकल्पिक मीडिया या पत्रकारिता कहते हैं।

7.विज्ञान पतकारिता :- विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रमुख घटना, कार्यक्रम, उपलब्धि या खोज की तह तक जानकारी प्राप्त करना तथा भविष्य की सम्भावना के बारे में जानकारी देना विज्ञान पत्रकारिता कहलाती हैं।

<u>पत्रकार के प्रकार :-</u> पत्रकार के तीन भेद होते हैं।

1. पूर्णकालिक पत्रकार :- पूर्णकालिक पत्रकार को संवाददाता या रिपोर्टर कहते हैं। यह पत्रकार किसी भी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है

2. अंशकालिक पत्रकार :- अंशकालिक पत्रकार स्ट्रिंगर कहलाता है | किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार अंशकालिक पत्रकार कहलाता है |

3. स्वतंत्र पत्रकार :- स्वतंत्र पत्रकार को फ्री-लांसर भी कहते है | यह पत्रकार किसी खास अखबार से नहीं जुड़ा होता है बल्कि यह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है |

VISION 100 NEEMKATHANA

एक अच्छा पत्रकार या लेखक बनने के लिए क्या जरुरी है ?

एक अच्छा पत्रकार या लेखक बनने के लिए विभिन्न जनसंचार माध्यमों में लिखने की अलग-अलग शैलियों से परिचित होना जरूरी है। जैसे-

1.समाचार लेखन के लिए उलटा-पिरामिड शैली से परिचित होना जरूरी है। 2. फीचर लेखन के लिए कथात्मक शैली से परिचित होना जरूरी है। 3. विशेष रिपोर्ट लेखन के लिए तथ्यों की खोज और विश्लेषण पर बल दिया जाता हैं। 4. विचारपरक लेखन के लिए विचारों तथा विश्लेषण को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है।

<u>अच्छे लेखन/पत्रकारीय लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :-</u> 1. छोटे-छोटे वाक्य लिखने चाहिए। 2. वाक्य जटिल नहीं होने चाहिए | 3. लेखन को आकर्षक बनाने के लिए लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए।

4. आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। 5. आलंकारिक भाषा का प्रयोग करने से बचना चाहिए। 6. लेखन को पुन: पढ़कर अशुद्धियों एवं अनावश्यक अंशों को हटा देना चाहिए। 7. अच्छे लेखन के लिए सम-सामयिक घटनाओं पर पैनी नजर रखनी चाहिए | 8. अपनी भावनाओं को व्यक्त करें लेकिन दूसरों की भावनाओं की ठेस न पहुंचे। 9. अच्छे लेखन के लिए प्रसिद्ध विद्वानों, विशेषज्ञों तथा लेखकों की रचनाएँ पढ़नी चाहिए।

<u>पत्रकारीय लेखन व साहित्यिक लेखन में अंतर</u>

1. पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध वास्तविक घटनाओं, समस्याओं व मुद्दों से होता है जबकि साहित्यिक लेखन का सम्बन्ध काल्पनिकता से होता है।

2. पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध समसामयिक घटनाओं से होता है जबकि साहित्यिक लेखन का सम्बन्ध इतिहास से हैं।

3. पत्रकारिय लेखन अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और पाठकों की रूचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर किये जाने वाला लेखन है जबकि साहित्यिक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

4. पत्रकारीय लेखन में सृजनात्मकता अनिवार्य होती है जबकि साहित्यिक लेखन में कल्पनाशीलता अनिवार्य होती है।

5. पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य सूचना आदान-प्रदान करना होता हैं तथा इसमे तथ्यों की प्रधानता होती है। जबकि साहित्यिक लेखन से भाव, कल्पना एवं सौन्दर्य प्रधान होता है।

<u>उलटा पिरामिड शैली क्या है ?</u>

समाचार लेखन की सबसे प्रचलित व प्रभावी शैली उलटा पिरामिड शैली है | इसमें समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सबसे पहले लिखा जाता है तथा इसके बाद घटते महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों व सूचनाओं को लिखा जाता है | जनसंचार के सभी माध्यमों में 90 प्रतिशत खबरें उलटा पिरामिड शैली में लिखी जाती है | लेखक और सम्पादक की सुविधा के कारण उलटा पिरामिड शैली समाचार लेखन की स्टैंडर्ड या मानक शैली मानी जाती है |

<u>उल्टा-पिरामिड शैली के हिस्से या भाग :-</u> उलटा पिरामिड शैली के तीन भाग या हिस्से होते है |

<u>1. इंट्रो/लीड/मुखड़ा :-</u> समाचार के इंट्रो को लीड या मुखड़ा भी कहते है | यह खबर का मूल तत्त्व होता है जिसे प्रथम दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है | इसमें सूचना के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख होता है |

VISION 100 NEEMKATHANA

इसमें समाचार का समस्त सूचनात्मक भाग निहित होता है | इंट्रो के बाद का भाग तो मात्र विस्तार के लिए ही होता है | जैसे- बारातियों से भरी बस खाई में गिरी, दुल्हे सहित 5 मरे व 10 घायल

इंट्रो को लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें :- 1. इंट्रो प्रभावोत्पादक होना चाहिए | 2. इसमें कब,कौन,क्या,कहाँ के समस्त तथ्यों का समावेश होना चाहिए | 3. इंट्रो की भाषा सरल,सहज,प्रभावशाली होनी चाहिए क्योंकि पाठक इंट्रो से ही पूरी जानकारी प्राप्त कर लेता है | 4. इसमें रोचकता के साथ-साथ सम्प्रेष्यता का भी ध्यान रखना चाहिए |

<u>2. बॉडी/निकाय :-</u> इसमें समाचार का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है जो घटते हुए महत्त्व क्रम में दिया जाता है | इसमें क्यों और कैसे ककारों के आधार समाचार के विश्लेषण,व्याख्या एवं विवरण पर जोर दिया जाता है |

समापन :- समापन भाग में संदर्भ,उद्धरण व स्रोत की सूचना दी जाती है |

उल्टा-पिरामिड शैली का विकास :- उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग 19वीं शताब्दी के मध्य में आरम्भ हो गया था परन्तु इसका वास्तविक विकास अमेरिका के गृहयुद्ध(1861-1863) के समय हुआ | गृहयुद्ध के समय संवाददाताओं को अपने समाचार टेलीग्राम के माध्यम से भेजने पड़ते थे जो महँगे एवं अनियमित थे | अत: संवाददाताओं को घटना या समाचार को संक्षिप्त में भेजना पड़ता था | इस प्रकार उलटा पिरामिड शैली का विकास हुआ |

<u>उलटा पिरामिड शैली की विशेषता :-</u>

1. इस शैली में समाचार का महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले लिखा जाता है।
2. उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य सूचनाएं या तथ्यों को लिखा जाता है।
3. इस शैली में चरम उत्कर्ष या क्लाइमेक्स अन्त में न होकर शुरू में ही आ जाता है।
4. इस शैली में घटना, विचार या समस्या का विवरण कालक्रम के अनुसार न होकर महत्व के आधार पर शुरू होता है।
5. इस शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता है।

<u>फीचर लेखन</u> :- <u>फीचर एक सुव्यवस्थित,सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है</u> | <u>जिसका उद्देश्य पाठकों को सुचना देना,शिक्षित करना व मनोरंजन करना होता है | फीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली के बजाय कथात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है | फीचर के लिए हिंदी में रूपक शब्द का प्रयोग किया</u> जाता है | रोचक विषय का मनोरम या विशुद्ध प्रस्तुतीकरण ही फीचर कहलाता है | इसमें दैनिक समाचार के समसामयिक विषय तथा बहुसंख्यक पाठकों की रूचि वाले विषयों की चर्चा होती है |

<u>फीचर की विशेषता :-</u> 1. फीचर लेखन में लेखक अपनी राय,दृष्टिकोण और भावनाएं व्यक्त करता है | 2. फीचर लेखन में कथात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है | 3. फीचर का विषय समसामयिक होता है | 4. फीचर का विषय रोचक व बहुसंख्यक पाठकों की रूचि वाला होता है | 5. फीचर की भाषा शैली सरल,आकर्षक व मन को छूने वाली होती है | 6. फीचर किसी सत्य तथ्य पर आधारित होता है | 7. एक फीचर के साथ फोटो,रेखांकन या ग्राफिक्स होता है 8. फीचर की शब्द-सीमा 250-2000 तक होती है

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>फीचर लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें/शर्तें :-</u> 1. फीचर को मनोरंजन के साथ-साथ सूचनापरक होना चाहिए | 2. फीचर का विषय रोचक होना चाहिए 3. फीचर का विषय समसामयिक और बहुसंख्यक पाठकों की रूचि वाला होना चाहिए | 4. फीचर का आमुख या प्रस्तावना प्रभावी/आकर्षक होनी चाहिए | 5. फीचर के लिए ऐसे शीर्षक का चयन किया जाता है जो पाठक में जिज्ञासा उत्पन्न कर दे और पाठक उसे पढ़ने के लिए लालायित हो जाए 6. फीचर सत्य तथ्यों व विषयों पर आधारित होना चाहिए 7. फीचर में प्रभावी संप्रेष्यता के गुण का समावेश करने के लिए उचित रूप से फोटो,रेखांकन या ग्राफिक्स का उपयोग किया जाना चाहिए |

<u>समाचार लेखन व फीचर लेखन में अंतर अथवा फीचर की शैली समाचार की शैली से किस प्रकार भिन्न होती है ?</u>

1. समाचार लेखन का सम्बन्ध तात्कालिक घटना क्रम से होता है जबकि फीचर लेखन के लिए यह आवश्यक नही है |

2. समाचार लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग किया जाता है जबकि फीचर लेखन में कथात्मक शैली का प्रयोग होता है

3. समाचार लेखन में लेखक अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता है जबकि फीचर लेखन में लेखक अपने शब्दों व विचारों को स्थान दे सकता है |

4. समाचार लेखन की शब्द-सीमा निश्चित होती है अर्थात् समाचार संक्षिप्त में होते है जबकि फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते है फीचर की शब्द सीमा 250-2000 तक होती है |

<u>समाचार लेखन में छह ककार से आप क्या समझते है</u>

किसी भी समाचार को लिखते समय मुख्यत: छह प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है ये प्रश्न ही छह ककार कहलाते है यथा- कब,क्या,कौन,कहाँ,क्यों,कैसे

समाचार लेखन में सर्वप्रथम कब,कौन,क्या,कहाँ के आधार पर समाचार लिखा जाता है क्योंकि ए सूचनाएं आंकड़ों व तथ्यों पर आधारित होती है तथा शेष दो ककार क्यों व कैसे के आधार पर विवरण,व्याख्या व विश्लेषण आदि पर जोर दिया जाता है |

<u>पत्रकारीय लेखन व सृजनात्मक लेखन में अंतर</u>

1 पत्रकारीय लेखन समसामयिक व वास्तविक घटनाओं पर तथ्य आधारित लेखन है जबकि सृजनात्मक लेखन कल्पित घटनाओं पर आधारित लेखन है

2. पत्रकारीय लेखन में तात्कालिकता या पाठकों की रुचियों का ध्यान रखना पड़ता है जबकि सृजनात्मक लेखन में इनका ध्यान रखना जरूरी नहीं है

<u>विशेष रिपोर्ट :</u>- अखबार या पत्रिकाओं में समाचार के अलावा सामान्य घटना, समस्या या किसी मुद्दे की गहरी छानबीन के आधार पर जो रिपोर्ट प्रकाशित होती है | उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

<u>विशेष रिपोर्ट की विशेषता या ध्यान रखने योग्य बातें</u> :- 1. किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती हैं | 2. महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इकटठा किया जाता हैं। 3. तथ्यों का विश्लेषण करके नतीजों, प्रभावों

VISION 100 NEEMKATHANA

तथा कारणों को स्पष्ट किया जाता है। 4. विशेष रिपोर्ट लेखन में सामान्यत: चार सकारों का इस्तेमाल होता है ये चार सकार ही उनके गुण हैं। जैसे 1. सत्यता 2.स्पष्टता 3.संक्षिप्तता 4. सुरुचि

<u>विशेष रिपोर्ट के प्रकार :-</u>

1. खोजी रिपोर्ट :- खोजी रिपोर्ट को इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट भी कहते हैं। जब रिपोर्टर खुद शोध और छानबीन करके ऐसी सूचनाएं तथा तथ्य सबके सामने लाता है जो पहले उपलब्ध नहीं थी वह खोजी रिपोर्ट कहलाती है | इस रिपोर्ट का प्रयोग अधिकतर भ्रष्टाचार , अनियमितओं और गडबडियों को उजागर किया जाता है |

2. इन-डेप्थ रिपोर्ट :- इस रिपोर्ट में किसी घटना,समस्या या मुद्दे को उपलब्ध तथ्यों व सूचनाओं तथा आंकड़ों की गहरी छानबीन के उससे जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सामने लाया जाता है वह इन-डेप्थ रिपोर्ट कहलाती है |

3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट :- जिस रिपोर्ट में किसी घटना,समस्या या मुद्दे से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है वह विश्लेषणात्मक रिपोर्ट कहलाती हैं।

4. विवरणात्मक रिपोर्ट :- जिस रिपोर्ट में किसी घटना, समस्या या मुद्दे का विस्तृत विवरण दिया जाता है वह विवरणात्मक रिपोर्ट कहलाती है।

<u>विशेष रिपोर्ट किस शैली में लिखी जाती है।</u>

विशेष रिपोर्ट को अधिकांशतः उलटा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है लेकिन कई बार ऐसी रिपोर्ट फीचर शैली में भी लिखी जाती है। यह रिपोर्ट सामान्यत: समाचार से बड़ी होती हैं इसलिए पाठकों को रूचिकर लगती है अत: दोनों ही शैलियों मिला-जुला रूप विशेष रिपोर्ट में देखा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज व आम बोलचाल की होनी चाहिए |

<u>सम्पादकीय लेखन :-</u> सम्पादकीय पृष्ठ पर जो आलेख छपता हैं वह वास्तव में उस अखबार या समाचार की आवाज माना जाता है। सम्पादकीय द्वारा किसी घटना,समस्या या मुद्दे के प्रति अखबार अपनी राय प्रकट करता है | सम्पादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते है आमतौर पर अखबार का सम्पादक,सहायक सम्पादक और उसके सम्पादक मंडल के सदस्य होते है | समाचार पत्र के बीच के पृष्ठों पर सम्पादकीय लिखा जाता है और ज्वलंत मुद्दों के बारे में अपनी राय प्रकट करता है |

<u>सम्पादक के नाम पत्र :-</u> सभी समाचार पत्रों में सम्पादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं के आरम्भ में सम्पादक के नाम पत्र का कॉलम होता है। इस कॉलम को <u>समाचार पत्र का सेफ्टी बल्ब</u> कहा जाता है।
इसमें पाठक निजी स्तर से लेकर सार्वजनिक समस्याओं तक या विभिन्न मुद्दों को लेकर अपनी राय व्यक्त करते है तथा अखवार के माध्यम से समस्या का समाधान कराया जाता जाता है | इस शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित सूचना के लिए समाचार पत्र या सम्पादक उत्तरदायी नहीं होते है अपितु प्रेषित करने वाला जिम्मेदार होता है | अत: हम कह सकते है सम्पादक के नाम पत्र जनमत का प्रतिनिधित्त्व करते है

VISION 100 NEEMKATHANA

विचारपरक लेखन :- जिस लेखन में विचार एवं चिन्तन की प्रधानता होती है | उसे विचारपरक लेखन कहते है | अखबारों में प्रकाशित होने वाले सम्पादकीय लेखन, विशेष लेखन, टिप्पणियाँ,वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञ के कॉलम, स्तम्भ विचारपरक लेखन के अंतर्गत आते है | कुछ विशेष समाचार पत्रों में सम्पादकीय पृष्ठ के सामने छपने वाला आप एड पेज भी विचारपरक लेखन के अंतर्गत आता है |

लेख :- लेख में किसी भी विषय को रोचक तरीके से समझाया जाता है | लेख साहित्यिक और सृजनात्मक दोनों प्रकार के होते हैं | सभी अखबार सम्पादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुदद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और विशेषज्ञ के लेख प्रकाशित करते हैं। लेखों में किसी भी विषय पर विस्तार चर्चा की जाती है।

साक्षात्कार :- साक्षात्कार शब्द अंग्रेजी के इन्टरव्यू शब्द का पयार्य है जिसका अर्थ है - साक्षात करना। किसी भी क्षेत्र में चर्चित तथा विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी प्राप्त की जाती है। उसे साक्षात्कार कहते हैं। यह एक प्रकार की मौखिक प्रश्नावली है जिसमें किसी व्यक्ति के विचारों, प्रतिक्रियाओं को जाना जाता है।

अच्छे साक्षात्कार के गुण अथवा एक सफल साक्षात्कार के लिए क्या आवश्यक है ? अथवा
आप एक अच्छे साक्षात्कारकर्ता कैसे बन सकते हैं।

1. अच्छे साक्षात्कार के लिए साहस, सहनशीलता, संवेदनशीलता, धैर्य, व कुटनीति जैसे गुण होने चाहिए।
2. साक्षात्कार के विषय तथा उस व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए।
3. साक्षात्कार में वे ही सवाल पूछे जाने चाहिए जो एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।
4. विषय के अनुरूप प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नावली तैयार कर लेनी चाहिए |
5. साक्षात्कार के तथ्य निष्पक्ष रूप से व समग्रता से प्रस्तुत करने चाहिए।
6. साक्षात्कार के सवाल-जवाब क्रमिक रूप से लिखने चाहिए ताकि वह सुन्दर आलेख बन सके ।
7. साक्षात्कार को रिकॉर्ड कर सकते हैं अगर ऐसी सुविधा न हो तो नोट्स लिख सकते हैं।

साक्षात्कार का महत्व :- साक्षात्कार विधा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है यह विधा इन्टरव्यू, भेंटवार्ता, वार्ता, भेट, संवाद, बातचीत आदि के रूप में अधिक लोकप्रिय हैं।
1. किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन और विचारों को समझने का सबसे प्रामाणिक माध्यम हैं।
2. मीडिया की विश्वसनीयता का आधार । 3. क्रमिक रूप से लिया गया साक्षाकार सुन्दर आलेख होता है। 4. साक्षात्कार से समाचार, फीचर व विशेष रिपोर्ट आदि के लिए कच्ची सामगी प्राप्त हो जाती है।

पत्रकारिता के आयाम :- 1. सम्पादकीय 2. फोटो पत्रकारिता 3. कार्टून कोना 4. रेखांकन

विशेष लेखन का स्वरूप एवं प्रकार

विशेष लेखन :- सामान्य लेखन से हटकर किसी खास विषय पर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता हैं। विशेष लेखन की भाषा, शैली, विषय एवं मुद्दे भी अलग होते है और ये सामान्य समाचार लेखन, फ़ीचर,

VISION 100 NEEMKATHANA

आलेख आदि से भी अलग होते हैं। विशेष लेखन में खेल, अर्थ, व्यापार, सिनेमा मनोरंजन, कृषि फैशन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि से सम्बन्धित सामग्री प्रकाशित होती है।

<u>विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र या खबर के प्रकार :-</u> 1. अर्थ 2. खेल 3. व्यापार 4. सिनेमा 5. मनोरंजन 6. कृषि 7. फैशन 8. विज्ञान 9. प्रौद्योगिकी 10. स्वास्थ्य 11. विदेश 12. रक्षा 13. अपहरण 14. कानून 15. सामाजिक मुद्दे

<u>विशेष लेखन के अंतर्गत आने वाले लेखन :-</u> 1. सम्बन्धित विषय या क्षेत्र की रिपोर्टिंग 2. समीक्षा 3. साक्षात्कार 4. स्तम्भ लेखन 5. टिप्पणी 6. लेख

विशेष लेखन में कारोबार या अर्थजगत की खबरें आदि सभी उलटा पिरामिड शैली में लिखी जाती हैं।

<u>विशेष लेखन की भाषा-शैली :-</u>

1. विशेष लेखन की भाषा सरल व समझ में आने वाली हो
2. विशेष लेखन के अधिकांश विषय और क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल होते हैं। इसे तकनीकी शब्दावली के प्रचलित शब्दों में ही लिखना चाहिए। जैसे-
1.कारोबार और व्यापार से सम्बन्धित शब्दावली :- तेजडिए, मन्दडिए, आयात, निर्यात, आवक, जावक व्यापार-घाटा, निवेश, FDI, वार्षिक बजट, मुद्रास्फीति, वार्षिक योजना
2. सोने-चाँदी के व्यापार से सम्बन्धित शब्दावली :- सोने में भारी उछाल, पीली धातु की चमक, चाँदी
3. सामान्य व्यापार से सम्बन्धित शब्दावली :- लाल मिर्च की कड़वाहट, शेयर बाजार फिसला, संसेक्स आसमान पर
4. पर्यावरण व मौसम से जुड़ी खबरों के शब्द :- पश्चिमी विक्षोभ, ग्लोबल वार्मिंग, टॉक्सिक कचरा।
5. खेल से जुड़े हुए तकनीकी शब्द :- भारत ने पाकिस्तान को 7 विकेट से पीटा, मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके।

<u>बीट :-</u> संवाददाताओं को उनके ज्ञान व रूचियों को ध्यान में रखकर काम का जो विभाजन किया जाता है मीडिया की भाषा में उसे बीट कहा जाता है। बीट से जुड़े समाचार उलटा-पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं।

<u>बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर</u>

1. बीट रिपोर्टिंग में संवाददाताओं को उस क्षेत्र विषय की जानकारी व उसमें दिलचस्पी होनी चाहिए जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में संवाददाताओं को संबंधित विषय की अधिक और विशेष जानकारी होनी चाहिए।
2. बीट रिपोर्टर बीट से जुड़ी सामान्य खबरें एकत्र करता है जबकि विशेषिकृत रिपोर्टर विशेष खबरें एकत्र करता है।
3. बीट रिपोर्टिंग तथ्यात्मक रिपोर्ट है, जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग विश्लेषणात्मक रिपोर्ट है।
4. बीट कवर करने वाले को संवाददाता कहते हैं जबकि विशेषिकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

VISION 100 NEEMKATHANA

5. बीट रिपोर्टर का पत्रकार, फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार हो सकता है, जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय विशेषज्ञ होते हैं

<u>समाचार जगत में विशेषज्ञता कैसे हासिल की जाती है?</u>

समाचार जगत में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए पत्रकार को मास्टर ऑफ वन का सिद्धांत अपनाना चाहिए अर्थात किसी एक विषय में विशेषज्ञ होना चाहिए। यह विशेषज्ञता संबंधित विषय के शैक्षणिक पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण, निरंतर अभ्यास तथा अनुभव से हासिल की जा सकती है।

<u>भौगोलिक स्थिति के आधार पर खबरों के प्रकार--</u>

1. स्थानीय खबर 2. क्षेत्रीय खबर 3. आंचलिक खबर 4. प्रादेशिक खबर 5. राष्ट्रीय खबर 6. अंतरराष्ट्रीय खबर ।

<u>विशिष्टता के आधार पर खबर के प्रकार</u>

1. खेल खबर 2. कारोबार खबर 3. सिनेमा खबर 4. फैशन खबर 5. विज्ञान खबर 6. स्वास्थ्य खबर 7. पर्यावरण खबर 8. शिक्षा खबर

<u>विशेषीकृत खबरों के प्रकार</u> –1. रक्षा खबर 2. विदेश नीति खबर 3. राष्ट्रीय सुरक्षा 4. विधि अर्थात कानून खबर ।

<u>खेल बीट किसे मिलती है</u>--

जिस पत्रकार की दिलचस्पी खेलों में होती है तथा जिनको खेल विशेष में के परिवेश सहित उनकी शब्दावली व नियम आदि का भलीभाँति ज्ञान होता है, वह खेल बीट पाने के योग्य होता है। प्रायः किसी विशेष खेल के प्रसिद्ध खिलाड़ी या किसी क्रीडा प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत या सेवानिवृत्त अधिकारी या कोच को खेल बीट सौंपा जाना अच्छा माना जाता है।

<u>खेल समाचार लिखने में ध्यान रखने योग्य बातें—</u>

1. खेल पत्रकार को खेल की समस्त जानकारियां रोचक ढंग से प्रस्तुत करनी चाहिए।
2. विश्लेषण की तकनीक में खेल जगत जैसा रोमांच होना चाहिये।
3. लेखक को खेल की तकनीक, उसके नियम, उसकी बारीकियां और उससे जुड़ी हुई तमाम बातों की गहरी जानकारी होनी चाहिए।
4. खेलों की रिपोर्टिंग और विशेष लेखन की भाषा में ऊर्जा , जोश और उत्साह दिखना चाहिए।

<u>राजनीतिक रिपोर्टर में क्या योग्यता होनी चाहिए?</u>

1 .राजनीतिक रिपोर्टर को सारे परिदृश्य के साथ उस पार्टी के पूरे इतिहास की जानकारी होनी चाहिए।
2 .रिपोर्टर को उस पार्टी के अंदर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए।
3 .रिपोर्टर को पार्टी की अच्छाईयों, बुराईयों, सिद्धांतों और नीतियों की गहरी जानकारी होनी चाहिए।

VISION 100 NEEMKATHANA

<u>बीट रिपोर्टिंग हेतु आवश्यक बातें :-</u>

1. बीट रिपोर्टर को प्रायः अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी चाहिए
2. बीट के बारे में जानकारी तथा दिलचस्पी होनी चाहिए।

<u>विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए ध्यान रखने योग्य बातें</u>

<u>1</u> .विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए सम्बन्धित विषय की गहरी या विशेष जानकारी होनी चाहिए |
2 .रिपोर्टिंग से सम्बन्धित भाषा और शैली पर पूरा अधिकार होना चाहिए |

<u>न्यूज़ पेग</u> <u>-</u>न्यूज़ पेग का अर्थ है – समाचार का आधार |समाचार आधार जैसे –कोई त्यौहार,कोई घटना ,कोई कार्यक्रम

<u>शोर</u> <u>-:</u>संचार प्रक्रिया में कई प्रकार की बाधाएं आती है | इन बाधाओं को शोर कहते है |

संचार :- संचार शब्द सम + चार के योग से बना है | जिसका अर्थ है – चलना अर्थात् एक स्थान से दुसरे स्थान पहुँचना | पत्रकारिता के क्षेत्र में संदेशों या विचारों का आदान- प्रदान करना संचार कहलाता है |

कविता लेखन

1. आत्मा दारा अनुभूत भावों एवं विचारों का प्रस्फुटन होती है ?
अ. कहानी ब. नाटक स. कविता द. रेखाचित्र
2. रमणीयार्थ: प्रतिपादक: शब्द: काव्यं परिभाषा किसने दी ?
अ. पंडित जगन्नाथ ब. आचार्य रामचंद्र शुक्ल स. मम्मट द. रामविलास शर्मा
3. "कविता वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रचनात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है" यह कथन किसका है ?
अ. नगेन्द्र ब. रामचन्द्र शुक्ल स. रामस्वरूप चतुर्वेदी द. महादेवी वर्मा
4. निम्न में से कविता की विशेषता है ?
अ. कविता के मूल मे राग तत्व की प्रधानता है ब. कविता में संवेदना होती है
स. कविता मानव की ह्रदयगत भावना है द. उपर्युक्त सभी
5. कविता का जन्म किस परम्परा के रूप में हुआ |
अ. वाचिक ब. पठन स. यांत्रिक द. लिखित
6. किस भाव ने रत्नाकर डाकू को महर्षि वाल्मीकि बना दिया ?
अ. सहानुभूति ब. दया स. करुणा द. संवेदना
7. कविता की अनजानी दुनिया का सबसे पहला उपकरण है ?
अ. वर्ण ब. ध्वनि स. शब्द द. वाक्य

VISION 100 NEEMKATHANA

8. <u>प्ले विद् बर्ड्स</u> किसने कहा था ?

अ. थीट्स ब. शेक्सपियर स. मिल्टन द. डब्ल्यू. एच. ऑर्डन

9. इनमें से कौनसा कविता का घटक नहीं है ?

अ. भाषा ब. शब्द स. छंद द. वाद्ययंत्र

10. शब्द कविता का कौन-सा उपकरण है ?

अ. प्रथम ब. द्वितीय स. तृतीय द. चतुर्थ

11. कविता का अनिवार्य तत्व है ?

अ. द्वंद्व ब. लय स. मुक्त छंद द. संगीत

12. कविता के लिए पन्त जी ने किस प्रकार की भाषा को आवश्यक माना है ?

अ. वर्णनात्मक भाषा ब. प्रतीकात्मक भाषा स. लाक्षणिक भाषा द. चित्रात्मक भाषा

13. जिसे पाँच ज्ञानेन्दियों रूपी पाँच अंगुलियों द्वारा पकड़ा जाता है वह साहित्य की कौन-सी विधा है ?

अ. उपन्यास ब. निबन्ध स. कविता द. कहानी

14. एक शब्द में कितने अर्थ छिपे रहते है ?

अ. एक ब. दो स. तीन द. अनेक

15. कविता की प्रथम शर्त क्या है

अ. भाव सम्पदा ब. विभिन्न प्रकार के भाव स. शब्दों से मेल-जोल द. छंद और बिम्ब

16. 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान 'कविता के बारे में यह पंक्ति किसने कही है ?

अ. सुमित्रानन्दन पन्त ब. निराला स. जयशंकर प्रसाद द. अज्ञेय

17. शब्दों से मेलजोल बढाने का मुख्य लाभ क्या है ?

अ. छिपे अर्थों को जान जाते है ब. भावुक पाठक बन जाते है

स. कविता को इन्दियों से पकड़ने में सक्षम हो पाते है द. कविता बनाने में माहिर हो जाते हैं

18. कविता को इन्दियों से पकड़ने में कौन सहायता करते है ?

अ. बिम्ब और छंद ब. अलंकार स. छंद और रस द. शब्द

19. कविता में बिम्ब या चित्रभाषा क्या होता है ?

अ. बिम्ब से मस्तिष्क में किसी दृश्य का चित्र उभरता है

ब. बिम्ब शब्द चित्र है जो कल्पना द्वारा इन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है

स. कल्पना द्वारा भावना को जागृत करना द. अ. और ब दोनों सही है

20. शैली क्या है

अ. शालीनता का नया प्रकार ब. वाक्य गठन की विशिष्ट प्रणालियाँ

स. शब्दों में वक्रता द. शब्दों का अनुशासन

21. प्रतिभा के सन्दर्भ में सही कथन कथन का चयन कीजिए ?

अ. प्रतिभा हर व्यक्ति में होती है ब. प्रतिभा प्रकृति प्रदत्त होती है

स. प्रतिभा किसी नियम से पैदा नहीं होती अभ्यास से विकसित होती है द. उपर्युक्त सभी

22. कविता के सभी घटक किस से परिचालित होते है ?

अ. भाव ब. परिवेश स. सन्दर्भ द. छंद

23. कविता लेखन के लिए निम्नलिखित में से कौन जी बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. भाषा का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए ब. विभिन्न काव्य शैलियों का ज्ञान होना चाहिए
स. छन्दों का ज्ञान होना चाहिए द. उपर्युक्त सभी

24. कविता के मूल में क्या होता है ?
अ. संवेदना ब. राग तत्त्व स. उपर्युक्त दोनों द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

25. कविता के सम्बन्ध में सही कथन नहीं है ?
अ. कविता के मूल में संवेदना है ब. कविता लेखन में कई बार उपकरणों की जरूरत होती है
स. कविता में शब्दों के पर्याय नहीं होते है द. शब्दों से मेलजोल कविता की पहली शर्त है

26. कविता की भाषा, सरंचना, बिम्ब सब किसके इर्द-गिर्द घूमते है ?
अ. कवि ब. परिवेश स. सन्दर्भ द. ब और स दोनों सही है

27. कविता रचना के सन्दर्भ में सही कथन नहीं है ?
अ. कविता में संकेतों का महत्त्व होता है ब. यह छन्द और मुक्त छन्द दोनों में होती है
स. इसका स्वरूप समय के साथ नहीं बदलता द. कविता लेखन के लिए भाषा का ज्ञान होना चाहिए

28. कविता कोने में घात लगाए बैठी है, यह हमारे जीवन में किसी भी क्षण वसन्त की तरह आ सकती है। यह कथन किसका है ?
अ. शमशेर बहादुर सिंह ब. हरिवंश राय बच्चन स. सुमित्रानंदन पन्त द. जॉर्ज लुइस बोखेंस

29. "अगर कही मैं तोता होता, तोता होता तो क्या होता ? तोता होता।" यह कविता किसके द्वारा लिखित है ?
अ. शमशेर बहादुर सिंह ब. रघुवीर सहाय स. सुमित्रानंदन पन्त द. जयशंकर प्रसाद

30. "बाबूजी ! सच कहूँ मेरी निगाह में, न कोई है, न कोई बड़ा है, मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है, जो मेरे सामने, मरम्मत के लिए खड़ा है" यह कविता किस कवि की है ?
अ. अज्ञेय ब. सुमित्रानंदन पन्त स. धूमिल द. रघुवीर सहाय

31. एक जनता का दुःख एक,हवा में उड़ती पताकाएँ अनेक । यह कविता किस कवि द्वारा रचित है ?
अ. शमशेर बहादुर सिंह ब. रघुवीर सहाय स. धूमिल द. हरिवंश राय बच्चन

उत्तरमाला

1. स 2. अ 3. ब 4. द 5. अ 6. द 7. स 8. द 9. द 10. अ 11. अ 12. द. 13. स 14. द 15. स 16. अ 17. अ 18. अ 19. द 20. ब 21. द 22. अ 23. द 24. स 25. ब 26. द 27. स 28. द 29. ब 30. स 31. अ

नाटक लेखन

1. नाटक को कौन-सा काव्य कहते है ?
अ. दृश्य काव्य ब. श्रव्य काव्य स. मुक्तक काव्य द. खण्ड काव्य

2. लिखित रूप में नाटक कितने आयामों में होता है ?
अ. द्वि-आयामी ब. बहु-आयामी स. एक-आयामी द. त्रि-आयामी

3. नाटक किस काल में लिखा जाता है ?
अ. भूतकाल ब. भविष्यकाल स. वर्तमान द. देशकाल

4. नाटक का महत्तपूर्ण अंग कौन-सा है ?

VISION 100NEEMKATHANA

अ. कथ्य ब. चरित्र-चित्रण स. संवाद द. देशकाल

5. नाटक में कितने अंक होने चाहिए ?

अ. तीन ब. एक स. दो द. चार

6. भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में किस साहित्यिक विधा की चर्चा की गई है ?

अ. कहानी ब. नाटक स. महाकाव्य द. गद्यकाव्य

7. नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक के प्रत्येक अंक की अवधि कितनी होनी चाहिए ?

अ. 30 मिनट की ब. 40 मिनट की स. 50 मिनट की द. 48 मिनट की

8. प्रतिशोध का सशक्त माध्यम है ?

अ. रंगमंच ब. कहानी स. कविता द. फिल्म

9. नाटक किस प्रकार का माध्यम है ?

अ. जटिल ब. सरल स. जीवंत द. इनमें से कोई नहीं

10. नाटक की महत्तपूर्ण विशेषता क्या है ?

अ. समय का बन्धन ब. भाषा स. चरित्र-चित्रण द. कथ्य

11. नाटक अपनी सम्पूर्णता कब प्राप्त करता है ?

अ. जब लिखित रूप में होता ब. जब वह लेखक के दिमाग में होता है

स. जब उसका मंचन किया जाता है द. जब उसकी पब्लिसिटी की जाती है

12. साहित्य की किस विधा को नाटक के सबसे निकट माना जाता है ?

अ. उपन्यास ब. कहानी स. कविता द. संस्मरण

13. नाटककार को अधिक से अधिक कौनसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए

अ. संक्षिप्त भाषा ब. सांकेतिक भाषा स. अ और ब दोनों द. मौखिक भाषा

14. अच्छा नाटक वहीं होता है जो लिखे अथवा बोले गए शब्दो से भी ज्यादा करे ?

अ. अभिनित ब. ध्वनित स. नाटकीय द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

15. नाटक का मात्र एक मौन, अन्धकार या ध्वनि प्रभाव कहानी या उपन्यास के कितने पृष्ठों की बराबरी कर सकता है ?

अ. 10-12 ब. 20-25 स. 50-60 द. 80-90

16. नाटककार को रचनाकार के साथ-साथ एक क्या होना आवश्यक है ?

अ. अभिनेता ब. संपादक स. निर्देशक द. अनुभवी

17. नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम क्या है ?

अ. कथानक ब. शब्द स. समय का बन्धन द. संवाद

18. सबटैक्स्ट किसे कहा जाता है ?

अ. संवादों के पीछे निहित अनलिखे और अनकहे संवादों को ब. अधिकार सुख को

स. क्रियात्मकता को द. तात्कालिक समस्याओं

19. 'टू बी और नॉट टू बी' यह प्रसिद्ध संवाद किसका है

अ. स्कंदगुप्त ब. हैमलेट स. शेक्सपियर द. अरस्तु

20. 'अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है" यह संवाद किसका है ?

अ. स्कंदगुप्त ब. हैमलेट स. शेक्सपियर द. अरस्तु

VISION 100 NEEMKATHANA

21. किन नाटकों को हम पारिभाषिक शब्दावली में शास्त्रीय कहते है ?

अ. स्वप्नवासवदत्ता ब. अभिज्ञानशाकुंतलम् स. उत्तररामचरित द. उपर्युक्त सभी

22. नाटक में स्वीकार के स्थान पर किसका अधिक महत्त्व है ?

अ. रुढियों का ब. परम्पराओं का स. अस्वीकार का द. पुराणों का

23. आचार्य भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में नाटक के तीन तत्व माने है इनमें से जो नहीं है बताइए

अ. वस्तु ब. नेता स. रस द. उद्येश्य

24. नाटक को पाँचवाँ वेद किसने माना है ?

अ. आचार्य भरतमुनि ब. अज्ञेय स. नागार्जुन द. रामचंद्र शुक्ल

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. स 4. स 5. अ 6. ब 7. द 8. अ 9. स 10. अ 11. स 12. स 13. स 14. ब 15. ब 16. ब 17. द 18. अ 19. ब 20. अ 21. द 22. स 23. द 24. अ

कहानी लेखन

1. कहानी हमारे जीवन का अंग है ?

अ. अविभाज्य ब. अनावश्यक स. व्यर्थ द. बेकार

2. प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभवों को क्या करना चाहता है ?

अ. आपने तक सीमित रखना ब. किसी को न बताना स. केवल बेटों को बताना द. बाँटना

3. कहानी मानव मन की किन वृत्तियों को शांत करती है ?

अ. भूख और ईर्ष्या को ब. जिज्ञासा, उत्सुकता एवं कौतुहल को

स. जिज्ञासा और करुणा को द. उत्सुकता और ईर्ष्या को

4. भारत में किस ग्रंथ की कहानियाँ लोकप्रिय है ?

अ. कादम्बरी ब. कथासरित्सागर स. हितोपदेश द. पंचतंत्र

5. कहानी किसका अंग है ?

अ. जीवन का ब. शिक्षा का स. मानव स्वभाव का द. धर्म का

6. कहानीकार घटनाओं में किसका मिश्रण करता है ?

अ. कल्पना का ब. हास्य का स. व्यंग्य का द. यथार्थ का

7. किस कहानी की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है ?

अ. लिखित कहानी की ब. मौखिक कहानी की स. ऐतिहासिक कहानी की द. धार्मिक कहानी की

8. पंचतंत्र में किस प्रकार की कहानियाँ लिखी गई है ?

अ. ऐतिहासिक कहानियाँ ब. धार्मिक कहानियाँ स. शिक्षाप्रद कहानियाँ द. मनोरंजन प्रधान कहानियाँ

9. कहानी का पहला तत्त्व कौनसा है ?

अ. कथानक ब. पात्र व चरित्र-चित्रण स. संवाद द. पात्र व भाषा-शैली

10. कथानक के कितने भाग है ?

अ. एक ब. दो स. तीन द. चार

VISION 100 NEEMKATHANA

11. कहानी के तीसरे भाग का नाम है ?

अ. आरम्भ ब. मध्य स. द्वंद्व द. अन्त

12. कहानी का केन्द्रीय बिन्दु क्या है ?

अ. कथानक ब. देशकाल स. पात्रों का चरित्र-चित्रण द. संवाद

13. "कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वाले की भी, इसकी, उसकी, सबकी, सृष्टि, समूचे परिवार की।" यह कथन किसका है ?

अ. सुमित्रानन्दन पन्त ब. महादेवी वर्मा स. कृष्णा सोबती द. प्रेमचन्द

14. कफन कहानी के लेखक कौन है ?

अ. प्रेमचंद ब. निराला स. कृष्णा सोबती द. महादेवी वर्मा

15. प्रेमचन्द की कहानी कफन 10-12 पन्नों की कहानी है इसका कथानक कितनी पंक्तियों में लिखा जा सकता है ?

अ. 20-25 पंक्तियों में ब. 10-12 पंक्तियों में स. 2 पंक्तियों में द. 5 पंक्तियों में

16. कथानक को कहानी का क्या कहा जा सकता है ?

अ. असली चेहरा ब. प्रारम्भिक नक्शा स. प्रारम्भिक स्वरुप द. प्रारम्भिक कथा

17. कथानक का पूरा स्वरूप होता है ?

अ. अन्त,मध्य,प्रारम्भ ब. प्रारम्भ,मध्य,अन्त स. मध्य,अंत,प्रारम्भ द. मध्य, प्रारम्भ,अंत

18. किस तत्व के कारण कहानी में रोचकता बनी रहती है ?

अ. प्रारम्भ की सरलता ब. मध्य की द्वन्द्वता

स. अंत की सुखद परिस्थितियाँ द. उपर्युक्त सभी

19. किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिन्दु हो उसे क्या कहा जाता है ?

अ. कथानक ब. संवाद स. कहानी द. कोई नहीं

20. मौखिक कहानी की परम्परा विशेष रूप से कहाँ पर प्रचलित है ?

अ. उत्तरप्रदेश ब. जम्मू कश्मीर स. राजस्थान द. गुजरात

21. प्राचीन काल में मौखिक कहानियों की लोकप्रियता क्यों थी

अ. क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी

ब. क्योंकि धर्म प्रचारक इसी के माध्यम से सिद्धांतों और विचारों का प्रचार करते थे

स. शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए द. उपर्युक्त सभी

22. कहानी में पात्रों के संवाद क्यों महत्त्वपूर्ण माने जाते है ?

अ. क्योंकि संवाद के बिना पात्र की कल्पना नहीं हो सकती है

ब. क्योंकि संवाद ही कहानी और पात्र को स्थापित और विकसित करते है

स. क्योंकि पात्रों के संवाद ही कहानी को गति देते है द. उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1. अ 2. द 3. ब 4. द 5. स 6. अ 7. ब 8. स 9. अ 10. स 11. द 12. अ 13. स 14. अ 15. ब 16. ब 17. ब 18. ब 19. स 20. स 21. द 22. द

VISION 100 NEEMKATHANA

पत्रकारिता लेखन के विविध रूप तथा लेखन प्रक्रिया

1. पत्रकारिता लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली कौनसी है ?

अ. सीधा पिरामिड शैली ब. संक्षेप शैली स. कथात्मक शैली द. उलटा पिरामिड शैली

2. समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सुचनाएं पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, वह क्या कहलाता है ?

अ. संपादकीय ब. फीचर स. स्तम्भ द. पत्रकारिता लेखन

3. पत्रकारिता लेखन के अन्तर्गत क्या-क्या आते है ?

अ. संपादकीय ब. समाचार स. आलेख द. उपर्युक्त सभी

4. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?

अ. दो ब. तीन स. चार द. पाँच

5. किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतन भोगी पत्रकार कौन से पत्रकार कहलाते है ?

अ. पूर्णकालिक पत्रकार ब. अंशकालिक पत्रकार स. स्वतंत्र पत्रकार द. उपर्युक्त सभी

6. निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार कौन-सा है ?

अ. पूर्णकालिक पत्रकार/संवाददाता ब. अंशकालिक पत्रकार/स्ट्रिंगर

स. स्वतंत्र पत्रकार/फ्री-लांसर द. उपर्युक्त सभी

7. जो पत्रकार किसी संस्था से जुड़े नहीं होते, वे कौन से पत्रकार होते है या भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचारों पत्रों में लिखने वाले पत्रकार क्या कहलाते है ?

अ. पूर्णकालिक पत्रकार/संवाददाता ब. अंशकालिक पत्रकार/स्ट्रिंगर

स. स्वतंत्र पत्रकार/फ्री-लांसर द. उपर्युक्त सभी

8. समाचार लेखन में उलटा पिरामिड शैली का विकास कब हुआ ?

अ. प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब. अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान

स. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान द. उपर्युक्त में से कई नहीं

9.उलटा पिरामिड शैली के कितने भाग/हिस्से होते हैं ?

अ. दो ब. चार स. तीन द. पाँच

10. उलटा पिरामिड शैली का हिस्सा है

अ. इंट्रो/लीड/मुखडा ब. बॉडी/निकाय स. समापन द. उपर्युक्त सभी

11. समाचारों की प्राथमिकता का आधार क्या होता है ?

अ. पाठकों की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य ब. पत्रकारों की रूचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य

स. संवाददाताओं की रूचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य द. उपर्युक्त सभी

12. पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-पहचाना रूप क्या होता है ?

अ. फीचर लेखन ब. स्तम्भ लेखन स. समाचार लेखन द. आलेख लेखन

13. समाचार लेखन में कितने 'ककार होते है ?

अ. तीन ब. चार स. छह द. पाँच

14. कौनसे ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं ?

अ. क्या, कौन, कब और कहाँ ब. क्यों, कहाँ, कौन और कब

VISION 100 NEEMKATHANA

स. कौन, कैसे, कब और क्या द. उपर्युक्त सभी

15. कौनसे ककार विवरणात्मक,व्याख्यात्मक,विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते है ?

अ. क्यों और कब ब. कैसे और कहाँ स. क्यों और कैसे द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

16. एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन कहलाता है ?

अ. फीचर लेखन ब. स्तम्भ लेखन स. आलेख लेखन द. रिपोर्ट लेखन

17. अखबारों और पत्रिकाओं में कितने शब्दों तक के फीचर छपते है ?

अ. 300 से 3000 तक ब. 250 से 2000 तक स. 350 से 3000 तक द. 450 से 3500

18. विशेष क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं,मुद्दों तथा समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके उसे पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है,ऐसी रिपोर्ट क्या कहलाती है ?

अ. सार्वजनिक रिपोर्ट ब. व्यक्तिगत रिपोर्ट स. विशेष रिपोर्ट द. उपर्युक्त

19. उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग कब शुरु हुआ ?

अ. 18 वीं सदी के मध्य ब. 19 वीं सदी के मध्य स. 20 वीं सदी के मध्य द. 21 वीं सदी के मध्य

20. समाचार पत्र का संपादन करने वाले को क्या कहते है ?

अ. प्रकाशक ब. संवाददाता स. फीचर लेखक द. सम्पादक

21. इनमें से समाचार पत्र/अखबार की आवाज किसे माना जाता है ?

अ. फीचर ब. सम्पादक के नाम-पत्र स. सम्पादकीय द. स्तम्भ लेखन

22. इंट्रो में कितने ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जानी चाहिए ?

अ. तीन या चार ब. एक या दो स. दो या तीन द. चार या पाँच

23. विशेष रिपोर्ट के प्रकार होते है ?

अ. दो ब. तीन स. चार द. पाँच

24. निम्न में से विशेष रिपोर्ट के प्रकार है ?

अ. खोजी रिपोर्ट ब. इन-डेप्थ रिपोर्ट स. विश्लेषणात्मक व विवरणात्मक रिपोर्ट द. उपर्युक्त सभी

25. तथ्यों, सूचनाओं तथा आंकड़ों की गहरी छानबीन करने वाली रिपोर्ट को क्या कहते है ?

अ. विवेचनात्मक रिपोर्ट ब. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट स. खोजी रिपोर्ट द. इन-डेप्थ रिपोर्ट

26. पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल किससे प्राप्त होता है ?

अ. सम्पादक के नाम पत्र से ब. सम्पादकीय से स. फीचर से द. साक्षात्कार से

27. निम्न में से पत्रकारिता का मूल तत्व है ?

अ. नई सूचनाएँ प्रदान करना ब. विशेष लेखन स. संपादकीय लेखन द. इनमें से कोई नहीं

28. समाचारों का संकलित करने का कार्य कौन करता है

अ. फ्री-लांसर ब. पत्रकार स. संवाददाता द. स्ट्रिंगर

29. निम्न में से फीचर लेखन का उद्देश नहीं है ?

अ. मनोरंजन करना ब. शिक्षित करना स. सूचना देना द. तात्कालिक घटनाओं से अवगत कराना

30. सम्पादकीय लेखन के विषय में कौन-सा कथन असत्य है ?

अ. सम्पादकीय किसी व्यक्ति विशेष का लेख नहीं होता ब. यह अनाम लेख होता है

स. इसे अखबार की अपनी आवाज माना जाता है द. यह व्यक्तिनिष्ठ लेख होता है

VISION 100 NEEMKATHANA

31. किसी समाचार पत्र में सम्पादकीय पृष्ठ के सामने प्रकाशित होने वाला वह पन्ना/पृष्ठ जिसमें विश्लेषण, फीचर, स्तम्भ साक्षात्कार और विचारपूर्ण टिप्पणियाँ प्रकाशित की जाती है, क्या कहलाता है ?

अ. विचार मंच ब. पेज-थ्री स. डेस्क द. ऑप एड

32. समाचार के मुखड़े/इंट्रो में आमतौर पर कौन से ककारों प्रयोग किया जाता है ?

अ. क्या, कौन, कब और कहाँ ब. क्या, कौन, कब और कहाँ

स. क्या, कौन, कब और किसके द. किसके लिए, क्यों, कब और कहाँ

33. समाचार की बॉडी / निकाय लिखते समय किन ककारों का प्रयोग किया जाता है ?

अ. कैसे और क्यों ब. कब और कहाँ स. क्या और कैसे द. क्या और क्यों

34. जिस रिपोर्ट में मौलिक शोध और छानबीन के जरिए अनुपलब्ध तथ्यों को सार्वजनिक किया जाता है और भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर किया जाता है, कहलाती है ?

अ. खोजी रिपोर्ट ब. इन-डेप्थ रिपोर्ट स. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट द. विचारात्मक रिपोर्ट

35.किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है, वह कहलाती है ?

अ. खोजी रिपोर्ट ब. इन-डेप्थ रिपोर्ट स. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट द. विवरणात्मक रिपोर्ट

36 किसी घटना,समस्या या मुद्दे का विस्तृत विवरण दिया जाता है , वह कहलाती है ?

अ. खोजी रिपोर्ट ब. इन-डेप्थ रिपोर्ट स. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट द. विवरणात्मक रिपोर्ट

37. जिस पृष्ठ पर स्तम्भ, विचारपरक लेख,टिप्पणियाँ आदि प्रकाशित होते हैं उसे कहते है ?

अ. पेज-थ्री ब. आमुख पृष्ठ स. ऑप एड पृष्ठ द. संपादकीय पृष्ठ

38. समाचार के अन्तर्गत किसी घटना का नवीनतम और महत्त्वपूर्ण पहलू होता है ?

अ. बॉडी ब. इंट्रो स. समापन द. इनमें से कोई नहीं

39. किसी समाचार के अन्तर्गत विस्तार,पृष्ठभूमि विवरण आदि होता है ?

अ. बॉडी ब. इंट्रो स. समापन द. परिचय

40. अखबार पाठको को क्या देता है ?

अ. सूचना देना ब. जागरूक करना व शिक्षित करना स. मनोरंजन करना द. उपर्युक्त सभी

41. लोकतांत्रिक समाज में अखबार की क्या भूमिका है ?

अ. एक पहरेदार की ब. एक शिक्षक की स. एक जनमत निर्माता की द. उपर्युक्त सभी

42. 19 वीं सदी के मध्य उलटा पिरामिड शैली को शुरुआत हुई तो उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरे किसके जरिए भेजनी पड़ती थी ?

अ. टेलीफोन के जरिए ब. टेलीग्राफ के जरिए स. पत्रकार के माध्यम से द. हरकारों के माध्यम से

43. आमतौर पर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है ?

अ. आलेख ब. फीचर स. स्तम्भ द. विशेष रिपोर्ट

44. सम्पादकीय लिखने का दायित्व किसका होता है ?

अ. संवाददाता का ब. सम्पादक का स. सम्पादक के सहयोगी का द. ब और स सही है

45. स्तम्भ लेखन किसका एक प्रमुख रूप है ?

अ. विवरणात्मक लेखन ब. विचारात्मक लेखन स. संश्लेषणात्मक लेखन द. कोई नहीं

46. अखबारों का स्थायी स्तम्भ क्या होता है ?

अ. साक्षात्कार ब. लेख स. सम्पादक के नाम पत्र द. फीचर

VISION 100 NEEMKATHANA

47. एक सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्त्ता के पास कौनसे गुण होने चाहिए ?

अ. ज्ञान,संवेदनशीलता ब. कूटनीति स. धैर्य, साहस द. उपर्युक्त सभी

48. सनसनीखेज समाचारों का प्रकाशन करना कहलाता है ?

अ. खोजपरक पत्रकारिता ब. पीत पत्रकारिता स. वॉचडॉग पत्रकारिता द. पेज-थ्री पत्रकारिता

49. घोटालो एवं भ्रष्टाचार से सम्बन्धित स्टिंग ऑपरेशन किस पत्रकारिता के अन्तर्गत माता है ?

अ. खोजपरक पत्रकारिता ब. पेज-थ्री पत्रकारिताता स. पीत पत्रकारिता द. एडवोकेसी पत्रकारिता

50. सरकारी कामकाज पर निगाह रखना और कोई गड़बड़ी दिखाई दे तो उसका पर्दाफाश करना क्या कहलाता है ?

अ. खोजपरक पत्रकारिता ब. वॉचडॉग पत्रकारिता स. पीत पत्रकारिता द. एडवोकेसी पत्रकारिता

51. किसी विचारधारा, मुद्दे का पक्ष लेकर जागरूक बनाने का अभियान चलाना कहलाता है ?

अ. खोजपरक पत्रकारिता ब. पेज-थ्री पत्रकारिता स. एडवोकेसी/पक्षधर पत्रकारिता द. एडवोकेसी पत्रकारिता

52. समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर अमीरों की पार्टियाँ, महफिल,फैशन तथा जाने-माने लोगों के जीवन के बारे में समाचार प्रकाशित करना कहलाता है ?

अ. पेज-थ्री पत्रकारिता ब. एडवोकेसी पत्रकारिता स. वॉचडॉग पत्रकारिता द. पीत पत्रकारिता

उत्तरमाला

1. द 2. द 3. द 4. ब 5. अ 6. ब 7. स 8. ब 9. स 10. द 11. अ 12. स 13. स 14. अ 15. स 16. अ 17. ब 18. स 19. ब 20. द 21. स 22. अ 23. स 24. द 25. द 26. द 27. अ 28. स 29. द 30. द 31. द 32. ब 33. अ 34. अ 35. स 36. द 37. द 38. ब 39. अ 40. द 41. द 42. ब 43. ब 44. द 45. ब 46. स 47. द 48. ब 49. अ 50. ब 51. स 52. अ

विशेष लेखन का स्वरूप एवं प्रकार

1. विशेष लेखन कहलाता है

अ. सामान्य लेखन से हटकर किसी विशेष विषय पर किया गया लेखन

ब. किसी विषय पर लिखा गया रचनात्मक लेखन

स. किसी विषय पर किया गया क्रियात्मक लेखन

द. किसी भी विषय पर किया गया गतिशील लेखन

2. संवाददाताओं की रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखकर उनके काम के विभाजन को क्या कहते हैं ?

अ. सीट ब. नीट स. बीट द. रपीट

3. विशेष लेखन के कितने क्षेत्र होते है

अ. एक ब. दो स. चार द. अनेक

4. विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा-शैली अपेक्षित होती है ?

अ. साहित्यिक भाषा ब. सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा स. बाजारू भाषा द. हिन्दी,उर्दू मिश्रित

5. इनमें से विशेष लेखन का कौनसा क्षेत्र नहीं है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. सिनेमा ब. मनोरंजन स. स्वास्थ्य द. समाचार

6. कारोबार और व्यापार से सम्बन्धित खबर का सम्बन्ध किससे है ?

अ. खेल क्षेत्र से ब. कृषि क्षेत्र से स. आर्थिक क्षेत्र से द. राजनीतिक क्षेत्र से

7. इनमें से कौन-सा शब्द क्रिकेट जगत का नहीं है ?

अ. हिट विकेट ब. स्पिन स. रन द. तेजड़िए

8. इनमें से कौन-सा शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है ?

अ. तेजड़िए ब. बिकबाली स. मंदड़िए द. रन आउट

9.विशेष लेखन के क्षेत्र में संवाददाताओं और उपसंपादकों के कार्य करने के स्थल को क्या कहा जाता है

अ. बीट ब. विशेषीकृत स. रिपोर्टिंग द. डेस्क

10. बीट रिपोर्टिंग के अंतर्गत रिपोर्टर को अपने क्षेत्र से सम्बन्धित कौनसी जानकारियाँ एकत्र करनी चाहिए ?

अ. इतिहास ब. सिद्धांत स. नीतियाँ सम्बन्धी द. उपर्युक्त सभी

11. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को क्या कहा जाता है ?

अ. रिपोर्टर ब. संवाददाता स. विशेष संवाददाता द. संपादक

12. विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को क्या कहा जाता है ?

अ. रिपोर्टर ब. संवाददाता स. विशेष संवाददाता द. संपादक

13. विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र पर और क्या-क्या प्रस्तुत किया जा सकता है ?

अ. फीचर, टिप्पणी ब. साक्षात्कार, लेख स. समीक्षा, स्तम्भ लेखन द. उपर्युक्त सभी

14. रक्षा,विज्ञान,विदेश-नीति,कृषि या ऐसे ही किसी क्षेत्र में किस प्रकार के लोग बेहतर तरीके से लिख सकते है ?

अ. कोई प्रोफेशनल ब. उस क्षेत्र में वर्षों तक अनुभव रखने वाला व्यक्ति

स. उस क्षेत्र में काम करने वाला व्यक्ति द. उपर्युक्त सभी

15. क्रिकेट की कमेंट्री करने वाला व्यक्ति है ?

अ. नरोतम पुरी ब. जसदेव सिंह स. हर्ष भोगले द. उपर्युक्त सभी

16. कारोबार और अर्थजगत से जुड़ी रोजमर्रा की खबरें किस शैली में लिखी जाती है ?

अ. सीधा पिरामिड शैली ब. उलटा पिरामिड शैली स. रिपोर्ट शैली द. फीचर शैली

17. विशेष लेखन के कौन-कौन से महत्वपूर्ण क्षेत्र है ?

अ. खेल, कारोबार, सिनेमा ब. मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य विज्ञान

स. पर्यावरण,शिक्षा,जीवन शैली,रहन-सहन द. उपर्युक्त सभी

18. "दस लाख संगीने मेरे भीतर वह खौफ पैदा नहीं करती जो तीन छोटे अखबार।" यह कथन किसका है ?

अ. अरस्तु ब. चाणक्य स. नेपोलियन द. आइनस्टाइन

19. निम्न में से सोने चाँदी के व्यापार से सम्बन्धित शब्दावली नही है ?

अ. चाँदी लुढ़की ब. पीली धातु की चमक स. सोने में भारी उछाल द. आवक

20. भौगोलिक स्थित्ति के आधार पर खबर का प्रकार है ?

अ. स्थानीय खबर,क्षेत्रीय खबर ब. आंचलिक खबर स. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय खबर द. उपर्युक्त सभी

21. विशिष्टता के आधार पर खबर के प्रकार है ?

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. कारोबार खबर,सिनेमा खबर,खेल खबर   ब. फैशन खबर,विज्ञान खबर,पर्यावरण

स. शिक्षा खबर, स्वास्थ्य खबर   द. उपर्युक्त सभी

22. निम्न में से विशेषीकृत खबर का प्रकार है ?

अ. रक्षा खबर,विदेश नीति खबर   ब. राष्ट्रीय सुरक्षा खबर   स. विधि या कानून खबर   द. उपर्युक्त सभी

23. "संचार अनुभवों की साझेदारी है" कथन किसका है ?

अ. नेपोलियन   ब . विल्बर श्रेम   स. अरस्तु   द. चाणक्य

24. जैक ऑफ ट्रेड्स बट मास्टर आफ नन' अर्थात् सभी विषयों का जानकार होना लेकिन किसी खास विषय में विशेषज्ञता का ना होना। इनकी माँग सर्वाधिक कब थी ?

अ. ईसा पूर्व   ब. गुप्तकाल   स. वर्तमान में   द. पूर्व में/ पहले

25. वर्तमान समय में पत्रकारिता में किसकी मांग अधिक रहती है ?

अ. मास्टर ऑफ वन / एक विषय में विशेषज्ञता होना   ब. मास्टर ऑफ नन

स. मास्टर जी   द. मिस्टर जॉलीवुड

उत्तरमाला

1. अ 2. स 3. द 4. ब 5. द 6. स 7. द 8. द 9. द 10. द 11. ब 12. स 13. द 14. द 15. द 16. ब 17.द 18. स 19. द 20. द 21. द 22. द 23. ब 24. द 25. अ

काव्य गुण

1. काव्य की आत्मा ....माना जाता है |

2. रस के उत्कर्ष में सहायक तत्वों को ....कहा जाता है |

3. आचर्य भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में काव्य गुणों की संख्या..........मानी है |

4. मम्मट/आनंदवर्धन/भामह ने काव्यगुणों के भेद ....माने है |

5. उपनागरिका वृत्ति तथा वैदर्भी रीति का सम्बन्ध ....काव्य गुण से है |

6. कोमल वृत्ति तथा पांचाली रीति का सम्बन्ध ....काव्य गुण से है |

7. परुष वृत्ति तथा गौड़ी रीति का सम्बन्ध ....काव्यगुण से है |

8. काव्य गुण के प्रमुख रूप से........... भेद होते है |

9. वाक्य रचना पढ़ते ही तुरंत अर्थ समझ में आ जाए वहाँ ....गुण होता है |

10. प्रसाद काव्य गुण में प्रसाद शब्द का अर्थ .... होता है |

11. जहाँ कोमल व मधुर वर्णों से युक्त रचना होती है वहाँ ....गुण होता है |

12. भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में माधुर्य शब्द का अर्थ ....माना है |

13. आचार्य दंडी ने माधुर्य का अर्थ ....माना है |

14. माधुर्य काव्य गुण में माधुर्य शब्द का अर्थ .... होता है |

15. अनुस्वार व अनुनासिक ध्वनियों का प्रयोग ....गुण से होता है |

16. क,च,त,प वर्ग के वर्णों का प्रयोग तथा सामासिकता,संयुक्त अक्षरों व द्वित्त्व वर्णों का अभाव ....गुण की पहचान है |

VISION 100 NEEMKATHANA

17. जिस परुष या कठोर शब्दों से युक्त रचना को पढ़कर या सुनकर हृदय में जोश, उत्साह उत्तेजना या तेजस्विता उत्पन्न होती है वहाँ ....गुण होता है |

18. 'ट' वर्ग के वर्ण तथा सामासिकता, संयुक्त अक्षरों,द्वित्व व रेफ युक्त शब्दों की अधिकता ....गुण की पहचान है |

19. वीर,रौद्र,वीभत्स रसों में अधिकता से ....गुण का प्रयोग होता है |

20. करुण,शांत,वात्सल्य व श्रृंगार रस में अधिकता से......... गुण का प्रयोग होता है |

21. ओज शब्द का अर्थ .... होता है |

उत्तरमाला

1. रस 2. काव्य गुण 3. दस 4. तीन 5. माधुर्य 6. प्रसाद 7. ओज 8. तीन 9. प्रसाद 10. स्पष्टता/स्वच्छता 11. माधुर्य 12. श्रुतिमधुरता 13. रसपूर्णता 14. मधुरता/मिठास 15. माधुर्य 16. माधुर्य 17. ओज 18. ओज 19. ओज 20. माधुर्य 21. तेजस्विता

काव्य दोष

1. रस के उत्कर्ष में बाधक तत्वों या रस के अपकर्ष में सहायक तत्वों को ....कहते हो |

2. रसापकृषका: दोषा: | काव्य दोष की यह परिभाषा ....दी है |

3. काव्य दोष के भेद ....माने जाते है |

4. जब किसी काव्य में कटु या कठोर वर्णों का प्रयोग किया जाता है तो वहाँ ....दोष होता है |

5. श्रुतिकटुत्त्व ....दोष होता है

6. काव्य में शिष्ट समाज में प्रयुक्त किये जाने वाले योग्य शब्दों के स्थान पर असभ्य,अशिष्ट तथा गंवारू शब्दों का प्रयोग करना .... दोष कहलाता है |

7. वीर,रौद्र,वीभत्स तथा भयानक रसों में............दोष काव्य गुण बन जाता है |

8. भाषा तथा व्याकरण के नियमों के विरुद्ध अशुद्ध शब्दों के प्रयोग करने से ....दोष होता है |

9. शब्दों का क्रम वाक्य रचना की दृष्टि से दूषित होने पर ....दोष होता है |

10. काव्य में जहाँ शास्त्र तथा लोकहित की दृष्टि से क्रम दूषित होता है वहाँ ....दोष होता है |

11. काव्य में अर्थ कठिनता से समझ आने पर ....दोष होता है |

12. ....गुण के अभाव में क्लिष्टत्त्व दोष होता है |

13. काव्य में घृणाजनक,लज्जाजनक तथा अमंगलसूचक शब्दों का प्रयोग करने पर ....दोष होता है |

14. काव्य में शास्त्र विशेष के शब्दों का प्रयोग करने से या पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करने पर ....दोष होता है |

15. काव्य में जहाँ अर्थ की पुनरुक्ति हो वहाँ ....दोष होता है |

16. पुनरुकत्त्व दोष को ....दोष भी कहा जाता है |

17. अक्रमत्व,दुष्क्रमत्व,क्लिष्टत्व दोष ....दोष के भेद है |

18. सूरदास के दृष्टिकुट पदों तथा कबीरदास की उलटबासियों में ....दोष अधिकता से मिलता है |

VISION 100 NEEMKATHANA

19. श्रुतिकटुत्त्व,ग्राम्यत्त्व,च्युतसंस्कृति,अश्लीलत्त्व,अप्रतीतत्त्व, पुनरुकत्त्व दोष ....के भेद माने जाते है |
20. वाक्य रचना में आवश्यकता से कम शब्द का प्रयोग करना न्यूनपदत्त्व दोष है जबकि आवश्यकता से अधिक शब्द या निरर्थक शब्दों का प्रयोग करने से ....दोष होता है |

उत्तरमाला
1. कव्य दोष 2. आचार्य विश्वनाथ 3. तीन 4. श्रुतिकटुत्त्व 5. शब्द दोष 6. ग्राम्यत्त्व 7. श्रुतिकटुत्त्व 8. च्युतसंस्कृति 9. अक्रमत्व 10. दुष्क्रमत्व 11. क्लिष्टत्व 12. प्रसाद गुण 13. अश्लीलत्त्व 14. अप्रतीतत्त्व 15. पुनरुकत्त्व 16. अर्थ दोष 17. क्लिष्टत्व 18. शब्द दोष 19. कथितपदत्त्व दोष 20. अधिकपदत्त्व दोष

छंद

1. छंद शब्द के मूल में चद् धातु है जिसका अर्थ ....होता है |
2. सामान्यत: यति,गति,लय,मात्रा,तुक,चरण,गण.दल आदि के नियमों से युक्त रचना को.........कहते है |
3. छंद पढ़तें या लिखते समय प्रत्येक चरण के अंत में ठहरना, रुकना या विश्राम करना.........कहलाता है
4. छंद को पढ़ने की लय का नाम ही ....है |
5. गति का ध्यान वर्णिक छंद की अपेक्षा ....छंद के लिए विशेष जरूरी है |
6.मात्राएँ व वर्ण पूरे होने पर भी यदि..........का अभाव है तो वह छंद नहीं बन पाता है,दोष बन जाता है
7. अक्षर के उच्चारण में लगने वाला समय या काल ....कहलाता है |
8. एक मात्रा या ह्रस्व स्वर को ....माना जाता है |
9. एक से अधिक मात्रा या दीर्घ स्वर को ....कहा जाता है |
10. मात्राएँ केवल.................की होती है,व्यंजन की नहीं |
11. छंद के चरणों की अंतिम ध्वनि की समानता को............कहते है |
12. पंक्तियों को छंदशास्त्र की भाषा में ....कहा जाता है |
13. चरणों को ....कहा जाता है |
14. तीन वर्णों के समूह को ....कहते है |
15. गणों की संख्या ....होती है |
16. जिन छंदों में वर्णों की संख्या निश्चित होती है या वर्णों की गिनती की जाती है ....छंद कहलाता है
17. जिन छंदों में मात्राओं की संख्या निश्चित होती है या मात्राओं की गिनती की जाती है .....कहलाता है
18. वर्ण या मात्रा के आधार पर छंद के भेद ....भेद होते है |
19. मात्रिक व वर्णिक छंद के तीन भेद होते है जो है सम , अर्द्धसम तथा..............|
20. जिन छंदों में एक समान मात्रा या वर्ण होते है होते है वह ....कहलाता है |
21. सम छंद के दो भेद होते है एक साधारण छंद तथा दूसरा .... होता है |
22. बत्तीस से कम मात्राओं तथा छब्बीस से कम वर्णों वाला छन्द साधारण सम छंद कहलाता है तथा बत्तीस से अधिक मात्राओं व छब्बीस से अधिक वर्णों वाला छंद ....कहलाता है |
23. जिन छंदों के पहले व तीसरे तथा दूसरे व चौथे चरणों में वर्ण व मात्राओं की संख्या बराबर होती है ....कहलाता है |
24. जो छंद सम या अर्द्ध सम नहीं होता है वह ....कहलाता है |

VISION 100 NEEMKATHANA

25. वर्णिक छंद के भेद होते है एक मुक्तक वर्णिक तथा दूसरा ....होता है |

26. जिन छंदों में वर्ण व गण दोनों की संख्या निश्चित होती है वह ....कहलाता है |

27. जिन छंदों में केवल वर्णों की संख्या निश्चित होती है तथा गण,लघु,गुरु का कोई नियम नहीं होता है वह ....छंद कहलाता है |

28. सभी दीर्घ स्वर व उनके योग से बनने वाले व्यंजन ....कहलाते है |

29. सभी ह्रस्व स्वर तथा उनके योग से बनने वाले व्यंजन ....कहलाते है |

30. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छंद को ....के लिए आवश्यक माना है |

31. छंद को रस तथा भाव-व्यंजना में सहायक ....ने माना है |

32. रूपमाला छंद के अंत में दो मात्राएँ जोड़ने पर ....छंद बन जाता है |

33. गीतिका छंद के प्रत्येक चरण के अंत में ....आता है |

34. गीतिका छंद के आरम्भ में दो मात्राएँ जोड़ने पर ....छंद बन जाता है |

35. हरिगीतिका छंद के प्रत्येक चरण के अंत में ....आता है |

36. रोला व उल्लाला छंद के योग से बनने वाला छंद ....कहलाता है |

37. छप्पय तथा कुंडलियाँ छंद को ....कहते है |

38. दोहा व रोला के योग से बनने वाला छंद ....कहलाता है |

39. छप्पय छंद के प्रथम चार चरण रोला तथा अंतिम दो चरण ....छन्द के होता है |

40. कुंडलियाँ छंद में पहले दोहा आता है तथा बाद में ....छंद आता है |

41. द्रुतविलम्बित व वंशस्थ छंद में गणों की संख्या .... होती है |

42. द्रुतविलम्बित व वंशस्थ छंद ....छंद की श्रेणी में आता है |

43. मुक्तक दंडक छंदों का सबसे लोकप्रिय छंद .... है |

44. कवित्त छंद को ....कहा जाता है |

45. रीतिकाल के कवियों ने ....छंद का सर्वाधिक प्रयोग किया है |

46. ब्रजभाषा में रचित काव्य का लोकप्रिय .... छंद है |

47. गणों की दृष्टि से सवैया छंद के मुख्यतः तीन भेद होते है जिनमे से है भगण,सगण तथा ....|

उत्तरमाला

1. प्रसन्न करना/आह्लादित करना 2. छंद 3. यति 4. गति 5. मात्रिक 6. गति 7. मात्रा 8. लघु 9. गुरु 10. स्वर 11. तुक 12. चरण 13. पद/पाद 14. गण 15. आठ 16. वर्णिक/वर्णवृत्त 17. मात्रिक/मात्रावृत्त 18. दो 19. विषम 20. सम 21. दंडक सम छंद 22. दंडक सम छंद 23. अर्द्ध सम 24. विषम 25. गणबद्ध वर्णिक 26. गणबद्ध वर्णिक 27. मुक्तक वर्णिक 28. गुरु 29. लघु 30. नाद-सौन्दर्य 31. आचार्य अभिनवगुप्त 32. गीतिका 33. लघु, गुरु 34. हरिगीतिका 35. लघु, गुरु 36. छप्पय 37. मिश्र छंद 38. कुंडलियाँ 39. उल्लाला 40. रोला 41. चार 42. अतुकांत 43. कवित्त 44. दंडक/मनहरण 45. सवैया 46. सवैया 47. जगण

VISION 100 NEEMKATHANA

मात्रिक छंद याद करने की ट्रिक

छंद का नाम	मात्रिक/वर्णिक	सम/अर्द्धसम/विषम	साधारण/दंडक	मात्रा	यति	चरण
1. गीतिका	मात्रिक	सम	साधारण	26-26	14,12	चार
2. हरिगीतिका	मात्रिक	सम	साधारण	28-28	16,12	चार
3. छप्पय	मात्रिक	विषम	साधारण	रोला 24-24, उल्लाला 28-28	रोला 11,13 उल्लाला 15,13	छह
4. कुंडलियाँ	मात्रिक	विषम	साधारण	दोहा 24-24 रोला 24-24	दोहा 13,11 रोला 11,13	छह

वर्णिक छंद याद करने की ट्रिक

छंद का नाम	मात्रिक/वर्णिक	सम/अर्द्धसम/विषम	साधारण/दण्डक	वर्ण	यति	मुक्तक/ गणबद्ध	गणों का क्रम	चरण
1. द्रुतविलम्बित	वर्णिक	सम वर्णिक	साधारण	12-12	प्रत्येक चरण के अंत में	गणबद्ध	नगण भगण भगण रगण	चार
2. वंशस्थ	वर्णिक	सम वर्णिक	साधारण	12-12	प्रत्येक चरण के अंत में	गणबद्ध	जगण तगण जगण रगण	चार
3. कवित्त	वर्णिक	सम वर्णिक	दण्डक	31-31	16,15 या 8,8,8,7	मुक्तक	-----	चार
4. सवैया	वर्णिक	सम वर्णिक	साधारण	22-26	प्रत्येक चरण के अंत में	गणबद्ध	भगण जगण सगण	चार

VISION 100 NEEMKATHANA

अलंकार

1. अलंकार शब्द का शाब्दिक अर्थ ....होता है |

2. अलंकार शब्द ....शब्दों के योग से बना है |

3. 'काव्यशोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते' उक्त परिभाषा ....ने दी है |

4. अलंकार के .... भेद माने जाते है |

5. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक .... माने जाते है |

6. जहाँ काव्य के शब्दों में चमत्कार पाया जाता है वहाँ ....होता है |

7. जहाँ काव्य के अर्थ में चमत्कार पाया जाता है वहाँ ....होता है |

8. जहां काव्य के शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार पाया जाता है वहाँ ....होता है |

9. दो वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब का भाव हो वहाँ ....अलंकार होता है |

10. विभावना शब्द दो शब्दों के योग से बना है वि + भावना | वि का अर्थ .... तथा भावना का अर्थ .... है |

11. काव्य में जहाँ कारण के बिना कार्य की उत्पति की विशिष्ट कल्पना की जाती है | वहाँ ....अलंकार होता है |

12. काव्य में जहाँ कारण के उपस्थित रहने पर भी जब कार्य का न होना वर्णित किया जाए | वहाँ ....अलंकार होता है |

13. काव्य में जहाँ प्रकृति के जड़ पदार्थों पर मानवीय क्रियाकलापों का आरोप किया जाता है वहाँ .... अलंकार होता है |

14. अन्योक्ति शब्द का अर्थ .... है |

15. काव्य में जहाँ अप्रस्तुत उपमान के द्वारा प्रस्तुत उपमेय का बोध कराया जाता है | वहाँ .... अलंकार होता है

16. अन्योक्ति अलंकार को .... भी कहते है |

17. समासोक्ति शब्द समास और उक्ति के योग से बना है समास का अर्थ .... है | तथा उक्ति का अर्थ .... है |

18. प्रतीप शब्द का अर्थ .... है |

19. जहाँ पर प्रसिद्ध उपमान को उपमेय या उपमेय को उपमान सिद्ध करके उपमेय की उत्कृष्टता वर्णित की जाती है | वहाँ .... अलंकार होता है |

20. प्रतीप अलंकार .... अंलकार का उलटा/विपरीत है |

21. व्यतिरेक शब्द वि + अतिरेक के योग से बना है | वि का अर्थ है ....तथा अतिरेक का अर्थ......है

22. जहाँ गुणाधिक्य के कारण उपमान की तुलना में उपमेय का उत्कृष्ट वर्णित होता है | वहाँ ....अलंकार होता है |

23. प्रतीप में कवि का प्रमुख उद्देश्य उपमान का .... करना होता है जबकि व्यतिरेक में कवि का प्रमुख उद्देश्य उपमान को .... स्थापित करना होता है |

उत्तरमाला

VISION 100 NEEMKATHANA

1. आभूषण/गहना 2. दो 3. आचार्य दंडी 4. तीन 5. आचार्य भामह 6. शब्दालंकार 7. अर्थालंकार 8. उभयालंकार 9. दृष्टान्त 10. विशिष्ट,कल्पना 11. विभावना 12. विशेषोक्ति 13. मानवीकरण 14. अन्य के प्रति कही गई उक्ति 15. अन्योक्ति 16. अप्रस्तुतप्रशंसा 17. संक्षिप्त,कथन 18. उलटा/विपरीत 19. प्रतीप 20. उपमा 21. विशेष,अधिकता/आधिक्य 22. व्यतिरेक 23. तिरस्कार,स्थापित

अलंकार –एक परिचय

अलंकार –शाब्दिक अर्थ गहना या आभूषण |आचार्य दंडी के अनुसार" – काव्यशोभा करान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते "अर्थात काव्य को शोभा प्रदान वाले अस्थिर तत्वों को अलंकार कहते हैं| अलंक्रियते इति अलंकार : अर्थात जो अलंकृत करे वह अलंकार है | जिस प्रकार आभूषण धारण करने से मनुष्य की सुन्दरता में वृद्धि होती है उसी प्रकार अलंकार काव्य की सुन्दरता में वृद्धि करते हैं |

प्रमुख भेद –

<u>शब्दालंकार</u> –काव्य में सौन्दर्य या <u>चमत्कार शब्द में</u> निहित हो वहाँ शब्दालंकार होता है इसमें पर्यायवाची शब्द रखने से अलंकार का सौन्दर्य समाप्त हो जाता है |जैसे-अनुप्रास ,यमक ,श्लेष आदि|

<u>अर्थालंकार</u>- जहाँ काव्य में सौन्दर्य या चमत्कार <u>अर्थ में</u> निहित हो तो वहाँ अर्थालंकार होता है |जैसे-उपमा , रूपक ,उत्प्रेक्षा

<u>उभयालंकार</u> - जहाँ सौन्दर्य या चमत्कार <u>शब्द और अर्थ दोनों</u> में निहित हो तो वहाँ उभयालंकार होता है | जैसे – संकर ,संसृष्टि

<u>अलंकारों का महत्त्व</u>– भारतीय काव्यशास्त्र में प्राय :सभी आचार्यों ने अलंकारों की उपयोगिता स्वीकार की है | कई आचार्यों ने तो अलंकारों को काव्य की आत्मा माना है | वेदव्यास के अनुसार" अलंकार रहित सरस्वती विधवा के समान मन को उल्लसित नहीं करती |"भामह के शब्दों में "न कान्तंमपि निर्भूषम विभाति वनिता मुखम "अर्थात जैसे आभूषण के बिना नारी के मुख पर कान्ति नहीं आती वैसे ही बिना अलंकारों के कवि की वाणी अर्थात काव्य सुशोभित नहीं होता | अलंकारों के महत्त्ब को निम्लिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं --

1 .अलंकार के प्रयोग से काव्य में <u>आकर्षण,स्पष्टता,सुबोधता,गुणवत्ता ,प्राणवत्ता</u> बढती है |

2. अलंकारों के उपयोग से काव्य <u>प्रभावशाली ,रुचिप्रद ,पठनीय ,संप्रेषणीय</u>,बनता है|

3. अलंकारों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में <u>असाधारणता</u> आती है |

<u>1.मानवीकरण</u>– जब प्रकृति के जड़ या अमूर्त पदार्थों पर मानवीय क्रियाकलापों का आरोप किया जाता है या काव्य में जहाँ प्रकृति के उपादानों को मानव के समान काम करता हुआ बताया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है |

1. बीती विभावरी जाग री |
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा-नागरि|

2. जलधि लहरियों की अंगडाई बार बार जाती सोने 3. संध्या घनमाला-सी सुन्दर ओढ़े रंग बिरंगी छींट

4. थकी वनस्पति अलसाई मुख धोती शीतल जल से 5. फूल हँस रहे है |

<u>2. विभावना</u>– विभावना शब्द का अर्थ है –वि अर्थात "विशिष्ट "तथा भावना का अर्थ है -कल्पना | काव्य में जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो वहाँ विभावना अलंकार होता है |

जैसे.1--बिनु पद चले सुने बिनु काना कर बिना कर्म करे बिधि नाना|

VISION 100 NEEMKATHANA

.   निंदक नियरे राखिये.. . .3 प्यास मिटी पानी बिना मोहन को मुख देखि |

3.विशेषोक्ति-काव्य में जहाँ कारण उपस्थित होने पर भी काम न हो वहाँ विषेशोक्ति अलंकार होता है |

जैसे -.1देखो दो दो मेघ बरसते मैं प्यासी की प्यासी |

.2   नीर भरे नित प्रति रहे ,तऊ न प्यास बुझाय|

4.दृष्टान्त अलंकार– जब पहले एक बात कहकर फिर उसी से मिलती जुलती दूसरी बात उदाहरण के रूप में कही जाए जो पहली बात की सत्यता प्रमाणित करे तथा दोनों वाक्यों में बिम्ब प्रतिबिम्ब का भाव पाया जाए और वाचक शब्द नहीं हो वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है |

जैसे – धनी गेह में श्री जाती है कभी न जाती निर्धन घर में,सागर में गंगा गिरती है कभी न गिरती सूखे सर में |

जैसे – करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान,रसरि आवत जात ते सिल पर परत निसान|

दृष्टांत और उदाहरण का अंतर– IMP

1 .दृष्टांत में एक बात कहकर उसी से समानता रखने वाली दूसरी बात पहली बात के दृष्टांत के रूप में कही जाती है जबकि उदाहरण अलंकार में सामान्य बात को समझाने के लिए विशेष बात कही जाती है या जगत प्रसिद्ध बात कही जाती हैं |

2 .दृष्टांत अलंकार में ज्यों,जिमि,जैसे,आदि वाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता है जबकि उदाहरण में ज्यों,जिमि,जैसे आदि वाचक शब्दों का प्रयोग अवश्य होता है |

5.अन्योक्ति /अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार– अन्योक्ति का शाब्दिक अर्थ है-अन्य के प्रति कही गयी उक्ति या कथन | जब कवि अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का बोध करवाता है वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है |दूसरे शब्दों में" जब किसी बात का सीधा वर्णन न कर उसके समान ही किसी अन्य वस्तु का वर्णन कर उस मूल बात का बोध करवाया जाता है तो उसे अन्योक्ति अलंकार कहते हैं|"

जैसे .1 –नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल ,अलि कलि ही सों बंध्यो आगे कौन हवाल|

2. माली आवत देखि कर कलियन करि पुकार,फूले फूले चुन लिए कल्हि हमारी बार

6.समासोक्ति अलंकार– समासोक्ति का शाब्दिक अर्थ है-संक्षिप्त कथन | जब कवि प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का बोध करता है वहाँ समासोक्ति अलंकार होता है |

जैसे –कुमुदिनी हूँ प्रफुल्लित भई सांझ कलानिधि जोई |

प्रस्तुत अर्थ– संध्या के समय चन्द्र को देख कर कुमुदिनी खिल उठी |अप्रस्तुत अर्थ– संध्या के समय कलाओं के निधि)प्रियतम (को देख कर कुमदिनी)नायिका (प्रसन्न हो उठी|

अन्योक्ति और समासोक्ति में अंतर – IMP

1 .अन्योक्ति में अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का बोध करवाया जाता है जबकि समासोक्ति में प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का बोध करवाया जाता है |

2 .अन्योक्ति में अप्रस्तुत अप्रधान होता है जबकि समासोक्ति में अप्रस्तुत प्रधान और व्यंग्य होता है |

3 .अन्योक्ति में एक के वर्णन से अन्य की उक्ति होती है मगर समासोक्ति में प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों का कथन संक्षेप में एक साथ होता है |

4 .अन्योक्ति में अप्रस्तुत अभिधेय होता है तथा समासोक्ति में व्यंग्य होता है |

VISION 100 NEEMKATHANA

7. प्रतीप अलंकार– प्रतीप का शाब्दिक अर्थ है -उल्टा या विपरीत | यह उपमा अलंकार का उल्टा है इसमें उपमान की तुलना उपमेय से की जाती है और उपमान को उपमेय के सामने तिरस्कृत किया जाता है वहाँ प्रतीप अलंकार होता है

जैसे .1 –सिय वदन सम हिमकर नाहि 2 .इन दशनों अधरों के आगे ,क्या मुक्ता है, है क्या विद्रुम ?

8.व्यतिरेक अलंकार– व्यतिरेक शब्द वि+अतिरेक से मिलकर बना है जिसमें " वि "का अर्थ है विशेष और "अतिरेक "का अर्थ है आधिक्य| काव्य में जहाँ गुणाधिक्य के कारण उपमेय में उपमान की अपेक्षा कोई बात अधिक विशिष्ट बताई जाती है |

जैसे 1 – .साधू ऊँचे शैल सम,किन्तु प्रकृति सुकुमार | 2 .का सरवरि तेहि देऊ मयंकू,चाँद कलंकी वह निकलन्कू|

प्रतीप और व्यतिरेक में अंतर– IMP

1 .प्रतीप में उपमान को उपमेय के सामने तिरस्कृत किया जाता है जबकि व्यतिरेक में गुणाधिक्य के कारण उपमेय में उपमान की अपेक्षा कोई बात अधिक विशिष्ट बताई जाती है |

2 .प्रतीप में कवि का उद्देश्य उपमान का तिरस्कार करना होता है जबकि व्यतिरेक में कवि का उदेश्य उपमान को स्थापित करना होता है |

Note -प्रतीप और व्यतिरेक,अन्योक्ति और समासोक्ति,उदाहरण और दृष्टांत ,विभावना और विशेषोक्ति में अंतर याद जरूर करवायें |

लघूत्तरात्मक प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण हैं

अथवा '

देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की निराशा के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - देवसेना की निराशा के कई कारण हैं जिनमें दो कारण मुख्य हैं। प्रथम तो हूणों के आक्रमण के कारण उसके भाई बन्धुवर्मा एवं परिवार के सदस्यों को वीरगति प्राप्त हुई और जीवनभर अकेली रहकर उसे संघर्ष करना पड़ा। दूसरा मुख्य कारण यह था कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी परन्तु उसे स्कन्दगुप्त का प्रेम प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि वह विजया व्रत से प्रेम करता था। जब स्कन्दगुप्त ने उसके सामने प्रेम प्रस्ताव रखा तब तक वह आजीवन अविवाहित रहने का प्रण ले चुकी थी। स्कन्दगुप्त के व्यवहार के कारण वह निराश हो गई थी। अकेली रहने के कारण उसे लोगों की कुदृष्टि का सामना करना पड़ा। स्कन्दगुप्त की उपेक्षा के कारण उसे भीख माँगने का कार्य भी करना पड़ा। इसी से वह जीवन में हार गई और निराश हो गई थी।

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है ?

उत्तर-कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है कि आशा तो असंभव बात की बनी रहती है और आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती है, उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी (स्त्री और पुरुष) विवेकहीन हो जाते हैं। प्रेम अन्धा होता है। देवसेना भी स्कन्दगुप्त के प्रेम में बावली हो गई थी। उसने बिना सोचे-समझे स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और यह आशा मन में पाली कि स्कन्दगुप्त उसे अपना लेगा। उसकी आशा उसके मन का पागलपन ही था। वह स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी।

प्रश्न 3. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में भारत की विशेषताओं का चित्रण है। समझाइये।

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर- अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में कवि भारत की विशेषताओं का चित्रण करते हुए बताता है कि सूर्य की प्रातःकालीन किरणें सर्वप्रथम यहीं पड़ती हैं। यहाँ पर पक्षियों के साथ साथ विभिन्न देशो के जातियों, आचार विचार रखने वाले लोगों को भी आश्रय मिलता है और सभी के प्रति करुणा का प्रसार होता है। भारत मानवता का उपासक और आदर्शों का निर्वाहक देश है।

प्रश्न 4. "बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा जल।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। उत्तर-इस पंक्ति में कवि बताता है कि यहाँ भारतीयों की मानवीय संवेदना एवं करुणा भावना के कारण सभी को आश्रय मिलता है। जिस प्रकार बादल आकर सन्तप्त धरती को अपने जल-कणों की वर्षा कर शीतल कर देते हैं, उसी प्रकार भारत के लोग भी पीड़ित दुःखित मानवता को देखकर संवेदना और करुणा भाव प्रकट करते हैं।

प्रश्न 5. "उड़ते खग जिस ओर मुँह किए-समझ नीड़ निज प्यारा।" काव्य-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-इस पंक्ति का आशय यह है कि प्रत्येक देश का व्यक्ति यहाँ आकर आश्रय पाता है और वह भारतीयों की मानवीय करुणा का पात्र भी बन जाता है। इसीलिए जिसे अपना प्यारा घोंसला समझकर सन्ध्या काल को अनेक पक्षी आश्रय और विश्राम प्राप्ति के लिए आते रहते हैं। यह भारत देश वैसे ही विभिन्न देशों से आये हुए लोगों को आश्रय प्रदान करता रहता है।

प्रश्न 6. 'देवसेना का गीत' का मूल भाव या आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'देवसेना का गीत' का मूल भाव या आशय यह है कि व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्यों में निराशा-वेदना मिले, तो भी उसे हार नहीं माननी चाहिए और अपनी समस्त दुर्बलताओं का सामना कर संघर्षपूर्वक जीवन-पथ पर बढ़ना चाहिए। वेदना एवं कष्ट के क्षणों में हार न मानकर सदा अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए| जिस प्रकार देवसेना अपनी कमजोरियों व दुर्बलताओं को जानते हुए भी संघर्ष कर रही थी ठीक उसी प्रकार हमें भी आजीवन संघर्ष करना चाहिए |

प्रश्न 7. 'कार्नेलिया का गीत' का मूल प्रतिपाद्य या आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'कार्नेलिया का गीत' का मूल प्रतिपाद्य भारत की गौरव-गाथा तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण कर उसकी विशेषताओं का प्रकाशन करना है। भारत प्राचीन काल से मानव-सभ्यता का देश और मानवीय आदर्शों का

प्रेरक रहा है। यहाँ पर हर किसी को आश्रय मिलता है। यहाँ पर करुणा, मंगल भावना एवं आत्मीयता का सद्भाव रहता है।

प्रश्न 8. 'कार्नेलिया का गीत' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत भारत की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- इस कविता में जयशंकर प्रसाद द्वारा भारत की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख है-

1.भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अदभुत हैं

2.भारत की संस्कृति महान है।

3.यहाँ के लोग दया, करुणा और सहानुभूति से भरे हैं।

4.यहाँ एक अपरिचित व्यक्ति को भी प्यार मिलता है |

प्रश्न 9. 'सरोज स्मृति' कविता के संकलित अंश का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सरोज स्मृति' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

उत्तर- 'सरोज स्मृति' कविता के संकलित अंश का प्रतिपाद्य कवि निराला के उल्लास और विषाद की अभिव्यक्ति करना है। इसमें पुत्री सरोज के विवाह को लेकर प्रसन्नता और उसका उचित लालन-पालन न कर

VISION 100 NEEMKATHANA

पाने से वेदना व्यक्त हुई है क्योंकि उसका लालन-पालन ननिहाल में ही हुआ था कन्या के असामयिक निधन पर तो कवि ने वेदना-विषाद व्यक्त की मार्मिक व्यंजना की है।

प्रश्न 10. निराला ने पुत्री सरोज के विवाह को 'आमूल नवल' क्यों कहा है ? इसके पीछे निराला का कौन-सा भाव छिपा है ?

उत्तर-निराला ने सरोज के विवाह को 'आमूल नवल' कहा है क्योंकि
यह विवाह नवीन ढंग से सम्पन्न हुआ था।
2.इसमें प्रदर्शन का अभाव था। अर्थात् विवाह का शोरगुल नही था
3.कुछ परिचितों के अतिरिक्त उसमें कोई सम्मिलित नहीं था क्योंकि उन्होंने किसी को भी निमन्त्रण पत्र नही दिया था
4.साजसज्जा और संगीत आदि की व्यवस्था भी नहीं थी।
5.नववधू को माँ द्वारा दी जाने वाली शिक्षा उसके पिता ने ही दी थी |
6.नवयुगल के सुहाग की सेज भी पिता ने ही सजाई थी |
दूसरी ओर यह भाव भी छिपा है कि वे पुत्री का विवाह धूमधाम से और परम्परानुसार नहीं कर सके |

प्रश्न 11. 'सरोज स्मृति' को शोक-गीत क्यों कहा जाता है?

उत्तर- शोक-गीत प्रियजन की मृत्यु के उपरान्त उसके विरह में लिखा जाने वाला गीत होता है। उसमें रचनाकार अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करता है। 'सरोज स्मृति' भी निराला की ऐसी ही लम्बी कविता है।निराला ने अपनी प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु के उपरान्त यह कविता लिखी थी जिसमें शोक, निराशा और पीड़ा के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। पुत्री की मृत्यु के पश्चात् कवि को आत्मग्लानि की अनुभूति हुई थी क्योंकि जब वह जीवित थी निराला उसके लिए कुछ नहीं कर सके | इस गीत में कवि के मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न 12. दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज, जो नहीं कही ! उपर्युक्त पक्तियों में निहित कवि के भाव को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सरोज स्मृति' कविता में कवि के आत्मकथन' दुःख ही जीवन की कथा रही' की बेदना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'दुःख ही जीवन की कथा रही' क्या कहूँ आज, जो नहीं कही' के आलोक में कवि के हृदय की पीड़ा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कवि का भाव यह है कि मेरा सारा जीवन दुःख से भरा हुआ है क्योंकि पहले पत्नी का , फिर पुत्री का असामयिक देहांत हुआ इसलिए मुझे आजीवन संघर्षों से जूझना पड़ा। मेरे जीवन की सारी कथा दुःख में डूबी हुई है। इसलिए मैंने इस कविता में उस दुःख-गाथा को गाया है जिसे मैंने आज तक किसी से नहीं कहा। इन पंक्तियों में निराला की गहरी वेदना छिपी है। इसमें वह तड़प छिपी है जिसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 13. 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइये कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है?

उत्तर-दीप अकेला कविता में प्रतीकार्थ शब्द हैं एक दीप,दूसरा पंक्ति | दीप व्यक्ति का प्रतीक और पंक्ति समाज का प्रतीक है | दीप स्नेह (तेल) से भरा होता है। उसकी लौं ऊपर को उठती है जो उसका गर्वीलापन है। लौं का ऊपर अधिक उठना उसके भीतर अत्यधिक स्नेह-भरा होने के कारण है। हवा से लौं का झूमना

VISION 100 NEEMKATHANA

मदमातापन है। इसी प्रकार मनुष्य भी प्रेम, गर्व व मद सभी से युक्त होता है। इसलिए कवि ने दीप को स्नेहभरा, गर्वभरा और मदमाता कहा कहा है, क क्योंकि ये सभी विशेषण मनुष्य के हैं।

प्रश्न 14. 'क्षण के महत्त्व' को उजागर करते हुए कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर- प्रयोगवादी कवियों ने जीवन में क्षण के महत्त्व को भी स्थान दिया है। कविता में बूँद का एक क्षण के लिए ही सही ढलते सूरज की स्वर्णिम आभा से रंग जाने और फिर सागर में मिल जाने का वर्णन हुआ है। कवि का अभिप्राय यह है कि जीवन भले ही क्षणभंगुर है, किन्तु इसे तेज और उष्मा से आलोकित होना चाहिए, तभी उसका महत्त्व है और तब ही क्षण का भी महत्त्व है।

प्रश्न 15. 'यह दीप अकेला' कविता का केन्द्रीय भाव बताइए।

उत्तर-'यह दीप अकेला' में कवि अज्ञेय ने दीपक को मनुष्य के प्रतीक स्वरूप लिया है। जिस प्रकार एक अकेला दीपक समर्थ होते हुए अपना प्रकाश दूर-दूर तक नहीं फैला सकता है और जैसे ही अकेले दीपक को उठाकर अनेक दीपकों की कतारों में रख देने से वह अधिक जगमगाने लगता है तथा साथ रखने और रहने से उसकी सौन्दर्यता और बढ़ जाती है उसी प्रकार एक व्यक्ति है समर्थ है, स्वतंत्र है, अपने आप में स्नेह एवं करुणा लिये हुए है। फिर भी उसकी सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में है। अत: अज्ञेयजी कविता के माध्यम से व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने पर बल देत हैं ताकि विश्व का कल्याण हो सके। इसी में दीप और व्यक्ति दोनों की सार्थकता निहित है।

प्रश्न 16. 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने इस कविता के माध्यम से जीवन के क्षण के महत्त्व को तथा क्षणभंगुरता को व्यक्त किया है। बूँद जब तक समुद्र में रहती है, उसका कोई अस्तित्व नहीं होता किन्तु जब वह अलग होती है तो सूर्य से रंगकर सार्थक हो जाती है। बूँद का सागर से अलग होने का अर्थ है कि अब उसका अस्तित्व समाप्त होने वाला है और वह शीघ्र नष्ट होने वाली है। यह क्षणभंगुरता बूंद की सागर की नहीं | बूंद सागर से अलग होकर स्वयं अभिप्राय ब्रह्म से है। जहाँ से बूँद रूपी जीव क्षणभर अर्थात् कुछ समय के लिए अलग होता है और कुछ रंगीन पल व्यतीत कर नश्वरता को प्राप्त होता है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त होता है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन भी क्षणभर स्वयं को आलोकित कर पुनः परब्रह्म में विलीन हो जाता है। यही मूल भाव दर्शाया गया है।

17. 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर- कवि का यह आशय है कि वसंत ऋतु में सर्दी कम हो जाती है और गंगा स्नान के लिए लोगों की भीड़ बढ़ जाती है। गंगा के दर्शनार्थियों से भिखारियों को खूब भीख मिलती है। उनके कटोरों में सिक्कों की खनक बढ़ जाती है। जिस प्रकार प्रकृति में वसंत ऋतु के आने पर मधुरता व खुशियाँ छा जाती हैं उसी प्रकार भिखारियों के चेहरों पर चमक भी बढ़ जाती है। कटोरों में पड़ते सिक्कों की चमक में कवि को वसंत उतरता दिखाई देता है।

प्रश्न 18. 'मैं स्वीकार करूँ, मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है'- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह है कि कवि को पहली बार यह आभास हुआ कि हिमालय की दिशा उधर ही है जिस तरफ व्यक्ति की सोच होती है। हर व्यक्ति का यथार्थ अपने अनुसार होता है।और बालक का भी अपना यथार्थ होता है तथा बालक का ध्यान पूर्णतः अपनी पतंग पर था। इसमें बालक की सहजता एवं आत्ममुग्धता व्यंजित हुई है।

प्रश्न 19. 'अपनी एक टाँग पर खड़ा है, यह शहर अपनी दूसरी टाँग से बिलकुल बेखबर ' उपर्युक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बनारस प्राचीन काल से चली आ रही धार्मिक परम्पराओं एवं आस्था का केन्द्र है। यहाँ पर गंगा-स्नान, मन्दिरों में देवताओं का पूजन, भिखारियों को दान आदि कार्य रोजाना चलते रहते हैं। सैकड़ों वर्षों से यह नगर

VISION 100 NEEMKATHANA

एक टाँग पर खड़े रहकर धर्माचरण कर रहा है अर्थात् यह अपने धर्माचरण पर अडिग है वह नये सामयिक बदलाव तथा आधुनिकता के प्रभाव से सर्वथा मुक्त है।

प्रश्न 20. 'बनारस' शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'बनारस' शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य इस शहर से जुड़ी मिथकीय आस्था, काशी और गंगा के सान्निध्य मोक्ष प्राप्ति की आस्तिक-भावना का वर्णन कर वहाँ के मिले-जुले रूप को प्राचीनता और भव्यता के साथ दिखाना है। साथ ही सांस्कृतिक जीवन्तता और आधुनिकता का मिला-जुला रूप दिखाना कवि का लक्ष्य रहा है।

प्रश्न 21. 'दिशा' शीर्षक कविता का मूल आशय/मूल भाव क्या है? लिखिए।

उत्तर-यह कविता बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है। इसका मूल भाव यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है। बच्चे अपने ढंग से यथार्थ को सोचते हैं। बच्चे की पतंग जिस ओर उड़ रही थी, उसे उसी तरफ हिमालय या उत्तर दिशा प्रतीत होने लगी। बच्चे बाल-सुलभ आत्ममुग्धता से ऐसी बातें करते हैं कि उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। बच्चे के जीवन से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने लक्ष्य पर ध्यान रखना चाहिए |

प्रश्न 22. वसंत आगमन की सूचना कवि को कैसे मिली?

उत्तर-वसंत आगमन की सूचना कवि को बंगले के पास के वृक्ष पर किसी चिड़िया के कुहकने और पेड़ों से पीले पत्ते गिरने से और हवा में गरमाहट होने से मिली थी। साथ ही उसे कैलेण्डर देखने से तथा दफ्तर में वसन्त पंचमी की छुट्टी होने की सूचना से वसन्त के आगमन की सूचना मिली।

प्रश्न 23. " आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- 'आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि मन के मैदानों में व्याप्त ऊब या उदासीनता के कारण सृजन कार्य आधा-अधूरा ही होता है। मन की प्रसन्नता और सृजनशीलता से ही कार्य को पूर्णता मिलती है। अतः आधे-अधूरे गाने अर्थात् अपूर्ण सृजन से बचने के लिए मन की उदासीनता को दूर करना होगा जिससे नया सृजन हो सके |

प्रश्न 24. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिन्ता क्या है? उसका प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- 'वसंत आया' कविता में कवि को इस बात की चिन्ता है कि आज मनुष्य का प्रकृति से सम्बन्ध टूट रहा है। इसलिए वह ऋतुओं के परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाता है और वह प्रकृति के सच्चे सुखों से वंचित रहता है। यह और भी दुःखद स्थिति है कि ऋतु परिवर्तन का ज्ञान हमें कैलेण्डर को देखने से तथा पुस्तकों के पढ़ने या साहित्यिक ज्ञान के आधार से मिलता है। हमारी आधुनिक जीवन शैली ने हमें प्रकृति से प्राप्त सुखों से वंचित कर दिया है। हम प्रकृति के पल-पल परिवर्तित रूप को अनुभव नही कर पा रहे है |

प्रश्न 25. 'तोड़ो' कविता का प्रतिपाद्य या मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'तोड़ो' कविता उद्बोधनपरक है। इसका प्रतिपाद्य यह है कि बंजर एवं ऊबड़-खाबड़ जमीन को उपजाऊ खेत में बदलने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं, उसी प्रकार मन में व्याप्त ऊब, खोज और बाधक तत्त्वों को तोड़कर उसे नवीन सृजन के योग्य बनाना जरूरी है। नव-सृजन हेतु प्रकृति के साथ मन को भी सृजनशील बनाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 26. 'पनडुब्बा-ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लाएगा' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- गोताखोर जिस प्रकार सागर में गोता लगाकर उसकी अतल गहराई से बहुमूल्य मोती निकालकर लाता है उसी प्रकार भावनाओं के सागर में डूबकर कवि नई-नई उक्तियों को खोजकर बाहर लाता है। नई भावनाओं

VISION 100 NEEMKATHANA

और काव्योक्तियों को समाज को कवि के अतिरिक्त कौन देगा। इसलिए उसका समाज में सम्मिलित होना आवश्यक है।

प्रश्न 27. 'यह अंकुर-फोड़ धरा को रवि को ताकता निर्भय' पंक्ति का मूल भाव क्या है?

उत्तर- बीज धरा के ऊपरी धरातल को फोड़कर बाहर निकलता है, अंकुरित होता है और आकाश में चमकते सूर्य की ओर निर्भीकता से ताकता है। इसी प्रकार मानव के हृदय मेरे भावना के अंकर स्वत: फूट पड़ते है। अर्थात् मनुष्य के हृदय की भावनाए समय पाकर स्वत ही बाहर निकल पड़ती है और समाज में व्याप्त हो जाती है।

प्रश्न 28. "यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा, वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा;" उपर्युक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि दीपक के सम्बन्ध में कहता है कि यह दीपक उस विश्वास का प्रतीक है जो छोटा होते हुए भी झंझा में काँपता नहीं है और जिसने अपनी गहराई को स्वयं जाना है, स्वयं नापा है। दीपक मनुष्य का प्रतीक है। मनुष्य में विश्वास है, उसमें सहनशक्ति है, वह जागरूक और प्रबुद्ध है। सर्वगुण सम्पन्न है किन्तु उसे समाजरूपी पंक्ति में सम्मिलित करने की आवश्यकता है तभी उसकी शक्ति का उपयोग हो सकता है।

प्रश्न 29. 'कल मैंने जाना कि वसन्त आया।' इस पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-इस पंक्ति में यह व्यंग्य निहित है कि आज आधुनिक जीवन शैली अपने आप तक सीमित हो गई है। शहरी संस्कृति से मनुष्य प्रकृति से कटता जा रहा है। इस कारण वसन्त ऋतु के आगमन पर वह उल्लास का अनुभव नहीं कर पाता है। समस्त प्राकृतिक परिवर्तन देखकर भी वह स्वानुभूति से शून्य हो रहा है और उसे वसंत आगमन की सुचना कैलेंडर से मिलती है |

प्रश्न 30. 'हारेंहूँ खेल जितावहिं मोंही' भरत के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर- भरत के इस कथन का आशय यह है कि राम उनसे बहुत स्नेह रखते थे। बचपन में खेलते हुए मेरे हारने पर भी मुझे जिता देते थे और स्वयं हार जाते थे, जिससे मुझे हारने पर दुःख न हो। स्नेह-भाव से वे मेरा बहुत ध्यान रखते थे, ताकि मुझे किसी प्रकार की पीड़ा न हो। जिस प्रकार वह बचपन में मुझे दुखी नहीं देख सकते थे थी उसी प्रकार वह आज भी मेरी पीड़ा को समझेंगे तथा अयोध्या वापस चलेंगे

प्रश्न 31. श्रीराम के अश्वों की किस से तुलना की गई है और क्यों? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर- श्रीराम के अश्वों की तुलना पाले के मारे हुए कमल के पुष्प से की गई है क्योंकि श्रीराम अश्वों से बहुत प्रेम करते थे, उनके वन गमन कर जाने से अश्व दुर्बल और श्रीहीन प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 32. 'फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली ।।' इस पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-भावपक्ष- कोदव अर्थात् जंगली धान से उत्तम धान और काले अर्थात् बेकार घोंघा से उत्तम मोती उत्पन्न नहीं हो सकता, इसी प्रकार दुष्ट माता से सज्जन पुत्र पैदा नहीं हो सकता। भरत ने दृष्टान्त के द्वारा अपना हार्दिक क्षोभ व्यक्त किया है।

कलापक्ष- 1.अनुप्रास तथा दृष्टान्त अलंकार का प्रयोग हुआ है। 2.भाषा अवधी 3.छन्द-चौपाई है।
4.गुण- माधुर्य है 5. इसमें शांत रस का प्रयोग हुआ है | 6. इसमें भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है |

प्रश्न 33. 'पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े' पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख हुआ है, वह कहाँ हुई है?

उत्तर- उक्त पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख है वह चित्रकूट में आयोजित हुई थी। जब भरत को पता चला कि राम लक्ष्मण और सीता सहित चौदह वर्ष के वनवास हेतु गए हैं तो वे उन्हें अयोध्या वापस लौटा लाने के लिए

VISION 100 NEEMKATHANA

चित्रकूट जा पहुँचे। वहीं यह सभा आयोजित की गई थी। भरत पुलकित होकर कुछ कहने के लिए सभा में खड़े हो गए।

प्रश्न 34. माघ महीने में विरहिणी को क्या अनुभूति होती है?

उत्तर- माघ के महीने में शीत का प्रकोप बढ़ जाता है और पाला भी पड़ने लगता है। माघ महीने का जाड़ा विरह-व्यथा के कारण नागमती को मृत्यु के समान लगता है। कमजोर शरीर पर वर्षा की बूँदें ओलों की तरह शरीर को कष्ट देती हैं अर्थात् वह उसे बाण के समान लगती है | विरहाग्नि उसे जलाकर राख कर देती है। इस तरह विरहिणी को भयंकर वेदना होती है।

प्रश्न 35. "नैन चुवहिं जस माँहुट नीरू" से कवि का क्या आशय है?

उत्तर-विरह की अवस्था में विरहिणी नागमती के नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लगी रहती है। यह झड़ी सर्दियों में होने वाली वर्षा अर्थात् मावट के समान प्रतीत होती है। कवि का कहना है कि माघ महीने की बरसात की तरह नागमती की आँखों से टप टप आँसू टपकते रहते हैं।

प्रश्न 36. 'केहिक सिंगार को पहिर पटोरा' उपर्युक्त काव्य-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- विरहिणी नायिका नागमती कहती है कि मेरे प्रियतम तो मेरे से बहुत दूर चले गये हैं। दूसरी स्त्रियाँ अपने पति को रिझाने के लिए श्रृंगार कर रही है लेकिन पति के वियोग में अब मैं किसके लिए श्रृंगार करूँ और किसके लिए रेशमी वस्त्र धारण करूँ, अर्थात् विरहिणी नायिका के लिए पति के बिछोह में सजना-सँवरना और श्रृंगार करना सब व्यर्थ लगता है।

प्रश्न 37. रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख। धनि सारस होइ ररि मुई, आइ समेटहु पंख ॥ उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- विरहिणी नागमती का कथन है कि विरह-सन्ताप के कारण शरीर का रक्त सूख गया है, माँस भी गल गया है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई हैं। सारस पक्षी की तरह प्रिय-प्रिय रटते-रटते मैं मर गई हूँ। अब तो प्रियतम आकर इस मृत सारस (नायिका) के पंख ही समेटेंगे। भाव यह है कि अतिशय विरह-सन्ताप के कारण उसका मरण निश्चित लग रहा है।

प्रश्न 38. 'अब धनि देवस विरह भा राती' - इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-अगहन मास में शीत ऋतु प्रारम्भ हो जाती है, जिसमें दिन छोटे और रातें बड़ी हो जाती हैं। विरहिणी नागमती विरह-व्यथा के कारण दुर्बल होती जा रही है। इस कारण वह कहती है कि मेरा शरीर तो सर्दी के दिनों की तरह दुर्बल या छोटा हो रहा है तथा मेरा विरह सर्दी की रातों की तरह लम्बा बड़ा हो रहा है तथा मुझसे अब यह दुःख सहन नहीं हो रहा हैं |

प्रश्न 39. 'यह तन जारौं छार कै,कहौं कि पवन उड़ाउ जहँ पाऊ' में बिरहिणी नागमती क्या आकांक्षा व्यक्त करती है?

उत्तर- विरहिणी नागमती की आकांक्षा है कि मैं अपने शरीर को जलाकर राख कर दूँ और फिर पवन से यह अनुरोध करूँ कि हे पवन ! तू इस राख को उड़ाकर इधर-उधर बिखेर दे। शायद यह राख उस मार्ग पर उड़कर जा गिरे जहाँ मेरा प्रियतम अपने चरण रखेगा। मरकर भी नागमती प्रिय के चरणों में राख बनकर गिरना चाहती है जिससे मेरी राख को प्रियतम का शारीर स्पर्श मिल जाएगा | यह आकांक्षा उसके प्रबल पति-प्रेम की परिचायक है।

प्रश्न 40. जायसी द्वारा रचित 'बारहमासा' के काव्य-सौन्दर्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- जायसी ने अपने महाकाव्य 'पद्मावत' में रानी नागमती के विरह का वर्णन किया है। उसके विरह की प्रबलता तथा व्यापकता को प्रकट करने के लिए कवि ने वर्ष के बारह महीनों में उसका वर्णन किया है। श्रृंगार

VISION 100 NEEMKATHANA

रस के वर्णन में वर्ष के बारह महीनों के वर्णन को बारहमासा कहते हैं। इस अंश में कवि ने नागमती के विरह के वर्णन के लिए अतिशयोक्ति खंड': अलंकार की सहायता ली है। यत्र-तत्र यह वर्णन ऊहात्मक भी है। कवि ने दोहा तथा चौपाई छन्दों को अपनाया है और अवधी भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अंश 'पद्मावत' के प्रभावशाली भागों में गिना जाता है।

प्रश्न 41. 'सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- इससे कवि का आशय यह है कि नायिका अपने प्रियतम के प्रेम का जब-जब भी वर्णन करती है तब- तब ही उसमें नूतनता और ताजगी दिखाई देती है। नायिका का नायक के प्रति रूपासक्ति और प्रेम क्षण-क्षण में नवीनता को प्राप्त करता रहता है। यह नवीनता और ताजगी हार्दिक प्रेम में ही सम्भव है। अतः नवीनता ही प्रेम की पहचान है |

प्रश्न 42. प्रियतमा के दुःख के क्या कारण हैं?

उत्तर- प्रियतमा के दुःख के कारण ये हैं (1) उसका पत्र नायक के पास कौन ले जाए? (2) सावन के महीने में उसकी विरह वेदना बढ़ जाती है। (3) उसे बिना प्रियतम के अकेले रहना पड़ रहा है। (4) उसका मन हमेशा नायक में ही लगा रहता है।(5) नायक ने गोकुल को छोड़कर मथुरा में बसने से अपयश ही लिया है।

प्रश्न 43. 'कत बिदगध जन रस अनुमोदए अनुभव काहु न पेख' के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है? उत्तर- कवि कहना चाहता है कि प्रेम में निरन्तर अतृप्ति रहती है। यह एक ऐसी अनुभूति है जिसका वर्णन कर पाना संभव नहीं है। कितने ही विदग्ध (चतुर) जनों ने प्रेम की अनुभूति की है पर जब उनसे प्रेम का अनुभव सुनाने के लिए कहा गया तो वे मौन रह गए। यह तो गूंगे का गुड़ है। नायिका ने अपनी सखी से कहा- हे सखी, तू मुझसे प्रेम के बारे में जो अनुभव बताने का अनुरोध कर रही है, उसका क्या जवाब दूँ? मेरे पास इस अनुभव को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं हैं।

प्रश्न 44. लेखक ने अपने पिताजी की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर-लेखक ने पाठ के शुरू में अपने पिताजी की कई विशेषताओं का उल्लेख किया है- 1. पिताजी फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी के बड़े प्रेमी थे। 2. फ़ारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। 3. वे रात को घर के सब लोगों को एकत्र करके प्रायः 'रामचरितमानस' और 'रामचन्द्रिका' बड़े चित्राकर्षक ढंग से पढ़ा करते थे। 4. उन्हें भारतेन्दुजी के नाटक बहुत प्रिय थे। उन्हें भी वे कभी-कभी सुनाया करते थे।

5. वे घर में आने वाली पुस्तकों को छिपाकर रख देते थे। उन्हें डर था कि कहीं बालक शुक्ल का चित्त पढ़ाई से न हट जाए।

प्रश्न 45. लेखक का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?

उत्तर- घर पर शुक्लजी को पिताजी से 'रामचरितमानस', 'रामचन्द्रिका' और भारतेन्दु के नाटक सुनने को मिला करते थे। पिता की बदली मिर्जापुर हुई तो वहाँ शुक्लजी पुस्तकालय से किताबें लाकर पढ़ा करते थे। वहीं पर अपने समवयस्क मित्रों के साथ हिन्दी के नये पुराने लेखकों की चर्चा करते रहते थे। इस तरह शुक्लजी का हिन्दी साहित्य की ओर झुकाव बढ़ता गया।

प्रश्न 46. "इस पुरातत्त्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्भुत मिश्रण रहता था।" यह कथन किसके सन्दर्भ में कहा गया है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर- यह कथन उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के सम्बन्ध में कहा गया है। शुक्लजी एक लेखक की हैसियत से चौधरी साहब के यहाँ जाने लगे थे। वे चौधरी साहब को एक पुरानी चीज़ समझा करते थे। प्राचीन वस्तु के प्रति जो भाव रहता है, वही भाव शुक्लजी चौधरी साहब के प्रति रखते थे। उनकी दृष्टि में चौधरी साहब के प्रति श्रद्धा और कौतूहल का मिश्रण रहता था।

प्रश्न 47. शुक्ल जी के सहपाठी छत पर चौधरी साहब से क्या बातें कर रहे थे?

उत्तर- पं.लक्ष्मीनारायण चौबे, बा. भगवान दास हालना, वा. भगवान दास मास्टर, शुक्ल जी के सहपाठी थे।उन्होंने 'उर्दू बेगम' नामक एक अत्यन्त विनोदपूर्ण पुस्तक लिखी थी। इसमें उर्दू की उत्पत्ति, प्रचार आदि का वर्णन कहानी की तरह किया गया था। गर्मी के दिन थे और रात का समय था। लैम्प जल रही थी। ये लोग छत पर बैठकर चौधरी साहब से बातचीत कर रहे थे।

प्रश्न 48. 'भारतेन्दुजी के मकान के नीचे का यह हृदय-परिचय बहुत शीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मिर्जापुर में रहते समय बालक रामचंद्र शुक्ल को उसके पिताजी ने एक बार काशी में बरात में भेजा था जब वें चौखंभा की ओर गये तो काशी में पाठकजी भारतेन्दुजी के घर से बाहर निकले। उसी समय शुक्लजी वहाँ खड़े हुए उस मकान को देखते हुए भावुक हो रहे थे। पाठकजी शुक्लजी की भावुकता देखकर प्रसन्न हुए और बहुत दूर तक शुक्लजी के साथ बातचीत करते हुए गए। भारतेन्दुजी के मकान के नीचे पाठक जी को शुक्लजी के हृदय का जो परिचय मिला था, वह जल्दी ही गहरी मैत्री में बदल गया था।

प्रश्न 49. 'जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठीभर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है, वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।' तर्क सहित व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- धर्म का उद्देश्य मानव मात्र का हित करना है। लेकिन जब वह धर्म मुट्ठी भर लोगों के बीच सीमित रह जाएगा तो धर्म से वंचित लोगों को वह लाभ नहीं मिलेगा। धर्मानुसार आचरण नहीं करने से उनका चरित्र-विकास रुक जायेगा, नैतिकता, समाज की मर्यादा तथा सदाचरण की विचारधारा भी रुक जायेगी। इसलिए धर्म से ही आम आदमी के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास सम्भव है।

प्रश्न 50. 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर- 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि शिक्षा ग्रहण करने की सही उम्र होने पर ही बालक पर शिक्षा का भार डालना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य 'रटने की प्रवृत्ति' नहीं होनी चाहिए, अपितु शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक-मानसिक तथा मूल प्रवृत्तियों का विकास होना चाहिए। असमय ही बालक को अधिक ज्ञान दिया जाता है तो बच्चों का स्वाभाविक विकास अवरुद्ध हो जाता है |

प्रश्न 51. 'ढेले चुन लो' कहानी का मूल प्रतिपाद्य या सन्देश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'ढेले चुन लो' लघुकथा का प्रतिपाद्य रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों का विरोध करना है और यह सन्देश देती है कि हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करके जीवन से सम्बन्धित निर्णय लेने चाहिए | जीवन-संगिनी का चुनाव हमें आँख-कान से देख-सुनकर करना चाहिए। ढेले का स्पर्श करवाकर या पूर्णतः ज्योतिषीय गणना पर निर्भर रहकर जीवन-साथी के चुनाव की परम्परा दकियानूसी एवं गलत है तथा अन्धविश्वास को बढ़ाने वाली होने से अनुचित है।

प्रश्न 52. 'घड़ी के पुर्जे' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-धर्मोपदेशक उपदेश देते समय यह कहा करते हैं कि हमारी बातें ध्यान से सुनो पर धर्म का रहस्य जानने की चेष्टा न करो। अपने कथन के समर्थन में वे घड़ी का उदाहरण देते हैं कि घड़ी से समय जान लो यह देखने

VISION 100 NEEMKATHANA

की कोशिश न करो कि इसका कौन-सा पुर्जा कहाँ लगा है। यह कार्य घड़ीसाज का है | धर्माचार्य धर्म का रहस्य आम आदमी तक पहुँचने नहीं देना चाहते, जबकि हर व्यक्ति को धर्म का मूल रहस्य जानने का अधिकार है। 'घड़ी के पुर्जे' कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि धर्म पर मठाधीशों का एकाधिकार ठीक नहीं हैं।उसका विस्तार जनसाधारण में होना जरूरी है तभी धर्म जन हितकारी हो सकता है।

प्रश्न 53. संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं और गाँव वालों के मन में संवदिया के प्रति क्या अबधारणा है?

उत्तर- संवदिया की विशेषताएँ -1 संवदिया वही हो सकता है जिसे भगवान् ने संवाद को हुबहू कहने के योग्य बनाया हो। 2. संवदिया को जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया हो उसो सुर और स्वर में, उसी ढंग से संवाद का प्रत्येक शब्द सुनाना पड़ता है। 3. सवदिया को संवाद इस प्रकार गुप्त रखना पड़ता है कि चाँद सूरज और पक्षी को भी ज्ञात न होने पाए।

संवदिया के प्रति गाँव वालों की धारणा- 1. हरगोबिन संवदिया के बारे में गाँव वालों को अवधारणा है कि वह निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी है। 2. वह अकेला है, उस पर 'न आगे नाथ न पीछे पगहा' की कहावत लागू होती है। 3. यह जरा-सी मीठी बोली सुनकर ही नशे में आ जाता है और भावुक हो जाता है। 4. वह बिना मजदूरी लिए ही संवाद पहुँचाता है, औरतों का गुलाम है।

प्रश्न 54. बड़ी बहुरिया की दयनीय दशा के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-बड़ी बहुरिया की खराब स्थिति के, दयनीय दशा के कई कारण थे- 1. उसके पति का असमय निधन हो गया था। इस कारण परिवार का अनुशासन भंग हो, गया था। 2. बड़ी बहुरिया के देवरों में लड़ाई-झगड़ा होने से घर का सामान बँट गया था।

3. रैयतों ने जमीन पर दावा करके बेदखल कर दिया था। बड़ी बहुरिया की देखभाल करने वाला कोई नहीं वह अकेली रह गई थी। इन परिस्थितियों में उसका जीवन-निर्वाह कठिन हो गया था

प्रश्न 55. 'संवदिया' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'संवदिया' कहानी बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया के प्रति करुणा, सहानुभूति का भाव जाग्रत करने वाली कहानी है। जिसमें संवदिया हरगोबिन के माध्यम से करुणा के सम-भाव को भी प्रस्तुत किया गया है। साथ ही संदेश दिया गया है कि दुःखी-जनों के प्रति संवेदना-सहानुभूति का भाव रखकर मानवता का आचरण करना चाहिए। जिस प्रकार हरगोबिन संवदिया ने बड़ी बहुरिया के प्रति मानवता का आचरण किया |

प्रश्न 56. हरगोबिन को अपने गाँव की इज्जत का बहुत ध्यान था, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हरगोबिन सोचने लगा कि यदि उसने बड़ी बहुरिया का दिया हुआ संवाद ज्यों का त्यों सुना दिया तो उसकी माँ उसे अपने पास बुलवा लेंगी। बहुरिया गाँव छोड़कर जाएगी तो सुनने वाले हरगोबिन के गाँव का नाम लेकर थूकेंगे कि उसके गाँव में लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुःख भोग रही है। इन्हीं बातों पर विचार करने से उसे अपने गाँव की इज्जत का बहुत ध्यान था।

प्रश्न 57. 'बड़ी हवेली अब नाममात्र को ही बड़ी हवेली है।' आशय स्पष्ट कीजिये

उत्तर - बड़ी हवेली पहले वास्तव में बड़ी हवेली थी। पहले यहाँ नौकर-नौकरानियों, जन-मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी पर अब सब खेल खत्म हो गया। बड़े भैय्या की अकाल मृत्यु हो गई, शेष बचे तीन भाई शहर में जाकर रहने लगे। रैयतों ने जमीन पर कब्जा कर लिया और अब तो हालत यह हो गई है कि बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया के पास खाने तक क चरित्र को अनाज नहीं है, बथुआ-साग खाकर गुजारा कर रही है।बड़ी हवेली अब नाम की बड़ी हवेली है वैसे वहाँ सर्वत्र दरिद्रता का साम्राज्य है।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रश्न 58. हरगोबिन को बड़ी हवेली से बुलावा आने पर अचरज क्यों हुआ?

उत्तर- हरगोबिन को बड़ी हवेली से बुलावा आया था। हरगोबिन संवदिया था अतः उसने अनुमान लगा लिया कि जरूर कोई महत्वपूर्ण संवाद बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया भिजवाना चाहती है। आज के इस जमाने में जब गाँव-गाँव डाकघर खुल गए हैं, संवदिया की जरूरत भला बड़ी बहू को क्यों पड़ गई, यह सोचकर उसे अचरज (आश्चर्य) हो रहा था। फिर सोचा जरूर कोई ऐसा संवाद होगा जिसे बड़ी बहू गुप्त रखना चाहती होंगी इसलिए उसे संवदिया की जरूरत पड़ी।

प्रश्न 59. लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था?

उत्तर- लेखक सन् 1938 के आसपास सेवाग्राम गये थे। उन दिनों वहाँ पर उसके बड़े भाई बलराज साहनी 'नयी तालीम' पत्रिका के सह-सम्पादक के रूप में काम कर रहे थे। लेखक बड़े भाई के पास कुछ दिन बिताने के लिए गया था।

प्रश्न 60. फ़िलिस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत सहानुभूतिपूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

उत्तर- फ़िलिस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों का व्यवहार अन्यायपूर्ण और कष्टदायक था। फिलिस्तीन में यास्सेर अराफात के नेतृत्व में अस्थायी सरकार चल रही थी। भारत भी साम्राज्यवादी शक्तियों का शिकार रहा। वह फिलिस्तीन के लोगों का दुःख-दर्द अच्छी तरह समझता था। गाँधीजी और पूरे भारत की फ़िलिस्तीन के प्रति सहानुभूति एवं समर्थन भरे व्यवहार का यही कारण था।

प्रश्न 61. 'यास्सेर अराफात का व्यक्तित्व सहजता, सरलता तथा सेवाभाव से ओतप्रोत था।' गाँधी, 'नेहरू और यास्सेर अराफात' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-यास्सेर अराफात फिलीस्तीनी अस्थायी सरकार के प्रमुख थे, परन्तु इतना बड़ा नेता होने पर भी उन्हें अहंकार नहीं था। लेखक को उन्होंने सप्रेम आमन्त्रित किया था। वे अतिथि-सत्कार करने में सहजता दिखाते रहे और स्वयं फल छीलकर लेखक को खिलाते रहे। इनमें सरलता तथा सेवाभाव इतना अधिक था कि जब लेखक गुसलखाने से हाथ धोकर बाहर निकले तो बाहर हाथ में तौलिया लिये स्वयं यास्सेर अराफात खड़े थे । उक्त गुणों से उनका व्यक्तित्व ओतप्रोत था।

प्रश्न 62. 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास' कहानी के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-जंगल के सभी जीवों को विश्वास था कि शेर के मुँह के अन्दर जाकर हरी घास का मैदान, रोजगार का दफ्तर या स्वर्ग मिलेगा। इसलिए वे अपनी इच्छा से शेर के मुँह के अन्दर चले जा रहे थे। प्रमाण तो सामने दिखाई दे जाया करता है, किन्तु विश्वास की वास्तविकता आगे चलने पर ही ज्ञात होती है। आज का सत्ताधारी वर्ग भी लोगों को विश्वास दिलाकर उनका शोषण करता है।

प्रश्न 63. साझे की खेती के बारे में हाथी ने किसान को क्या बताया?

उत्तर- हाथी ने किसान को कहा कि वह उसके साथ साझे में खेती करे तो उसे लाभ ही होगा। क्योंकि उसके रहते जंगल के छोटे-मोटे जानवर खेतों को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे और खेती की अच्छी रखवाली हो जाएगी।

प्रश्न 64. 'पहचान' कथा आज के सत्ताधारियों पर कहाँ तक चरितार्थ होती है?

उत्तर- 'पहचान' कथा में राजा लोगों से आँखें बन्द रखने, कानों में पिघला हुआ सीसा डलवाने, होंठ सिलवाने - को कहता है। आज के सत्ताधारी भी चाहते हैं कि जनता उनके कारनामे न जान पाए और अन्याय एवं शोषण का विरोध करते की स्थिति में ही न रहे। वे न देखे, न सुने और न ही विरोध कर सके।

प्रश्न 65. 'पहचान' लघुकथा का प्रतिपाद्य या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर-'पहचान' लघुकथा का प्रतिपाद्य यह है कि सत्ताधारी वर्ग सदा अपना हित साधता है। वह चाहता है कि जनता उसे मनमानी करने से रोकने में सफल न हो सके, किसी प्रकार की बाधा खड़ी न करे। जनता के जीवन को स्वर्ग जैसा बनाने का झूठा वादा करके सत्ताधारी वर्ग या तथाकथित राजा अपना जीवन स्वर्ग बनाने में लगा रहता है और जनता को एकजुट होने से रोकता है।

प्रश्न 66. 'चार हाथ' लघु कहानी शोषण पर आधारित व्यवस्था का परदाफाश करती है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'चार हाथ' कहानी में व्यंजित किया गया है कि मिल-मालिक या पूँजीपति अधिक मुनाफा कमाने के लिए मजदूरों का अनेक प्रकार से शोषण उत्पीड़न करते हैं। वे उन्हें निर्जीव कल पुर्जे मानते हैं। मजदूर भी लाचारी में कम मजदूरी पर भी काम करने को विवश रहते हैं। इस तरह प्रस्तुत कहानी शोषण पर आधारित व्यवस्था का पर्दाफाश करती है।

प्रश्न 67. 'चार हाथ' लघु कथा के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- 'चार हाथ' लघु कथा का उद्देश्य यह है कि पूँजीपति एवं मिल मालिक अनेक तरह के उपाय कर मजदूरों को उत्पादन बढ़ाने के लिए मशीन के पुर्जे जैसा बना देते हैं। मजदूर उनकी चालाकियों के सामने लाचार होकर आधी मजदूरी में भी दुगुना काम करने लगते हैं। इसमें पूँजीपतियों के द्वारा मजदूरों के शोषण-उत्पीड़न की व्यंजना की गई है।

प्रश्न 68. 'साझा' कहानी में किस पर क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- 'साझा' कहानी में पूँजीपतियों, प्रभुत्व वाले व्यक्तियों पर व्यंग्य किया गया है। वे किसान जैसे लोगों को साझेदारी के लाभ बतलाकर उन्हें अपनी बातों में फँसा लेते हैं और फिर चालाकी से उनका शोषण करते हैं। किसान मेहनत करते हैं और फसल का लाभ समर्थ लोग हड़प लेते हैं। प्रत्येक पूँजीपति अपने ढंग से उन्हें ठगता है।

प्रश्न 69. 'चार हाथ' लघुकथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। कैसे? इस कथन का अभिप्राय कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'चार हाथ' लघुकथा वर्तमान में पनप रही मशीनी युग का जीता-जागता उदाहरण है। 'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में चल रहे मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच, मजदूरों के शोषण का प्रमुख कारण है। मिल-मालिक मजदूरों की स्थिति एवं हालातों का फायदा उठाकर एक के बदले में दो व्यक्तियों जितना कार्य ले लेते हैं। वे हरसम्भव प्रयास करते हैं कि मजदूर लालच और बेबसी में इतना दब जाए कि विरोध की स्थिति में न रहे और मिल-मालिक के इशारों पर दुगुना उत्पादन करके दे।

प्रश्न 70. आँख खोलने पर रामू, खैराती और छिदू को सिर्फ राजा ही दिखाई दिया। क्यों?

उत्तर- लम्बे समय तक राजा के आदेश पर, आँखें बंद रखने की वजह से प्रजा ने अपना अस्तित्व ही खो दिया था, वह पूरी तरीके से राजा के गुलाम बन गये थे। वे राजा की कठपुतली बन गये थे और वह राजा के नियमों में बंध गये थे अतः यह लाजमी था कि जब खैराती, रामू और छिदू ने आँखें खोलीं, तो उन्हें सामने बस राजा ही दिखाई दे रहा था। यह कथन मानसिक गुलामी को प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 71. आधुनिक भारत के 'नए शरणार्थी' किन्हें कहा गया है?

उत्तर-आधुनिक भारत में नए शरणार्थी ये हैं जो औद्योगीकरण के झंझावात द्वारा अपनी पर-जमीन से उखाड़का हमेशा के लिए विस्थापित कर दिये गये हैं। औद्योगिक विकास के उद्देश्य से इन्हें अपनी घर जमीन से हटा दिय गया है। इनकी जमीन सरकार ने अधिगृहीत कर ली है। ये लोग अब अपने घरों को, अपने मूल स्थान को कभी नहीं लौट सकते।

प्रश्न 72. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अन्तर है?

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर- प्रकृति के कारण होने वाला विस्थापन औद्योगीकरण के कारण होने वाले विस्थापन से अलग प्रकार का है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग सुरक्षा की दृष्टि से अपना घर-बार छोड़कर कुछ समय के लिए चले जाते हैं और आफ़त टलते ही दोबारा अपने परिवेश में, अपने घरों में लौट आते हैं; किन्तु औद्योगीकरण के कारण विस्थापित किर गए लोग फिर कभी अपने घर नहीं लौट पाते हैं।

प्रश्न 73. लेखक के अनुसार स्वातन्त्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजेडी' क्या है?

उत्तर- स्वतन्त्रता के बाद हमारे शासक वर्ग ने औद्योगीकरण का जो मार्ग चुना है उसमें हमारे सत्ताधारियों का ध्यान प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच के नाजुक सन्तुलन को नष्ट होने से बचाए रखने की ओर नहीं गया ट्रेजेडी है। हमने पश्चिम को मॉडल मानकर अपने औद्योगिक विकास हमारे पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है। है। यहाँ पर जिस तरह का मार्ग चुन लिया है उससे पर्यावरण का संतुलन बिगड रहा है।

प्रश्न 74. सिंगरौली को किस कारण 'वैकुण्ठ' और 'कालापानी' माना जाता था?

उत्तर- सिंगरौली को विन्ध्याचल की पर्वत-मालाओं, चारों ओर फैले घने जंगलों तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण 'वैकुण्ठ' माना जाता था। यातायात आदि सुख-सुविधा के साधनों से शून्य होने तथा दुर्गम वनभूमि होने कारण सिंगरौली को कालापानी माना जाता था। इस प्रकार विभिन्न स्थितीयों के कारण सिंगरौली सभी की नजरों में खटकता था।

प्रश्न 75. 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत्त पाठ पर्यावरण तथा औद्योगीकरण से सम्बन्धित है। इसका प्रतिपाद्य यह है कि देश को प्रगति लिए औद्योगीकरण जरूरी है, परन्तु औद्योगीकरण की अंधी दौड़ में प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट करना तथा पर्यावरण हानि पहुँचाना गलत योजना है। औद्योगीकरण से विस्थापित होने वालों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस संबंध में संतुलन बनाये रखने की जरूरत है।

प्रश्न 76. "गंगापुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है"-इस कथन के आधार पर गंगापुत्रों के जीवन-परिवेश की चर्चा कीजिए।

उत्तर- यात्री-गण हर की पौड़ी पर फूलों से भरी छोटी-छोटी किश्तियों में दीपक रखकर गंगा में तैराते हैं। उनमें पैसे भी रहते हैं, जिन्हें गोताखोर अर्थात् गंगापुत्र जलधारा में डुबकी लगाकर पकड़ लेते हैं। उनकी यही जीविका है । इस काम में उन्हें कृष्ट भी होता है, परन्तु यह उनके धनार्जन एवं जीवन-परिवेश का प्रमुख साधन भी रहता है।

प्रश्न 77. "मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।" कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर-प्रस्तुत कथन से पारो की मनोदशा का पता चलता है। उसने सम्भव से मिलन हो | इस मनोकामना से मंसा देवी पर एक चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया था, क्योंकि पहली मनोकामना की गाँठ का फल तो उसने देख ही लिया था कि जिसके मिलने की सम्भावना नहीं थी वह लड़का स्वयं चलकर उसके पास आ गया था। पारो के उक्त कथन से पता चलता है कि वह संभव से प्यार करने लगी थी।

प्रश्न 78. 'प्रेम के लिए किसी भी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर उपर्युक्त पंक्ति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'दूसरा देवदास' कहानी में बताया गया है कि सन्ध्याकाल की आरती के समय सम्भव और पारो दोनों एक-दूसरे से सर्वथा अपरिचित थे। परन्तु पुजारी के द्वारा कलावा बांधते समय जो आशीर्वाद दिया, उससे उन दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा। फिर मंशा देवी जाने पर उन दोनों का प्रेम और मजबूत हो गया। यह सब अचानक ही और अनिश्चित स्थिति में ही हुआ था।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रश्न 79. 'दूसरा देवदास' कहानी का प्रतिपाद्य या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- 'दूसरा देवदास' में युवा-हृदय में पहली आकस्मिक मुलाकात की हलचल, अनजाने में प्रेम के प्रथम अंकुरण और पारो के हृदय की अजीब परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि प्रेम तो कहीं भी, कभी भी और किसी से भी हो सकता है, परन्तु उसमें पवित्रता एवं निर्मलता होनी चाहिए।

प्रश्न 80. 'नानी उवाच के बीच सपने नौ दो ग्यारह हो गये'- वाक्य पर टिप्पणी लिखिए।
उत्तर- संभव को हर की पौड़ी पर स्नान के बाद एक लड़की मिली थी, जो पुजारी के सामने संभव के बहुत पास खड़ी थी। पुजारी ने दोनों को पति-पत्नी समझकर फलने-फूलने का आशीर्वाद दिया था। इससे दोनों अचकचाकर तुरन्त वहाँ से चले आये थे। नानी के घर आकर सम्भव उस लड़की के बारे में सोच रहा था। वह उसका नाम भी नहीं पूछ सका। अगले दिन जब वह उसे मिलेगी तो वह उसका परिचय पूछेगा। आप दिल्ली से आई हैं ? लड़की उत्तर देगी। वह उसे अपना नाम बतायेगा और उसका नाम पूछेगा। वह बी. ए. में पढ़ रही होगी या एम. ए. में ? तभी नानी गंगा-स्नान करके लौट आईं। नानी ने कहा-तू अभी सपने ही देख रहा है, वहाँ लाखों लोग गंगा में स्नान भी कर चुके हैं। नानी के इस कथन से सम्भव के सोचने में बाधा पड़ी और उसकी कल्पनाएँ समाप्त हो गईं।

प्रश्न 81. कुटज को 'गाढ़े के साथी' क्यों कहा गया है?
उत्तर- गाढ़े के साथी' मुहावरे का अर्थ है बुरे समय में साथ देने वाला। महाकवि कालिदास ने 'मेघदूत' काव्य में प्रिया को सन्देश भेजने के लिए यक्ष ने मेघ से प्रार्थना की। उस समय उसे रामगिरि पर कोई दूसरा पुष्प नहीं मिला, तो उसने कुटज पुष्प से ही अभ्यर्थना की। ग्रीष्म ऋतु में जब कोई पुष्प नहीं मिलता है, तब कुटज ही साथ देता है। इन कारणों से कुटज को 'गाढ़े का साथी' कहा गया है।

प्रश्न 82. 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर- लेखक ने नाम और रूप के बारे में विचार किया है कि इनमें से कौनसा मुख्य है, बड़ा है। वह सुदूर अतीत में झाँक कर देखता है और सोचता है, कुछ निष्कर्ष निकालता है कि नाम में क्या रखा है। जरूरत हो तो किसी के लिए कोई भी एक नाम दिया जा सकता है। साधारण नाम हैं और पौरुष के व्यंजक नाम भी हैं, जैसे-गिरिगौरव, पहाड़फोड़ आदि। नाम इसलिए ही बड़ा नहीं माना जाता कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली हुई होती है। समाज उसका उपयोग करता है, उसे व्यवहार में लेता है। नाम और रूप में अन्तर है और इनमें से नाम बड़ा है; क्योंकि रूप व्यक्ति-सत्य है, जबकि नाम समाज-सत्य है। वह समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित और समाज के मन की गंगा में स्नान करके पवित्र हुआ होता है।

प्रश्न 83. कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?
उत्तर- कुटज के जीवन से हमें— (1) सुख-दुःख में समान रहने की, (2) अपराजेय बने रहने की, (3) जिजीविषा रखने की, (4) सहिष्णुता एवं समत्व भाव रखने की, (5) निर्भय रहने की तथा (6) दूसरों की खुशामद न करने की शिक्षा मिलती है। इससे अदम्य जीवनी-शक्ति के सहारे जीने की कला सीखने को मिलती है।

प्रश्न 84. "जीना भी एक कला है और कुटज इस कला को जानता है।" पाठ के आधार पर कथन समझाइए।
उत्तर-कुटज कठिन भौगोलिक परिवेश में भी कठोर पत्थरों को भेदकर धरती के गर्भ से रस ग्रहण करता है, वायुमण्डल से जीवनी-शक्ति अर्थात् वायु अपनाता है। वस्तुतः जीना केवल कला ही नहीं एक कठोर तपस्या

VISION 100 NEEMKATHANA

है। प्राण बालकर जीवन-रस को अनुकूलता से ग्रहण करने पर ही जीना एक कला मानी गयी है। और कुटजं इस कला में पारंगत है।

प्रश्न 85. "कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो।" इससे क्या सन्देश व्यंजित हुआ है?

उत्तर-इससे यह सन्देश व्यंजित हुआ है कि जिजीविषा रखने से ही जीवन सही ढंग से भोगा जा सकता है। कुटन कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर और वायुमंडल को चूसकर अपना भोजन ग्रहण करता है। उसी प्रकार मनुष्य को भी साहस के साथ जीवन जीना चाहिए, हर हालत में अपना भोग्य प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 86. "पर्वत शोभा निकेतन होते हैं। फिर हिमालय का तो कहना ही क्या!" लेखक के इस कथन पर विचार कीजिए।

उत्तर-पर्वतों पर सामान्य रूप से ही सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। इस क्षेत्र में हिमालय और भी आगे है। हिमालय की बर्फ से लदी चोटियाँ अनुपम हैं। हिमालय को देखकर ही किसी के मन में समाधिस्थ महादेव की मूर्ति स्पष्ट हुई होगी। इसलिए लेखक ने उक्त कथन कहा है।

प्रश्न 87. "लेकिन दुनिया है कि मतलब से मतलब है, रस चूस लेती है, छिलका और गुठली फेंक देती है?" इस कथन का अभिप्राय उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-यक्ष ने अभ्यर्थना के लिए कुटज पुष्प अपनाया, फिर स्वार्थ सधते ही वह उसे भूल गया। उसी प्रकार का व्यवहार रहीम के साथ हुआ था। उन्होंने जो पाया, वह लुटा दिया, लेकिन दुनिया स्वार्थी है। आम का रस चूस लेती है और छिलके तथा गुठली को फेंक देती है। रहीम का उपयोग एक बादशाह ने किया और दूसरे ने उन्हें अलग कर दिया था।

प्रश्न 88. 'हृदयेनापराजितः' से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- भीष्म पितामह ने महाभारत में कहा है कि सुख हो या दुःख, प्रिय हो या अप्रिय हमारा हृदय कभी पराजय का अनुभव न करे, जीवन का उल्लास कम न हो। यह अवस्था वीतराग होने की है। जब मनुष्य अपने मन पर वश कर लेता है तो उसे सुख से प्रसन्नता तथा दुःख से अप्रसन्नता नहीं होती। वह दोनों को समान मानकर शांत चित्त रहकर जीता है। कुटज ऐसा ही वृक्ष है जो हमें विपरीत परिस्थितियों में जीने की तथा प्रसन्न रहने की कला सिखाता है।

प्रश्न 89. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' का भावार्थ लिखिए।

उत्तर - ब्रह्मवादी ऋषि याज्ञवल्क्य अपने पत्नी को समझाने की कोशिश करते हैं कि सब कुछ इस दुनिया में स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती। सब अपने स्वार्थ के लिए प्रिय होते हैं। भाव यह है कि यहाँ सब निजी स्वार्थ के लिए एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

प्रश्न 90. 'चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?' नायकराम के इस कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-जगधर ने सूरदास से पूछा कि आज चुल्ला ठंडा नहीं किया था क्या? इसके उत्तर में नायकराम ने कहा 'चूरका ठंडा किया भर के सूरदास से पूछा कि जी कैसे ठंडा होता?' इस कथन में निहित भाव है कि आग चूल्हे से नहीं लगी अपितु किसी दुश्मनी रखने वाले ने बदला लेने के लिए आग लगाई है ।

प्रश्न 91. 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।' सन्दर्भ सहित विवेचन कीजिए।

अथवा

VISION 100 NEEMKATHANA

'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।' सूरदास की क्या अभिलाषाएँ थीं और उसकी राख किसने की?

उत्तर- झोंपड़ी में लगी आग ने सूरदास की अभिलाषाओं को भी राख कर दिया था। जिसमें गया जाकर पिण्डदान करना, मिठुआ का विवाह करना, कुआँ बनवाना आदि इच्छाएँ थीं। भैरों ने आपसी दुश्मनी के कारण झोंपड़ी में आग लगाकर उसका सब कुछ राख कर दिया।

प्रश्न 92. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था ?

अथवा

सूरदास अपने जीवन भर की कमाई को खोने के बाद भी अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था ?

उत्तर- सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को इसलिए गुप्त रखना चाहता था, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग प्रश्न करते कि इस अन्धे भिखारी के पास इतना धन कहाँ से आए और यदि इतने रुपये उसके पास थे तो वह भीख क्यों माँगता था ? भिखारियों के लिए धन-संचय पाप संचय से कम अपमान की बात नहीं है।

प्रश्न 93. " सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी-पर-बाजी हारते हैं, बोट-पर-बोट खाते हैं, धक्के-पर- धक्के सहते हैं पर मैदान में डटे रहते हैं।" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्थिति में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-बच्चों द्वारा खेल में रोने को गलत मानना सुनकर सूरदास ने भी सोचा कि यह जीवन भी एक खेल है। इसको हार-जीत पर दुःख न मनाकर फिर से नयी ऊर्जा और स्फूर्ति से खेलना चाहिए। रुपये मैंने ही कमाए थे, फिर कमा लूंगा। मुझे अपने मन को मलिन न करके नए साहस के साथ फिर खेलना है।

प्रश्न 94. 'आशा से ज्यादा दीर्घजीवी कोई वस्तु नहीं होती ।' ऐसा क्यों कहा गया है ? स्पष्ट करें।

उत्तर-भैरों ने शत्रुतावश सूरदास की झोंपड़ी में आग लगा दी, रुपये चोरी कर दिये। तब सूरदास रात भर जली हुई झोंपड़ी की राख में रुपयों की पोटली टटोलता रहा। वह आशा कर रहा था कि रुपये पिघलकर चाँदी बन गई होगी, वह तो जरूर ही मिल जायेगी। इसी आशा से वह राख की ढेड़ी को बटोर रहा था। इसलिए ऐसा कहा गया।

प्रश्न 95. सूरदास ने रुपये किस प्रयोजन से इकट्ठे किए थे?

उत्तर-सूरदास इकट्ठे किए गए रुपयों से गयाजी जाकर पितरों के निमित्त पिण्डदान करना चाहता था। फिर वह दुआ का विवाह भी करना चाहता था। इन रुपयों को इकट्ठा करने के पीछे सूरदास का तीसरा प्रयोजन गाँव में एक कुआँ बनवाना भी था।

प्रश्न 96. "निद्रावस्था में भी उपचेतना जागती है।" सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के आधार पर इस कथन है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मनुष्य का अवचेतन मस्तिष्क नहीं सोता है, वह निद्रावस्था में भी क्रियाशील रहता है। अनिष्ट की अशंका होने पर वह उसे सावधान कर देता है। सूरदास की झोंपड़ी में आग लगते समय सब लोग सो रहे थे, परन्तु आग की ज्वाला उठते ही उनके अवचेतन ने उन्हें सावधान कर दिया था और वे सब जागकर आग बुझाने लग गये थे।

प्रश्न 97. सुभागी ने भैरों से सूरदास के रुपयों की पोटली दिलवाने का क्या प्रण किया?

उत्तर-सुभागी ने सोच लिया था कि वह अब भैरों के साथ नहीं रहेगी लेकिन भैरों द्वारा सूरदास के रुपये चुराये जाने का पता चला तो उसने प्रण किया कि भैरों उसे मारे या निकाले, उसी के घर रहूँगी जब तक सूरदास को उसके रूपये न दिलवा दूँ तब तक मुझे चैन नहीं आएंगा। इसका घर मैंने उजाड़ा तो मैं ही बसाऊँगी।

प्रश्न 98. लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?

VISION 100 NEEMKATHANA

अथवा

'माँ की ममता' किसी प्रयोजन या उद्देश्य के लिए है। बिस्कोहर की माटी' पाठ में लेखक ने माँ की ममता का वर्णन किस उदाहरण से किया है? अथवा

'बिस्कोहर की माटी' में लेखक ने किन कारणों से अपनी माँ की तुलना वत्तख से की है? इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-लेखक बिसनाथ ने अपनी माँ की तुलना बत्तख से निम्नांकित आधारों पर की है

। बतख सुरक्षित स्थान पर अंडे देती है तथा उनको सेती है। वह पंख फुलाकर उन्हें सबकी दृष्टि से बचाती है। वह हौर इत्यादि से अपने अंडों को बचाती है। बिसनाथ की माँ ने भी अपने बच्चे (बिसनाय) को जन्म दिया है, दूध पिलाया है तथा उसको पाला-पोसा है।

2. बत्तख अपने अंडों को दूसरों से बचाती है। बिसनाथ की माँ' भी उसकी सुरक्षा का ध्यान रखती है।

3. बिसनाथ की माँ अपने पुत्र के प्रति गहरा ममता-भाव रखती है। बत्तख को भी अपने अंडों से बेहद ममता है। दोनों ममता का यह भाव स्वाभाविक तथा प्रकृति प्रदत्त गुण है।

4. बत्तख अपनी सख्त चोंच का प्रयोग अंडों के ऊपर करने में बहुत सावधान रहती है। विसनाथ की माँ भी अपने बेटे के साथ कोमलता तथा ममता का व्यवहार करती है।

प्रश्न 99. 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक की मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए। प्रकृति, नारी और सौन्दर्य सम्बन्धी मान्यतायें स्पष्ट कीजिये। अथवा

"प्रकृति सजीव नारी बन गई।" इस कथन के संदर्भ में 'बिस्कोहर की माटी' की प्राकृतिक छटा की विवेचना कीजिए

उत्तर बिसनाथ जब दस बरस का था तब उसने उस औरत को पहली बार बढ़नी में एक रिश्तेदार के यहाँ देखा था। उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बरसात की चाँदनी रात में जूही की खुशबू आ रही है। उन दिनों बिसनाथ बिस्कोहर में संतोषी भइया के घर बहुत जाया करते थे। उनके आँगन में जूही लगी थी। उसकी खुशबू बिसनाथ के प्राणों में बसी थी। चाँदनी में जूही के सफेद फूल ऐसे लगते थे जैसे कि चाँदनी ही फूल बनकर डालों पर लगी हो। चाँदनी, फूल और खुशबू सभी प्रकृति के ही रूप है।वह औरत भी विसनाथ को जूही की लता बनी हुई चाँदनी के रूप में दिखाई दी जिसके फूलों से सुगंध आ रही थी।बिसनाथ ने उसे औरत के रूप में नहीं देखा था। उसमें बिसनाथ ने प्रकृति के ही सजीव रूप को देखा था। ऐसा लगता था जैसे प्रकृति ने ही सजीव रूप धारण किया हैं। सौन्दर्य क्या है, उसकी तदाकार परिणिति क्या होती है, जीवन की सार्थकता क्या हैं। ये बातें तो बिसनाथ को बाद में समझ में आई, वह भी उसी नारी के संदर्भ में।

प्रश्न 100. 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं', कैसे ?

उत्तर-फूल प्रकृति में सौन्दर्य एवं सुगन्ध बिखेरने के साथ स्वास्थ्यवर्धक एवं दवा के काम भी आते हैं। गाँवों में चेचक के रोगी के पास नीम के फूल और पत्ते रखते हैं। बरं या ततैया के काटने पर बेर का फूल सुधाकर उसके डंक के दर्द को दूर किया जाता है। आँख के रोग में सत्यानाशी का दूध लगाया जाता है। ये सभी फूल अलग-अलग रोगों में दवा का काम करते हैं।

प्रश्न 101. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'बिस्कोहर की माटी' पाठ का प्रतिपाद्य प्रकृति के साथ मानव सम्बन्धों की पड़ताल करना है। जीवन को स्थितियाँ ऋतु परिवर्तन के साथ कैसे बदलती हैं और गाँवों के लोग प्राकृतिक प्रकोपों का सामना किस तरह करते । तथा प्रकृति से किस तरह अपना अटूट प्रेम सम्बन्ध रखते हैं-इत्यादि की व्यंजना करना इसका मूल भाव है।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रश्न 102. "जड़ चेतन में रूपान्तरित होकर क्या-क्या अन्तरबाह्य गढ़ता है, लीलाचारी होता है।" कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर-जड़ के चेतन होने पर अर्थात् जन्म लेने पर माँ की अपने सन्तान के प्रति अतिशय ममता रहती है पशु-पक्षी भी ऐसी ही ममता रखते हैं। ममता का प्राकृतिक नियम है कि माँ बच्चे को दूध पिलाती है, लालन-पालन से करती है। इसी प्रकार चेतन प्राणी होने से माँ की तरह बच्चे को भी सुख मिलता है। सृष्टि का यही नियम है।

प्रश्न 103. "बिसनाथ के गाँव में एक फल और बहुत इफरात होता था" - उसे किस नाम से पुकारते थे = उसकी उपयोगिता बताइए।

उत्तर-बिसनाथ के गाँव अर्थात् बिस्कोहर में जो फल बहुतायत में होता था, उसका नाम भरभंडा था। इसको सत्यानाशी भी कहते हैं। इसका नाम भले ही अच्छा न हो, परन्तु इसके फूल पीले और बहुत सुन्दर होते हैं। इसकी उपयोगिता यह है कि गर्मियों में गाँव में आँखें दुखने की बीमारी होने पर इसके दूध से इलाज किया जाता है।

प्रश्न 104. 'विसनाथ दूध कटहा हो गए' - इसका तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-बिसनाथ जब छोटा था, तो वह माँ का दूध पीता था। परन्तु जब वह ढाई-तीन वर्ष का था, तभी उसक छोटे भाई का जन्म हो गया। इस कारण तब माँ के दूध पर छोटे भाई का कब्जा हो गया और बिसनाथ का दूध कट गया

अर्थात् वह दूध कटहा हो गया।

प्रश्न 105. "बिसनाथ के लिए हर सुख-दुःख से जोड़ने की सेतु है।" किसके लिए कहा गया है?

उत्तर- यह उस औरत के लिए कहा गया है जिसके आगे बिसनाथ को कोई और औरत सुन्दर नहीं लगती। जो सफेद साड़ी पहने रहती है, काले केश संवारे रखती है, जिसकी आँखों में आर्द व्यथा है, जो सिर्फ इंतजार करती है। जो बिसनाथ के लिए संगीत, नृत्य, मूर्ति, कविता, स्थापत्य, चिन्त्र हर कला के आस्वाद रूप में मौजूद है।

प्रश्न 106. 'सरसों के फूल का पीला सागर' किसको कहा गया है ?

उत्तर - सरसों जब फूलती है तो उन पर पीले फूल आते हैं। ये फूल असंख्य होते हैं। खेत में सरसों के पौधे पास-पास तथ खड़े होते हैं। उनके ऊपर अनेक फूल लदे होते हैं। सरसों के पूरे खेत में पीले रंग की चादर-सी बिछी हुई दिखाई देती है। जिस ओर ओर भी निगाह जाती है, दूर-दूर तक सरसों के फूल का पीलापन दिखाई देता है। सरसों के तने तथा हरी पत्तियों से भी भूमि ढक जाती है। फूलों के इस पीले रंग के विस्तार को ही लेखक ने सरसों के फूल का पीला सागर कहा है।

प्रश्न 107. भरभंडा किसे कहते हैं ? इसकी क्या उपयोगिता है ?

उत्तर-लेखक के गाँव में एक फूल बहुत अधिक संख्या में उत्पन्न होता है। इसको भरभंडा कहते हैं। शायद इसी का में दूसरा नाम सत्यानाशी भी है। इसका नाम भले ही अच्छा न लगे परन्तु यह फूल होता बहुत सुन्दर है। इसके फूल पीले होते म हैं। वे पीले रंग की तितली के समान प्रतीत होते हैं। जब गर्मियों में गाँव में आँखें दुखने की बीमारी होती है तो इसका दूध बस आँखों में लगाया जाता है । आँख दुखने की बीमारी को दूर करने में यह बहुत उपयोगी है।

प्रश्न 108. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं?

उत्तर-लेखक ने इसके ये कारण बताये हैं-

(1) औद्योगिक विकास की नयी सभ्यता ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है, जिससे मालवा भी नहीं बच पाया है। (2) वातावरण को गरम करने वाली कार्बन डाइऑक्साइड गैसों ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है और धरती के वातावरण के गरम होने से यह सब गड़बड़ी हो रही है। (3) अब

VISION 100 NEEMKATHANA

मालवा के लोग ही खाऊ उजाड़ सभ्यता को अपनाकर गहन गंभीर और पग-पग नीर की डग-डग रोटी देने वाली धरती को उजाड़ने में लगे हुए है।

प्रश्न 109. 'मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए।' पानी के रख-रखाव के लिए उन्होंने क्या प्रबन्ध किए?

उत्तर-मालवा में राजा विक्रमादित्य, भोज और मुंज ने पश्चिम के रिनेसां के बहुत पहले ही पानी के रख-रखाव के महत्त्व को समझा और पठार पर पानी को रोककर रखने के उपाय किये। उन सभी राजा-महाराजाओं ने अनेक तालाब बनवाए, बड़ी-बड़ी बावड़ियाँ बनवाई, ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को सुरक्षित रखा जा सके।

प्रश्न 110. लेखक को क्यों लगता है कि "हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?" आप क्या मानते हैं?

उत्तर-वास्तव में औद्योगिक सभ्यता विकास न कर उजाड़ की ओर ले जा रही है। पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई गई यह सभ्यता बर्बाद करने वाली है, क्योंकि-

(i) इस सभ्यता ने पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर दिया है, मौसम का चक्र बिगाड़ कर रख दिया है। इस प्रकार लेखक की पर्यावरण सम्बन्धी चिंता मालवा तक सीमित न रहकर सार्वभौमिक है। (ii) लेखक ने अमेरिका की खाऊ-उजाडू जीवन पद्धति, संस्कृति और सभ्यता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह सभ्यता अपनी धरती को उजाड़ने में लगी हुई है। इससे पर्यावरण का विनाश हो रहा है। (iii) आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें जड़-जमीन से अलग कर दिया है। इस प्रकार लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है तथा पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया है।

प्रश्न 111. धरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए |

उत्तर- धरती का वातावरण गर्म हो रहा है। इसमें यूरोप और अमेरिका की अहम भूमिका है, क्योंकि ये संसार के विकसित देशों की श्रेणी में आते हैं। इन देशों के बड़े-बड़े कारखानों से निकलने वाली कार्बन डाइऑक्साइड गैसों ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। यह दुष्प्रभाव विश्वव्यापी है। वातावरण का यह परिवर्तन संसार को विनाश की ओर ले जा रहा है। विकसित औद्योगिक सभ्यता के हिमायती देशों के कारण सारा विश्व इसकी चपेट में आ चुका है।

प्रश्न 112. हम अपने मालवा की गहन-गम्भीर और पग-पग नीर की डग-डग रोटी देने वाली धरती को उजाड़ने में लगे हैं।" यह कथन वर्तमान की किस समस्या को इंगित करता है ?

उत्तर-यह कथन वर्तमान काल में हमारे देश में तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी के विकास के कारण ग्रामीण एवं कस्बाई क्षेत्रों में जो जीवन-पद्धति चल रही है, उसे एक समस्या बताकर खाऊ उजाडू स्थिति को इंगित करता है। विकसित देशों से होड़ रखने पर जो जीवन पद्धति अपनायी जा रही है, उससे हम निरे भोगवादी बन गये हैं। यह स्थिति हमारे लिए चिन्तनीय है ।

प्रश्न 113. 'अपना मालवा-खाऊ-उजाडू सभ्यता में' अध्याय में लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है। कैसे? स्पष्ट करें।

अथवा

अपना मालवा (खाऊ-उजाडू सभ्यता में) पाठ, लेखक की पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर- लेखक ने मालवा के नागदा, इन्दौर, ओंकारेश्वर, नेमावर आदि स्थानों का यात्रा-विवरण देते हुए बताया कि अब वहाँ पर कुएँ, तालाब आदि सूख गये हैं। नर्मदा पर विशालकाय बाँध बनने से औद्योगिक विकास को भले ही गति मिली है, परन्तु इससे वहाँ का पर्यावरण विनष्ट हो गया है।

प्रश्न 114. हमारे मौसमों का चक्र क्यों बिगड़ रहा है? 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर बताइये।

उत्तर-वर्तमान में यूरोप और अमेरिका के उद्योगों से इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य विषैली गैसें निकलती हैं, जिनसे पर्यावरण काफी गर्म हो गया है, उत्तरी-दक्षिणी ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है और समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है। इन कारणों से हमारे मौसमों का चक्र गड़बड़ा रहा है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'आह! वेदना मिली विदाई' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर-यह पंक्ति जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई है। इसमें देवसेना, जो कि मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है। हूणों के आक्रमण में देवसेना का पूरा परिवार वीरगति को प्राप्त हो गया था। देवसेना ने अपने यौवन काल से ही स्कन्दगुप्त के प्रति प्रेम-भाव रखा, किन्तु स्कन्दगुप्त की तरफ से उसे प्रणय निवेदन नहीं मिला। अपने परिवारजनों की मृत्यु के पश्चात् देवसेना आश्रम में रहती थी। जीवन पर्यन्त सभी दुःखों को सहन किया तथा जीवन के अन्तिम मोड़ पर स्कन्दगुप्त द्वारा प्रणय-निवेदन किये जाने पर वह ठुकरा देती है क्योंकि अब उसके जीवन में कोई इच्छा या आशा नहीं बची थी। उसका पूरा जीवन वेदना-पूरित था। प्रिय की चाह थी, वह भी खत्म हो चुकी थी। इन्हीं सारी कठिनाइयों को झेलते हुए वेदना पीड़ित हृदय से वह कहती है कि जीवन के अन्तिम क्षणों मेंभी विदाई के रूप में मुझे वेदना अथवा पीड़ा हो मिली है।

प्रश्न 2. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' का केन्द्रीय भाव प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- अरुण यह मधुमय देश हमारा' देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत कविता है। इसमें कवि जयशंकर प्रसाद ने एक विदेशी राजकुमारी कार्नेलिया द्वारा भारत की शौर्य गाथा, महानता एवं प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन करवाया है। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की पत्नी कार्नेलिया जो एक यूनानी है, यह भारतीयों की विश्व-बंधुत्व की भावना से प्रभावित होकर इस गीत को गा रही है। भारत देश संसार के प्रत्येक देश का आश्रय स्थल है। जिन्हें कहीं स्थान न मिले उसका भी स्वागत भारत दिल खोलकर करता है। 'अतिथि देवो भवः' की धारणा को निभाने वाले भारतीय दयालु हैं, इनमें सबके प्रति करुणा का भाव है। भारत की प्राकृतिक सुन्दरता अद्वितीय है। यहाँ का वातावरण व परिवेश मनुष्य को सुख देनेवाला है। कवि ने एक विदेशी के मुख से भारत की महिमा, स्नेह-सौहार्दता का गुण-गान करवाकर यह प्रमाणित किया है कि देश-विदेश के सभी लोग भारत की विशेषताओं का गुणगान करते हैं।

प्रश्न 3. " 'सरोज-स्मृति' एक शोक-गीत है।" इस कथन के आधार पर उक्त कविता की समीक्षा कीजिए।

उत्तर-'सरोज-स्मृति' हिन्दी काव्य कला में अपने ही ढंग का एकमात्र शोकगीत है। कवि निराला ने वात्सल्य भाव से पूरित होकर अपनी पुत्री की मृत्यु पर लिखी इस कविता में करुणा एवं वेदना को प्रमुखता दी है। 'सरोज- स्मृति' कविता में कवि ने पुत्री के बाल्यकाल से लेकर उसकी मृत्यु तक की स्मृतियों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इसमें पुत्री सरोजं के नववधू स्वरूप का बड़ा हो सुन्दर-सजीव व मार्मिक रूप प्रस्तुत किया है। कविता में जहाँ पुत्री के प्रति प्रेम-स्नेह का भाव है, वहीं कवि निराला के एक भाग्यहीन

VISION 100 NEEMKATHANA

पिता का संघर्ष, समाज से उसके सम्बन्ध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अपराध बोध भी प्रकट हुआ है। निराला ने साथ ही अपने जीवन-संघर्ष को भी उभारा है।

प्रश्न 4 'यह दीप अकेला' कविता का केन्द्रीय भाव बताइए।

उत्तर-' यह दीप अकेला' में कवि अज्ञेय ने दीपक को मनुष्य के प्रतीक स्वरूप लिया है। जिस प्रकार एक अकेला दीपक समर्थ होते हुए अपना प्रकाश दूर-दूर तक नहीं फैला सकता है और जैसे ही अकेले दीपक को उठाकर अनेक दीपकों की कतारों में रख देने से वह अधिक जगमगाने लगता है तथा साथ रखने और रहने से उसकी सौन्दर्यता और बढ़ जाती है उसी प्रकार एक व्यक्ति है समर्थ है, स्वतंत्र है, अपने आप में स्नेह एवं करुणा लिये हुए है। फिर भी उसकी सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में हैं। अतः अज्ञेयजी कविता के माध्यम से व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने पर बल देते हैंताकि विश्व का कल्याण हो सके। इसी में दीप और व्यक्ति दोनों की सार्थकता निहित है।

प्रश्न 5. 'बनारस' कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर- बनारस भारत का प्राचीनतम नगर है जिसके सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवेश का कवि ने कवित में चित्रण किया है। यह गंगा के तट पर स्थित है और शिव की नगरी है। इस कारण इस नगरी के प्रति लोगों की आस्था अधिक है। कवि ने कविता में गंगा, गंगा के घाट, मन्दिर और घाटों पर बैठे भिखारियों का सजीव वर्णन किया है।प्राचीन काल से ही काशी और गंगा के सान्निध्य के कारण मोक्ष प्राप्ति की अवधारणा यहाँ से जुड़ी हुई है। दशाश्वमेध घाट पर पूजा-पाठ चलता रहता है। गंगा के किनारों पर नावें बँधी रहती हैं। गंगा के घाटों पर दीप जलते रहते हैं, हवन होते रहते हैं, चिताग्नि जलती रहती है और उसका धुआँ सदैव उठता रहता है। यह बनारस की विशेषता है। यहाँ का कार्य अपनी गति से चलता रहता है। इस नगरी के साथ लोगों की आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति के भाव जुड़ें है इस कविता में काशी की प्राचीनता,आध्यात्मिकता, भव्यता और आधुनिकता का समाहार है |

प्रश्न 6. 'वसंत आया' कविता में व्यक्त आधुनिक जीवन शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-आधुनिक जीवनशैली मानव की व्यस्त शैली को प्रस्तुत करती है। अपनी भागदौड़ की जिन्दगी में व्यक्ति अपने जीवन के छोटे-छोटे खुशी के पल खोता जा रहा है। प्रकृति-परिवर्तन अपने साथ त्यौहार और खुशी लाती है, जिससे व्यक्ति की भागती जिन्दगी में दो पल खुशियों के आयें। 'वसंत आया' कविता में कवि ने यही बताया है कि जब किसी पेड़ पर कोयल कूकती है, पेड़ से गिरे पीले-पीले पत्ते दिखाई देते हैं तब कैलेण्डर देखकर पता चलता है कि वसंत का महीना चल रहा है। दफ्तर की छुट्टी से और कैलेण्डर की तारीख से वसंत पंचमी के त्योंहार का बोध होता है। भागती जीवनशैली ने सहज आनन्द की अनुभूति में खलल पैदा कर दी है। आधुनिक जीवन-शैली में मनुष्य का जीवन नीरस व भावशून्य हो गया है। उसने स्वयं नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसा आयेगा कि उसे कैलेण्डर देखकर जानना पड़ेगा कि वसंत आ गया है।

प्रश्न 7. 'तोड़ो' कविता में छिपी व्यथा को कवि ने किसे माध्यम बनाकर प्रस्तुत किया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने आधुनिक मानव मन की ऊब, खीझ, उदासीनता, अकेलापन एवं भावनाशून्य हृदय व्यथा को पृथ्वी के भीतर छिपे चट्टान, पत्थर, बंजर भूमि, ऊसर भूमि के माध्यम से व्यक्त किया है। कवि कहता है कि जिस प्रकार ऊसर और बंजर बन चुकी भूमि पर मेहनत और कर्म के माध्यम से खेत बन सकता है, हरियाली आ सकती है, - जिससे खुशहाली फैल सकती है। उसी प्रकार मन में बसी ऊब, खीझ को नये-नये विचारों के अंकुरण से खत्म किया जा सकता है। नये विचार व्यक्ति को नयी सोच व नयी राह की ओर अग्रसित करती है। इसके द्वारा मानव स्वयं के भीतर बंजर हो चुके मन को सृजनात्मक एवं उन्नति के मार्ग पर ला सकता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

जब बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है तो विकृत मन में भी अच्छे विचारों द्वारा उत्साह का संचार किया जा सकता है।

प्रश्न 8. भरत द्वारा प्रस्तुत श्रीराम की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए

अथवा

'भरत-राम का प्रेम' कविता में व्यक्त राम की चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- 'भरत-राम का प्रेम' कविता में भरत अपने भाई राम को वन से वापस लाने जाते हैं। वहाँ जाकर समस्त गुरुजनों एवं स्नेहीजनों के समक्ष अपनी बात रखते हैं। वे अत्यन्त पुलकित भाव में कहते हैं कि मैं अपने भाई राम के स्वभाव को भली-भांति जानता हूँ। राम का स्वभाव सरल हृदय से पूरित है।वे अपराधियों पर भी क्रोध नहीं करते और भूलकर भी किसी प्राणी-जन का अहित नहीं करते हैं। बचपन से ही भरत राम के स्नेही-पात्र रहे हैं। खेल-खेल में हारने वाले भरत को राम स्वयं हार कर जिता देते थे। उनके दयालु स्वभाव को देखकर वन मार्ग के विषैले जीव- जन्तु भी उनका रास्ता छोड़ देते हैं। सत्य और अहिंसा के पूरक श्रीराम ने अपने परिजनों एवं प्रजाजनों का कभी दिल नहीं दुखाया वे सदैव शीतल छाया के समान भाइयों की रक्षा करते थे |
सरल,संयमी सदाव्रती श्रीराम समस्त प्रजाजनों के प्रिय राम शत्रुओं के साथ भी मित्रवत व्यवहार रखने वाले है |

प्रश्न 9. 'बारहमासा' का अर्थ एवं अभिप्राय पर प्रकाश डालते हुए जायसी लिखित बारहमासा की कथाबताइए।

उत्तर-बारहमासा का अर्थ बारह महीनों की कथा। बारहमासा मूलतः विरह-प्रधान लोक संगीत है। वह पद्म या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरही या विरहिणी के मुख से कराया जाता है। जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' में वर्णित 'बारहमासा' हिन्दी का संभवतः पहला 'बारहमासा' है जिसमें राजा रत्नसेन को पत्नी नागमती अपने पति के परदेश चले जाने और वापस लौटकर नहीं आने पर वर्ष भर के बारह महीनों का विरह संताप प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करती है। सर्दी की ऋतु में प्रत्येक मास की अलग-अलग विशेषता एवं विरह की अग्नि का सूक्ष्मतम वर्णन 'बारहमासा' में प्रस्तुत है। 'बारहमासा' प्राकृतिक सौन्दर्य एवं विरही हृदय की उद्दीप्त भावनाओं एवं चेष्टाओं का अनुपम काव्य है।

प्रश्न 10. रानी नागमती की आकांक्षा फाल्गुन मास में क्या थी और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हिन्दी कैलेण्डर के बारह महीनों के अनुसार फागुन मास, वर्ष का अन्तिम मास माना जाता है। रानी नागमती ने वर्ष के सभी महीनों की विरह दशाएँ एवं अपनी करुण स्थिति को व्यक्त किया है। पूरे वर्ष प्रिय के आगमन का इंतजार करते हुए वह थक गई है। फाल्गुन मास में पेड़ के पीले पत्ते टूटकर गिर जाते हैं और तेज हवाएँ उन्हें उड़ा ले जाती हैं। इसीलिए रानी नागमती अपने जीवन की अन्तिम आकांक्षा करती हुई कहती है कि मैं अपने इस शरीर को जला हूँ और तेज हवाएँ इस राख को मेरे प्रियतम के मार्ग में डाल दें ताकि आते-जाते उनके पैरों का स्पर्श राख को मिल जाएँ। ऐसा इसलिए कहती है कि जीते-जी तो उसके प्रिय उससे मिलने आये नहीं और अब मृत्यु पश्चात् ही सही उनका स्पर्श उसके शरीर की राख को ही क्यों न प्राप्त हो जाएँ। रानी नागमती की यही अन्तिम आकांक्षा हैं।

प्रश्न 11. 'गोकुल तेजि मधुपुर बसरे कन अपजस लेल' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि विद्यापति ने इस पद में सावन मास में विरहिणी नायिका की विरह दशा को व्यक्त किया है। नायिका चिन्तित है कि कौन उसके पत्र (सन्देश) को लेकर उसके प्रियतम के पास जाएगा। सावन का महीना आ गया है। इस माह राधा विरह का असह्य दुःख सहन नहीं कर सकती है इसलिए वह कहती है कि मेरे इस कठोर दुःख को संसार में कौन समझ सकता है? अर्थात् मैं ही जानती हूँ कि यह विरह मुझे कितना कष्ट दे रहा है। मेरे मन को श्रीकृष्ण अपने साथ लेकर चले गये। अब उनका ध्यान मेरी तरफ नहीं है इसीलिए श्रीकृष्ण

VISION 100 NEEMKATHANA

गोकुल को छोड़कर मथुरा बस गए और अब लौटने का नाम नहीं ले रहे हैं। इस प्रकार अपने स्वार्थी स्वभाव के कारण उन्होंने कितना अपयश ले लिया है। चारों तरफ उनके इस व्यवहार से बदनामी हो रही है कि वे मुझे इस स्थिति में छोड़कर चले गए और लौटकर नहीं आ रहे हैं |इस तरह राधा अपनी विरही दशा का कारण कृष्ण को मानते हुए उन्हें अपयश कमाने का उलाहना दे रही है |

प्रश्न 12. कवि घनानन्द के कवित्त में व्यक्त प्रेम और भक्ति के सुन्दर संयोग को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर-कवि घनानन्द अपनी प्रेमिका सुजान के विरह में सुन्दर कवित्त प्रस्तुत करते हैं जहाँ इनका भक्त रूप भीप्रकट होता है। सुजान नाम उनकी प्रेमिका और आराध्य कृष्ण दोनों को सम्बोधित किया गया है। प्रस्तुत कवित्त में दोनों के प्रति उनका उत्कट प्रेमभाव प्रस्तुत है। जब वे कहते हैं कि 'कहि-कहि आवन छबीले मनभावन की' वहाँ कृष्ण व सुजान दोनों के प्रति भाव गाम्भीर्य व्यक्त होता है। कवि अपने जीवन के अन्तिम समय में कहते हैं कि बहुत दिनों से आने की कह रहे हैं जो अपनी मन मोहने वाली छवि का दर्शन देंगे। सुजान (कृष्ण) के दर्शन की अभिलाषा में कवि के प्राण उनके होठों तक आ गये हैं किन्तु निष्ठुर सुजान (कृष्ण) पर उनके संदेशों का कोई प्रभाव नहीं है। व्यथित कवि अपने प्रियतम (कृष्ण) के आने की खबर सुनना चाहते है | इस प्रकार प्रथम कवित में व्यक्त उनकी विरही दशा दोहरे अर्थ को व्यक्त करती है |

प्रश्न 13 . प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है ?

उत्तर- यह संस्मरण भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' के बारे में है जिसमें उनके व्यक्तित्व के निम्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है

1.हिन्दुस्तानी रईस उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' एक अच्छे-खासे हिन्दुस्तानी रईस थे और उनके स्वभावानी वे सभी विशेषताएँ थीं जो रईसों में होती हैं।

2. भारतेंदु मंडल के कवि-प्रेमघन, भारतेंदु मंडल के कवि थे और भारतेंदु जी के मित्रों में उनकी गिनती थी। वे मिर्जापुर में रहते थे और उनके घर पर साहित्यिक गोष्ठियाँ आदि होती रहती थीं।

3. अपूर्व वचन भंगिमा प्रेमघन जी की बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम भिन्न था। जो बातें उनके मुख से निकलती थीं उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

4. मनोरंजक स्वभाव-प्रेमघन जी का स्वभाव विनोदशील था, वे विनोदी प्रवृत्ति के थे और प्रायः लोगों को (मूर्ख) बनाया करते थे। लोग भी उन्हें (मूर्ख) बनाने के प्रयास में या उन पर मनोरंजक टिप्पणियाँ करने की जुगत में रहते थे।

5. प्रेमघन जी मौलिक विचारक थे और उनके विचारों में दृढ़ता रहती थी। नागरी को वे लिपि न मानकर भाषा मानते थे। वे मिर्जापुर को 'मीरजापुर' लिखते थे और उसका अर्थ करते थे-मीर समुद्र, जा पुत्री पुर अर्थात् समुद्र की पुत्री = लक्ष्मी, अतः मीरजापुर लक्ष्मीपुर।

प्रश्न 14. 'आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखों देखा बेला बहु अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेज पिंड से।' कथन का आशय 'सुमिरिनी के मनके' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक यह कहना चाहता है कि समय के साथ हमें भी बदलना चाहिए। कल जो प्रथा या परम्परा अच्छी मानी जाती थी वह आज के समय में उचित नहीं है। जमाना बदल गया है और हमें भी बदले हुए जमाने के साथ अपनी मान्यताएँ बदलनी चाहिए। हमें आज (वर्तमान) को महत्त्व देना चाहिए कल (भूतकाल) को नहीं। पुराने जमाने में आकाशीय पिण्डों की चाल को गणना अर्थात् ज्योतिष के आधार पर लोग पत्नी का चुनाव

VISION 100 NEEMKATHANA

करते थे। वे ग्रह हमसे लाखों-करोड़ों मील दूर है, उनके बारे में हमें कुछ पता नहीं है, उनको तुलना में कम से कम मिट्टी के वे देले श्रेष्ठ हैं जिन्हें हमने अपनी आँख से देखकर दिखा किसी स्थान को मिट्टी से बनाया है। आज का कबूतर कल के मोर से श्रेष्ठ है। आज का पैसा कल के मोहर से अधिक मूल्यवान् है। अच्छी पत्नी चुनने के लिए वर्तमान में प्रचलित प्रणाली को अपनाना ही सही है।

प्रश्न 15. निबन्ध 'बालक बच गया' समाज की किस मानसिकता की ओर संकेत करता है?

उत्तर- बालक बच गया' निबन्ध द्वारा लेखक बताना चाहते हैं कि शिक्षा ग्रहण करने के लिए बच्चों को सही उम्र का होना आवश्यक है। जबकि समाज में हम सभी शिक्षा देने के नाम पर बच्चों पर कठिन से कठिन ज्ञान को उसके कच्चे मन पर थोपना चाहते हैं। बच्चों को औरों के समक्ष प्रदर्शन का माध्यम बना देते हैं। इस बात पर परिजन गर्व महसूस करते हैं कि रटन-प्रवृत्ति से ही सही उनके बच्चे को सारा ज्ञान है। जबकि शिक्षा का मूल कार्य व्यक्ति या बच्चे के मस्तिष्क का विकास करना है। हमारा लक्ष्य होना चाहिए मनुष्य और मनुष्यता को बचाए रखना। मनुष्य यदि बचा हुआ है तो उसे समय आने पर शिक्षित किया जा सकता है। वर्तमान में शिक्षा को बच्चों पर थोप रखा है तथा बच्चे की स्वाभाविक प्रवृत्तियों, रुचियों व उपलब्धियों पर अंकुश लगा रखा है, इसी मानसिकता को लेखक ने प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 16. 'संवदिया' हरगोबिन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-'संवदिया' हरगोबिन स्वभाव से निश्छल व संवेदनशील व्यक्ति था। उसकी निम्न विशेषताएँ हैं-

1. संवेदनशील :- हरगोबिन में संवेदनशीलता कूट-कूट भरी हुई है। वह बड़ी बहुरिया की स्थिति उनके मायके वालों को नहीं बताता। वहाँ से लौटने के लिए पैसे नहीं थे फिर भी बहू के भाई से पैसे नहीं माँगता ताकि बड़ी बहुरिया की हालत का उन्हें पता न चले।

2. आत्मीयता :- हरगोबिन गाँव की सभी माँ-बहन बेटियों से आत्मिक रूप से जुड़ा था। इसलिए वह बिनापगार लिये भी उनका संदेशा पहुँचा आता था।

3. सहृदय :- मानवीय भावों से पूरित 'संवदिया' संदेश को सहृदयता के साथ प्रस्तुत करता था। जिस मनोभाव काप्रयोग करके संदेश भेजा गया उसी मनोभाव को व्यक्त करने में कुशल था।

4. निश्छल :- हरगोबिन निश्छल स्वभाव का है। छलकपट से कोसों दूर है। बड़ी बहुरिया के दुःख में स्वयं दुःखी होकर प्रण लेता है कि वह उन्हें माँ समान मानकर उनका भरण-पोषण करेगा। इस तरह संवदिया हरगोबिन अनेक विशेषताओं से युक्त था।

प्रश्न 17. 'संवदिया' कहानी के आधार पर बड़ी बहुरिया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर-बड़ी बहुरिया बड़ी हवेली में जब बहू बनकर आई थी तब हवेली में बड़ी शानो-शौकत थी। वक्त की मार ने सब बिखेर दिया। ऐसे में भी बड़ी बहू की सहनशीलता उनके चरित्र को गरिमा प्रदान करती है-

1. स्वाभिमानी :- आर्थिक परिस्थितियों से परेशान होकर बड़ी बहुरिया मायके संदेश भेजती है किन्तु अपने स्वाभिमान के चलते पछताती है। कारण वह मायके वालों से भी सहायता नहीं लेना चाहती थी।

2. मेहनती :--बड़ी हवेली में नौकरों के न रहने पर घर का सारा कार्य बड़ी बहुरिया स्वयं करती थी। वह मेहनत से जी नहीं बुराती है।

3. संवेदनशील :- स्वभाव से सरल हृदया बड़ी बहुरिया संवदिया की पीड़ा को समझ उसे राह-खर्च देती है तथा वापस लौटने पर दूध-चूड़ा खाने को देती है।

4. साहसी :- -बड़ी बहुरिया विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को तथा हवेली को संभाले हुए है। मोदिआइन के अपशब्द कहने के बाद भी वह हिम्मत नहीं हारती है तथा बधुआ-साग खाकर जीवन-यापन करती है। इस प्रकार अनेक गुणों से मंडित बड़ी बहुरिया का चरित्र था।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रश्न 18. " गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात' पाठ के आधार पर गाँधीजी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-गाँधीजी को कोई बापू कहता, कोई अहिंसा के पुजारी। राष्ट्रपिता के रूप में वे आज भी दुनिया भर में विख्यात हैं। लेखक जब सेवाग्राम आते हैं उनकी पहली इच्छा गाँधीजी से भेंट की थी। उनसे मिलने के बाद उन्होंने गाँधीजी के स्वभाव की विशेषताएँ देखीं। गाँधीजी जब टहलने निकलते तब आसपास के लोगों से मिलते, बात करते व रोगियों की सेवा करते चलते थे। वे बहुत धीमे स्वर में बात करते मानो खुद से ही विचार-विमर्श कर रहे हों। प्रार्थना-सभा को महत्व देते। एक बालक के बुलाने पर जरूरी मीटिंग छोड़ बिना किसी क्षोभ-क्रोध के उनसे मिलने आते और हँसते हुए जाते। तपेदिक का इलाज अपनी देखरेख में करते। उनकी याददाश्त बहुत तेज थी। रावलपिंडी का नाम आते ही दोस्त को याद करते हैं। उनके चेहरे पर सादगी व शान्ति की अद्भुत चमक रहती है। वह बहुत कम सोते तथा अधिकतर समय अपना कार्य ही पूर्ण करने में लगे थे।

प्रश्न 19. 'गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात्त' पाठ में चित्रित यास्सेर अराफात के चरित्र पर प्रकाशडालिए।

उत्तर-फिलिस्तीन में भारत की तरह ही साम्राज्यवादी शासन था। फिलिस्तीन गुलामी से छुटकारा पाने के लिए आंदोलन कर रहा था। भारत के लोग फिलिस्तीन आंदोलन के समर्थक रहे थे। यास्सेर अराफात के नेतृत्व में अस्थायी सरकार काम कर रही थी। यास्सेर अराफात नेता प्रमुख होने के बावजूद भी लेशमात्र अहंकार नहीं रखते थे। लेखक व अन्य अतिथियों को वे अपने हाथों से फल छीलकर खिला रहे थे। अपने हाथों से शहद की चाय बना रहे थे तथा लेखक के गुसलखाने जाने पर स्वयं तौलिया लेकर खड़े हो गए थे। आतिथ्य-भाव उनमें कूट-कूट कर भरा था। भारतीय नेताओं के प्रति उनमें सम्मान की भावना विद्‌यमान थी। गाँधीजी को वे अपना आदरणीय नेता मानकर सम्मानप्रकट करते थे। भारतीयों का रवैया भी फिलिस्तीन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण एवं समर्थन भरा था।

प्रश्न 20. ' चार हाथ' लघुकथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। कैसे? इस कथन का अभिप्राय कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'चार हाथ' लघुकथा वर्तमान में पनप रही मशीनी युग का जीता-जागता उदाहरण है। 'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में चल रहे मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल मालिकों का लालच, मजदूरों के शोषण का प्रमुख कारण है। मिल-मालिक मजदूरों की स्थिति एवं हालातों का फायदा उठाकर एक के बदले में दो व्यक्तियों जितना कार्य ले लेते हैं। वे हरसम्भव प्रयास करते हैं कि मजदूर लालच और बेबसी में इतना दब जाए कि विरोध की स्थिति में न रहे और मिल-मालिक के इशारों पर दुगुना उत्पादन करके दे।

प्रश्न 21. 'शेर' कथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-शेर एक प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक लघुकथा है। शेर समाज में व्याप्त उस घोर व्यवस्था का प्रतीक है जिसके पेट में सभी किसी न किसी प्रलोभन के चलते चुपचाप निर्विवाद समाते चले जा रहे हैं। ऊपर से देखने पर शेर की छवि न्यायप्रिय, अहिंसावादी, समर्थनवादी एवं सह-अस्तित्व कायम रखने वाली प्रतीत होती है। लेकिन जैसे हो लेखक का उसके मुँह में प्रवेश न करने का इरादा तथा विरोध की प्रवृत्ति का पता चलता है, शेर अपनी असलियत दिखाता हुआ दहाड़ता है और झपट्टा मारकर लेखक को निगलने की कोशिश करता है। कथा में व्यंग्यात्मक पक्ष यही है कि सत्ता तभी तक खामोश व समर्थक प्रतीत होती है जब तक उसकी आज्ञा का पालन होता रहे। जैसे ही विरोध के स्वर उठते हैं, वह हिंसक हो जाती है। वह खूंखार होकर विरोधी-स्वर को कुचलने का प्रयास करती है। लेखक नेइस कथा के माध्यम से सुविधाभोगियों, छद्म क्रान्तिकारियों एवं ढोंगियों पर प्रहार किया है।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रश्न 22. लेखक ने शेर के माध्यम से आज के नेताओं की कार्यशैली की पोल खोली है। समझाइए कैसे?
उत्तर-लेखक ने कहानी में बताया है कि शेर व्यवस्था का प्रतीक है और उस व्यवस्था में वे नेता लोग शामिल हैं जो सत्ता में बैठकर विभिन्न प्रलोभन देकर भोली-भाली जनता को ठगते हैं। जनता प्रमाण को न मानकर विश्वास के बल पर छली जाती है। नेताओं द्वारा चुनाव जीतने से पहले आम जनता को विभिन्न प्रलोभन दिए जाते हैं। उन्हें विश्वास दिलाया जाता है कि उनका पूरा ख्याल रखा जाएगा। जनता विश्वास कर धोखा खाती है। इसी तरह कथा में भी यह जानते हुए कि शेर मांसाहारी है, उसके बाद भी सभी विश्वास के बल पर उसके मुँह में समाते चले जाते हैं। लेकिन अंत में लेखक जैसे कुछ लोग होते हैं जो प्रमाण के बल पर विरोध करते हैं। यद्यपि सत्ता द्वारा उन्हें कुचलने का भी प्रयास किया जाता है। इस प्रकार यह लघुकथा बहुत थोड़े शब्दों में सत्ता की लोलुप वृत्ति का पर्दाफाश करती है।
प्रश्न 23. 'चार हाथ' लघुकथा में व्याप्त मजदूरों के प्रति हो रहे शोषण को अपने शब्दों में लिखिए। उत्तर-' चार हाथ' लघुकथा वर्तमान में पनप रहे मशीनी युग का जीता जागता उदाहरण है। 'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में चल रहे मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल मालिकों का लालच, मजदूरों के शोषण का प्रमुख कारण है। मिल-मालिक मजदूरों की स्थिति एवं हालातों का फायदा उठाकर एक के बदले में दो व्यक्तियों जितना कार्य ले लेते हैं। वे हरसम्भव प्रयास करते हैं कि मजदूर लाचारी और बेबसी में इतना दब जाये कि विरोध की स्थिति में न रहे और मिल मालिक के इशारों पर दुगुना उत्पादन करके दें। लेखक ने 'चार हाथ' में मिल मालिक की इसी प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है जो और ज्यादा के उत्पादन के लालच में मजदूरों के दो अधिक हाथ लगवाना चाहता है। इस कार्य में सफल न होने पर शोषण का दूसरा रास्ता खोज लेता हैकि मजदूरी आधी करके दुगुने मजदूर रख दिए जाएँ |मिल-मालिक ने व्यवस्था के इस मकड़जाल में आम आदमी के जीवन को घूंट दिया है यह कथा यही सत्य उजागर करती है |
प्रश्न 24. 'जहाँ कोई वापसी नहीं' शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए पाठ की मूल संवेदना लिखिए
उत्तर- जहाँ कोई वापस नहीं आ सकता' अर्थ को स्पष्ट करता शीर्षक लेखक निर्मल वर्मा का यात्रा वृत्तांत है।प्रस्तुत पाठ में लेखक ने पर्यावरण सम्बन्धी सरोकारों के साथ-साथ औद्योगिक विकास के नाम पर पर्यावरण से उत्पन्न हुई विस्थापन समस्या को चित्रित किया है। विस्थापन से केवल मनुष्य ही नहीं उखड़ता वरन् उसका परिवेश और आवास स्थल भी नष्ट हो जाता है। बच्चे अपने पूर्वजों के नाम व गाँव तक नहीं जान पाते हैं। इन विस्थापितों को लेखक ने आधुनिक युग के शरणार्थी कहा है। जों अपने ही देश में, अपनों ही के द्वारा अपनी भूमि, क्षेत्र, प्रकृति से विस्थापित हो जाते हैं। विकास की अंधी दौड़ में शामिल कारवां विनाश की लीला न तो देखते हैं और न ही समझते हैं। लेखक का मानना है कि विकास और पर्यावरण सम्बन्धी सुरक्षा के बीच संतुलन होना चाहिए। नहीं तो विकास हमेशा विस्थापन और पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं को जन्म देता रहेगा।
प्रश्न 25. सिंगरौली की उर्वरा भूमि तथा उस इलाके की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गई। सिद्ध कीजिए।
उत्तर-सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और घने जंगल अपने आप में इतने समृद्ध एवं वन सम्पदा से पूर्ण थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसानों ने अपने परिवार का भरण-पोषण किया है। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय सम्पदा उसके लिए विकास के नाम पर अभिशाप बन गई। दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अथाह सम्पदा छिप न सको। विस्थापन की लहर रिहंद बाँध बनने से शुरू हुई, जिसके कारण अनेक गाँव उजाड़ दिये गये। इन्हीं नयी योजनाओं के अन्तर्गत सेंट्रल कोल फील्ड और नेशनल सुपर थर्मल पावर कॉरपोरेशन का निर्माण हुआ। चारों तरफ की हरियाली को खत्म कर

VISION 100 NEEMKATHANA

पक्की सड़कें और पुल बनाये गये। सिंगरौली जो अब तक अपने सौन्दर्य के बैकुंठ और अकेलेपन के कारण 'कालापानी' माना जाता था, वही प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ। विकास के खेल में प्रकृति और मानव का कितना विनाश हुआ, वह किसी ने नहीं देखा।

प्रश्न 26. 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-लेखिका ममता कालिया कहानी 'दूसरा देवदास' में प्रेम के महत्त्व और उसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती हैं। इस कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। वह कहीं भी, कभी भी, किसी भी समय और स्थिति में उपज सकता है। प्रेम में प्रथम आकर्षण और परिस्थितियों के गुम्फन ही प्रेम को आधार और मजबूती प्रदान करता है। वर्तमान की भोग-विलास की संस्कृति ने प्रेम का स्वरूप उच्छ श्रृंखल कर दिया है। युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करके पदभ्रमित होती जा रही है। ऐसी स्थिति में प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित करती है और दूसरी तरफ मन की संवेदना, भावना और कल्पनाशीलता को भी प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 27. "इस भीड़ में एकसूत्रता थी न जाति का महत्त्व था, ना भाषा का इस कथन को 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर-सम्भव दिल्ली से हरिद्वार आया था। हर की पीड़ी पर बैठकर वहाँ की भीड़ का अवलोकन करता है। यद्यपि भीड़ उसने दिल्ली में भी देखी हुई थी। दफ्तर जाती भीड़, खरीद फरोख्त करती भीड़, तमाशा देखती भीड़, सड़क क्रॉस करती भीड़। जहाँ सभी को जल्दी लगी रहती थी। जो एक-दूसरे से आगे निकलने को होड़ में लगे हुए थे। लेकिन हरिद्वार की भीड़ का अंदाज निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी, जिसमें न जाति का महत्त्व था, न भाषा का, महत्त्व सिर्फ उद्देश्य था कि सब अपने मन की शान्ति एवं हर गंगे का दर्शन प्राप्त करने आये हैं। और यह उद्देश्य सबका समान था। सभी अपने जीवन के प्रति कल्याण की भावना से आये थे। इस भीड़ में दौड़-होड़ नहीं, अतिक्रमण नहीं। इस भीड़ की क्रमबद्धता में एक अनोखी तारतम्यता थी जिसने सारे दर्शनार्थियों को एक सूत्र में बाँध रखा था।

प्रश्न 28. 'उस छोटी-सी मुलाकात ने संभव के मन में हलचल उत्पन्न कर दी'- यह छोटी-सी मुलाकात कहाँ और कैसे हुई ?

अथवा

'प्रेम के लिए किसी भी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है।''दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर उपर्युक्त पंक्ति को स्पष्ट कीजिए

उत्तर- संभव अपनी नानी के घर हरिद्वार आया था। शाम के समय वह हर की पौड़ी पर गंगा स्नान करने गया। स्नान करने के बाद उसने घाट पर उपस्थित मंगल पंडा से तिलक लगवाया। एक मन्दिर के पुजारी ने उसे आवाज दी दर्शन तो करते जाओ। संभव रुका। नानी ने मन्दिर में सवा रुपये चढ़ाने को कहा था। पुजारी ने उसकी कलाई में कलावा बाँधा। तभी एक दुबलो-नाज़ुक सी लड़की उसके बिलकुल पास आकर खड़ी हुई। लड़की ने कहा 'आज तो देर हो गई। कल हम आरती को बेला में आयेंगे।' पुजारी को लड़की के 'हम' शब्द को सुनकर तथा उसको संभव के बहुत पास खड़ा देखकर भ्रम हुआ। उसने उनको पति-पत्नी समझा और आशीर्वाद दिया सुखी रहो, फूलो-फलो, जब भी आओ साथ ही आना। गंगा मैया मनोरथ पूरा करें। इसके बाद दोनों वहाँ से चले गये परन्तु इस छोटी-सी मुलाक़ात ने संभव के मन में हलचल उत्पन्न कर दी।

प्रश्न 29. "जीना भी एक कला है और कुटज इस कला को जानता है-पाठ के आधार पर इस कथन को समझाइए।

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर-जीना एक कला है। आचार्य द्विवेदी ने तो जीने को कला से भी बढ़कर एक तपस्या माना है। तपस्या में तल्लीनता और सहिष्णुता का होना आवश्यक होता है। जीवन जीने का सच्चा सुख उसी व्यक्ति को मिलता है जो सुख-दुःख को समान मानकर ग्रहण करता है। गीता में कहा गया है 'सुखे-दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ, जयाजयौ।' यही जीवन जीने को कला है, रहस्य है। 'कुटज' हमें जीने की कला बताता है। हिमालय के ऊँचे पथरीले प्रदेश में, जहाँ घास भी भीषण गर्मी, लू और जलाभाव में सूख जाती है, वहाँ कुटज हरा-भरा और फूलों से लदा रहता है। उसकी जड़ें चट्टानों को तोड़कर गहराई में अपना भोग्य प्राप्त करती हैं। वह सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करके ही मनुष्य जी सकता है।

प्रश्न 30. लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कुटज' की कौनसी विशेषताएँ बताई हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक ने बताया कि 'कुटज' एक ठिगना-सा पौधा है, जो नाम और रूप दोनों में अपनी अपराजेय जीवन शक्ति की घोषणा करता है। कुटज कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छांती चीरकर अपना भाग्य-संग्रह करता है। वह कठिन परिस्थितियों में हार नहीं मानता है। उसकी अविचल जोवन दृष्टि है अर्थात् वह कभी भी विचलित नहीं होता है। वह वशी है, अपने मन को वश में रखता है। वह बैरागी है, उसे संसार के स्वार्थों से कोई लेना-देना नहीं है। कुटज अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने पर सवार नहीं होने देता है। वह 'गाढ़े का साथी है' अर्थात् मुसीबत या कष्ट के समय वह सदैव काम आता है। स्वभाव से फक्कड़, मस्त, निर्लिप्त व योगी के समान है। जो अपनी हो धुन में जीता चला जा रहा है। जो अजेय है तथा दुरंत शक्ति वाला है। वह दूसरों के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता तथा कोई पास आ गया तो डर के मारे अधमरा नहीं होता। नीति और धर्म का उपदेश नहीं देता। वह जीता है और शान से जीता है। चाहे सुख हो या दुःख, प्रिय हो या अप्रिय जो मिल जाए, हृदय से बिल्कुल अपराजित होकर उल्लास सहित ग्रहण करता हैं।

प्रश्न 31. ' आशा से ज्यादा दीर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती' इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-लेखक मुंशी प्रेमचन्द ने आशा को अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में दीर्घजीवी कहा हैक्योंकि (1) आशा व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देती है-सूरदास भले ही कर्म से भिखारी था। उसे आशा थी कि वह एक दिन गया जाकर पितरों का श्राद्ध, एक कुआँ और मंदिर बनवाएगा। बेटे का विवाह करेगा। इसी के निमित्त रूखा-सूखा खाकर भी उसने पाँच सौ रुपये से अधिक की राशि एकत्रित कर ली थी। (ii) विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति आशावादी बना रहता है-भैरों ने शत्रुतावश उसकी झोंपड़ी में आग लगा दी। प्रात:काल होते ही सूरदास इस आशा से राख के ढेर टटोल-टटोल कर देख रहा है कि शायद उसे उसकी पोटली मिल जाए। सूरदास के इस प्रयास को देखकर ही प्रेमचन्द आशा दीर्घजीवी कहते हैं।

प्रश्न 32. बिस्कोहर की माटी' पाठ के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

उत्तर बिस्कोहर की माटी' विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया पाठ है। अभिव्यंजना की दृष्टि में यह अत्यन्त रोचक तथा पठनीय है। लेखक ने अपनी उम्र के अनेक पड़ाव पार करने के बाद अपने जीवन में माँ, गाँव तथा आसपास के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन इस पाठ में किया है। लेखक ने पाठकों को ग्रामीण जीवन-शैली, परिवेश, लोक-कथाओं, लोकमान्यताओं तथा सुखों और असुविधाओं से परिचित कराने का भरपूर प्रयास किया है।गाँवों में शहरों के समान जीवन जीने की सुविधाएँ नहीं होतीं। वहाँ का जीवन अकृत्रिम होता है तथा प्रकृति पर अधिक निर्भर होता है। गाँव का वातावरण प्राकृतिक सौन्दर्य से भरापूरा होता है। प्रस्तुत कथा में लेखक ने अपने गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का तन्मयता से चित्रण किया है। वर्षा जब बाढ़ का संकट पैदा करती है तो गाँव में अनेक परेशानियाँ पैदा हो जाती है। विभिन्न फूलों और सब्जियों का वर्णन करके लेखक ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा को व्यक्त किया है। उसने विभिन्न साँपों एवं विषकीटों आदि के वर्णन से भयानक रस की भी सृष्टि की है। फूल, दवा का काम करते हैं यह बताकर प्रकट किया गया है कि

VISION 100 NEEMKATHANA

ग्रामीण प्राकृतिक रूप से प्राप्त जड़ी-बूटियों को रोग के उपचार के लिए प्रयोग करने को प्राथमिकता देते हैं।विसनाथ जो स्वयं इस कथा के लेखक हैं, इस पूरी कथा के केन्द्र में स्थित हैं। बिस्कोहर गाँव बिसनाथ की दृष्टि से सबसे अच्छा गाँव है और बिस्कोहर की स्त्री ही संसार की सबसे सुन्दर स्त्री है। "बिसनाथ मान ही नहीं सकते कि विस्कोहर से अच्छा कोई गाँव हो सकता है और बिस्कोहर से ज्यादा सुन्दर कहीं की औरत हो सकती है।" इन केन्द्रीभूत तथा प्रमुख विषयों के अतिरिक्त गर्मी, वर्षा, शरद् में होने वाली दिक्कतों ने लेखक के मन पर जो प्रभाव डाला है उसका उल्लेख भी इस पाठ में स्वाभाविक रूप में हुआ है। लेखक ने अपने भोगे यथार्थ को प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया है।थोड़ा ध्यान देने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बिस्कोहर गाँव ही मूलतः प्रतिपाद्य है।

प्रश्न 33. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर शरद् ऋतु की प्राकृतिक छटा का वर्णन कीजिए।

अथवा

'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में लेखक ने ग्रामीण प्राकृतिक सुषमा और सम्पदा का सुन्दर वर्णन किया है। पठित पाठ के आधार पर इसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-'बिस्कोहर की माटी' पाठ में वर्षा के बाद शरद ऋतु की प्राकृतिक छटा का वर्णन करते हुए बताया गया है कि बरसात के बाद बिस्कोहर की धरती, सिवान, आकाश, दिशाएँ, तालाब, बूढ़ी राप्ती नदी निखर उठते हैं। धान के पौधे झूमने लगते थे, भुट्टे, चरी सनई के पौधे, करेले, खीरे, कांकर, भिंडी, तोरी के पौधे फिर लताएँ। शरद् में फूल-तालाब में शैवाल (सेवार) उसमें नीला जल-आकाश का प्रतिबिंब नीले जल के कारण तालाब का जल अगाध लगता है। तालाबों का नीला जल ऐसा लगता कि अभी इसमें से कोई देवी-देवता प्रकट होगा। शरद ऋतु में हरसिंगार के सफेद फूल खिल जाते हैं तथा सभी वनस्पतियों में निर्मल सौन्दर्य आ जाता है। रात में स्वच्छ आकाश में चाँदनी छिटक जाती है।

प्रश्न 34. "संगीत, गंध, बच्चे-बिसनाथ के लिए सबसे बड़े सेतु हैं, काल, इतिहास को पार करने के।" प्रस्तुत कथन के आधार पर बताइए कि बिसनाथ का सम्बन्ध गंध से किस प्रकार जुड़ा हुआ था?

उत्तर-बिसनाथ मानता था कि समय के आर-पार झाँकना हो, इतिहास को अच्छी तरह समझना हो, तो संगीत, गंध और बच्चे इसमें बड़े सहायक होते हैं। बिसनाध को बड़ा होने पर याद आया कि बचपन में उसे अपनी माँ के पेट को गंध उसके दूध की गंध जैसी लगती थी। पिता के कुर्ते पर पसीने की बू भी उसे अच्छी लगती थी। नारी शरीर से उसे बिस्कोहर की वनस्पतियों एवं फसलों की गंध आती थी। वहाँ के तालाब की चिकनी मिट्टी की गंध, खीरा, भुट्टा या गेहूँ को गंध भी उसे अच्छी लगती थी। फूले हुए नीम की और जूही की गंध उसे नारी शरीर की गंध के समान मादक, आकर्षक और आनन्ददायी लगती थी। इसलिए बिसनाथ अब तक गंध की मधुर स्मृति के कारण अपने गाँव के परिवेश से जुड़ा हुआ था।

प्रश्न 35. 'हमारे आज के शहर नियोजकों और इंजीनियरों तथा पुरातन नियोजकों में क्या अन्तर बताया गया है? 'अपना मालवा-खाऊ-उजाडू सभ्यता में' अध्याय के आधार पर विस्तृत उत्तर लिखिए

उत्तर-हमारे आज के इंजीनियर समझते हैं कि पानी का प्रबंध वे ही जानते हैं और पहले जमाने केलोग कुछ नहीं जानते थे। इनका मानना है कि यह ज्ञान तो पश्चिम के पुनर्जागरण के बाद ही आया है। वे भ्रांत धारणा के शिकार हैं। मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज आदि सब शासक पठार पर पानी को रोकने तथा पानी का उचित प्रबन्धन करने में कुशल थे। उन्होंने खूब कुएँ, तालाब व बावड़ियाँ बनवाई हैं जो कि पुनर्जागरण काल से बहुत पहले ही हो गए थे। जबकि आज के नियोजकों व इंजीनियरों ने तालाबों को गाद से भर दिया और जमीन के पानी को पाताल से भी निकाललिया। फलस्वरूप नदी-नाले सूख गए। जिसके कारण पग-पग नीर वाला मालवा सूख गया।

VISION 100 NEEMKATHANA

36. 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।
उत्तर-इस कथन के आधार पर सूरदास के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ व्यंजित होती हैं-
(1) बदले की भावना की अपेक्षा पुनर्निर्माण पर आस्था-बालक मिठुआ के इस प्रश्न पर कि 'कोई सौ लाख बार आग लगा दे तो हम क्या करेंगे?' के उत्तर में सूरदास कहता है कि 'हम सौ लाख बार ही उसे फिर बनायेंगे।' यह कथन उसके बदले के भाव से मुक्त पुनर्निर्माण में विश्वास को व्यक्त करता है। वह जो नष्ट हो गया है, उसे भूलकर नये सिरे से जीना चाहता है।
(2) कर्मठ व्यक्तित्व-सूरदास अंधा होते हुए भी अपने कर्म के आधार पर विपत्तियों का सामना करने का साहस रखता है।
(3) सहनशील-सब कुछ जल जाने के बाद भी वह जीवन को एक खेल मानते हुए सहनशील बना रहता है।
(4) संकल्प का धनी-वह संकल्प का धनी है। इसीलिए वह 'सौ लाख बार बनाने' की बात को अति सहजता से कह देता है।
(5) आशावादी-सूरदास 'सौ लाख बार बनाने की बात' बाल सुलभ ढंग से जिस सरलता से कहता है, वह सरलता व सहजता ही उसके आशावादी व्यक्तित्व को उजागर कर देती है।
37. "सूरदास की झोपड़ी पाठ में ईर्ष्या, चोरी, ग्लानि,बदला जैसे नकारात्मक मानवीय पहलुओं पर अकेले सूरदास का व्यक्तित्त्व भारी पड़ता है |" जीवन मूल्यों के प्रति इस कथन पर विचार व्यक्त कीजिए |
उत्तर :- झोपड़ी के जलने से सूरदास अत्यंत दुःखी था | पूरी राख को तितर-बितर करने पर भी उसे अपने संचित रूपये अथवा उनकी पिघलती हुई चाँदी नहीं मिल रही थी | उसकी सभी योजनाएँ इन रुपयों के माध्यम से ही पूरी होनी थी | अब वे अधूरी रहने वाली थी | दुःखी और निराश सूरदास रोने लगा था | अचानक उसके कानों में आवाज आई – "तुम खेल में रोते हो |" इन शब्दों ने सूरदास की मनोदशा को एकदम बदल दिया | उसने रोना बंद कर दिया | निराशा उसके मन से दूर हो गई | उसका स्थान विजय-गर्व ने ले लिया | उसने मान लिया कि वह खेल में रोने लगा था | यह अच्छी बात नहीं थी | वह राख को दोनों हाथों से हवा में उड़ाने लगा |

कवि/लेखक परिचय

तुलसीदास

हिन्दी साहित्य आकाश के सूर्य व रामभक्ति शाखा के मूर्धन्य कवि तुलसीदास का जन्म 1532 में उतरप्रदेश के बाँदा जिले में स्थित राजापुर गाँव में हुआ है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था अशुभ व अभुक्त नक्षत्र में पैदा हुए तुलसी को उनके माता-पिता ने अनिष्ट की आशंका से त्याग दिया था और इनका लालन-पालन चुनिया नाम की दासी ने किया था इनके बचपन का नाम राम बोला था। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था, जो दीनबन्धु पाठक की पुत्री थी इनके गुरु का नाम नरहरिदास था। उन्ही से उन्होने राम भक्ति के संस्कार सीखे।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी बारह रचनाओं को प्रामाणिक माना है जो निम्नलिखित है

VISION 100 NEEMKATHANA

1.रामचरितमानस 2. विनयपत्रिका 3. कवितावली 4.दोहावली 5.गीतावली 6.कृष्ण गीतावली 7.रामाज्ञाप्रश्नावली 8.रामललानहछू 9.वैराग्य संदीपनि 10.बरवै रामायण 11.जानकी मंगल 12. पार्वती मंगल

नोट:-

1. इनकी रचनाओं में समन्वय की बातें हुई इसी कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें समन्वय की विराट चेष्टा" का कवि कहा है

2. इनकी प्रसिद्धी का आधार रामचरितमानस है रामचरितमानस ग्रन्थ को भारतीय जीवन मूल्यों का समाज-शास्त्र कहा जाता है।

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनको हिन्दी का जातीय कवि कहा है।

4. जार्ज ग्रियर्सन ने तुलसी को बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा है

5. नाभादास ने तुलसी को कलिकाल का वाल्मीकि कहा है।

हरिवंशराय बच्चन

आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक व उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म 1907 में इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में हुआ | इनके पिता का नाम प्रताप नारायण तथा माता का नाम सरस्वती था। उन्होंने इलाहाबाद् विश्वविद्यालय कैम्ब्रिज से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा विश्वविद्यालय से इट्स के काव्य पर शोध कर अंग्रेजी साहित्य में पी. एच. डी. की|

ये विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे तथा इन्होंने आकाश वाणी में भी काम किया।

प्रमुख रचनाएँ :-1. मधुशाला2. मधुबाला 3.मधुकलश 4.निशा निमंत्रण 5.आकुल अन्तर 6.आरती और अंगारे 7.मिलन यामिनी 8.बंगाल का अकाल 9.दो चट्टाने 10.नए-पुराने झरोखे s11.चार खेमे चौसठ खूटे

डायरी :-प्रवासी की डायरी

आत्मकथा के चार खण्ड :- 1.क्या भूलू क्या याद करु2.नीड़ का निर्माण फिर3.बसेरे से दूर 4.दशद्वार से सोपान तक

अनुवाद :- 1.हेमलेट 2.जनगीता 3.मैकबैथ 4. 64 रूसी कविताएँ

नोट :-

1.इनको 1966 राज्य सभा में मनोनीत किया गया

2.इनको 1966 में ही सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया

3. दो चट्टानें रचना के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला

4.1976 में भारत सरकार ने पद्मभूषण से सम्मानित किया

5.इनकों क्षयी रोमांच का कवि व आत्मानुभूति का कवि कहा जाता है

6. इनके मधुकाव्य पर फारसी कवि उमर खय्याम की रुबाइयों का प्रभाव लक्षित होता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक,निबंधकार,साहित्य चिन्तक एवं इतिहास लेखक के उच्च को रूप में जाने जाते हैं। इनका जन्म प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना गाँव 1884 में हुआ । इनके पिता का मे नाम चन्द्रबली शुक्ल था इनकी विधिवत शिक्षा इंटरमीडियट तक हो पायी। बाद में उन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, अग्रेजी, बांग्ला और हिन्दी के प्राचीन तथा नवीन साहित्य का गम्भीरता से अध्ययन किया।

आलोचना :-हिन्दी साहित्य का इतिहास,काव्य का रहस्यवाद,जायसी ग्रन्थावली,गोस्वामी तुलसीदास,भ्रमरगीत सार

निबंध संग्रह:- चिन्तामणि (चार खण्ड),रसमीमांसा

काव्य संग्रह :- अभिमन्यु वध,बुद्धचरित्र ।

कहानी :- ग्यारह वर्ष का समय(1903)

संपादन - हिन्दी शब्द - सागर,काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका,आनन्द कादम्बिनी

नोट :-

1.इनका पहला निबंध साहित्य नामक शीर्षक से 1904 में सरस्वती में छापा।

2.इनके निबंध-संग्रह चिन्तामणि को प्रारम्भ में विचार विथी के नाम से प्रकाशित करवाया गया था

3. इनकी पहली आलोचना काव्य में रहस्यवाद मानी जाती है

4. इनको चिन्तामणि रचना के लिए देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया

5 लक्ष्मीनारायण ने इनकी कहानी ग्यारह वर्ष का समय को हिन्दी की प्रथम कहानी माना है।

VISION 100 NEEMKATHANA

विद्यापति

आदिकाल व भक्तिकाल के संधि कवि विद्यापति का जन्म बिहार के मधुबनी जिले के बिस्पी गांव में 1980 में हुआ | इनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ जो विद्या व ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। विद्यापति कवि मिथिला के राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र,राजकवि और सलाहकर थे।विद्यापति बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील व्यक्ति थे। ये साहित्य, संगीत,ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय, भूगोल आदि के प्रकाण्ड पंडित थे । इन्होनें संस्कृत, अपभ्रंश,मैथिली तीनो भाषाओं में रचनाएँ की ।

ये हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के पहले ऐसे कवि है जिनकी पदावली में जनभाषा में जन संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है।मिथिला क्षेत्र के लोक व्यवहार और लोक सांस्कृतिक अनुष्ठानों में उनके पद इतने रच बस गए है कि पदों की पंक्तियाँ अब वहाँ के मुहावरों बन गई है।

प्रमुख कृतियाँ

1.अपभ्रंश भाषा में :- कीर्तिलता,कीर्ति पताका

2.मैथिली भाषा में :- पदावली

3.संस्कृत भाषा में :- पुरुष परीक्षा, भू परिक्रमा,लिखनावली,दुर्गाभक्ति तरंगिणी,विभाग सार,गंगा वाक्यावली

नोट :-

1. इनकी प्रसिद्धि का मूल आधार पदावली रचना है।

2. कीर्तिलता व कीर्तिपताका जैसी रचनाओं पर दरबारी संस्कृति व अपभ्रंश काव्य का प्रभाव है।

3. इनकी पदावली के गीतों में भक्ति व श्रृंगार की गूंज है।

4. उनको मैथिल कोकिल तथा अभिनव जयदेव के नाम से भी जाना जात है

फणीश्वरनाथ रेणु

हिन्दी के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के गाँव औराही हिंगना गाँव में 4 मार्च 1921 को हुआ। रेणु जी ने 1942 में 'भारत छोड़ो स्वाधीनता' आन्दोलन तथा नेपाल के राणाशाही विरोधी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निगाई। इन्होंने अपने साहित्य में अंचल विशेष को अपने शब्दों का आधार बनाकर आँचलिक शब्दावली व मुहावरों का सहारा लेकर वहाँ के जन जीवन का व वातावरण का चित्रण किया है कथाकार होने के कारण रेणु जी ने वर्णनात्मक शैली को आधार बनाया।

प्रमुख कृतियाँ

कहानी संग्रह :- ठुमरी,अच्छे आदमी,अगिनखोर,रस प्रिया आदिम रात्रि की महक,तीसरी कसम उर्फ़ मारे गये गुलफाम

उपन्यास :- मैला-आँचल,परती परिकथा,जुलूस, पलटू बाबू रोड ,कितने चौराहे, कलंक – मुक्ति

रिपोर्ताज :- नेपाली क्रांति कथा, एकलव्य के नोट्स

संस्मरण :- ऋणजल-धनजल, वन तुलसी की गंध

आत्मकथा:- आत्मपरिचय

नोट:- 1.इनकी तीसरी कसम उर्फ़ मारे गये गुलफाम कहानी पर बासु भट्टाचार्य के निर्देशन में एक फिल्म बन चुकी चुकी है जिसमें राजकपूर और वहीदा रहमान ने भूमिका निभाई |

2.रेणुजी राजनीति में प्रगतिवादी विचारधारा का समर्थन करते है

3.मैला आँचल आंचलिक उपन्यास के कारण बहुत ख्याति मिली थी और इसी उपन्यास के लिए भारत सरकार ने पदम् श्री पुरस्कार से सम्मानित किया जो इन्होंने 1975 में आपातकाल के समय लौटा दिया

4.रेणुजी की समस्त रचनायें रेणु रचनावली के नाम से पांच खंडो में प्रकाशित हो चुकी हैं |

5.इनकी पहलवान की ढोलक कहानी 1944 में विश्वमित्र नामक पत्र में छप चुकी थी |

जयशंकर प्रसाद

छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी (वाराणसी) में 1889 में सुंघनी शाहू "(वाराणसी) परिवार में हुआ था। इनका परिवार सुंघनी शाहू के नाम से जाना जाता है क्योंकि इनके परिवार में विशेष प्रकार की सुंघनी तम्बाकू बनाते थे।

प्रसादजी को सरस्वती के वरद पुत्र और छायावाद की ब्रह्मा उपाधि दी गई उन्होंने 9 वर्ष की अवस्था में कलाधर के नाम से अपने गुरू को ब्रज भाषा में कविता लिखकर दिखाई। इनकी विद्यालय शिक्षा आठवीं तक हुई किन्तु घर पर उन्होने संस्कृत पाली, हिन्दी, उर्दू व अग्रेजी के साहित्य का अध्ययन किया ये इतिहास, दर्शन,पुरातत्त्व,धर्मशात्र के प्रकांड विद्वान थे| राष्ट्रीय जागरण का स्वर इनकी रचनाओं की मुख्य विशेषता है।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रमुख रचना:
काव्य संग्रह:- झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेमपथिक,कानन कुसुम, प्रेम राज्य ,वन मिलन
नाटक :- विशाख, अजातशत्रु , ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ,राज्य श्री, करुणालय, सज्जन
कहानी संग्रह :- छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल
उपन्यास :- कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
निबन्ध:- काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध
नोट :- कामायनी छायावाद की लोकप्रिय व श्रेष्ठ रचना है जो 1935 में प्रकाशित हुई इस रचना के लिए इनको मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार से नवाजा गया |

घनानंद

रीतिकाल के रीतिमुक्त या स्वछंद काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि घनानंद का जन्म 1673 में हुआ। घनानंद दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मीरमुंशी के पद पर थे। ये कवि के साथ-साथ गायन विद्या में भी निपुण थे। इन्हें सुजान नामक गणिका से गहरा प्रेम था उसी के प्रेम के कारण घनानंद बादशाह के दरबार में बे-अदबी कर बैठे जिससे नाराज होकर बादशाह ने दरबार से निकाल दिया। दरबार से निकाले जाने के बाद वृंदावन जाकर निम्बार्क सम्पदाय में दीक्षित हुए |घनानंद मूलत: प्रेम की पीर के कवि थे | इनके काव्य में वियोग श्रृंगार की प्रधानता है | इनकी कविता में लाक्षणिकता, वक्रोक्ति के साथ-साथ अलंकारों का भी कुशल प्रयोग मिलता है।
धनानंद की भाषा परिष्कृत व साहित्यिक ब्रजभाषा है। इनकी भाषा के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा था कि "प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण व धीर पथिक व जवांदानी का ऐसा दावा रखने वाला बर्जभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ | घनानंद की काव्य प्रेरक सुजान नामक गणिका थी।
प्रमुख रचनाएँ:- सुजान सागर (सुजान हित), विरह – लीला, लोकसार, रसकेलि वल्ली, कृपाकंध निबन्ध, घनआनंद कवित्त, सुजान-विनोद, जमुना जस, प्रीति-पावस, आनंद घन जु की पदावली, इश्कलता |
नोट :-
1.घनानंद की प्रसिद्धि का आधार सुजान-सागर रचना है।
2. रायकृष्णदास के अनुसार धनानंद का महाराज नागरीदास के साथ निकटतम संबंध था।
3.घनानंद को साक्षात रसमूर्ति कहा जाता है |
4.घनानंद द्वारा रचित कृष्णभक्ति सम्बन्धित एक ग्रन्थ है जो छतरपुर के राज पुस्तकालय में सुरक्षित है।
5. इनकी कविता के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा था कि - "घनानंद की कविता आत्मा की मौनमधि से पुकार है।“

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

छायावादी साहित्य के रूद्र व आधुनिक युग के सबसे बड़े युगांतकारी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' का जन्म 1899 में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक गाँव में हुआ। ये मूलत: उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के

VISION 100 NEEMKATHANA

गढ़कोला गाँव के निवासी थे। इनके बचपन का नाम सूर्यकुमार था | इनकी पत्नी का नाम मनोहरी देवी था जिनकी प्रेरणा से निराला की साहित्य व संगीत में रूचि पैदा हुई। ये मुक्त छन्द के प्रवर्तक माने जाते है | इनके द्वारा 1916 में लिखी 'जुही की कली' कविता मुक्त छंद में लिखी गई थी जो बहुत ही प्रसिद्ध रही है। इनकी विचारधारा पर स्वामी विवेकानंद व रामकृष्ण परमहंस का गहरा प्रभाव पड़ा। इनका व्यक्तित्व निराला था इसी कारण साहित्य जगत मे इनका 'निराला' नाम पड़ा ।
इन्होंने समन्वय, सुधा व मतवाला आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।
प्रमुख रचनाएँ :-
काव्य कृतियाँ :- अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अणिमा, अर्चना, राम की शक्ति पूजा, आराधना, सरोजस्मृति, गीतगूंज, बेला, नये पत्ते, भिक्षुक |
निबन्ध :- प्रबंध पूर्णिमा, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक
उपन्यास :- अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती |
नाटक :- पंचवटी-प्रसंग
कहानी :- लिली, चतुरी चमार, सखी
नोट :- इनका सम्पूर्ण साहित्य निराला रचनावली के नाम 8 खण्डों में प्रकाशित हो चुका है |

हजारी प्रसाद द्विवेदी

भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास, दर्शन के आख्याता प्रसिद्ध निबंधकार, आलोचक, इतिहासकार, उपन्यासकार एवं सफल अध्यापक रहे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे के छपरा नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी तथा इनकी माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था। इनके बचपन का नाम बैजनाथ था जन्म के समय इनके पिता को किसी मुकदमे में 1000 रुपये की प्राप्ति होने पर इनके पिता ने इनका नाम हजारी प्रसाद रखा। इन्होंने 1930 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की | ये 1940-50 तक हिन्दू-भवन शांति निकेतन में निदेशक के पद पर रहें। 1952-53 तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे और 1955 में राजभाषा आयोग के सदस्य बने।
इन्होंने अपनी रचनाओं में सरल, परिष्कृत भाषा को अपनाया तथा अपने ललित निबंधों में आत्मपरक शैली का प्रयोग किया।
प्रमुख रचनाएँ –
निबंध :- अशोक के फूल, विचार व वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता, कुटज विचार-प्रवाह
उपन्यास :-बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा, चारुचन्द्रलेख
आलोचना :- हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य उद्भव और विकास
सम्पादक :- नाथ-सिद्धों की बनिया, संदेश रासक
नोट:
1.इनको आलोक पर्व रचना के लिए 1973 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
2. इन्हें भारत सरकार ने 1957 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया |
3. 1949 में लखनऊ विश्वविद्यालय में डी लिट् की उपाधि से सम्मानित किया।

VISION 100 NEEMKATHANA

4. द्विवेदी जी साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने के पक्षपाती थे |

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

प्रयोगवाद व नयी कविता के प्रवर्तक अज्ञेय का जन्म सन् 1911 में उत्तरप्रदेश के कुशीनगर में हुआ। इनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय था। इनके पिता हीरानंद शास्त्री पुरातत्त्ववेता थे। इनको स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण 4 वर्ष जेल तथा 2 वर्ष नजरबंद रहना पड़ा। ये कुछ समय जोधपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पद पर रहे। ये यायावर प्रवृति के व्यक्ति थे | इन्होंने यूरोप तथा एशिया का भ्रमण किया। इन्होंने निम्नलिखित पत्रिकाओं का सम्पादन किया
सैनिक, विशाल-भारत, बिजली, वाक् प्रतीक, दिनमान, नया प्रतीक,नवभारत टाइम्स
प्रमुख रचनाएँ:-
काव्य-संग्रह :- आँगन के पार द्वार, इत्यलम्, बावरा अहेरी कितनी नाव में कितनी कितनी बार, इन्द्रधनुष के रौंदे हुए, भग्नदूत, चिंता |
कहानी संग्रह :- विपथगा,परम्परा,कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप |
उपन्यास :- शेखर:एक जीवनी,नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी
यात्रावृतान्त :- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली
निबंध संग्रह :- आत्मनेपद,त्रिशंकु, नवरंग और कुछ रंग, हिंदी साहित्य: एक परिदृश्य
संस्मरण :- स्मृति-रेखा।
नोट- 1.इनका प्रथम काव्य-संग्रह भग्नदूत है।
2.इनको 'आँगन के पार द्वार' काव्य संग्रह के लिए सन् 1965 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला
3. इनको 'कितनी नाव में कितनी बार 'काव्य संग्रह के लिए सन 1978 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरुस्कार मिला।
4. अज्ञेय को कठिन गद्य का प्रेत कहा जाता है क्योंकि इनकी रचनाओं में क्लिष्ट शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

VISION 100NEEMKATHANA

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

इतिहास-दिवाकर की उपाधि से सम्मानित पण्डित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 7 जुलाई 1883 को पुरानी बस्ती, जयपुर में हुआ। गुलेरी जी बहुभाषाविद् (संस्कृत,पालि,प्राकृत,अपभ्रंश,ब्रज,अवधी,मराठी, राजस्थानी,गुजराती,बांग्ला,अंग्रेजी,फ्रेंच और लैटिन) थे। गुलेरी जी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित माने जाते है।
इनका प्रिय विषय प्राचीन इतिहास व पुरातत्त्व था। इन्होंने अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्यापन कार्य किया तथा काशी विश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय में प्राचार्य के रूप में कार्य किया।
प्रमुख कृतियाँ:-
कहानी संग्रह :- उसने कहा था, बुद्धू का काँटा, सुखमय जीवन
निबंध :- कछुआ धर्म, अमंगल के स्थान पर मंगल शब्द, गोबर गणेश संहिता, विक्रमोंवंशीय की मूल कथा, मारेसि मोहि कुण्ठाव

संपादन :- समालोचक(1903-06), मर्यादा(1911-12), प्रतिभा(1918-20), नागरी प्रचारिणी पत्रिका(1920-22)

नोट:- 1.गुलेरी जी की प्रसिद्धि का मूल आधार 'उसने कहा था' कहानी है जो 1915 में प्रकाशित हुई।

उसने कहा था कहानी प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) की विभीषिका पर आधारित है |

3.गुलेरी जी ने उसने कहा था कहानी में सर्वप्रथम फ्लैश-बैक शैली या पूर्वदीप्ति का प्रयोग किया |

निर्मल वर्मा

अकहानी आन्दोलन के प्रवर्तक तथा नयी कहानी आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर, हिन्दी व अंग्रेजी में समान अधिकार रखने वाले, साहित्य अकादमी से सम्मानित निर्मल वर्मा का जन्म 1929 में हिमाचल प्रदेश के शिमला में हुआ। ये चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य विद्या संस्थान प्राग के निमंत्रण पर सन 1959 में वहाँ गए और चेक उपन्यासों तथा कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया।,निर्मल वर्मा जी का हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है इन्होंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' तथा 'हिंदुस्तान टाइम्स के लिए अनेक लेख व रिपोर्ताज लिखे जो उनके निबंध संग्रहों में संकलित है। इनकी भाषा-शैली में एक ऐसी अनोखी कसावट है,जो विचार - सूत्र की गहनता को विविध उद्धरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है |

प्रमुख कृतियाँ :-

निबंध :- शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए, शताब्दियों के ढलते वर्षों में।

कहानी संग्रह :- परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला, बीच बहस में, सूखा, लंदन की एक रात, कुत्ते की मौत

उपन्यास :- वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य, रात का रिपोर्टर

यात्रा- वृतान्त :- हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी, धुंध से उठती धुन |

रिपोर्ताज:- प्राग: एक स्वप्न

नोट: 1. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा को 'परिंदे' कहानी के आधार पर नयी कहानी आंदोलन का प्रवर्तक माना है।

2. इनको 'कव्वे और काला पानी' कहानी संग्रह के लिए 1985 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

3. इनके 'रात का रिपोर्टर' उपन्यास पर एक सीरियल (धारावाहिक) तैयार किया जा चुका है।

4. इनको सम्पूर्ण साहित्य में योगदान के लिए 1999 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

VISION 100 NEEMKATHANA

ममता कालिया

हिंदी के नयी कहानी आंदोलन में ममता कालिया का विशेष योगदान माना जाता है इनका जन्म सन् 1940 में उत्तरपदेश के मथुरा में हुआ था | इनके पति रवीन्द्र कालिया भी उच्च कोटि के साहित्यकार है। ममता कालिया शब्दों की पारखी मानी जाती है | इनका भाषा ज्ञान अत्यंत उच्च कोटि का है | ये साधारण शब्दों में भी अपने प्रयोग से जादुई प्रभाव उत्पन्न कर देती है। विषय के अनुरूप सहज भावाभिव्यक्ति इनकी विशेषता है। इन्होंने अपने साहित्य में विवरणात्मक व वर्णनात्मक शैलियों का प्रयोग किया है।

प्रमुख कृतियाँ :-

उपन्यास ;- बेघर,नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़
कहानी :- पच्चीस साल की लड़की, थियेटर रोड के कौवे, छुटकारा, मुखौटा, सीट नम्बर 6, एक अदद औरत |
नोट :- 1. ममता कालिया जी सन् 2003 से 2006 तक भारतीय भाषा परिषद (कलकत्ता) के निर्देशक पद पर रही है
2.इनको कथा साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से सन् 2004 में 'साहित्य भूषण सम्मान' मिला।
3. इनको उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 1989 में 'कहानी सम्मान' मिला |
4. इनको संपूर्ण साहित्य पर 'अभिनव भारतीय संस्था' कोलकाता ने रचना पुरस्कार से सम्मानित किया।
5.इनके बारह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है जो संपूर्ण कहानियाँ नाम से दो खण्डों प्रकाशित है।

केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई 1934 को बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ I केदारनाथ मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि है | अपनी कविताओं में उन्होंने बिंब-विधान पर बल दिया है। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आधुनिक हिंदी कविता में बिंब-विधान विषय पर P.H.D की उपाधि प्राप्त की | इन्होंने साखी, सबद, कविता दशक नामक पत्र-संपादन का किया I
प्रमुख रचनाएँ :-
काव्य-संग्रह :-यहा से देखो, अभी बिल्कुल अभी, अकाल में सारस, जमीन पक रही है, बाघ, उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ
आलोचना :- आधुनिक हिन्दी कविता में बिंब-विधान का विकास, कल्पना और छायावाद
निबन्ध :- मेरे स्नेह के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत
सम्मान :- 1.1989 में अकाल में सारस कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार 2.1994 में मध्यप्रदेश का मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान 3. कुमारन आशान पुरस्कार 4. व्यास सम्मान 5.दयावती मोदी पुरुस्कार
नोट :- 1. हाल ही में इनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह प्रतिनिधि कविताएँ नाम से प्रकाशित हुआ |
2. इनके द्वारा संपादित ताना-बाना नाम से विविध भारतीय भाषाओं का हिन्दी में अनुदित काव्य-संग्रह हाल ही में प्रकाशित हुआ |
3. इनकी दिशा नामक कविता बाल-मनोविज्ञान से संबंधित है।
4. बनारस कविता में एक प्राचीन शहर बनारस के सांस्कृतिक वैभव के साथ-साथ ठेठ बनारसीपन पर भी प्रकाश डाला गया है |
रघुवीर सहाय
नई कविता के कवि व दूसरे सप्तक के कवि रघुवीर सहाय का जन्म लखनऊ (उत्तरप्रदेश) 1929 में हुआ रघुवीर सहाय पेशे से पत्रकार थे। उन्होंने अनेक पत्रिकाओं का संपादन किया। प्रतीक पत्रिका के सहायक संपादक के रूप में पत्रकारिता की शरुआत की | फिर ये आकाशवाणी के समाचार विभाग में भी रहे |
सम्पादन :- प्रतीक, दिनमान, कल्पना, नवभारत टाइम्स, नव जीवन (हैदराबाद)
प्रमुख कृतियाँ :-

VISION 100 NEEMKATHANA

काव्य संग्रह :- सीढ़ीयों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो हँसों जल्दी हंसो, लोग भूल गए है, एक समय था, कुछ पत्ते कुछ चिट्ठीयां |

निबंध :- दिल्ली मेरा परदेश, लिखने के कारण, वे और नहीं होंगे जो मारे जायेंगे, उबे हुए सुखी |

कहानी :-रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे है।

नोट :- 1. इनको 'लोग भूल गए है' काव्य संग्रह पर 1984 में साहित्य अकादमी पुरुस्कार मिला ।

2.इनका पहला काव्य संग्रह सीढ़ियों पर धूप में 1954 में प्रकाशित हुआ | इसमें मध्यवर्गीय समस्याओं का चित्रण है |

3. इनके काव्य संग्रह में आत्मपरक अनुभवों की जगह जग-जीवन के अनुभवों की रचनात्मक अभिव्यक्ति अधिक है |

4. इनकी समस्त रचनाएँ रघुवीर सहाय रचनावली' के नाम से छह खंडो में प्रकाशित हो चुकी है।

भीष्म साहनी

भीष्म साहनी का जन्म रावलपिण्डी (अब पाकिस्तान) में 1915 में हुआ। देश विभाजन से पूर्व इन्होंने व्यापार के साथ-साथ मानद अध्यापन का कार्य किया। विभाजन के बाद पत्रकारिता, इप्टा नामक नाटक मंडली में काम किया | ये लगभग गृह विभाग मास्को में अनुवादक के पद पर कार्यरत रहे | इन्होंने लगभग ढाई वर्षों तक नयी कहानियां का कुशल सम्पादन किया | प्रगतिशील लेखक संघ तथा अफ्रो- एशियाई लेखक संघ से भी संबंध रहे हैं। इन्होंने हिन्दी में पंजाबी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया । इन्होंने वर्णनात्मक व संस्मरणात्मक शैलियों का भी प्रयोग किया है।

प्रमुख कृतियाँ :-

कहानी संग्रह :- भाग्य रेखा, पहला पाठ, पटरियाँ, भटकती राख, शोभायात्रा, निशाचर, डायन

उपन्यास :- मैय्यादास की माड़ी, झरोखे, कड़िया, तमस, बसंती, नीलू नीलिमा निलोफर, कुंतो

नाटक :- माधवी, हानूश, कबीरा खड़ा बाजार में, मुआवजे

बालोपयोगी कहानियाँ :- गुलेल का खेल

नोट :- 1.इन्हें 'तमस' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ।

2. 'तमस' उपन्यास पर आधारित एक धारावाहिक प्रमाणित हो चुका है।

3. बसंती' उपन्यास भी दूरदर्शन धारावाहिक के रूप में प्रमाणित किया जा चुका है।

4. इन्हें दिल्ली का 'शलाका' सम्मान से भी सम्मानित किया।

VISION 100 NEEMKATHANA

मलिक मोहम्मद जायसी

भक्तिकालीन सूफी प्रेममार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मोहम्मद जायसी का जन्म 1492 में अमेठी (उत्तरप्रदेश) के जायस नामक गांव में हुआ था | जायस गाँव में जन्म होने के कारण कहा ही इन्हें जायसी जाता है। ये अपने समय के सिद्ध और पहुंचे हुए फकीर माने जाते थे । इन्होंने सैयद अशरफ और शेख बुरहान का अपने गुरुओं के रूप में उल्लेख किया है | जायसी ने अपनी काव्यरचना में ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया है तथा अपनी काव्य रचना के लिए दोहा-चौपाई शैली अपनाई है। इनके द्वारा प्रयुक्त उपमा, रुपक, लोकोक्तियाँ और मुहावरे पर लोक-संस्कृति का प्रभाव है।

प्रमुख कृतियाँ :- पद्मावत, आखिरी कलाम, अखरावट,चम्पावत,चित्रावत,नैनावत, मटकावत

नोट :- 1. जायसी का पद्मावत काव्य प्रेममार्गी काव्यधारा का श्रेष्ठतम महाकाव्य है।

2. इस काव्य ग्रंथ में चितौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहल की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा है।

3. अखरावट ग्रंथ की रचना बारहखड़ी प्रणाली पर की गई है।

4. आखिरी कलाम रचना में सूफी सिद्धांतों का विवेचन व कयामत का वर्णन किया है।

असगर वजाहत

साठोत्तर पीढ़ी के बाद के महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं नाटककार असगर वजाहत का जन्म उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में सन् 1946 में हुआ | उनकी प्रारंभिक शिक्षा फतेहपुर में हुई | तथा उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर की पढ़ाई अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से की। इन्होंने सन् 1955-56 से लेखन कार्य की शुरुआत की | प्रारम्भ में उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया, बाद में वे दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे ।वजाहत जी ने कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, फिल्मों और धारावाहिकों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया | इनकी भाषा में में गांभीर्य, सबल भावाभिव्यक्ति एवं व्यंग्यात्मक है और उसमें मुहावरों तथा तद्भव शब्दों के प्रयोग से सहजता एवं सादगी आ जाती है |

प्रमुख कृतियाँ :-

कहानी-संग्रह :- दिल्ली पहुँचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ, आधी बानी, मैं हिंदू हूँ

नाटक :- फिरंगी लौट आए, वीरगति,समिधा, अकी, जिस लाहौर नई देख्या, इन्ना की आवाज

नुक्कड़ नाटक :- सबसे सस्ता गोश्त

उपन्यास :- रात में जागने वाले, पहर दोपहर तथा सात आसमान, कैसी आगि लगाई

नोट :- 1.इन्होने प्रसिद्ध धारावाहिक बूंद-बूंद का पटकथा लेखन कार्य किया।

2.इनका पहला नाटक <u>फिरंगी लौटा आए है</u> जो सन 1957 की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

3. इनको सन 2014 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा 2016 में हिन्दी अकादमी का शलाका सम्मान मिला।

4. इन्होंने 'गजल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया।

VISION 100 NEEMKATHANA

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

Senior Secondary Examination, 2024

नमूना प्रश्न-पत्र Model Paper

विषय - हिन्दी साहित्य

Sub: Hindi Literature

समय: 03 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड –अ

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए | (12)

1 .रामचन्द्र शुक्ल जी की मित्रमण्डली का नाम उर्दू-भाषी लोगों ने रख दिया था ? (1)

(अ) सन्देश मण्डली (ब) संदेह मंडली (स) निस्संदेह मंडली (द) भारतेन्दु मंडली

2. मिस्टर जॉन कौन थे ? (1)

(अ) रावलपिंडी के जाने माने बैरिस्टर (ब) गांधीजी के सलाहकार
(स) गाँधी जी के निजी सचिव (द) भीष्म साहनी के मित्र

3. बिरह में नागमती के शरीर की कांति कैसी हो गई है (1)

(अ) चन्द्रमा के समान सफेद (ब) दोपहर के समान गरम
(स) पलाश के फूलों के समान (द) पीले पत्तों के समान

4. यह दीप अकेला' कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है (1)

(अ) बाहरा अहेरी (ब) हरी घास पर क्षण भर (स) शेखर: एक जीवनी (द) आँगन के पार द्वार

5. सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा इसका क्या कारण था ? (1)

अ. झोपड़ी की राख को साफ करना चाहता था ब. राख से खेलना चाहता था
स. जीवन मर्म समझने के कारण उसका दुःख समाप्त हो गया था द. इनमें से कोई नहीं

6. सबसे खतरनाक गोंहुअन साँप को बिसनाथ के गाँव में क्या कहा जाता था ? (1)

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. डोंडहा ब. धामिन स. फेंटारा द. भटिहा

7. 'हाथीपाला नाम क्यों पड़ा ? (1)

अ. वहाँ हाथी वाले जाते थे ब. वहाँ कभी नदी पार करने के लिए हाथी पर बैठकर जाना पड़ता था

स. वहाँ पर हाथियों की पूजा की जाती थी द. उपर्युक्त सभी

8. लेखक के अनुसार कौन-सी सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता बनकर रह गई थी ? (1)

अ. वैदिक सभ्यता ब. ऐतिहासिक सभ्यता स. भौगोलिक सभ्यता द. औधोगिक सभ्यता

9. कविता के लिए पन्त जी ने किस प्रकार की भाषा को आवश्यक माना है ? (1)

अ. वर्णनात्मक भाषा ब. प्रतीकात्मक भाषा स. लाक्षणिक भाषा द. चित्रात्मक भाषा

10. एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन कहलाता है ? (1)

अ. फीचर लेखन ब. स्तम्भ लेखन स. आलेख लेखन द. रिपोर्ट लेखन

11. जिस पृष्ठ पर स्तम्भ, विचारपरक लेख,टिप्पणियाँ आदि प्रकाशित होते हैं उसे कहते हैं ? (1)

अ. पेज-थ्री ब. आमुख पृष्ठ स. ऑप एड पृष्ठ द. संपादकीय पृष्ठ

12. "दस लाख संगीने मेरे भीतर वह खौफ पैदा नहीं करती जो तीन छोटे अरतबार।" यह कथन किसका है (1)

अ. अरस्तु ब. चाणक्य स. नेपोलियन द. आइनस्टाइन

उत्तरमाला 1. स 2. अ 3. द 4. अ 5. स 6. स 7. ब 8. द 9. द 10. अ 11. द 12. स

(2) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित उत्तर से कीजिए | (6)

1. वाक्य रचना पढ़ते ही तुरंत अर्थ समझ में आ जाए वहाँ ....गुण होता है | (1)

2. भाषा तथा व्याकरण के नियमों के विरुद्ध अशुद्ध शब्दों के प्रयोग करने से ....दोष होता है | (1)

3. द्रुतविलम्बित व वंशस्थ छंद में गणों की संख्या .... होती है | (1)

4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छंद को ....के लिए आवश्यक माना है | (1)

5. काव्य में जहाँ कारण के बिना कार्य की उत्पति की विशिष्ट कल्पना की जाती है | वहाँ ....अलंकार होता है |(1)

6. जहाँ काव्य के शब्दों में चमत्कार पाया जाता है वहाँ ....होता है | (1)

उत्तर :- 1. प्रसाद गुण 2. च्युतसंस्कृति दोष 3. बारह 4. नाद-सौदर्य 5. विभावना 6. शब्दालंकार

(3) अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- (6)

भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे। उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं। उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्ध से तभी निर्मित होनी संभव है, जब सब लोगों के संकल्प, निश्चय, अभिप्राय समान हों; सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जाग्रत हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल कार्य करें। चरित्र-निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की, वह आज भी अपने मूल रूप में

VISION 100 NEEMKATHANA

मानव के लिए कल्याणकारी है। प्राय: यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है। जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, उसका चरित्र ऊँचा होता है।

सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही संभव है। जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है। चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है। इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत व्यवहार करने लगता है। आहार, निद्रा, भय आदि की वृत्ति सभी जीवों में विद्यमान रहती है, यह आचार अर्थात चरित्र की ही विशेषता है, जो मनुष्य को पशु से अलग कर, उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है। सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जाग्रत होती है, जब वह मानव प्राणियों में ही नहीं, वरन सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा के दर्शन करता है।

ANA

1. हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक क्यों थे? (1)
2. चरित्र मानव-जीवन की अमूल्य निधि कैसे है? स्पष्ट कीजिए। (1)
3. धर्मनीतिकारों ने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के संबंध में क्या कहा? (1)
4. प्रस्तुत गद्यांश में किन पर नियंत्रण रखने की बात कही गई है और क्यों? (1)
5. कैसा समाज सभ्य और उन्नत कहा जाता है? (1)
6. प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

उत्तर – (**1) हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक थे। इसका कारण यह था कि नैतिक मूल्यों का पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं।**

(2) चरित्र मानव-जीवन की अमूल्य निधि है, क्योंकि इसके द्वारा ही मनुष्य व पशु में अंतर होता है। चरित्र सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

(3) धर्मनीतिकारों ने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के संबंध में यह कहा कि परिष्कृत जीवन-प्रणाली मनुष्य के विवेक-बुद्ध से ही निर्मित हो सकती है। हालाँकि यह तभी संभव है, जब संपूर्ण मानव-जाति के संकल्प और उद्देश्य समान हों। सबके अंतर्मन में भव्य भावना जाग्रत हो और सभी लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल कार्य करें।

(4) इस गद्यांश में वाणी, बाहु तथा उदर पर नियंत्रण रखने की बात कही गई है, क्योंकि इन पर नियंत्रण न होने से चारित्रिक व नैतिक पतन हो जाता है।

(5) यह सर्वमान्य तथ्य है कि सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही संभव है। आदर्श चरित्र के अभाव में सभ्यता का विकास असंभव है। अत: जिस समाज में चरित्रवान लोगों की बहुलता होती है, उसी समाज को सभ्य और उन्नत कहा जाता है।

(6) शीर्षक- चरित्र-निर्माण।

(4) अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- (6)

अर्जुन देखो, किस तरह कर्ण, सारी सेना पर टूट रहा,
किस तरह पाण्डवों का पौरुष होकर अशंक वह लूट रहा।
देखो, जिस तरफ, उधर उसके ही बाण दिखायी पड़ते हैं,
बस, जिधर सुनो, केवल उसकी हुँकार सुनायी पड़ते हैं।
कैसी करालता ! क्या लाघव! कैसा पौरुष! कैसा प्रहार।
किस गौरव से यह वीर द्विरद कर रही समर-वन में विहार।
व्यूहों पर व्यूह फटे जाते, संग्राम उजड़ता जाता है,
ऐसी तो नहीं कमलवन में भी कुजर धूम मचाता है।
इस पुरुष-सिंह का समर देख मेरे तो हुए निहाल नयन,
कुछ बुरा न मानो, कहता हूँ मैं आज एक चिर गूढ़ वचन।
कर्ण के साथ तेरा बल भी मैं खूब जानता आया हूँ.
मन ही मन तुझसे बड़ा वीर पर, इसे मानता आया हूँ।
औ' देख चरम वीरता आज तो यही सोचता हूँ मन में।
है भी जो कोई जीत सके, इस अतुल धनुर्धर को रण में ?

(1) श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्ण की किस बात के लिए प्रशंसा की है? (1)
(2) कर्ण को कवि ने 'समर-वन' तथा 'कमल-वन' में किसके समान बताया है? (1)
(3) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कौन-सा गूढ़ वचन बताया? (1)
(4) कर्ण के युद्ध कौशल को देखकर कृष्ण उसके बारे में क्या सोच रहे थे? (1)
(5) प्रस्तुत पद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक लिखिए ? (1)
(6) प्रस्तुत पद्यांश में किनके मध्य वार्तलाप चल रहा है ? (1)

उत्तर:
(1) श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्ण की युद्धभूमि में प्रदर्शित वीरता के लिए प्रशंसा की है कि वह किस तरह पाण्डवों की सेना पर टूट पड़ा था और उनके सारे पुरुषार्थ को चुनौती दे रहा था।
(2) कर्ण को 'युद्ध रूपी वन में' में विहार करते 'हाथी' तथा 'कमल-वन' में धूम मचाते 'कुंजर' के समान बताया गया है।
(3) श्रीकृष्ण ने अर्जुन से यह गूढ़ वचन बताया कि वह अर्जुन तथा कर्ण दोनों की वीरता को जानते हैं। वह दोनों के बल से परिचित हैं परन्तु मन ही मन वह कर्ण को अर्जुन से भी बड़ा वीर मानते रहे हैं।
(4) कृष्ण सोच रहे थे कि संसार में क्या कोई और ऐसा वीर है जो कर्ण की बराबरी कर सके? उसे युद्ध में पराजित कर सके ?
(5) कर्ण की वीरता
(6) श्री कृष्ण व अर्जुन के मध्य

खण्ड- ब

Section- B

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिये |
(24)

5. कार्नेलिया का गीत' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत भारत की विशेषताओं का वर्णन कीजिए (2)

उत्तर- इस कविता में जयशंकर प्रसाद द्वारा भारत की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख है- 1.भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अदभुत हैं | 2.भारत की संस्कृति महान है। 3.यहाँ के लोग दया, करुणा और सहानुभूति से भरे हैं। 4.यहाँ एक अपरिचित व्यक्ति को भी प्यार मिलता है |

(6) 'तोड़ो' कविता का प्रतिपाद्य या मूल भाव स्पष्ट कीजिए। (2)

उत्तर- 'तोड़ो' कविता उद्बोधनपरक है। इसका प्रतिपाद्य यह है कि बंजर एवं ऊबड़-खाबड़ जमीन को उपजाऊ खेत में बदलने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं, उसी प्रकार मन में व्याप्त ऊब, खोज और बाधक तत्त्वों को तोड़कर उसे नवीन सृजन के योग्य बनाना जरूरी है। नव-सृजन हेतु प्रकृति के साथ मन को भी सृजनशील बनाने का प्रयास करना चाहिए ।

(7) कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है? (2)

उत्तर- कुटज के जीवन से हमें निम्नलिखित सीख मिलती है — (1) सुख-दुःख में समान रहने की, (2) अपराजेय बने रहने की, (3) जिजीविषा रखने की, (4) सहिष्णुता एवं समत्व भाव रखने की, (5) निर्भय रहने की तथा (6) दूसरों की खुशामद न करने की शिक्षा मिलती है। इससे अदम्य जीवनी-शक्ति के सहारे जीने की कला सीखने को मिलती है।

(8) प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अन्तर है? (2)

उत्तर- प्रकृति के कारण होने वाला विस्थापन औद्योगीकरण के कारण होने वाले विस्थापन से अलग प्रकार का है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग सुरक्षा की दृष्टि से अपना घर-बार छोड़कर कुछ समय के लिए चले जाते हैं और आफ़त टलते ही दोबारा अपने परिवेश में, अपने घरों में लौट आते हैं; किन्तु औद्योगीकरण के कारण विस्थापित किए गए लोग फिर कभी अपने घर नहीं लौट पाते हैं ।

(9) अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं? (2)

उत्तर-लेखक ने इसके निम्नलिखित कारण बताये हैं-

(1) औद्योगिक विकास की नयी सभ्यता ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है, जिससे मालवा भी नहीं बच पाया है।

(2) वातावरण को गरम करने वाली कार्बन डाइऑक्साइड गैसों ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है और धरती के वातावरण के गरम होने से यह सब गड़बड़ी हो रही है।

(3) अब मालवा के लोग ही खाऊ उजाड़ सभ्यता को अपनाकर गहन गंभीर और पग-पग नीर की डग-डग रोटी देने वाली धरती को उजाड़ने में लगे हुए है।

VISION 100 NEEMKATHANA

(10) 'बिस्कोहर की माटी' में लेखक ने किन कारणों से अपनी माँ की तुलना वत्तख से की है ? इस पर प्रकाश डालिए (2)

उत्तर-लेखक बिसनाथ ने अपनी माँ की तुलना बत्तख से निम्नांकित आधारों पर की है
। बतख सुरक्षित स्थान पर अंडे देती है तथा उनको सेती है। वह पंख फुलाकर उन्हें सबकी दृष्टि से बचाती है। वह हौर इत्यादि से अपने अंडों को बचाती है। बिसनाथ की माँ ने भी अपने बच्चे (बिसनाय) को जन्म दिया है, दूध पिलाया है तथा उसको पाला-पोसा है।
2. बत्तख अपने अंडों को दूसरों से बचाती है। बिसनाथ की माँ' भी उसकी सुरक्षा का ध्यान रखती है।
3. बिसनाथ की माँ अपने पुत्र के प्रति गहरा ममता-भाव रखती है। बत्तख को भी अपने अंडों से बेहद ममता है। दोनों ममता का यह भाव स्वाभाविक तथा प्रकृति प्रदत्त गुण है।
4. बत्तख अपनी सख्त चोंच का प्रयोग अंडों के ऊपर करने में बहुत सावधान रहती है। विसनाथ की माँ भी अपने बेटे के साथ कोमलता तथा ममता का व्यवहार करती है ।

(11) नाटक में स्वीकार - अस्वीकार की अवधारणा से क्या तात्पर्य है ? (2)
नाटक में स्वीकार के स्थान पर अस्वीकार का अधिक महत्त्व है। नाटक में अस्वीकार तत्त्व के आ जाने से नाटक सशक्त हो जाता है। कोई भी चरित्र जब आपस में मिलते है तो विचारों के आदान-प्रदान करने में टकराहट पैदा होना स्वभाविक है। रंगमंच में कभी भी यथास्थिति को स्वीकार नहीं किया जाता | वर्तमान स्थिति के प्रति असन्तुष्टि, अस्वीकार, प्रतिरोध जैसे नकारात्मक तत्वों के समावेश से नाटक अधिक रोचक व आकर्षक बन जाता है।
यहीं कारण है कि हमारे नाटककारों को राम की अपेक्षा रावण और प्रहलाद की अपेक्षा हरिन्यकशिपु का चरित्र अधिक आकर्षित करता है।

(12) एक सफल साक्षात्कार के लिए क्या आवश्यक है ? (2)
1. अच्छे साक्षात्कार के लिए साहस, सहनशीलता, संवेदनशीलता, धैर्य, व कुटनीति जैसे गुण होने चाहिए।
2. साक्षात्कार के विषय तथा उस व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए।
3. साक्षात्कार में वे ही सवाल पूछे जाने चाहिए जो एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।
4. विषय के अनुरूप प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नावली तैयार कर लेनी चाहिए |
5. साक्षात्कार के तथ्य निष्पक्ष रूप से व समग्रता से प्रस्तुत करने चाहिए।
6. साक्षात्कार के सवाल-जवाब क्रमिक रूप से लिखने चाहिए ताकि वह सुन्दर आलेख बन सके ।
7. साक्षात्कार को रिकॉर्ड कर सकते हैं अगर ऐसी सुविधा न हो तो नोट्स लिख सकते हैं।

(13) सम्पादक के नाम-पत्र से आप क्या समझते है ? बताइए | (2)
उत्तर - सभी समाचार पत्रों में सम्पादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं के आरम्भ में सम्पादक के नाम पत्र का कॉलम होता है। इस कॉलम को समाचार पत्र का सेफ्टी बल्ब कहा जाता है।
इसमें पाठक निजी स्तर से लेकर सार्वजनिक समस्याओं तक या विभिन्न मुद्दों को लेकर अपनी राय व्यक्त करते है तथा अखवार के माध्यम से समस्या का समाधान कराया जाता जाता है | इस शीर्षक के अंतर्गत

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रकाशित सूचना के लिए समाचार पत्र या सम्पादक उत्तरदायी नहीं होते है अपितु प्रेषित करने वाला जिम्मेदार होता है | अत: हम कह सकते है सम्पादक के नाम पत्र जनमत का प्रतिनिधित्त्व करते है

(14) अन्योक्ति और समासोक्ति में अंतर में अंतर स्पष्ट कीजिए (2)

1.अन्योक्ति में अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का बोध करवाया जाता है जबकि समासोक्ति में प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का बोध करवाया जाताहै
2 . अन्योक्ति में <u>अप्रस्तुत अप्रधान</u> होता है जबकि समासोक्ति में अप्रस्तुत <u>प्रधान और व्यंग्य</u> होता है |
3 .अन्योक्ति में एक के वर्णन से अन्य की उक्ति होती है मगर समासोक्ति में प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों का कथन संक्षेप में एक साथ होता है |
4. अन्योक्ति में अप्रस्तुत <u>अभिधेय</u> होता है तथा समासोक्ति में <u>व्यंग्य</u> होता है |

(15) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय दीजिये | (2)

उत्तर- छायावादी साहित्य के रूद्र व आधुनिक युग के सबसे बड़े युगांतकारी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' का जन्म 1899 में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक गाँव में हुआ। ये मूलत: उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़कोला गाँव के निवासी थे। इनके बचपन का नाम सूर्यकुमार था | इनकी पत्नी का नाम मनोहरी देवी था जिनकी प्रेरणा से निराला की साहित्य व संगीत में रूचि पैदा हुई। ये मुक्त छन्द के प्रवर्तक माने जाते है | इनके द्वारा 1916 में लिखी 'जुही की कली कविता मुक्त छंद में लिखी गई थी जो बहुत ही प्रसिद्ध रही है। इनकी विचारधारा पर स्वामी विवेकानंद व रामकृष्य परमहंस का गहरा प्रभाव पड़ा। इनका व्यक्तित्व निराला था इसी कारण साहित्य जगत मे इनका निराला' नाम पड़ा।
इन्होंने समन्वय, सुधा व मतवाला आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।
प्रमुख रचनाएँ :-
काव्य कृतियाँ :- अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अणिमा, अर्चना, राम की शक्ति पूजा, आराधना, सरोजस्मृति, गीतगूंज, बेला, नये पत्ते, भिक्षुक |
निबन्ध :- प्रबंध पूर्णिमा, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक
उपन्यास :- अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती |
नाटक :- पंचवटी-प्रसंग
कहानी :- लिली, चतुरी चमार, सखी
नोट :- इनका सम्पूर्ण साहित्य निराला रचनावली के नाम 8 खण्डों में प्रकाशित हो चुका है |

(16) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचि लिखिए | (2)

उत्तर - भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास, दर्शन के आख्याता प्रसिद्ध निबंधकार आलोचक, इतिहासकार, उपन्यासकार एवं सफल अध्यापक रहे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे के छपरा नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी तथा इनकी माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था। इनके बचपन का नाम बैजनाथ था जन्म के समय इनके पिता को किसी मुकदमे में 1000 रुपये की प्राप्ति होने पर इनके पिता ने इनका नाम हजारी प्रसाद रखा। इन्होंने

VISION 100 NEEMKATHANA

अपनी रचनाओं में सरल, परिष्कृत भाषा को अपनाया तथा अपने ललित निबंधों में आत्मपरक शैली का प्रयोग किया।

प्रमुख रचनाएँ –

निबंध :- अशोक के फुल, विचार व वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता, कुटज विचार-प्रवाह

उपन्यास :-बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा, चारुचन्द्रलेख

आलोचना :- हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य उद्भव और विकास

सम्पादक :- नाथ-सिद्धों की बनिया, संदेश रासक

नोट:

1.इनको आलोक पर्व रचना के लिए 1973 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

2. इन्हें भारत सरकार ने 1957 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया |

3. द्विवेदी जी साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने के पक्षपाती थे |

खण्ड – स

Section – c

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

(17) 'तोड़ो' कविता में छिपी व्यथा को कवि ने किसे माध्यम बनाकर प्रस्तुत किया है ? स्पष्ट कीजिए । (3)

अथवा

'गोकुल तेजि मधुपुर बसरे कन अपजस लेल' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- कवि ने आधुनिक मानव मन की ऊब, खीझ, उदासीनता, अकेलापन एवं भावनाशून्य हृदय व्यथा को पृथ्वी के भीतर छिपे चट्टान, पत्थर, बंजर भूमि, ऊसर भूमि के माध्यम से व्यक्त किया है। कवि कहता है कि जिस प्रकार ऊसर और बंजर बन चुकी भूमि पर मेहनत और कर्म के माध्यम से खेत बन सकता है, हरियाली आ सकती है, - जिससे खुशहाली फैल सकती है। उसी प्रकार मन में बसी ऊब, खीझ को नये-नये विचारों के अंकुरण से खत्म किया जा सकता है। नये विचार व्यक्ति को नयी सोच व नयी राह की ओर अग्रसित करती है। इसके द्वारा मानव स्वयं के भीतर बंजर हो चुके मन को सृजनात्मक एवं उन्नति के मार्ग पर ला सकता है। जब बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है तो विकृत मन में भी अच्छे विचारों द्वारा उत्साह का संचार किया जा सकता है।

अथवा

उत्तर-कवि विद्यापति ने इस पद में सावन मास में विरहिणी नायिका की विरह दशा को व्यक्त किया है। नायिका चिन्तित है कि कौन उसके पत्र (सन्देश) को लेकर उसके प्रियतम के पास जाएगा। सावन का महीना आ गया है। इस माह राधा विरह का असह्य दुःख सहन नहीं कर सकती है इसलिए वह कहती है कि मेरे इस कठोर दुःख को संसार में कौन समझ सकता है? अर्थात् मैं ही जानती हूँ कि यह विरह मुझे कितना कष्ट दे रहा है। मेरे मन को श्रीकृष्ण अपने साथ लेकर चले गये। अब उनका ध्यान मेरी तरफ नहीं है इसीलिए श्रीकृष्ण गोकुल को छोड़कर मथुरा बस गए और अब लौटने का नाम नहीं ले रहे हैं। इस प्रकार अपने स्वार्थी स्वभाव के कारण उन्होंने कितना अपयश ले लिया है। चारों तरफ उनके इस व्यवहार से बदनामी हो रही है कि वे मुझे इस

VISION 100 NEEMKATHANA

स्थिति में छोड़कर चले गए और लौटकर नहीं आ रहे हैं |इस तरह राधा अपनी विरही दशा का कारण कृष्ण को मानते हुए उन्हें अपयश कमाने का उलाहना दे रही है |

(18) प्रेमघन की छाया-स्मृति संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है

अथवा

'शेर' लघु कथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। (3)

उत्तर- यह संस्मरण भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' के बारे में है जिसमें उनके व्यक्तित्व के निम्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है

1.हिन्दुस्तानी रईस :- उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' एक अच्छे-खासे हिन्दुस्तानी रईस थे और उनके स्वभावानी वे सभी विशेषताएँ थीं जो रईसों में होती हैं।

2. भारतेंदु मंडल के कवि :- प्रेमघन, भारतेंदु मंडल के कवि थे और भारतेंदु जी के मित्रों में उनकी गिनती थी। वे मिर्जापुर में रहते थे और उनके घर पर साहित्यिक गोष्ठियाँ आदि होती रहती थीं।

3. अपूर्व वचन भंगिमा :- प्रेमघन जी की बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम भिन्न था। जो बातें उनके मुख से निकलती थीं उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

4. मनोरंजक स्वभाव :- प्रेमघन जी का स्वभाव विनोदशील था, वे विनोदी प्रवृत्ति के थे और प्रायः लोगों को (मूर्ख) बनाया करते थे। लोग भी उन्हें (मूर्ख) बनाने के प्रयास में या उन पर मनोरंजक टिप्पणियाँ करने की जुगत में रहते थे।

अथवा

उत्तर-शेर एक प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक लघुकथा है। शेर समाज में व्याप्त उस घोर व्यवस्था का प्रतीक है जिसके पेट में सभी किसी न किसी प्रलोभन के चलते चुपचाप निर्विवाद समाते चले जा रहे हैं। ऊपर से देखने पर शेर की छवि न्यायप्रिय, अहिंसावादी, समर्थनवादी एवं सह-अस्तित्व कायम रखने वाली प्रतीत होती है। लेकिन जैसे हो लेखक का उसके मुँह में प्रवेश न करने का इरादा तथा विरोध की प्रवृत्ति का पता चलता है, शेर अपनी असलियत दिखाता हुआ दहाड़ता है और झपट्टा मारकर लेखक को निगलने की कोशिश करता है। कथा में व्यंग्यात्मक पक्ष यही है कि सत्ता तभी तक खामोश व समर्थक प्रतीत होती है जब तक उसकी आज्ञा का पालन होता रहे। जैसे ही विरोध के स्वर उठते हैं, वह हिंसक हो जाती है। वह खूंखार होकर विरोधी-स्वर को कुचलने का प्रयास करती है। लेखक ने इस कथा के माध्यम से सुविधाभोगियों, छद्म क्रान्तिकारियों एवं ढोंगियों पर प्रहार किया है ।

(19) 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

अथवा (शब्द सीमा 80 से100 शब्द)

'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में लेखक ने ग्रामीण प्राकृतिक सुषमा और सम्पदा का सुंदर वर्णन किया है। पठित पाठ के आधार पर इसे अपने शब्दों में लिखिए ।

(4)

VISION 100 NEEMKATHANA

उत्तर- इस कथन के आधार पर सूरदास के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ व्यंजित होती हैं-
(1) बदले की भावना की अपेक्षा पुनर्निर्माण पर आस्था-बालक मिठुआ के इस प्रश्न पर कि 'कोई सौ लाख बार आग लगा दे तो हम क्या करेंगे?' के उत्तर में सूरदास कहता है कि 'हम सौ लाख बार ही उसे फिर बनायेंगे।' यह कथन उसके बदले के भाव से मुक्त पुनर्निर्माण में विश्वास को व्यक्त करता है। वह जो नष्ट हो गया है, उसे भूलकर नये सिरे से जीना चाहता है।
(2) कर्मठ व्यक्तित्व-सूरदास अंधा होते हुए भी अपने कर्म के आधार पर विपत्तियों का सामना करने का साहस रखता है।
(3) सहनशील-सब कुछ जल जाने के बाद भी वह जीवन को एक खेल मानते हुए सहनशील बना रहता है।
(4) संकल्प का धनी-वह संकल्प का धनी है। इसीलिए वह 'सौ लाख बार बनाने' की बात को अति सहजता से कह देता है।
(5) आशावादी-सूरदास 'सौ लाख बार बनाने की बात' बाल सुलभ ढंग से जिस सरलता से कहता है, वह सरलता व सहजता ही उसके आशावादी व्यक्तित्व को उजागर कर देती है ।

अथवा

उत्तर बिस्कोहर की माटी' विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया पाठ है। अभिव्यंजना की दृष्टि में यह अत्यन्त रोचक तथा पठनीय है। लेखक ने अपनी उम्र के अनेक पड़ाव पार करने के बाद अपने जीवन में माँ, गाँव तथा आसपास के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन इस पाठ में किया है। लेखक ने पाठकों को ग्रामीण जीवन-शैली, परिवेश, लोक कथाओं, लोकमान्यताओं तथा सुखों और असुविधाओं से परिचित कराने का भरपूर प्रयास किया है।गाँवों में शहरों के समान जीवन जीने की सुविधाएँ नहीं होतीं। वहाँ का जीवन अकृत्रिम होता है तथा प्रकृति पर अधिक निर्भर होता है। गाँव का वातावरण प्राकृतिक सौन्दर्य से भरापूरा होता है। प्रस्तुत कथा में लेखक ने अपने गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का तन्मयता से चित्रण किया है। वर्षा जब बाढ़ का संकट पैदा करती है तो गाँव में अनेक परेशानियाँ पैदा हो जाती है। विभिन्न फूलों और सब्जियों का वर्णन करके लेखक ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा को व्यक्त किया है। उसने विभिन्न साँपों एवं विषकीटों आदि के वर्णन से भयानक रस की भी सृष्टि की है। फूल, दवा का काम करते हैं यह बताकर प्रकट किया गया है कि ग्रामीण प्राकृतिक रूप से प्राप्त जड़ी-बूटियों को रोग के उपचार के लिए प्रयोग करने को प्राथमिकता देते हैं।विसनाथ जो स्वयं इस कथा के लेखक हैं, इस पूरी कथा के केन्द्र में स्थित हैं। बिस्कोहर गाँव बिसनाथ की दृष्टि से सबसे अच्छा गाँव है और बिस्कोहर की स्त्री ही संसार की सबसे सुन्दर स्त्री है। "बिसनाथ मान ही नहीं सकते कि विस्कोहर से अच्छा कोई गाँव हो सकता है और बिस्कोहर से ज्यादा सुन्दर कहीं की औरत हो सकती है।" इन केन्द्रीभूत तथा प्रमुख विषयों के अतिरिक्त गर्मी, वर्षा, शरद् में होने वाली दिक्कतों ने लेखक के मन पर जो प्रभाव डाला है उसका उल्लेख भी इस पाठ में स्वाभाविक रूप में हुआ है। लेखक ने अपने भोगे यथार्थ को प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया है।थोड़ा ध्यान देने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बिस्कोहर गाँव ही मूलतः प्रतिपाद्य है ।

खण्ड – द

Section – D

(20) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए | (5)

मैंने देखा

VISION 100 NEEMKATHANA

एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से;
रंग गई क्षणभर ढलते सूरज की आग से।
मुझ को दीख गया :
सूने विराट् के सम्मुख
हर आलोक-छुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से!

प्रसंग- यह काव्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित कविता 'मैंने देखा, एक बूँद' से लिया गया है। इस कविता में कवि ने समुद्र से अलग हुई बूँद की क्षणभंगुरता का वर्णन किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि मैंने एक बूंद को सागर की लहरों से अचानक ऊपर उठते हुए देखा है। जिस समय लहरों से वह ऊपर उठी, उस समय उस पर अस्त होते हुए सूर्य की लाल किरणें पड़ीं, तो वह बूंद भी लाल रंग की हो गई थी। इस अनुपम दृश्य को देखकर कवि को एक दार्शनिक तत्त्व का साक्षात्कार हो गया। उसने यह जान लिया कि एक छोटी बूँद का विशाल समुद्र से अलग दिखना नष्ट होने के बोध से मुक्ति है। यह क्षणभंग्रता बूँद को है, समुद्र की नहीं। वह अपनी सत्ता से, जिसे विधाता से प्रकाश मिला है, वह उस विराट् सत्ता के सम्मुख अपने नष्ट होने के दाग से मुक्ति पा जाता है। तात्पर्य है समुद्र की सत्ता परमात्मा के समान है और बूँद अलग अस्तित्व दिखाकर उसी में पुनः विलीन हो जाती है। जिस प्रकार प्रकाश में रंगकर बूंद सागर में अपने मूल में जा मिलती है, उसी प्रकार मनुष्य भी उस विराट् सत्ता के रंग से कुछ समय के लिए प्रकाशित होता है। अन्त में उसे भी अपनी नश्वरता से मुक्ति मिल जाती है और उसका जीवन सार्थक हो जाता है।

विशेष (1) प्रतीकों के माध्यम से क्षणभंगुरता एवं सामाजिक चेतना की व्यंजना की गई है। (ii) जीवन में क्षण के महत्त्व को प्रतिष्ठापित किया गया है। (iii) उस विराट् सत्ता के सामने अन्य सभी बूंद के समान हैं (iv) भाषा सरल, सहज एवं प्रभावी है।

अथवा

पूस जाड़ थरथर तन काँपा । सुरुज जड़ाइ लंक दिसि तापा ॥
बिरह बादि भा दारुन सीऊ। कैपि कैपि मरी लेहि हरि जीऊ ॥
कंत कहाँ हौं लागी हिवरै । पंथ अपार सूझ नहिं नियरें ॥
सौर सुपेती आवै जूड़ी । जानहुँ सेज हिवंचल बूढ़ी ॥
चकई निसि बिदुर दिन मिला । हाँ निसि बासर बिरह कोकिला ।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी । कैसें जिऔं बिछोही पंखी ॥
बिरह सचान भवै तन बाँड़ा । जीयत खाइ मुएँ नहि छाँड़ा ||
रकत बरा माँसू गरा, हाइ भए सब संख ।
धनि सारस होड़ ररि मुई, आइ समेटद्द पंख ॥

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य के 'नागमतो वियोग खण्ड' से
लिया गया है। इसमें 'बारहमासा' वर्णन के अन्तर्गत कवि ने पूस मास में नायिका को वियोग-दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या-कवि जायसी के वर्णनानुसार विरहिणी नागमती कहती है कि पूस के महीने में शीत की अधिकता के कारण शरीर बर-थर काँप रहा है। शीताधिक्य के कारण सूर्य भी डर कर लंका की दिशा अर्थात् दक्षिणायन में जाकर तपने लगा है। विरह की बाढ़ आ गई है तथा शीत अत्यधिक कठिन हो गया है। शीत से काँप-काँप कर में मरी जा रही है। नागमती कहती है कि हे प्रियतम। तुम कहाँ हो, आकर मेरे गले से लग जाओ। वह कहती है, प्रिय तक पहुंचने का रास्ता बहुत लम्बा है। वे कहीं निकट दिखाई ही नहीं देते। रजाई ओढ़ने पर भी जाड़ा लगता है। ऐसे लगता है मानो सेज बर्फ से ढकी हुई है। मेरी स्थिति तो चकवी से भी बदतर है। रात्रि को अपने प्रियतम से बिछुड़ी चकची दिन में उनसे मिल लेती है, लेकिन में तो विरह में रात-दिन कोयल की तरह पिय-पिय कूकती रहती है। रात में भी मखियों के अभाव में अकेली रहती हूँ। बिछुड़े हुए पंछी की भाँति में कैसे जीवित रह सकती हूँ। विरह तो बाज पक्षी बना हुआ है जो मेरे जीक्ति शरीर को खाए ही जा रहा है और यदि मैं मर गई तो भी वह मुझे नहीं छोड़ेगा। विरहिणी नागमती कहने लगी कि विरह-वेदना के कारण मेरे शरीर का समस्त रक्त बह गया है तथा मांस गल चुका है। सारी हड्डियाँ सूख कर शंख के समान लग रही हैं। यह विरहणी तो सारस पक्षी की तरह वियोग की पीड़ा में चोख-चीख मर गई है। अब तो प्रियतम आकर इस मृत सारस अर्थात् नायिका के पंखों को समेटेगा अर्थात् इकट्ठा करेगा।

विशेष (1) नागमती की विरह-वेदना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है। (4) प्रकृति का उद्दीपन रूप चित्रित हुआ है। वियोग श्रृंगार रस है। (ii) उत्प्रेक्षा, पर्यायोक्त, रूपक और व्यतिरेक अलंकार हैं। अवधी भाषा का माधुर्य एवं चौपाई-दोहा छन्द को
गति-पति उचित है

(21) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए | (5)

जन्मभर के साथी की चुनावट मट्टी के ढेलों पर छोड़ना कैसी बुद्धिमानी है! अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुने हुए मट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों-करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मट्टी और आग के ढेलों मंगल और शनैश्चर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है, यह में क्या कह सकता हूँ ? बकौल वात्स्यायन के, आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल के मोहर से। आँखों देखा बेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस की तेज पिण्ड से।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित पाठ 'सुमिरिनी के मनके' के तीसरे अंश 'बेले चुन लो' से लिया गया है। इस पाठ के लेखक प्रसिद्ध कहानीकार पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हैं।

VISION 100 NEEMKATHANA

प्रसंग :- इस अवतरण में लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि हमें अंधविश्वासों के आधार पर अपने जीवन-साथी का चयन नहीं करना चाहिए। यह बुद्धिमत्ता नहीं है कि हम आकाशीय पिण्डों या मिट्टी के ढेलों पर विश्वास करके अपने जीवन-साथी का चयन करें।

व्याख्या :- वैदिक काल में जगह-जगह की मिट्टी से बनाए ढेले कन्या के सामने रखे जाते थे और उनमें से एक बेला चुनने के लिए कहा जाता था। कन्या ने किस प्रकार का बेला चुना, इस आधार पर ही निर्धारित हो जाता था कि वह 'वर' के लिए उपयुक्त पत्नी होगी या नहीं और उसका भविष्य कैसा होगा ? पत्नी चुनने की इस विधि को लेखक असामयिक तथा अनुचित मानता है। आज हम इस प्रथा के आधार पर जीवन-साथी का चुनाव नहीं कर सकते क्योंकि यह चयन विधि बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है। अपनी आँखों से कन्या का रूप-गुण देखकर उसे जीवन साथी के रूप में चुनना ज्यादा उपयुक्त एवं बुद्धिमत्तापूर्ण है। आकाशीय पिण्डों (मंगल, शनैश्चर, बृहस्पति की चाल अर्थात् ज्योतिष) या बेलों के आधार पर जीवन साथी का चुनाव करना अवैज्ञानिक है। जन्म कुण्डलियों के मिलान से भी जीवन-साथी का चुनाव करना रूढ़िवादिता है। अपने आँख-कान पर विश्वास करके चुनाव करना लाखों-करोड़ों मील दूर स्थित आकाशीय पिण्डों के काल्पनिक हिसाब-किताब (गुणा-भाग) के आधार पर चुनाव करने से लाख गुना बेहतर है। वात्स्यायन का उदाहरण देकर लेखक वर्तमान समय के अनुरूप ही दृष्टिकोण रखने पर जोर देता है। उसने आज प्राप्त हुए कबूतर को कल मिलने वाले मोर से अच्छा माना है। आज मिलने वाला एक पैसा कल मिलने वाले मोहर की आशा से बेहतर है। आशय यह है कि मनुष्य को अपने वर्तमान को सुधारने सँभालने का ही अधिक ध्यान करना चाहिए। उत्तम भविष्य को कल्पना के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए।

विशेष :-

(1) लेखक ने उन पुरानी कपोल कल्पनाओं एवं परम्पराओं का विरोध किया है जिनके आधार पर लोग जीवन-साथी का चुनाव किया करते थे। (2) ज्योतिष, जन्मकुण्डली, लाटरी या मिट्टी के ढेलों का स्पर्श कराके जीवन साथी का चुनाव करना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है, यही बताना इस लघु निबंध का उद्देश्य है। (3) लेखक ने समाज में प्रचलित अंधविश्वासों पर गहरी चोट की है और लोगों से यह अपेक्षा की है कि वह इन रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों से मुक्त होकर अपनी बुद्धि पर विश्वास करें। (4) भाषा-भाषा सरल, सहज एवं बोलचाल की हिन्दी है। (5) शैली-विवरणात्मक शैली का प्रयोग इस अवतरण में किया गया है।

अथवा

ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' हैं, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावात ने अपने घर-जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते हैं, किन्तु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवेश में लौट भी आते हैं। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

VISION 100 NEEMKATHANA

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्मल वर्मा के यात्रावृत्त 'जहाँ कोई वापसी नहीं' से ली गई हैं। इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग :- सामान्यतः व्यक्ति प्राकृतिक विपदाओं के कारण अपना घर-बार छोड़कर कुछ समय के लिए विस्थापित होता है पर आधुनिक भारत में औद्योगीकरण के झंझावात ने तमाम लोगों को विस्थापित होकर सदा के लिए शरणार्थी बनने को विवश कर दिया है।

व्याख्या :- प्रायः व्यक्ति को प्राकृतिक विपदाओं भूकम्प, बाढ़ आदि के कारण अपना घरबार छोड़कर थोड़े समय के लिए विस्थापित होकर कहीं अन्यत्र शरण लेनी पड़ती है। जैसे ही प्राकृतिक विपदा शांत हुई वे अपने पुराने घर में, पुराने परिवेश में वापस लौट आते हैं किन्तु औद्योगीकरण के झंझावात (तूफान) से जो विस्थापन लोगों को झेलना पड़ता है वह स्थायी किस्म का होता है जिसमें व्यक्ति को सदा के लिए अपना घर-बार छोड़कर इधर-उधर शरण लेनी पड़ती है। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित ये आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है जिन्हें अपनी जमीन से अपने घर से सदा के लिए उखाड़कर निर्वासित कर दिया गया है। प्राकृतिक प्रकोप तो कुछ समय के लिए ही होता है और जैसे ही वह समाप्त होता है, विस्थापित लोग पुनः अपने घर लौट आते हैं। औद्योगीकरण में विकास और प्रगति के नाम पर जो विस्थापित होता है उसमें घर-जमीन से उखड़े लोग सदा के लिए अपना घर छोड़ने को विवश हो जाते हैं और फिर कभी वापस नहीं आ पाते। आधुनिक औद्योगीकरण ने ग्रामीणों को उनके परिवेश से काट दिया है, उनके आवास स्थलों को सदा के लिए नष्ट कर दिया है।

विशेष :-
(1) औद्योगीकरण के कारण होने वाले लोगों के विस्थापन पर लेखक ने चिन्ता व्यक्त की है। (2) प्राकृतिक विपदा से होने वाला विस्थापन अस्थायी होता है जबकि औद्योगीकरण के कारण होने वाला विस्थापन स्थायी होता है जिसमें व्यक्ति अपने परिवेश से ही उखड़ जाता है। (3) लेखक का दृष्टिकोण मानवीय एवं संवेदनशील है। (4) विकास और प्रगति का चेहरा मानवीय होना चाहिए, यही लेखक कहना चाहता है। (5) भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है। शैली विवरणात्मक और विचारात्मक है।

22. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए। (400 शब्द)
(6)

1. भ्रष्टाचार : एक ज्वलंत समस्या 2. स्वच्छ भारत अभियान 3. कन्या भ्रूण हत्या : महापाप 4. मूल्य वृद्धि की समस्या

उत्तर :-

रूपरेखा :- 1. प्रस्तावना / भूमिका
2. भ्रष्टाचार का अर्थ
3. भ्रष्टाचार के कारण

VISION 100 NEEMKATHANA

4. भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम
5. भ्रष्टाचार के उपाय
6. उपसंहार

1. प्रस्तावना :- स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही हमारे देश में अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगी | उस समय नये स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण की समस्या प्रमुख थी,परन्तु साथ ही साम्प्रदायिकता,जातिवाद,भाषावाद, प्रांतवाद,बेरोजगारी की समस्या उत्रित्त्र बढ़ गई | आज यह स्थिति है कि इन सभी संस्याओं से देश आक्रांत है |

भारतीय लोकतंत्र के समक्ष समकालीन चुनौतियों में से एक प्रमुख चुनौती <u>भ्रष्टाचार सबसे ज्वलंत व व्यापक समस्या</u> बना हुआ है | इस भ्रष्टाचार रूपी संक्रामक बीमारी के नित्य नये मरीज सामने आ रहे है |जिस देश की ख्याति कभी सदाचार के लिए थी,आज वह भ्रष्टाचार के क्षेत्र में नये नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है | भ्रष्टाचार की समस्या तो सूरसा के मुख की भांति हर वर्ग और हर स्तर पर इस तरह बढ़ रही है कि उसका निवारण करना अत्यंत कठिन हो गया है । भारतीय राजनीति के लिए भ्रष्टाचार नासूर की तरह है | हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने स्वीकार किया था कि केन्द्र सरकार का एक रुपया गाँव में सम्बन्धित कार्य के लिए पहुंचते-पहुंचते मात्र पंद्रह पैसे रह जाता हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भ्रष्टाचार हमारे विकास में कैंसर की भांति बाधक बन रहा है।

ख़्वाब बेचने का व्यापार चल पड़ा,
लालच में हर कोई मचल पड़ा,
नियति तो बहुत स्पष्ट है,
शिकायत किससे करें,
जब पूरा तंत्र ही भ्रष्ट है |

2. भ्रष्टाचार का अर्थ :- भ्रष्टाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है भ्रष्ट + आचार अर्थात् भ्रष्ट यानि बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है –आचरण | अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है – वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो | भारतीय मनीषियों ने आचार: परमोधर्मः कहकर सदाचार को सबसे बड़ा धर्म घोषित किया था | जब आचार: परमोधर्मः की उपेक्षा की जाती है ,तो भ्रष्टाचार की उत्पति होती है |

घुस लेना या देना पाप है,
यही से भ्रष्टाचार की शुरुआत है |

भ्रष्टाचार के कारण :- देश में भ्रष्टाचार के तीव्र गति से बढ़ने के निम्नलिखित कारण है |

1. चरित्र का पतन होना :- हमारे देश में भ्रष्टाचार का सबसे प्रमुख कारण चरित्र का पतन होना है । आज मनुष्य अपना चरित्र थोड़े से लाभ के लिए डीगा रहा है।

यहाँ तहजीब बिकती है, यहाँ फरमान बिकते है |
जरा तुम दाम तो बोलो, यहाँ ईमान बिकते है

VISION 100 NEEMKATHANA

2. पाश्चात्य जीवन शैली का प्रभाव :- आज प्रत्येक व्यक्ति पाश्चात्य ढंग से जीवनयापन करना चाहता है। वह भौतिक सुख- सुविधाओं के लिए लालायित रहता है इसलिए वह अनुचित तरीकें अपनाकर रातोंरात लखपति बनना चाहता है।

"पाश्चात्य जीवन शैली अपनाकर, करना चाहते है ऐशों-आराम।
इसी संकीर्ण सोच के कारण, प्रतिदिन कर रहे हैं अनुचित काम

3. उद्योगपतियों और राजनेताओं के बीच सांठ-गाठ | 4.भाई भतीजावाद की नीति | 5. सामाजिक मूल्यों का ह्रास | 6. देश में उत्पादन की अपेक्षा जनसंख्खा तीव्र गति से बढ़ रही है | 7. भ्रष्टाचार समृद्ध जीवन की प्राप्ति का शोर्टकट मान लिया गया है | 8. महँगाई रात- दिन बढ़ रही है इसी कारण भ्रष्टाचार की गति स्वतः ही बढ़ रही है | 9. धन को ही सर्वस्व समझने के कारण | 10. अधिक परिश्रम किये बिना धनार्जन की चाहत |

4. भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम :-
1.राष्ट्रचरित व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास 2. ईमानदार व आम नागरिकों का ईमान गिरेगा 3.देश का आर्थिक विकास रुक –सा गया है 4. राजनीति और प्रशासन का प्रयोग जनता के लिए न होकर संकीर्ण स्वार्थों के लिए होगा 5. लोकतंत्र के समक्ष अनेक चुनोतियाँ उत्पन्न होंगी 6. कानून व्यवस्था में अपराधियों का प्रश्रय 7. रिश्वतखोरी को बढ़ावा 8. कालाबाजारी व मुनाफाखोरी को बल मिलता है 9. धन के बल पर मनचाहे कार्य होंगे 10 न्यायालय में न्याय नहीं मिलता है 11. अनुचित व अवैध तरीकों से सार्वजनिक पदधारकों द्वारा राष्ट्रीय संपत्ति को हानि पहुंचाई जाती है।

5. भ्रष्टाचार के उपाय :- भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं |

हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होगें अभी।
आओ विचारे आज मिलकर, भ्रष्टाचार से उत्पन्न समस्याएँ सभी

1. लोगों को जागरूक करना होगा :- जन-जन को जगाना होगा
भ्रष्टाचार को मिटाना होगा

2. चारित्रिक दृढ़ता पर बल देना :- वही करेगें राष्ट्र का उत्थान ।
जिन्हें हैं अपने चरित्र का ध्यान ॥

3. भ्रष्टाचार निरोधक कानून कठोर करने चाहिए 4. प्रशासनिक तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही 5. न्यायपालिका स्वतंत्र व निष्पक्ष कार्य करे। 6. भ्रष्टाचार विरोधी संगठन शक्तिशाली हो 7. हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा | 8. हमें किसी भी गलत कार्य के प्रति विरोध करने की आदत डालनी होगी | 9. प्रशासनिक मामलों में जनता को भी शामिल किया जाए | 10. प्रशासनिक कार्य के लिए लोकपाल स्वतंत्र रूप से कार्य करें | 11. हर क्षेत्र में कार्य से पहले व्यक्ति को शपथ दिलाई जाए |

अब तो ऐसे भारत का निर्माण होगा

VISION 100 NEEMKATHANA

जिसमें भ्रष्टाचार का न नामोनिशान होगा

6. उपसंहार :- भारतीय जनजीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार की उपस्थिति देखकर ऐसा लगता है कि सरकार और जनता अब भ्रष्टाचार के साथ जीने की अभ्यस्त हो गई है | यद्यपि न्यायपालिका की सक्रियता ने भ्रष्टाचार पर प्रहार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है किन्तु भ्रष्टाचार का सीधा सम्बन्ध मनुष्य के चरित्र और संस्कारों से होता है | जब तक चरित्रनिष्ठ लोग देश का और समाज का नेतृत्त्व नहीं करेंगे तब तक लोकपाल कानून भी लोकतंत्र को भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं कर पायेंगे | कहा जाता है वृतं यत्नेन संरक्षेत अर्थात चरित्र की रक्षा हर मूल्य पर की जानी चाहिए ।

VISION 100 NEEMKATHANA

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

Senior Secondary Examination, 2024

नमूना प्रश्न-पत्र Model Paper

विषय - हिन्दी साहित्य

Sub: Hindi Literature

समय: 03 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड – अ

Section – A

(1)निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए | (12)

1 . यह समिधा' ऐसी आग हठीला विरला सुलगाएगा। पंक्ति में 'समिधा' से क्या तात्पर्य है? (1)

(अ) हवन सामग्री (ब) समाधि (स) मीठे पकवान (द) लकड़ी

2 .भरत के अनुसार स्वयं को साधु तथा अपनी माता को नीच मानना किसके समान है (1)

(अ) करोड़ो दुराचारों के समान (ब) न्याय के समान (स) शिष्टाचार के समान (द) सुकृत्य के समान

3. हजारीप्रसाद द्विवेदी को किस निबन्ध-संकलन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ? (1)

अ. अशोक के फूल ब. कुटज स. कल्पलता द. आलोक पर्व

4. बड़ी हवेली की टूटी ड्योढी' के द्वारा लेखक ने इशारा किया है ? (1)

(अ) समाज का सांस्कृतिक पतन (ब) समाज का वैचारिक पतन

(स) आर्थिक पतन (द) पतनशील सामंती व्यवस्था

5. सूरदास की झोपड़ी पाठ प्रेमचन्द के किस उपन्यास से लिया गया है ? (1)

अ. कर्मभूमि ब. रंगभूमि स. गबन द. गोदान

6. कोइयाँ किसे कहते हैं ? (1)

अ. कमल ब. मखाना स. जलकुंभी द. कुमुद

7. 'बरहा' क्या होता है ? (1)

अ. एक तरह का उड़ने वाला पतंग ब. सांप का नाम

स. स्वादिष्ट भोजन का प्रकार द. खेतों की सिंचाई के लिए बनाई गई नाली

8. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा पहले गिरता था इनमें से कारण है- (1)

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. औद्योगिकरण से पर्यावरण नष्ट होना ब. वायुमंडल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की अधिकता
स. पेड़ों की अधिक कटाई के कारण द. उपर्युक्त सभी

9. कविता को <u>प्ले विद् बर्ड्स</u> किसने कहा था ? (1)

अ. थीट्स ब. शेक्सपियर स. मिल्टन द. डब्ल्यू. एच. ऑर्डन

10. "कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वाले की भी, इसकी, उसकी, सबकी, सृष्टि, समूचे परिवार की।" यह कथन किसका है ? (1)

अ. सुमित्रानन्दन पन्त ब. महादेवी वर्मा स. कृष्णा सोबती द. प्रेमचन्द

11. सनसनीखेज समाचारों का प्रकाशन करना कहलाता है ? (1)

अ. खोजपरक पत्रकारिता ब. पीत पत्रकारिता स. वॉचडॉग पत्रकारिता द. पेज-थ्री पत्रकारिता

12. कारोबार और अर्थजगत से जुड़ी रोजमर्रा की खबरें किस शैली में लिखी जाती है ? (1)

अ. सीधा पिरामिड शैली ब. उलटा पिरामिड शैली स. रिपोर्ट शैली द. फीचर शैली

उत्तरमाला :- 1. अ 2. अ 3. द 4. द 5. ब 6. द 7. द 8. द 9. द 10. स 11. ब 12. ब

(2) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित उत्तर से कीजिए (6)

1. रस के उत्कर्ष में सहायक तत्वों को ....कहा जाता है | (1)

2. सूरदास के दृष्टिकुट पदों तथा कबीरदास की उलटबासियों में ....दोष अधिकता से मिलता है | (1)

3. सभी दीर्घ स्वर व उनके योग से बनने वाले व्यंजन ....कहलाते है | (1)

4. मुक्तक दंडक छंदों का सबसे लोकप्रिय छंद .... है | (1)

5. काव्य में जहाँ प्रकृति के जड़ पदार्थों पर मानवीय क्रियाकलापों का आरोप किया जाता है वहाँ .... अलंकार होता है | (1)

6. 'काव्यशोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते' उक्त अलंकार की परिभाषा ....ने दी है | (1)

उत्तरमाला :- 1. काव्यगुण 2. क्लिष्टत्त्व दोष 3. गुरु 4. कवित्त 5. मानवीकरण 6. आचार्य दंडी

(3) अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- (6)

साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है? यदि हाँ, तो किस मायने में? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग-निर्माता हो सकता है। समय बदलता रहता है, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलते हैं, साहित्य बदलता है और इसी के समानांतर पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अत: कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदल जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती, जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान युग में इंगला-पिंगला, सुषुम्ना, अनहद, नाद आदि पारिभाषिक शब्दावली मन में विशेष भावोत्तेजन नहीं करती। साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है। उसकी श्रेष्ठता का युगयुगीन आधार हैं, वे जीवन-मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्तियाँ जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव-विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती हैं। पुराने साहित्य का केवल वही श्री-सौंदर्य हमारे लिए ग्राह्य होगा, जो नवीन

MISSION 100 NEEMKATHANA

जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे अथवा स्थिति-रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए। किंतु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव-जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब स्वांतःसुखाय काव्य-रचना करते हैं, तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव-समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंतःकरण में संपूर्ण संसार की सुख-भावना एवं हित-कामना सन्निहित रहती है। जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक-जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है।

(1) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(2) पुराने साहित्य के प्रति अरुचि का क्या कारण है? (1)

(3) जीवन के विकास में पुराने साहित्य का कौन-सा अंश स्वीकार्य है और कौन-सा नहीं? (1)

(4) साहित्य की शाश्वतता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह शाश्वत होता है या नहीं। (1)

(5) सामयिक परिवेश बदलने का कविता पर क्या प्रभाव पड़ता है और क्यों? (1)

(6) साहित्य की श्रेष्ठता के आधार क्या हैं? (1)

उत्तर :- (1) शीर्षक-साहित्य की प्रासंगिकता।

(2) वर्तमान युग में पुराने साहित्य के प्रति अरुचि हो गई है, क्योंकि पाठक की अभिरुचि बदल गई है और वर्तमान युग में पुराने साहित्य को वह अपने लिए प्रासंगिक नहीं पाता। इसके अलावा देशकाल और परिस्थिति के अनुसार साहित्य की प्रासंगिकता बदलती रहती है।

(3) जीवन के विकास में पुराने साहित्य का केवल वही अंश स्वीकार्य है, जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे। पुराने साहित्य का वह अंश अस्वीकार कर दिया जाता है, जो अपनी उपयोगिता और प्रासंगिकता खो चुका है तथा जीवन-मूल्यों से असंबद्ध हो चुका होता है।

(4) साहित्य की शाश्वतता का तात्पर्य है-हर काल एवं परिस्थिति में अपनी उपयोगिता बनाए रखना एवं प्रासंगिकता को कम न होने देना। साहित्य को शाश्वत इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह समय के साथ अपनी प्रासंगिकता खो बैठता है। इसके अलावा रचनाकार अपने काल की परिस्थितियों के अनुरूप ही साहित्य-सृजन करता है।

(5) सामयिक परिवेश के बदलाव का कविता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। परिवेश बदलने से कविता पाठक के मन में वह उत्तेजना नहीं उत्पन्न कर पाती, जो वह अपने रचनाकाल के समय करती थी। इसका कारण है-समय, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलने के अलावा पाठकों की अभिरुचि और मानसिकता में भी बदलाव आ जाना।

(6) साहित्य की श्रेष्ठता के आधार हैं वे जीवन-मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव-विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करती हैं।

(4) अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए

पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश,
पल पल परिवर्तित प्रकृति वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग सुमन फाड़,

अवलोक रहा है बार बार
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पड़ा ताल
दर्पण सा फैला है विशाल
गिरि के गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
<u>मोती की लड़ियों से मुंदर</u>
<u>झरते हैं झाग भरे निर्झर।</u>

(क) प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

(ख) पर्वत का आकार कैसा है ? वह अपने सहस्र नेत्रों से क्या देख रहा है? **(1)**

(ग) पर्वत के चरणों में क्या पड़ा है ? किसके समान लग रहा है ? **(1)**

(घ) रेखांकित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए। (1)

5. दर्पण-सा फैला है विशाल पंक्ति में कौनसा अलंकार है ? (1)

6. पर्वत का गौरव गान कौन कर रहा है ? (1)

उत्तर:- (क) काव्यांश का उचित शीर्षक—'पर्वत–प्रदेश की सुन्दरता ।'

(ख) पर्वत का आकार मेखलाकार है । वह अपने हजार नेत्रों से नीचे फैले जन्न की परछाईं में अपने महान् आकार को देख रहा है।

(ग) पर्वत के चरणों में विशाल तालाब जल से भरा हुआ लहरा रहा है, जो पर्वत मे बहने वाले झरनों से ही बना है।

(घ) भावार्थ-कवि पहाड़ से बहने वाले निर्झरों का वर्णन करते हुए कहता है कि झरने अपने झागों से भरे जल के साथ पहाड़ से नीचे झरते हैं तो ऐसा लगता है मानो वे मोतियों की लड़ियों से बनी सुंदर मालाएँ हों।

5. उपमा अलंकार

6. झरने को पर्वत का गौरव गान करने वाला सेवक बताना कवि की अनूठी कल्पना है |

VISION IC

खण्ड – ब

Section – B

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 **शब्दों में दीजिये** |
(24)

(5) **'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?**
(2)

उत्तर- कवि का यह आशय है कि वसंत ऋतु में सर्दी कम हो जाती है और गंगा स्नान के लिए लोगों की भीड़ बढ़ जाती है। गंगा के दर्शनार्थियों से भिखारियों को खूब भीख मिलती है। उनके कटोरों में सिक्कों की खनक बढ़ जाती है। जिस प्रकार प्रकृति में वसंत ऋतु के आने पर मधुरता व खुशियाँ छा जाती हैं उसी प्रकार भिखारियों के चेहरों पर चमक भी बढ़ जाती है। कटोरों में पड़ते सिक्कों की चमक में कवि को वसंत उतरता दिखाई देता है।

(6) **देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की निराशा के कारणों पर प्रकाश डालिए।** (2)

उत्तर - देवसेना की निराशा के कई कारण हैं जिनमें दो कारण मुख्य हैं ।

प्रथम तो हूणों के आक्रमण के कारण उसके भाई बन्धुवर्मा एवं परिवार के सदस्यों को वीरगति प्राप्त हुई और जीवनभर अकेली रहकर उसे संघर्ष करना पड़ा।
दूसरा मुख्य कारण यह था कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी परन्तु उसे स्कन्दगुप्त का प्रेम प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि वह विजया व्रत से प्रेम करता था। जब स्कन्दगुप्त ने उसके सामने प्रेम प्रस्ताव रखा तब तक वह आजीवन अविवाहित रहने का प्रण ले चुकी थी। स्कन्दगुप्त के व्यवहार के कारण वह निराश हो गई थी। अकेली रहने के कारण उसे लोगों की कुदृष्टि का सामना करना पड़ा। स्कन्दगुप्त की उपेक्षा के कारण उसे भीख माँगने का कार्य भी करना पड़ा। इसी से वह जीवन में हार गई और निराश हो गई थी।

(7) **लेखक रामचंद्र शुक्ल ने अपने पिताजी की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?**
(2)
उत्तर- रामचन्द्र शुक्ल जी ने पाठ के शुरू में अपने पिताजी की कई विशेषताओं का उल्लेख किया है-
1. पिताजी फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी के बड़े प्रेमी थे।
2. फ़ारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था।
3. वे रात को घर के सब लोगों को एकत्र करके प्रायः 'रामचरितमानस' और 'रामचन्द्रिका' बड़े चित्राकर्षक ढंग से पढ़ा करते थे।
4. उन्हें भारतेन्दुजी के नाटक बहुत प्रिय थे। उन्हें भी वे कभी-कभी सुनाया करते थे।
5. वे घर में आने वाली पुस्तकों को छिपाकर रख देते थे। उन्हें डर था कि कहीं बालक शुक्ल का चित्त पढ़ाई से न हट जाए।
(8) 'घड़ी के पुर्जे' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (2)
उत्तर-धर्मोपदेशक उपदेश देते समय यह कहा करते हैं कि हमारी बातें ध्यान से सुनो पर धर्म का रहस्य जानने की चेष्टा न करो। अपने कथन के समर्थन में वे घड़ी का उदाहरण देते हैं कि घड़ी से समय जान लो यह देखने की कोशिश न करो कि इसका कौन-सा पुर्जा कहाँ लगा है। यह कार्य घड़ीसाज का है | धर्माचार्य धर्म का रहस्य आम आदमी तक पहुँचने नहीं देना चाहते, जबकि हर व्यक्ति को धर्म का मूल रहस्य जानने का अधिकार है। 'घड़ी के पुर्जे' कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि धर्म पर मठाधीशों का एकाधिकार ठीक नहीं हैं।उसका विस्तार जनसाधारण में होना जरूरी है तभी धर्म जन हितकारी हो सकता है।
(9) हमारे मौसमों का चक्र क्यों बिगड़ रहा है? 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर बताइये। (2)
उत्तर-वर्तमान में यूरोप और अमेरिका के उद्योगों से इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य विषैली गैसें निकलती हैं, जिनसे पर्यावरण काफी गर्म हो गया है, उत्तरी-दक्षिणी ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है और समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है। इन कारणों से हमारे मौसमों का चक्र गड़बड़ा रहा है।
(10) "निद्रावस्था में भी उपचेतना जागती है।" सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के आधार पर इस कथन है स्पष्ट कीजिए। (2)
उत्तर-मनुष्य का अवचेतन मस्तिष्क नहीं सोता है, वह निद्रावस्था में भी क्रियाशील रहता है। अनिष्ट की अशंका होने पर वह उसे सावधान कर देता है। सूरदास की झोंपड़ी में आग लगते समय सब लोग सो रहे थे, परन्तु आग की ज्वाला उठते ही उनके अवचेतन ने उन्हें सावधान कर दिया था और वे सब जागकर आग बुझाने लग गये थे ।
(11) प्रतीप और व्यतिरेक में अंतर स्पष्ट कीजिए (2)

उत्तर :- 1. प्रतीप में उपमान को उपमेय के सामने तिरस्कृत किया जाता है जबकि व्यतिरेक में गुणाधिक्य के कारण उपमेय में उपमान की अपेक्षा कोई बात अधिक विशिष्ट बताई जाती है |

2. प्रतीप में कवि का उद्देश्य उपमान का तिरस्कार करना होता है जबकि व्यतिरेक में कवि का उदेश्य उपमान को स्थापित करना होता है |

(12) प्राचीन काल में मौखिक कहानी की लोकप्रियता के क्या कारण थे ? (2)

उत्तर :- हमारे देश में मौखिक कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है और आज तक प्रचलित है खासतौर से राजस्थान में आज भी यह परम्परा जीवित है | मौखिक कहानी की लोकप्रियता के निम्नलिखित कारण हैं

1. प्राचीन काल में संचार के साधनों की कमी थी इसलिए मौखिक कहानी ही संचार का बड़ा माध्यम थी।

2.. प्राचीन काल में मौखिक कहानी धर्मप्रचारकों, सन्तों के सिद्धान्तों व विचारों को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम थी।

3. प्राचीनकाल में मौखिक कहानी ही मनोरंजन का प्रमुख साधन थी।

4. प्राचीनकाल में मौखिक कहानी ही समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का साधन थी।

(13) उलटा पिरामिड शैली किसे कहते है ? (2)

उत्तर :- समाचार लेखन की सबसे प्रचलित व प्रभावी शैली उलटा पिरामिड शैली है | इसमें समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सबसे पहले लिखा जाता है तथा इसके बाद घटते महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों व सूचनाओं को लिखा जाता है | जनसंचार के सभी माध्यमों में 90 प्रतिशत खबरें उलटा पिरामिड शैली में लिखी जाती है | लेखक और सम्पादक की सुविधा के कारण उलटा पिरामिड शैली समाचार लेखन की स्टैंडर्ड या मानक शैली मानी जाती है |

(14) विशेष लेखन से आप क्या समझते है ? (2)

उत्तर :- सामान्य लेखन से हटकर किसी खास विषय पर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता हैं। विशेष लेखन की भाषा, शैली, विषय एवं मुद्दे भी अलग होते है और ये सामान्य समाचार लेखन, फ़ीचर, आलेख आदि से भी अलग होते हैं। विशेष लेखन में खेल, अर्थ, व्यापार, सिनेमा मनोरंजन, कृषि फैशन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि से सम्बन्धित सामग्री प्रकाशित होती है।

(15) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए | (2)

उत्तर :- छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी (वाराणसी) में 1889 में सुंघनी शाहु "(वाराणसी) परिवार में हुआ था। इनका परिवार सुंघनी शाहू के नाम से जाना जाता है क्योंकि इनके परिवार में विशेष प्रकार की सुंघनी तम्बाकू बनाते थे।

प्रसादजी को सरस्वती के वरद पुत्र और छायावाद की ब्रहमा उपाधि दी गई उन्होंने 9 वर्ष की अवस्था में कलाधर के नाम से अपने गुरू को ब्रज भाषा में कविता लिखकर दिखाई। इनकी विद्यालय शिक्षा आठवीं तक हुई किन्तु घर पर उन्होने संस्कृत पाली, हिन्दी, उर्दू व अग्रेजी के साहित्य का अध्ययन किया ये इतिहास, दर्शन,पुरातत्त्व,धर्मशात्र के प्रकांड विद्वान थे| राष्ट्रीय जागरण का स्वर इनकी रचनाओं की मुख्य विशेषता है।

प्रमुख रचना:

काव्य संग्रह:- झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेमपथिक,कानन कुसुम, प्रेम राज्य ,वन मिलन

नाटक :- विशाख, अजातशत्रू, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ,राज्य श्री, करुणालय, सज्जन

कहानी संग्रह :- छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आधी, इंद्रजाल

VISION 100 NEEMKATHANA

उपन्यास :- कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
निबन्ध:- काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध
नोट :- कामायनी छायावाद की लोकप्रिय व श्रेष्ठ रचना है जो 1935 में प्रकाशित हुई इस रचना के लिए इनको मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार से नवाजा गया |

(16) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए | (2)

उत्तर :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक,निबंधकार,साहित्य चिन्तक एवं इतिहास लेखक के उच्च को रूप में जाने जाते हैं। इनका जन्म प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना गाँव 1884 में हुआ । इनके पिता का मे नाम चन्द्रबली शुक्ल था इनकी विधिवत शिक्षा इंटरमीडियट तक हो पायी। बाद में उन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, अग्रेजी, बांग्ला और हिन्दी के प्राचीन तथा नवीन साहित्य का गम्भीरता से अध्ययन किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए |

आलोचना :-हिन्दी साहित्य का इतिहास,काव्य का रहस्यवाद,जायसी ग्रन्थावली,गोस्वामी तुलसीदास,भ्रमरगीत सार
निबंध संग्रह:- चिन्तामणि (चार खण्ड),रसमीमांसा
काव्य संग्रह :- अभिमन्यु वध,बुद्धचरित्र ।
कहानी :- ग्यारह वर्ष का समय(1903)
संपादन - हिन्दी शब्द - सागर,काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका,आनन्द कादम्बिनी
नोट :-
1.इनका पहला निबंध साहित्य नामक शीर्षक से 1904 में सरस्वती में छापा।
2.इनके निबंध-संग्रह चिन्तामणि को प्रारम्भ में विचार विथी के नाम से प्रकाशित करवाया गया था
3. इनकी पहली आलोचना काव्य में रहस्यवाद मानी जाती है
4. इनको चिन्तामणि रचना के लिए देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया
5 लक्ष्मीनारायण ने इनकी कहानी ग्यारह वर्ष का समय को हिन्दी की प्रथम कहानी माना है।

खण्ड – स
Section – c

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

(17) 'आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखों देखा बेला बहु अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेज पिंड से।' कथन का आशय 'सुमिरिनी के मनके' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

अथवा

'संवदिया' कहानी के आधार पर बड़ी बहुरिया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर-लेखक यह कहना चाहता है कि समय के साथ हमें भी बदलना चाहिए। कल जो प्रथा या परम्परा अच्छी मानी जाती थी वह आज के समय में उचित नहीं है। जमाना बदल गया है और हमें भी बदले हुए जमाने के साथ अपनी मान्यताएँ बदलनी चाहिए। हमें आज (वर्तमान) को महत्त्व देना चाहिए कल (भूतकाल) को नहीं।

VISION 100 NEEMKATHANA

पुराने जमाने में आकाशीय पिण्डों की चाल को गणना अर्थात् ज्योतिष के आधार पर लोग पत्नी का चुनाव करते थे। वे ग्रह हमसे लाखों-करोड़ों मील दूर है, उनके बारे में हमें कुछ पता नहीं है, उनको तुलना में कम से कम मिट्टी के वे देले श्रेष्ठ हैं जिन्हें हमने अपनी आँख से देखकर दिखा किसी स्थान को मिट्टी से बनाया है। आज का कबूतर कल के मोर से श्रेष्ठ है। आज का पैसा कल के मोहर से अधिक मूल्यवान् है। अच्छी पत्नी चुनने के लिए वर्तमान में प्रचलित प्रणाली को अपनाना ही सही है।

अथवा

उत्तर :- बड़ी बहुरिया बड़ी हवेली में जब बहू बनकर आई थी तब हवेली में बड़ी शानो-शौकत थी। वक्त की मार ने सब बिखेर दिया। ऐसे में भी बड़ी बहू की सहनशीलता उनके चरित्र को गरिमा प्रदान करती है-

1. स्वाभिमानी :- आर्थिक परिस्थितियों से परेशान होकर बड़ी बहुरिया मायके संदेश भेजती है किन्तु अपने स्वाभिमान के चलते पछताती है। कारण वह मायके वालों से भी सहायता नहीं लेना चाहती थी।

2. मेहनती :--बड़ी हवेली में नौकरों के न रहने पर घर का सारा कार्य बड़ी बहुरिया स्वयं करती थी। वह मेहनत से जी नहीं बुराती है।

3. संवेदनशील :- स्वभाव से सरल हृदया बड़ी बहुरिया संवदिया की पीड़ा को समझ उसे राह-खर्च देती है तथा वापस लौटने पर दूध-चूड़ा खाने को देती है।

4. साहसी :- -बड़ी बहुरिया विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को तथा हवेली को संभाले हुए है। मोदिआइन के अपशब्द कहने के बाद भी वह हिम्मत नहीं हारती है तथा बथुआ-साग खाकर जीवन-यापन करती है। इस प्रकार अनेक गुणों से मंडित बड़ी बहुरिया का चरित्र था।

(18) " 'सरोज-स्मृति' एक शोक-गीत है।" इस कथन के आधार पर सरोज-स्मृति कविता की समीक्षा कीजिए। (3)

अथवा

कवि घनानन्द के कवित्त में प्रेम और भक्ति के सुन्दर संयोग व्यक्त हुआ है | कथन की विवेचना कीजिए |

उत्तर-'सरोज-स्मृति' हिन्दी काव्य कला में अपने ही ढंग का एकमात्र शोकगीत है। कवि निराला ने वात्सल्य भाव से पूरित होकर अपनी पुत्री की मृत्यु पर लिखी इस कविता में करुणा एवं वेदना को प्रमुखता दी है। 'सरोज- स्मृति' कविता में कवि ने पुत्री के बाल्यकाल से लेकर उसकी मृत्यु तक की स्मृतियों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इसमें पुत्री सरोजं के नववधू स्वरूप का बड़ा हो सुन्दर-सजीव व मार्मिक रूप प्रस्तुत किया है। कविता में जहाँ पुत्री के प्रति प्रेम-स्नेह का भाव है, वहीं कवि निराला के एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके सम्बन्ध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अपराध बोध भी प्रकट हुआ है। निराला ने साथ ही अपने जीवन-संघर्ष को भी उभारा है।

अथवा

उत्तर-कवि घनानन्द अपनी प्रेमिका सुजान के विरह में सुन्दर कवित्त प्रस्तुत करते हैं जहाँ इनका भक्त रूप भीप्रकट होता है। सुजान नाम उनकी प्रेमिका और आराध्य कृष्ण दोनों को सम्बोधित किया गया है। प्रस्तुत कवित्त में दोनों के प्रति उनका उत्कट प्रेमभाव प्रस्तुत है। जब वे कहते हैं कि 'कहि-कहि आवन छबीले मनभावन की' वहाँ कृष्ण व सुजान दोनों के प्रति भाव गाम्भीर्य व्यक्त होता है। कवि अपने जीवन के अन्तिम समय में कहते हैं कि बहुत दिनों से आने की कह रहे हैं जो अपनी मन मोहने वाली छवि का दर्शन देंगे। सुजान

VISION 100 NEEMKATHANA

(कृष्ण) के दर्शन की अभिलाषा में कवि के प्राण उनके होठों तक आ गये हैं किन्तु निष्ठुर सुजान (कृष्ण) पर उनके संदेशों का कोई प्रभाव नहीं है। व्यथित कवि अपने प्रियतम (कृष्ण) के आने की खबर सुनना चाहते है | इस प्रकार प्रथम कवित में व्यक्त उनकी विरही दशा दोहरे अर्थ को व्यक्त करती है |

(19) "संगीत, गंध, बच्चे-बिसनाथ के लिए सबसे बड़े सेतु हैं, काल, इतिहास को पार करने के।" प्रस्तुत कथन के आधार पर बताइए कि बिसनाथ का सम्बन्ध गंध से किस प्रकार जुड़ा हुआ था?
(4)

अथवा

. ' आशा से ज्यादा दीर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती' इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-बिसनाथ मानता था कि समय के आर-पार झाँकना हो, इतिहास को अच्छी तरह समझना हो, तो संगीत, गंध और बच्चे इसमें बड़े सहायक होते हैं। बिसनाध को बड़ा होने पर याद आया कि बचपन में उसे अपनी माँ के पेट को गंध उसके दूध की गंध जैसी लगती थी। पिता के कुर्ते पर पसीने की बू भी उसे अच्छी लगती थी। नारी शरीर से उसे बिस्कोहर की वनस्पतियों एवं फसलों की गंध आती थी। वहाँ के तालाब की चिकनी मिट्टी की गंध, खीरा, भुट्टा या गेहूँ को गंध भी उसे अच्छी लगती थी। फूले हुए नीम की और जूही की गंध उसे नारी शरीर की गंध के समान मादक, आकर्षक और आनन्ददायी लगती थी। इसलिए बिसनाथ अब तक गंध की मधुर स्मृति के कारण अपने गाँव के परिवेश से जुड़ा हुआ था।

अथवा

उत्तर-लेखक मुंशी प्रेमचन्द ने आशा को अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में दीर्घजीवी कहा है क्योंकि
(1) आशा व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देती है-सूरदास भले ही कर्म से भिखारी था। उसे आशा थी कि वह एक दिन गया जाकर पितरों का श्राद्ध, एक कुआँ और मंदिर बनवाएगा। बेटे का विवाह करेगा। इसी के निमित्त रूखा-सूखा खाकर भी उसने पाँच सौ रुपये से अधिक की राशि एकत्रित कर ली थी।
(2) विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति आशावादी बना रहता है-भैरों ने शत्रुतावश उसकी झोंपड़ी में आग लगा दी। प्रात:काल होते ही सूरदास इस आशा से राख के ढेर टटोल-टटोल कर देख रहा है कि शायद उसे उसकी पोटली मिल जाए। सूरदास के इस प्रयास को देखकर ही प्रेमचन्द आशा दीर्घजीवी कहते हैं।

(20) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए | (5)

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि में अधिक कहाँ मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ।।
मो पर कृपा सनेहु विसेखी । खेलत खुनिस न कबहुँ देखी।।
सिसुपन में परिहरेउँ न संगू । कबहुँन कीन्ह मोर मन भंगू ।।
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही । हारेंरु खेल जितावहिं मोही।।
महूँ सनेह सकोच बस सतमुख कही न बैन। दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन।।

VISION 100 NEEMKATHANA

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामीतुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य के 'अयोध्याकाण्ड' से हो गई हैं। इस अंश को हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में 'भरत-राम का प्रेम' शीर्षक से संकलित किया गया है।

प्रसंग :- चित्रकूट में आयोजित सभा में जब मुनि वशिष्ठ भरत से अपने मन की बात कहने के लिए कहते हैं तब भरत की क्या दशा होती है और वे राम के स्वभाव के बारे में क्या कहते हैं, इसी का वर्णन करते हुए तुलसीदास ने भरत और राम के प्रेम का उल्लेख इन पंक्तियों में किया है।

व्याख्या :- मुनि वशिष्ठ का आदेश पाकर भरत जी सभा में अपनी बात कहने के लिए खड़े हो गए। उनका शरीर पुलकित (रोमांचित) हो गया और उनके कमल जैसे नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगे। भरत जो ने कहा कि मुझे जो कुछ कहना था यह तो हे मुनिवर आपने पहले ही कह दिया है। अब इससे अधिक भला मैं और क्या कह सकता हूँ ? मैं अपने स्वामी (राम) का स्वभाव जानता हूँ। वे तो इतने दयालु है कि अपराधों पर भी क्रोध नहीं करते, मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा एवं स्नेह है। बचपन में खेल खेलते समय भी मैंने कभी उनकी अप्रसन्नता नहीं देखी। बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी कभी मेरा मन नहीं तोड़ा। मैंने उनकी कृपा करने की रीति का अनुभव अपने हृदय में किया है। जब में खेल में हार जाता था तब भी वे मुझे ही जिता देते थे। मैंने भी सदा उनका इतना सम्मान किया है कि उनके सामने अपना मुँह तक नहीं खोला अर्थात् सम्मानवश मैंने कभी उनके सामने बोलने तक का साहस नहीं किया। प्रभु श्री राम के दर्शन करने की लालसा मेरे नेत्रों को सदा से रही है और आज तक ये नेत्र उनके दर्शन के लिए लालायित रहते हैं।

विशेष ।. भरत-राम का स्नेह प्रेरणाप्रद है। आतृप्रेम का आदर्श रूप हमें भरत और राम के इस प्रसंग में दिखाई पड़ता है। 2. भरत राम का इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने कभी प्रभु के समक्ष अपना मुख न खोला अर्थात् उनकी बात का विरोध नहीं किया। 3. 'नीरज नयन नेह जल में रूपक अलंकार है। 'सरीर सौं', 'मोर मुनिनाथ', 'नोरज नयन नेह', 'निव नाथ' में अनुप्रास अलंकार है। 4. भरत के शरीर का पुलकित होना उनकी प्रेम विभोर दशा का द्योतक है। 5. अवधी भाषा, माधुर्य गुण और चौपाई दोहा छन्द प्रमुख विशेषता है।

अथवा

छलछल थे संध्या के श्रमकण,
आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण।
मेरी यात्रा पर लेती थी-
नीरवता अनंत अंगड़ाई।
श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन-विपिन की तरु-छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने –
यह विहाग की तान उठाई।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। इसमें मालवा के राजा बन्धुवर्मा की बहिन देवसेना अपनी हृदयगत वेदना को लेकर चिन्तित दिखाई गई है।

व्याख्या- देवसेना अपने जीवन के अंतिम समय में वेदना का अनुभव करते हुए सोचती है कि मेरे जीवन का

VISION 100 NEEMKATHANA

संध्या काल आ चुका है और जीवनभर के अनन्त परिश्रम के कण अर्थात् पसीने की बूंदें निरन्तर गिर रही हैं। ऐसा
प्रतीत हो रहा है कि वे पसीने की बूँदें आँसुओं के समान प्रतिपल आँखों से गिर रहे हैं। मेरी जीवन यात्रा में अब चारों
तरफ नीरवता या खामोशी फैली हुई है। देवसेना कहती है कि थके हुए स्वप्नों की मधुर स्मृति में, जैसे वन के पेड़ों की गहरी छाया में थके सोये पथिक को किसने आवाज दी। यह प्रेम-विरह की राग कौन सुना रहा है। आशय है कि देवसेना, स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी और स्कन्दगुप्त जीवन के अंतिम मोड़ पर उसे साथ देने के लिए पुकार रहा है जहाँ देवसेना मना कर देती है और पीड़ा का अनुभव करती है।

विशेष - (1) कवि को स्वानुभूति वेदना रूप में व्यक्त हुई है। विहाग राग के माध्यम से वेदना की अधिकता व्यंजित हुई है। (ii) 'स्वप्न' को मधुमाया कहना अनूठा प्रयोग है। भाषा तत्सम-प्रधान एवं भावानुकूल है। अनुप्रास एवं रूपक अलंकार हैं।

(21)निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए | (5)

दुरंत जीवन-शक्ति है। कठिन उपदेश है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है। जियो तो प्राण बाल दो जिन्दगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में ठीक है। लेकिन क्यों ? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है। याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती-सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं
'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति !'
होता है।
प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश हजारीप्रसाद द्विवेदी के 'कुटज' निबन्ध से उद्धृत है। लेखक बतलाता है कि कुटज की जड़े पत्थर में घुसकर भी रस खींच लेती हैं, उसकी जीवनी शक्ति अपराजेय है।

व्याख्या-लेखक कुटज के बारे में कहता है कि उसमें अपार जीवनी शक्ति है। वह विषम परिस्थितियों में भी जीवित रहने की सामर्थ्य रखता है। लेखक कहता है कि जीवन जीना भी एक कला है। वह कला जिसके पास हो, वह अच्छी तरह जी सकता है। इतना ही नहीं, जीने के लिए तपस्या करनी पड़ती है, कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। जीवन सुखमय बनाने के लिए प्राणों का खतरा उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है, जीवन का रस उपलब्ध कराने के साधनों में मन को डालना पड़ता है। याज्ञवल्क्य ब्रह्म की सर्वव्यापकता का प्रतिपादन करने वाले, ब्रह्म ज्ञानी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को जीवन के बारे में जो बात कही, वह विचित्र है। उन्होंने कहा कि सब स्वार्थ पूरा करने के लिए प्रयत्न करते हैं, मानो इसी के लिए जी रहे हैं। पुत्र इसीलिए प्रिय है कि वह पुत्र है, पत्नी इसीलिए प्रिय है कि वह पत्नी है- ऐसी बात नहीं है। उनके प्रति अपना फर्ज समझकर प्यार नहीं किया जाता है, अपितु उनसे अपने मतलब, स्वार्थ के लिए प्यार किया जाता है। ऋषि के शब्द हैं कि अपनी कामनाओं की पूर्ति की दृष्टि से ही दूसरे प्रिय लगते हैं। उनसे हम स्वार्थवश प्रेम करते हैं।

VISION 100 NEEMKATHANA

विशेष- (1) लेखक मानता है कि जीवन को अच्छी तरह जीने के लिए उसकी कला जाननी पड़ती है। जीवन जीना एक तपस्या है, कठिन काम है।
(2) संसार के स्वार्थी आचरण पर अथवा स्वार्थ-चिन्तन करने वालों पर तीव्र व्यंग्य किया गया है।
(3) भाषा सरल, तत्सम एवं प्रवाहपूर्ण है। शैली भावात्मक एवं आवेगात्मक है।

अथवा

इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्त्व था, न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनन्द में डुबकी नहीं लगा रहा था। बल्कि स्नान में ज्यादा समय ध्यान ले रहा था। दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम् त्याग दिया है, उसके अंदर 'स्व'से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश ममता कालिया की 'दूसरा देवदास' कहानी से लिया गया है। संभव अगले दिन पुनः गंगातट पर बैठकर लड़की से मिलने का चिन्तन करता रहा। गंगा पर उसने अलग ही तरह की भीड़ देखी। इसमें उसो स्थिति का वर्णन किया गया है।
व्याख्या- हर की पौड़ी पर जो भीड़ थी, उसमें बिखराव, अनुशासनहीनता जैसी बात नहीं थी। वह भीड़ ऐसी लगी जैसे एक धागे में पिरोयी हुई हो। इस भीड़ के लोगों की दृष्टि में जाति या भाषा का कोई भेदभाव न था। उन सबका एक ही उद्देश्य था। सब अपना कल्याण चाहते थे, दुःखों से छुटकारा पाने की कामना करते थे। भीड़ होने पर भी स्नानार्थियों में हड़बड़ी नहीं थी। उनमें एक-दूसरे से आगे निकलने का, किसी को पीछे धकेलकर आगे निकल जाने का भाव नहीं था। ज्यादा महत्त्व की, अनोखी बात यह थी, स्नान करने के लिए आने वाले लोगों का मनोभाव सैलानियों का-सा मनोरंजन करने का भी नहीं था। इसीलिए स्नान करते समय उनका अधिक प्रयास तो ध्यान लगाने की ओर था, मन को एकाग्र करने की ओर था। कुछ दूरी पर जलधारा में एक व्यक्ति तो सूर्य की ओर मुँह करके हाथ जोड़कर खड़ा था। वह श्रद्धा-भक्ति भाव में डूबा हुआ था। उसके चेहरे पर इतना आत्मसुख एवं विनम्र भाव था कि मानो उसने अपना सारा अहंकार त्याग दिया हो, उसमें अब कोई कुण्ठा हो न बची हो। वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्मा में भावमग्न और निर्मल आनंदरूप ही प्रतीत होता था।

विशेष - (1) लेखिका ने गंगा-तट की भीड़ को अन्य शहरों आदि की भीड़ से अलग तरह की बताया है।
(2) श्रद्धा-भक्ति के प्रभाव का मनोभावानुकूल वर्णन किया गया है।
(3) भाषा तत्समप्रधान एवं भावानुरूप है। वर्णनात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली प्रयुक्त है।

(22) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए (400) (6)

1. महिला सशक्तिकरण 2. बालिका शिक्षा 3. इंटरनेट ज्ञान की दुनिया 4. साहित्य समाज का दर्पण है

"महिलाएं है देश की तरक्की का आधार
उनके प्रति बदलो अपने विचार"

VISION 100 NEEMKATHANA

1. प्रस्तावना :-प्राचीन युग से हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है | पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है हमारी धारणा यह रही है ,कि जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है वही पर देवता निवास करते है |

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

कोई भी परिवार,समाज तथा राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थो में प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है जब तक नारी के प्रति भेदभाव निरादर व हीनभाव का त्याग नहीं करता है।

2. महिला सशक्तिकरण का अर्थ :- महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है ताकि उन्हें रोजगार, शिक्षा, आर्थिक तरक्की में बराबरी के मौके मिल सके,जिससे वह सामाजिक स्वतंत्रता और तरक्की प्राप्त कर सके। इस प्रकार नारी सशक्तिकरण का सही शब्दों में यह अर्थ होता है की अपने स्वयं के निर्णय और अधिकार नारी खुद अपने दम पर ले सके |

3. प्राचीन काल में नारी की स्थिति :- भारतीय समाज में वैदिक काल से ही नारी स्थान बहुत ही सम्मानजनक था और हमारा अखण्ड भारत विदुषी नारियों के लिए जाना जाता है |प्राचीन काल में नारी को विशिष्ट सम्मान एवं पूजनीय दृष्टि से देखा जाता था | सीता,सती ,सावित्री, अनसूया,गायत्री आदि अनगिनत भारतीय नारियो ने अपना विशिष्ट स्थान सिद्ध किया है |

नारी तुम श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में |
पीयूष स्रोत –सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में |

4.मध्यकाल में नारी की स्थिति :- देश पर हुए अनेको आक्रमणों के पश्चात भारतीय नारियो की दशा में भी परिवर्तन आने लगा |नारी के सम्बन्ध की विशिष्टता एवं समाज में स्थान हीन होता चला गया|अंग्रजी शासन काल के आते आते भारतीय नारियो की स्थिति बहुत ही खराब हो गयी उसे अबला की संज्ञा दी जाने लगी तथा दिन प्रतिदिन उसे उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पड़ता |

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी

5. आजादी के बाद भारत में नारी की स्थिति :- आजादी के बाद भी नारी के प्रति हमारा रवैया दोयम दर्जे का रहा | यही कारण है कि वैदिक काल में जो नारी शीर्ष पर रही आज उन्हें सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस हो रही है | नारी के साथ विरोधाभास की स्थिति पहले और आज सदैव बनी रही है | नारी की स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास तो बहुत हुए किन्तु सामाजिक स्तर पर जो सुधार आना चाहिए वह अभी तक परिलक्षित नही हो रहा है |

6. नारी सशक्तिकरण में आने वाली बाधा :- भारतीय समाज ऐसा समाज है जिसमें कई तरह के रीति-रिवाज , मान्यताएँ , परम्परा शामिल है | इन्हीं में से कुछ परम्पराएं महिला सशक्तिकरण के रास्ते में आने वाली सबसे बड़ी समस्याएँ है | पुरानी विचारधारों के कारण महिलाओं को उनके घर से बाहर जाने की इजाजत नहीं होती | जिसके कारण रोजगार तो दूर की बात है वह उचित शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर सकती है और इसी दकियानूसी व संकीर्ण विचारधारा के कारण वह अपने आपको हमेशा पुरुषों से कम समझती है | आजकल कुछ परिवार लडकियों को स्कूल तो भेजते है लेकिन

VISION 100 NEEMKATHANA

आठवीं ,दसवीं कक्षा पास करने के बाद उनकी पढाई छुडवा दी जाती है ताकि वह घर की चारदीवारी में रहकर घर के काम सीख सके |

हम उस समाज के लोग है ,जहाँ विद्या की देवी हर साल पूजी जाती है |
वही दूसरी तरफ वही नारी, विद्या पाने के लिए लड़ी जाती है |

7. नारी का उत्थान :- वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के लिए जन-जन तक यह सन्देश जाना जरूरी है कि महिला सशक्तिकरण देश के विकास के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है | आज महिलाओं को राजनीतिक , सामाजिक ,शारीरिक , मानसिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उनके परिवार,समुदाय,समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतन्त्रता प्रदान करने की आवश्यकता है |

न अबला हूँ , न बेचारी हूँ,
तु देख मुझे, मैं नारी हूँ |

8. उपसंहार :- महिलाओं की प्रगति व देश के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण की जागरुकता फैलाना बहुत जरूरी है | जिसके लिए सभी महिलाओं को समाज से डरकर नहीं बल्कि झाँसी की रानी की तरह निर्भीक योद्धा बनकर आगे आना चाहिए | झाँसी की रानी वह योद्धा थी जो एक स्त्री होकर भी अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और देश के स्वतन्त्रता संग्राम में अपना अविस्मरणीय योगदान देकर सम्पूर्ण नारी जाति को एक नई दिशा दी |

औरत मोहताज नहीं किसी गुलाब की
वो खुद बागवान है, इस कायनात की |

VISION 100 NEEMKATHANA

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

Senior Secondary Examination, 2024

नमूना प्रश्न-पत्र Model Paper

विषय - हिन्दी साहित्य

Sub: Hindi Literature

समय: 03 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड – अ

Section – A

(1) निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए | (12)

1.जयशंकर प्रसाद के काव्य का प्रमुख स्वर है | (1)

(अ) निराशा (ब) राष्ट्रीय जागरण (स) विरह (द) अपराध बोध

2. 'भरत-राम का प्रेम' शीर्षक पद रामचरितमानस के किस काण्ड या भाग से लिया गया है ? (1)

(अ) बालकाण्ड (ब) अरण्यकाण्ड (स) अयोध्याकाण्ड (द) उत्तरकाण्ड

3. 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि प्राप्त लेखक है ? (1)

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) चन्द्रधर शर्मागुलेरी (स) फणीश्वरनाथ रेणु (द) भीष्म साहनी

4. जहाँ कोई वापसी नहीं यात्रा वृतान्त किस संग्रह से लिया गया है ? (1)

(अ) धुंध से उठती धुन (ब) हर बारिश (स) चीड़ों पर चाँदनी (द) कला का जोखिम

5. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ कौन-सी शैली में लिखा गया है ? (1)

अ. कथात्मक शैली ब. तथ्यात्मक शैली स. आत्मकथात्मक शैली द. विवेचनात्मक शैली

6. चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता' कथन किसका है ? (1)

अ. जगधर ब. नायक राम स. ठाकुरदीन द. सूरदास

7. लेखक मालवा की नदियों की दुर्दशा के लिए किसे जिम्मेदार मानता है ? (1)

अ. स्वयं को ब. ग्रामीण जन को स. पश्चिमी देशों की सभ्यता को द. ईश्वर को

8. किस साँप को मारा नहीं जाता तथा उसे साँपों की वामन जाति का मानते है ? (1)

VISION 100 NEEMKATHANA

अ. मजगिदवा ब. डोंडहा स. घोरकड़ाइच द. कोबरा

9. आत्मा दारा अनुभूत भावों एवं विचारों का प्रस्फुटन होती है ? (1)

अ. कहानी ब. नाटक स. कविता द. रेखाचित्र

10. कथानक को कहानी का क्या कहा जा सकता है ? (1)

अ. असली चेहरा ब. प्रारम्भिक नक्शा स. प्रारम्भिक स्वरुप द. प्रारम्भिक कथा

11. लोकतांत्रिक समाज में अखबार की क्या भूमिका है ? (1)

अ. एक पहरेदार की ब. एक शिक्षक की स. एक जनमत निर्माता की द. उपर्युक्त सभी

12. "संचार अनुभवों की साझेदारी है" कथन किसका है ? (1)

अ. नेपोलियन ब . विल्बर श्रेम स. अरस्तु द. चाणक्य

उत्तरमाला :- 1. ब 2. स 3. ब 4. अ 5. स 6. ब 7. स 8. ब 9. स 10. ब 11. द 12. ब

(2) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित उत्तर से कीजिए | (6)

1. काव्य गुण के प्रमुख रूप से........... भेद होते है | (1)

2. वीर,रौद्र,वीभत्स तथा भयानक रसों में............दोष काव्य गुण बन जाता है | (1)

3. तीन वर्णों के समूह को ....कहते है | (1)

4. मात्राएँ केवल.................की होती है,व्यंजन की नहीं | (1)

5. जहाँ काव्य के अर्थ में चमत्कार पाया जाता है वहाँ ....होता है | (1)

6. प्रतीप अलंकार .... अंलकार का उलटा/विपरीत है | (1)

उत्तरमाला :- 1. तीन 2. श्रुतिकटूत्व 3. गण 4. स्वर 5. अर्थालंकार 6. उपमा

(3) अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- (6)

राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है। जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं-हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना 'राष्ट्रीयता' कहलाती है। जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है-देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचंद्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं। जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत-तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आदोलन चल रहे हैं। कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अह में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है।

100 NEEMKATHANA

(1) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

(2) आशय स्पष्ट कीजिए-"राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है।" (1)

(3) 'राष्ट्रीयता' से लेखक का क्या आशय है? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए। (1)

(4) राष्ट्रीय बोध का अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है? **(1)**

(5) राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है? उदाहरण सहित लिखिए। (1)

(6) व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। कैसे? तर्क सहित उत्तर लिखिए। (1)

उत्तर :-

(1) शीर्षक-राष्ट्रीयता की भावना।

(2) आशय-हमारा राष्ट्र, हम जहाँ रहते हैं, केवल जमीन का टुकड़ा भर नहीं है, बल्कि इससे हमारा पोषण होता है। यहाँ की परंपरा, रीति-रिवाज, मान्यताएँ सब हमारे जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। इन परंपराओं में हजारों वर्ष का अनुभव छिपा होता है। यह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग भी होता है।

(3) 'राष्ट्रीयता' से लेखक का आशय है-जाति, धर्म, प्रांतीयता, भाषा आदि की सीमा संबंधी बाधाओं से ऊपर उठकर कार्य करना तथा राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देना। गद्यांश में आए दो चर्चित देशभक्त हैं- 1. महात्मा गांधी, 2. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।

(4) राष्ट्रीय बोध का अभाव हमें अनेक रूपों में दिखाई देता है; जैसे

1.किसी दूसरे व्यक्ति से उसके धर्म, जाति, कुल, भाषा के आधार पर व्यवहार करना।

2. क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता जैसी कट्टरता रखना तथा अपने प्रांत, धर्म, संप्रदाय को सर्वोपरि समझते हुए दूसरे के प्रांत, धर्म, संप्रदाय को हीन समझना।

(5) राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति यदि अपने 'स्व' को मिटाकर देशहित को प्राथमिकता दे, दूसरे व्यक्ति के धर्म, भाषा, जाति, संप्रदाय का आदर करे और क्षेत्र के नाम पर मरने-मिटने की संकीर्ण भावना का त्याग कर दे तो राष्ट्र में सुख-शांति, भाई-चारा, सद्भाव बढ़ जाएगा और संघर्ष समाप्त होगा जिससे राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाएगा।

(6) व्यक्तिगत स्वार्थ के वशीभूत होकर व्यक्ति 'स्व' की भावना से काम करता है। उसे अपना प्रांत, अपनी भाषा, धर्म नीतियाँ आदि के सामने दूसरे का कुछ हीन नजर आने लगता है। उसका दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है। उसके विपरीति राष्ट्रीयता, राष्ट्र के सभी लोगों के धर्म, जाति, भाषा क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर कार्य करने का नाम है। इस प्रकार दोनों परस्पर विरोधी तत्व हैं।

(4) अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- (6)

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसको चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है ?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है ?
जिसके बड़े रसीले, फल, कन्द, नाज, मेवे,

सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है ?
जिसमे सुगन्ध वाले, सुन्दर प्रसूने प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है ?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती,
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?
जिसकी अनन्त धन से, धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?

(1) भारत का मुकुट किसे कहा गया है ? (1)

(2) कवि ने भारतवर्ष की कौन-सी विशेषताएँ बतायी हैं ? (1)

(3) "सींचा हुआ सलोना' से क्या तात्पर्य है ? (1)

(4) भारत देश को संसार का शिरोमणि क्यों कहा गया है ? (1)

(5) प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए (1)

6. संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है? पंक्ति में अलंकार बताइए | (1)

उत्तर:

(1), भारत का मुकुट हिमालय को कहा गया है।

(2) कवि ने बताया है कि भारतवर्ष प्रकृति की गोद में बसा हुआ सुख–स्वर्ग है। इसके चरणों को सागर धोता है, मुकुट हिमालय है, नदियाँ अमृत-रस से इसे सींच रही हैं। आनंद की सृष्टि करने वाली यह धरा है, जो संसार का शिरोमणि है।

(3) "सींचा हुआ सलोना' से यहाँ आशय है कि नदियों की अमृत धारा से यहाँ की प्राकृतिक मोहक छटा सिंचित है। इससे भारत-भूमि हरी-भरी है।

(4) भारत देश के पास प्राकृतिक सौंदर्य और अपूर्व खनिज-संपदा पड़ी है, अतः यह संसार का शिरोमणि है।

(5) भारत देश के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण

(6) प्रश्नालंकार

खण्ड – ब
Section – B

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिये | (24))

(5) 'अब धनि देवस विरह भा राती' - इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-अगहन मास में शीत ऋतु प्रारम्भ हो जाती है, जिसमें दिन छोटे और रातें बड़ी हो जाती हैं। विरहिणी नागमती विरह-व्यथा के कारण दुर्बल होती जा रही है। इस कारण वह कहती है कि मेरा शरीर तो सर्दी के दिनों

की तरह दुर्बल या छोटा हो रहा है तथा मेरा विरह सर्दी की रातों की तरह लम्बा बड़ा हो रहा है तथा मुझसे अब यह दुःख सहन नहीं हो रहा हैं |

)6) 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने इस कविता के माध्यम से जीवन के क्षण के महत्त्व को तथा क्षणभंगुरता को व्यक्त किया है। बूँद जब तक समुद्र में रहती है, उसका कोई अस्तित्व नहीं होता किन्तु जब वह अलग होती है तो सूर्य से रंगकर सार्थक हो जाती है। बूँद का सागर से अलग होने का अर्थ है कि अब उसका अस्तित्व समाप्त होने वाला है और वह शीघ्र नष्ट होने वाली है। यह क्षणभंगुरता बूंद की सागर की नहीं | बूंद सागर से अलग होकर स्वयं अभिप्राय ब्रह्म से है। जहाँ से बूँद रूपी जीव क्षणभर अर्थात् कुछ समय के लिए अलग होता है और कुछ रंगीन पल व्यतीत कर नश्वरता को प्राप्त होता है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त होता है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन भी क्षणभर स्वयं को आलोकित कर पुनः परब्रह्म में विलीन हो जाता है। यही मूल भाव दर्शाया गया है।

)7 ('साझा' कहानी में किस पर क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- 'साझा' कहानी में पूँजीपतियों, प्रभुत्व वाले व्यक्तियों पर व्यंग्य किया गया है। वे किसान जैसे लोगों को साझेदारी के लाभ बतलाकर उन्हें अपनी बातों में फँसा लेते हैं और फिर चालाकी से उनका शोषण करते हैं। किसान मेहनत करते हैं और फसल का लाभ समर्थ लोग हड़प लेते हैं। प्रत्येक पूँजीपति अपने ढंग से उन्हें ठगता है।

)8 (‘बड़ी हवेली अब नाममात्र को ही बड़ी हवेली है।‘ आशय स्पष्ट कीजिये

उत्तर - बड़ी हवेली पहले वास्तव में बड़ी हवेली थी। पहले यहाँ नौकर-नौकरानियों, जन-मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी पर अब सब खेल खत्म हो गया। बड़े भैय्या की अकाल मृत्यु हो गई, शेष बचे तीन भाई शहर में जाकर रहने लगे। रैयतों ने जमीन पर कब्जा कर लिया और अब तो हालत यह हो गई है कि बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया के पास खाने तक क चरित्र को अनाज नहीं है, बथुआ-साग खाकर गुजारा कर रही है।बड़ी हवेली अब नाम की बड़ी हवेली है वैसे वहाँ सर्वत्र दरिद्रता का साम्राज्य है।

)9 (" सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी-पर-बाजी हारते हैं, बोट-पर-बोट खाते हैं, धक्के-पर- धक्के सहते हैं पर मैदान में डटे रहते हैं।" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्थिति में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-बच्चों द्वारा खेल में रोने को गलत मानना सुनकर सूरदास ने भी सोचा कि यह जीवन भी एक खेल है। इसको हार-जीत पर दुःख न मनाकर फिर से नयी ऊर्जा और स्फूर्ति से खेलना चाहिए। रुपये मैंने ही कमाए थे, फिर कमा लूंगा। मुझे अपने मन को मलिन न करके नए साहस के साथ फिर खेलना है।

)10 (लेखक को क्यों लगता है कि "हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?" आप क्या मानते हैं?

उत्तर-वास्तव में औद्योगिक सभ्यता विकास न कर उजाड़ की ओर ले जा रही है। पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई गई यह सभ्यता बर्बाद करने वाली है, क्योंकि-

(i) इस सभ्यता ने पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर दिया है, मौसम का चक्र बिगाड़ कर रख दिया है। इस प्रकार लेखक की पर्यावरण सम्बन्धी चिंता मालवा तक सीमित न रहकर सार्वभौमिक है। (ii) लेखक ने अमेरिका की खाऊ-उजाडू जीवन पद्धति, संस्कृति और सभ्यता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह सभ्यता अपनी धरती को उजाड़ने में लगी हुई है। इससे पर्यावरण का विनाश हो रहा है। (iii) आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें जड़-जमीन से अलग कर दिया है। इस प्रकार लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है तथा पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया है।

VISION 100 NEEMKATHANA

(11) विभावना अलंकार की परिभाषा व उदाहरण लिखिए

उत्तर :- विभावना शब्द दो शब्दों के योग से बना है | वि + भावना अर्थात् –वि का अर्थ है "विशिष्ट "तथा भावना का अर्थ है -कल्पना | काव्य में जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो वहाँ विभावना अलंकार होता है |

जैसे.1--बिनु पद चले सुने बिनु काना कर बिना कर्म करे बिधि नाना|
2 प्यास मिटी पानी बिना मोहन को मुख देखि |

(12) काव्य लेखन में बिम्ब का क्या महत्त्व है ? बताइए

उत्तर :- किसी शब्द को पढ़कर या सुनकर जब हमारे मन में कोई चित्र उभर जाता है तो उसे काव्य की भाषा में बिम्ब कहा जाता है। बिम्ब का शाब्दिक अर्थ है शब्दचित्र या परछाई । इन शब्दचित्रों के माध्यम से ही कवि अपनी कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है बिम्ब के बिना कविता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

<u>कविता में बिम्ब का महत्व :-</u>

1. बिम्ब कवि की कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है। 2. बिम्व अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। 3. बिम्ब कविता की सम्प्रेष्यता को बढ़ाते हैं। 4.बिम्ब अर्थ व भाव-सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। 5. बिम्ब मन को रसानुभूति कराते हैं। 6. बिम्बों के प्रयोग से ग्राहयता बढ़ जाती है।

(13) क्लाइमेक्स किसे कहते है ? समझाइए

उत्तर :- क्लाइमेक्स कहानी का चरम उत्कर्ष कहलाता है। क्लाइमेक्स किसी कहानी का सबसे तीव्र , रोमांचक या महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। जिसके दौरान पात्र अपनी मुख्य समस्या का समाधान करते हैं।
क्लाइमेक्स से पाठकों, दर्शकों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। यह कहानीकार की प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति करने वाला प्रभावशाली तत्त्व होता है।

(14) पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार के बारें में बताइए |

उत्तर :- पत्रकारिता के प्रकार :-

1. खोजपरक पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन करके तथ्यों एवं सूचनाओं को सामने लाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में खोजी पत्रकारिता का एक नया रूप <u>स्टिंग ऑपरेशन</u> काफी चर्चित हैं इसमें अनेक घोटालों एवं भ्रष्टाचार का भंडा-फोड किया जाता है।

2. पीत पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जिसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके सनसनीखोज समाचारों का प्रकाशन करना पीत पत्रकारिता करलाता है।

3. वाच-डॉग पत्रकारिता :- सरकारी कामकाज पर निगाह रखना और कोई गड़बड़ी दिखाई दे तो उसका पर्दाफाश करना वाच-डॉग पत्रकारिता कहलाता है।

4. पेज-थ्री पत्रकारिता :- प्राय: समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर अमीरों की पार्टियाँ, महफिल, फैशन तथा जाने-माने लोगों के जीवन के बारे में समाचार प्रकाशित होते हैं उन्हें पेज-थ्री पत्रकारिता कहते हैं।

5. एडवोकेसी पत्रकारिता :- ऐसी पत्रकारिता जो किसी विचारधारा या मुद्दे का पक्ष लेकर जागरूक बनाने का अभियान चलाते हैं एडवोकेसी पत्रकारिता या पक्षधर पत्रकारिता कहलाती है।

(15) विद्यापति का साहित्यिक परिचय लिखिए |

उत्तर :- आदिकाल व भक्तिकाल के संधि कवि विद्यापति का जन्म बिहार के मधुबनी जिले के बिस्पी गांव में 1980 में हुआ | इनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ जो विद्या व ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। विद्यापति कवि

VISION 100 NEEMKATHANA

मिथिला के राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र,राजकवि और सलाहकर थे।विद्यापति बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील व्यक्ति थे। ये साहित्य, संगीत,ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय, भूगोल आदि के प्रकाण्ड पंडित थे । इन्होनें संस्कृत, अपभ्रंश,मैथिली तीनो भाषाओं में रचनाएँ की । ये हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के पहले ऐसे कवि है जिनकी पदावली में जनभाषा में जन संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है।मिथिला क्षेत्र के लोक व्यवहार और लोक सांस्कृतिक अनुष्ठानों में उनके पद इतने रच बस गए है कि पदों की पंक्तियाँ अब वहाँ के मुहावरों बन गई है।

प्रमुख कृतियाँ
1.अपभ्रंश भाषा में :- कीर्तिलता,कीर्ति पताका
2.मैथिली भाषा में :- पदावली
3.संस्कृत भाषा में :- पुरुष परीक्षा, भू परिक्रमा,लिखनावली,दुर्गाभक्ति तरंगिणी,विभाग सार,गंगा वाक्यावली
नोट :-
1. इनकी प्रसिद्धि का मूल आधार पदावली रचना है।
2. कीर्तिलता व कीर्तिपताका जैसी रचनाओं पर दरबारी संस्कृति व अपभ्रंश काव्य का प्रभाव है।
3. इनकी पदावली के गीतों में भक्ति व श्रृंगार की गूंज है।
4. उनको मैथिल कोकिल तथा अभिनव जयदेव के नाम से भी जाना जाता है

(16)फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्यिक परिचय दीजिये |
उत्तर :- हिन्दी के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के गाँव औराही हिंगना गाँव में 4 मार्च 1921 को हुआ। रेणु जी ने 1942 में 'भारत छोड़ो स्वाधीनता' आन्दोलन तथा नेपाल के राणाशाही विरोधी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निगाई। इन्होंने अपने साहित्य में अंचल विशेष को अपने शब्दों का आधार बनाकर आँचलिक शब्दावली व मुहावरों का सहारा लेकर वहाँ के जन जीवन का व वातावरण का चित्रण किया है कथाकार होने के कारण रेणु जी ने वर्णनात्मक शैली को आधार बनाया|
प्रमुख कृतियाँ :-
कहानी संग्रह :- ठुमरी,अच्छे आदमी,अगिनखोर,रस प्रिया आदिम रात्रि की महक,तीसरी कसम उर्फ़ मारे गये गुलफाम
उपन्यास :- मैला-आँचल,परती परिकथा,जुलूस, पलटू बाबू रोड ,कितने चौराहे, कलंक – मुक्ति
रिपोर्ताज :- नेपाली क्रांति कथा, एकलव्य के नोट्स
संस्मरण :- ऋणजल-धनजल, वन तुलसी की गंध
आत्मकथा:- आत्मपरिचय
नोट:- 1.इनकी तीसरी कसम उर्फ़ मारे गये गुलफाम कहानी पर बासु भट्टाचार्य के निर्देशन में एक फिल्म बन चुकी चुकी है जिसमें राजकपूर और वहीदा रहमान ने भूमिका निभाई |
2.रेणुजी राजनीति में प्रगतिवादी विचारधारा का समर्थन करते है
3.मैला आँचल आंचलिक उपन्यास के कारण बहुत ख्याति मिली थी और इसी उपन्यास के लिए भारत सरकार ने पदम् श्री पुरस्कार से सम्मानित किया जो इन्होंने 1975 में आपातकाल के समय लौटा दिया
4.रेणुजी की समस्त रचनाये रेणु रचनावली के नाम से पांच खंडो में प्रकाशित हो चुकी हैं |

VISION 100 NEEMKATHANA

5.इनकी पहलवान की ढोलक कहानी 1944 में विश्वमित्र नामक पत्र में छप चुकी थी |

खण्ड – स

Section – C

दीर्घ उत्तरीय : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

(17) 'बनारस' कविता मूल कथ्य लिखिए ।

अथवा

'अरुण यह मधुमय देश हमारा' का केन्द्रीय भाव प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- बनारस भारत का प्राचीनतम नगर है जिसके सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवेश का कवि ने कवित में चित्रण किया है। यह गंगा के तट पर स्थित है और शिव की नगरी है। इस कारण इस नगरी के प्रति लोगों की आस्था अधिक है। कवि ने कविता में गंगा, गंगा के घाट, मन्दिर और घाटों पर बैठे भिखारियों का सजीव वर्णन किया है।प्राचीन काल से ही काशी और गंगा के सान्निध्य के कारण मोक्ष प्राप्ति की अवधारणा यहाँ से जुड़ी हुई है। दशाश्वमेध घाट पर पूजा-पाठ चलता रहता है। गंगा के किनारों पर नावें बँधी रहती हैं। गंगा के घाटों पर दीप जलते रहते हैं, हवन होते रहते हैं, चिताग्नि जलती रहती है और उसका धुआँ सदैव उठता रहता है। यह बनारस की विशेषता है। यहाँ का कार्य अपनी गति से चलता रहता है। इस नगरी के साथ लोगों की आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति के भाव जुड़े हैं इस कविता में काशी की प्राचीनता,आध्यात्मिकता, भव्यता और आधुनिकता का समाहार है |

अथवा

उत्तर- अरुण यह मधुमय देश हमारा' देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत कविता है। इसमें कवि जयशंकर प्रसाद ने एक विदेशी राजकुमारी कार्नेलिया द्वारा भारत की शौर्य गाथा, महानता एवं प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन करवाया है। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की पत्नी कार्नेलिया जो एक यूनानी है, यह भारतीयों की विश्व-बंधुत्व की भावना से प्रभावित होकर इस गीत को गा रही है। भारत देश संसार के प्रत्येक देश का आश्रय स्थल है। जिन्हें कहीं स्थान न मिले उसका भी स्वागत भारत दिल खोलकर करता है। 'अतिथि देवो भवः' की धारणा को निभाने वाले भारतीय दयालु हैं, इनमें सबके प्रति करुणा का भाव है। भारत की प्राकृतिक सुन्दरता अद्वितीय है। यहाँ का वातावरण व परिवेश मनुष्य को सुख देनेवाला है। कवि ने एक विदेशी के मुख से भारत की महिमा, स्नेह-सौहार्दता का गुण-गान करवाकर यह प्रमाणित किया है कि देश-विदेश के सभी लोग भारत की विशेषताओं का गुणगान करते हैं।

(18) लेखक ने शेर के माध्यम से आज के नेताओं की कार्यशैली की पोल खोली है। समझाइए कैसे?

अथवा

सिंगरौली की उर्वरा भूमि तथा उस इलाके की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गई। सिद्ध कीजिए।

उत्तर :- लेखक ने कहानी में बताया है कि शेर व्यवस्था का प्रतीक है और उस व्यवस्था में वे नेता लोग शामिल हैं जो सत्ता में बैठकर विभिन्न प्रलोभन देकर भोली-भाली जनता को ठगते हैं। जनता प्रमाण को न मानकर विश्वास के बल पर छली जाती है। नेताओं द्वारा चुनाव जीतने से पहले आम जनता को विभिन्न प्रलोभन दिए जाते हैं। उन्हें विश्वास दिलाया जाता है कि उनका पूरा ख्याल रखा जाएगा। जनता विश्वास कर धोखा खाती

VISION 100 NEEMKATHANA

है। इसी तरह कथा में भी यह जानते हुए कि शेर मांसाहारी है, उसके बाद भी सभी विश्वास के बल पर उसके मुँह में समाते चले जाते हैं। लेकिन अंत में लेखक जैसे कुछ लोग होते हैं जो प्रमाण के बल पर विरोध करते हैं। यद्यपि सत्ता द्वारा उन्हें कुचलने का भी प्रयास किया जाता है। इस प्रकार यह लघुकथा बहुत थोड़े शब्दों में सत्ता की लोलुप वृत्ति का पर्दाफाश करती है।

अथवा

उत्तर-सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और घने जंगल अपने आप में इतने समृद्ध एवं वन सम्पदा से पूर्ण थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसानों ने अपने परिवार का भरण-पोषण किया है। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय सम्पदा उसके लिए विकास के नाम पर अभिशाप बन गई। दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अथाह सम्पदा छिप न सको। विस्थापन की लहर रिहंद बाँध बनने से शुरू हुई, जिसके कारण अनेक गाँव उजाड़ दिये गये। इन्हीं नयी योजनाओं के अन्तर्गत सेंट्रल कोल फील्ड और नेशनल सुपर थर्मल पावर कॉरपोरेशन का निर्माण हुआ। चारों तरफ की हरियाली को खत्म कर पक्की सड़कें और पुल बनाये गये। सिंगरौली जो अब तक अपने सौन्दर्य के बैकुंठ और अकेलेपन के कारण 'कालापानी' माना जाता था, वही प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ। विकास के खेल में प्रकृति और मानव का कितना विनाश हुआ, वह किसी ने नहीं देखा।

(19) "संगीत, गंध, बच्चे-बिसनाथ के लिए सबसे बड़े सेतु हैं, काल, इतिहास को पार करने के।" प्रस्तुत कथन के आधार पर बताइए कि बिसनाथ का सम्बन्ध गंध से किस प्रकार जुड़ा हुआ था?

अथवा

"सूरदास की झोपड़ी पाठ में ईर्ष्या, चोरी, ग्लानि,बदला जैसे नकारात्मक मानवीय पहलुओं पर अकेले सूरदास का व्यक्तित्त्व भारी पड़ता है |" जीवन मूल्यों के प्रति इस कथन पर विचार व्यक्त कीजिए |

उत्तर :- बिसनाथ मानता था कि समय के आर-पार झाँकना हो, इतिहास को अच्छी तरह समझना हो, तो संगीत, गंध और बच्चे इसमें बड़े सहायक होते हैं। बिसनाध को बड़ा होने पर याद आया कि बचपन में उसे अपनी माँ के पेट को गंध उसके दूध की गंध जैसी लगती थी। पिता के कुर्ते पर पसीने की बू भी उसे अच्छी लगती थी। नारी शरीर से उसे बिस्कोहर की वनस्पतियों एवं फसलों की गंध आती थी। वहाँ के तालाब की चिकनी मिट्टी की गंध, खीरा, भुट्टा या गेहूँ को गंध भी उसे अच्छी लगती थी। फूले हुए नीम की और जूही की गंध उसे नारी शरीर की गंध के समान मादक, आकर्षक और आनन्ददायी लगती थी। इसलिए बिसनाथ अब तक गंध की मधुर स्मृति के कारण अपने गाँव के परिवेश से जुड़ा हुआ था।

अथवा

उत्तर :- झोपड़ी के जलने से सूरदास अत्यंत दुःखी था | पूरी राख को तितर-बितर करने पर भी उसे अपने संचित रूपये अथवा उनकी पिघलती हुई चाँदी नहीं मिल रही थी | उसकी सभी योजनाएँ इन रुपयों के माध्यम से ही पूरी होनी थी | अब वे अधूरी रहने वाली थी | दुःखी और निराश सूरदास रोने लगा था | अचानक उसके कानों में आवाज आई – "तुम खेल में रोते हो |" इन शब्दों ने सूरदास की मनोदशा को एकदम बदल दिया | उसने रोना बंद कर दिया | निराशा उसके मन से दूर हो गई | उसका स्थान विजय-गर्व ने ले लिया | उसने मान लिया कि वह खेल में रोने लगा था | यह अच्छी बात नहीं थी | वह राख को दोनों हाथों से हवा में उड़ाने लगा |

VISION 100 NEEMKATHANA

खण्ड – द

Section – D

निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए | (5)

(20) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए |

राधी! एक बार फिरि आवौ।
ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावी ॥
जे पय प्याइ पोखि कर पंकज बार बार चुचुकारे।
क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे ।।
भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।
तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे ॥
सुनहु पथिक। जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो।
तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो ॥

प्रसंग - प्रस्तुत पद गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'गीतावली' से लिया गया है। इस पद में माता कौशल्या राम के घोड़ों को बहाना बनाकर उन्हें अयोध्या लौट आने का निवेदन करती है।

व्याख्या - माता कौशल्या वन की ओर जाने वाले राहगीर से कहती है कि तुम्हें वन में यदि राम मिल जाएँ तो उनसे मेरा यह सन्देश अवश्य कहना कि तुम एक बार अयोध्या लौट आओ। अपने श्रेष्ठ घोड़ों को, जिन्हें तुम अपने कमल रूपी हाथों से पानी पिलाते थे और बार-बार पुचकार कर, सहलाकर दुलार करते थे, वे तुम्हारे द्वारा भुला दिए जाने पर भला कैसे जीवित रह सकते हैं? मेरे लाड़ले, तुम इनके दुःख को समझो। तुम इन्हें एक बार देखकर वापिस वन को लौट जाना। वैसे तुम्हारा भाई भरत तुम्हारी ही तरह इनकी सौ गुनी देखभाल करते हैं कि ये तुम्हारे अत्यन्त प्रिय हैं। फिर भी तुम्हारे घोड़े दिन पर दिन दुर्बल होते जा रहे हैं। इनकी दशा पाला पड़ने से मुरझाये कमल के समान हो रही है। तुलसी आगे कहते हैं कि माता कौशल्या कहती हैं कि हे पथिक! तुम मेरे पुत्र राम को यह सन्देश अवश्य दे देना कि मुझे इन घोड़ों की सबसे अधिक चिन्ता है, तुम्हारे वियोग में इनके जीवित रहने का सन्देह होने लगा है। अर्थात् इनकी मरणासन्न स्थिति बन आई है।

विशेष - (1) **राम के वियोग में अयोध्या के नर-नारी ही नहीं, घोड़े भी व्याकुल हैं। कौशल्या उनके माध्यम से राम को देखना चाहती है।**
(ii) **पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार प्रयुक्त हैं।** (iii) **ब्रजभाषा का प्रयोग, माधुर्य गुण एवं वात्सल्य रस है।**

अथवा

किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर

VISION 100 NEEMKATHANA

अपनी दूसरी टाँग से
बिल्कुल बेखबर!

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि केदारनाथ सिंह द्वारा रचित कविता 'बनारस' से लिया गया है। इस अंश में कषि ने बनारस के विशिष्ट चरित्र का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह बनारस शहर अपनी एक टाँग पर गंगा के जल में खड़ा हुआ सूर्य को अयं दे रहा है। अर्थात् यह शहर प्राचीन समय से हो सूर्य को एक अदृश्य सत्ता परब्रह्म मानकर उसकी पूजा-अर्चना करता आ रहा है। यह प्राचीन परम्परा अभी चली आ रही है। बनारस का एक हिस्सा प्राचीनता का पोषक है तो दूसरा हिस्सा आधुनिकता के प्रभाव में आकर जी रहा है, जिसके बारे में प्राचीन शहर को कुछ पता या खबर नहीं है। यह वर्षों से एक ही दिनच्चयों को जीये चले जा रहा है। परिवर्तन की कोई लहर उसे छू भी नहीं गई है। वह अपने आप में और अपने कार्यों में पूरी तरह मस्त है। तो यह है बनारस शहर का सजीव चित्रण।

विशेष :- 1. बनारस की प्राचीनता व उसकी धर्म-साधना का उल्लेख है।
2. सूर्य को अलक्षित सत्ता बताकर उसे अदृश्य सत्ता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है।
3. 'बिल्कुल बेखबर' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
4.भाषा तासम-प्रधान, भावानुरूप और प्रतीकात्मक लाक्षणिक है।

(21) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए |

दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी वह है जिसका मन परवश है। परवश हने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ-हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है वही दूसरे के स का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडम्बर रचता है, दूसरों को फंसाने के लिए जाल बिछाता । कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वशी है। वह वैरागी है। राजा जनक की तरह संसार में रहकर, संपूर्ण भोगों को भोगकर भी उनसे मुक्त है। जनक की ही भाँति वह घोषणा करता है' मैं स्वार्थ के लिए अपने मन को सदा दूसरे के इन में घुसाता नहीं फिरता, इसलिए मैं मन को जीत सका हूँ, उसे वश में कर सका हूँ।'

सन्दर्भ :- प्रस्तुत, गद्यावतरण 'कुटज' नामक ललित निबन्ध से लिया गया है। इस निबन्ध के लेखक आचार्य हजारी सद द्विवेदी हैं और इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग :- लेखक की मान्यता है कि व्यक्ति का मन सुख और दुःख के लिए उत्तरदायी होता है। जिसने अपने मन को बोभूत कर लिया वह सुखी है और जिसका मन परवश है वह दुःखी है। जो मन को अपने ऊपर सवार नहीं होने देता वही कुछ कहा जाता है। कुटज मन पर सवारी करता है इसलिए वह सुखी है।

VISION 100 NEEMKATHANA

व्याख्या :- लेखक कहता है कि दुःख और सुख का चयन तो मन करता है। जिसने अपने मन को वशीभूत कर लिया, जलसे बढ़कर सुखी कोई नहीं, जबकि दुःखी वह व्यक्ति है जिसका मन परवश है। मन को नियंत्रित कर लेने वाले व्यक्ति कसे कोई दुःख नहीं होता, किन्तु जिसका मन सांसारिक विषय-वासनाओं के वशीभूत होता है वही दूसरों की खुशामद करता है. दूसरों के समक्ष दीन बनता है, उनकी चाटुकारिता करते हुए झूठी प्रशंसा करता है तथा अपने लाभ के लिए दूसरों की है-हुजुरी करता फिरता है। ये सब कार्य उसे करने पड़ते हैं जो मन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता और लोभ लालच के भूत होकर दूसरों से कुछ चाहता है, किन्तु जिसने अपने मन को वश में कर लिया उसे दूसरों की खुशामद करने या उनके उलवे चाटने को कोई आवश्यकता नहीं। जिसका मन परवश है वही दूसरे के मन को टटोलता फिरता है, मिथ्या आडम्बर रक्ता है या दूसरों को फंसाने के लिए षड्यन्त्र करता है पर जिसने मन को वश में कर लिया, सन्तोषवृत्ति को धारण कर है उसे न खुशामद करने की आवश्यकता है और न षड्यन्त्र करने की। कुटज इन झूठे प्रदर्शनपूर्ण आचरण से दूर रहता है। राजा जनक भोग के समस्त साधन सुलभ होने पर भी वृत्ति से योगी थे। कुटज भी ऐसा ही है। वह मन पर नियन्त्रण रखता है, मन को अपने पर सवार नहीं होने देता इसीलिए वह साधुवाद का पात्र है।

विशेष :- (1) इस अवतरण में लेखक ने सुखी उस व्यक्ति को माना है जो अपने मन को वश में रखता है। दूसरी ओर दुःखी वह है जो अपने मन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। (2) लेखक की धारणा है कि सन्तोष वृत्ति धारण कर लेने पर मन में कोई दुःख नहीं रहता। मन पर सवारी करने वाला व्यक्ति कुटज को भाँति निर्द्वन्द्व एवं निश्चिन्त हो जाता है। (3) भाष सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण परिनिष्ठित हिन्दी है जिसमें संस्कृतनिष्ठ पदावली की बहुलता है। (4) विवेचनात्मक शैली का प्रयोग इस अवतरण में लेखक ने किया है।

अथवा

धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान दलकाकर सुन ले, इस युगों मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। केनी पड़ी देखना जानने वाले में समय पूछ लो और काम बला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं देख लो किन्नु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्ने गिन लें, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ काळे फिर लगा लें- यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का हो कमी कि पड़ी के पुर्ने जानें, तुम्हें इससे क्या? क्या इस उपमा से जिज्ञासा बंद हो जाती है?

प्रसंग :--प्रस्तुत गद्यांश पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के 'सुमिरिनी के मनके' निबंध के 'पड़ी के पूर्व' शीर्षक वर्णन उदक्षत है। इसमें धर्म का रहस्य जानने के सम्बन्ध में पड़ी का दृष्टान्त दिया गया है। इससे धर्म-उपदेशकों की अति पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या :- धर्म के क्षेत्र में वेदशास्त्रों के ज्ञाता धर्माचार्य अपनी मनमानी करते हुए धर्म के उपदेश सुनने वालों कोयह अनुमति नहीं देना चाहते कि वे धर्म के संबंध में प्रश्न करें, धर्म के स्वरूप, मर्म, रहस्य जानें। वे चाहते हैं कि जगरुक हुए बिना उसे ही मानें जो हम उन्हें बतायें। धर्म की बारीकियाँ जानने की इच्छा करने का अधिकार सभी को नहीं है। वे बारीकियाँ, वे बातें जानने का अधिकार उन लोगों का है जो वेदशास्त्रों के ज्ञाता हैं, जो धर्माचार्य हो जाते हैं। इस कथन को घड़ी का दृष्टान्त देकर प्रस्तुत करते हैं। जो व्यक्ति समय जानना चाहे तो वह पड़ी से समय ज्ञात करना जानने वाले से पूछ ले। इतने से संतोष न हो तो समय जानने का इच्छुक व्यक्ति घड़ी को देखना सीख परन्तु वह पड़ी के पीछे के भाग को खोलकर, उसके भीतर के पुजें गिनने, उन्हें खोलकर

VISION 100 NEEMKATHANA

साफ करके फिर से जमा करने का प्रयत्न कभी नहीं करे। वह पुर्जों की जानकारी करने का स्वयं को अधिकारी ही न माने। स्वयं को बड़ी से जानने तक ही सीमित रखे। लेखक का मानना है कि धर्म का रहस्य जानने की इच्छा रखना और मन में उठी | शंका का का समाधान करना-यह हर श्रोता चाहता है, परन्तु धर्माचार्य उसे ऐसी छूट नहीं देते हैं।

विशेष :-

1.लेखक बताना चाहता है कि रहस्य को जानने की इच्छा पूरी होने पर ही सही ज्ञान हो सकता
2. धर्मोपदेशों के व्यवहार पर आक्षेप किया गया है।
3. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं भावानुरूप है।
4. शैली अलंकृत, व्यंग्यात्मक एवं उपदेशात्मक है।

(22) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए | (400 शब्द) (6)

1. कोरोना एक महामारी 2. हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी 3. राष्ट्र के विकास में युवाओं के योगदान 4. आतंकवाद :एक वैश्विक समस्या

VISION 100 NEEMKATHANA

VISION 100 N ATHANA